॥ श्री ॥

काबुलके अमीर

हिज़ हाइनेस

अबदुर्रहमान खाँ ।

जिसको

बूँदी (राजपूताना) निवासी महता लज्जाराम

शर्म्मासे निर्मित कराय,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज ''श्रीवेङ्कटेश्वर'' (स्टीम) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

मार्गशीर्ष संवत् १९७०, शके १८३५

काबुलके अमीर अब्दुर्रहमानखाँ।



जन्म सन् १८४० के लगभग　　मृत्यु सन् १९०१

भूमिका।

अफ़ग़ानिस्तान भारतवर्षका पड़ौसी है। पड़ोसीका चाल चलन, नीति रीति और उसके घरकी स्थिति जाननेकी प्रायः सबही मनुष्योंको इच्छा रहती है। पड़ौसी भी ऐसा वैसा नहीं किन्तु बलवान् शक्तिवान् पड़ौसी है। शान्तिमय ब्रिटिशराज्यकी भारतवर्षमें विजयिनी पताका उड़ने पूर्व काबुल भारतवासियोंको बहुत सताचुका है। वहांके अनेक पराक्रमी पुरुषोंने इस देशमें आकर लूट मार की है, अत्याचार किये हैं और सबसे बढ़कर बात यह कि भारतवर्ष जैसे विशाल राज्यका शासन किया है। अन्यान्य देशोंसे जलद्वारा आनेका मार्ग जबतक नहीं खुला था अफ़ग़ानिस्तान होकरही विदेशीलोग भारतवर्षमें आया जाया करते थे। भारतर्षका काबुलसे केवल व्यापारकी दृष्टिसेही घनिष्ठ संबंध नहीं है वरन् अफ़ग़ानिस्तान रूस और भारतवर्षके बीचमें फाटक है। अमीर अब्दुर्रहमानखांके शासन पूर्व विश्वविजयी अंग्रेज़ोंको काबुलसे अनेकबार युद्ध करनेमें बडे२संकट उठाने पडेहैं।अमीर अब्दुर्रह मानखांके समयमें काबुलका गौरव पहलेकी अपेक्षा कई गुणा बढ़गयाहै, उन्होंने अपने शासनमें रक्तकी प्यासी काबुली प्रजाको मोम बनाकर वहांकी अराजकताका सदाके लिये नाश कर दिया है। इनके शासनपूर्व राज्यलोलुप राजकुटुम्बमें राज्यशासनके लिये पिता पुत्र और भाई २ में संग्राम होकर रक्तके पनाले बहना साधारण बात थी, मनुष्यबंधका दण्ड केवल ५०) था, मुल्लां और रईस, चोर तथा डाकुओंमें मिलकर लूट खसोट करवाते और अनेक हत्याकाण्ड कर लूटके मालका उनसे आधा हिस्सा लिया करते थे। प्रजा विद्रोहकी आग सदा धधका करती थी। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत चारितार्थ होनेके यदि संसारमें कोई स्थान हैं तो उनमेंसे एक काबुलही है। जिसके शरीरमें शक्ति और साहस था, जो सेना अधिक इकट्ठी करसकता था वही अपने आप्तवर्गको मारकर अमीर बन बैठता था। काबुलके अमीरको दिनरात रूस और इंग्लैंडके आक्रमणका भय बना रहता था। गिलज़ाई, हज़ारा और काबुलकी अन्यान्य जातियाँ काबुलराज्यमें बसकर भी अमीरको तिनकेके समान नहीं समझती थी। राजकोषमें नामके लिये एक फूटी कौड़ीतक न थी। इन सब बातोंको अबदुर्रहमानखां शनैः२अपने बल, शक्ति,पराक्रम, अनु-

भय और कौशलसे नाशकर काबुलकी कट्टर, रक्तकी प्यासी प्रजामें अपना आतंक स्थापित किया। वह आतंक भी साधारण न था किन्तु उनके बड़ेसे बड़े कर्मचारी, बड़ेसे बड़े सैनिक और कट्टरसे कट्टर प्रजा अमीरका नाम सुनकर थरथराने लगती थी।

अबदुर्रहमानखांने केवल अपनी प्रजाको अपने आतंकसे डराकर अपनी मुट्ठीमेंही नहीं लेलिया वरन् उसके बलका–उसकी शक्तिका और उसके साहसका सदुपयोग कर एक वीर शिक्षित सेना तैयारकी। जिन अंगरेजोंने काबुलकी यात्रा की है वे मुक्तकंठसे स्वीकार करते हैं कि काबुलकी सेना अब किसी अन्य उन्नत राज्योंकी सेनासे शिक्षामें कम नहीं है। उन्होंने सेनाको शिक्षा देनेके साथही प्राय सब प्रकारके शस्त्र कारतूस बनानेके कारखाने खोलकर अपनी सेनाको अपनेही यहांके शस्त्रोंसे सुसज्जित किया। उनके उद्योगका यहीपर अंत नहीं हुआ किन्तु उन्होंने शस्त्रोंके सिवाय कपड़े, चमड़ा, मोमबत्ती और साबुन आदि अनेक पदार्थोंके कारखाने खोलकर जंगली, लूट खसोट और हत्याकांडसे पेट पालनेवाले काबुलियोंको कारीगर बनाया और देशी कारीगरोंको उत्तेजना देकर देशका धन बाहर जानेसे रोका, रूस और इंग्लैंड जैसे दो पराक्रमी सिंहोंके बीचमें बसकर काबुलपर इन दोनोंमेंसे एकको भी आँख उठाकर न देखने दिया। दोनोंसे मित्रता रक्खी, दोनोंहीसे अपना मतलब गांठनेके लिये डराया, दोनोंहीको काबुलकी स्वतंत्रता और शक्तिके लाभ दिखलाकर अपनी शक्ति बढ़ाई और सबसे बढ़कर बात यह है कि अपने इक्कीस वर्षके शासनमें संसारको यह दिखलादिया कि यदि कोई राजपुरुष अंगरेजी पढ़े बिना भी अगम्य मगज कर मनुष्य शरीर धारी पशुओंको आदमी बनाना चाहे, तो शत्रुओंके बीचमें रहकर भी अपनी प्राणरक्षा, अपनी उन्नति करनाचाहे तो इसतरह कर सकता है। इसीतरह स्वतंत्रता की रक्षा हो सकती है और ऐसेही प्रजाके विचारका प्रवाह रोककर उसका सद्व्यवहार होसकता है। ऐसे शक्तिशाली अनुभवी और बुद्धिमान् अमीर अब्दुर्रहमानका चरित्र अभीतक हिन्दीमें नहीं बनाथा। मैं आज इस पुस्तकको प्रिय हिन्दी रसिकोंकी भेंट करताहूं। मैं नहीं कहसकताहूं कि मुझे इस कार्यमें कहांतक सफलता हुई है। इसका भार प्रिय पाठकों परहै।

यह पुस्तक अधिकतर अमीर अबदुर्रहमानखांके चरित्रके आधारपर लिखी गई है। यह वही चरित्र है जिसे अमीरने फारसीमें अपने मीर मुन्शी सुलतान मुहम्मदसे लिखवाया था। इन्ही मीर मुन्शीसाहबने जो बैरिस्टर और केम्ब्रिज् कालेजके एक उच्चश्रेणीके विद्यार्थी हैं फारसी पुस्तकका अंगरेजी अनुवाद किया।उस अंगरेजी अनुवादके आधारपर मैंने इसकी रचनाकीहै।(इस पोथीमें केवल अमीर अबदुर्रहमानखां रचित जीवन चरित्रकाही आशय नहीं लियागयाहै बरन् डाक्टर ग्रेसाहबकृत "एट्दी कोर्ट आफ् दी अमीर" मेरे बनाये विक्टोरिया चरित्र और कईएक सामयिक समाचार पत्रोंकीभी सहायता लीगईहै।जिनके आधारपर मैंने इस पुस्तकको लिखाहै उनके स्वपिताओंकोमैं अंतःकरणसे धन्यवाद देताहूं।यह पोथी अधिकतर उनके चरित्रके आधारपर लिखीगई है।अमीर अबदुर्रहमान एक राजनैतिक पुरुष थे। संभव है कि उन्होंने अपने चरित्रमें अनेक जगह अपने छिद्र छिपाने और अपना गौरव बढानेके लिये अत्युक्ति की हो और कितनेही अंशोंको छोड़ दियाहो परंतु उन बातोंके अन्वेषण करनेका मेरे पास कुछ साधन नहीं था। अफ़गानिस्तानके विषयमें अनेक अंगरेज विद्वानोंके लिखे ग्रंथ मिलसकते हैं परंतु "दूलहवाला दूलहके और दुलहिनवाला दुलहिनके गीत गाया करताहै।" संभवहै कि जैसे अमीरने अपने चरित्रमें पक्षपात कियाहो उसी तरह उक्त ग्रन्थकारोंके पक्षपातकी भी संभावना है। ऐसी दशामें दोनों पक्षोंकी पुस्तकें पढ़कर उसका सार निकालना एक गुरुतर कार्य है। इसके सिवाय अमीरने अपने चरित्रमें बहुत ठीक लिखा है कि "जिन लोगों ने मेरे विषयमें पुस्तकें लिखी हैं वे मेरे देशकी भाषा नहीं जानते है। यहां आकर अधिक समयतक रहते नहीं हैं इसकारण उन पोथियोंमें बड़ा गोलमाल है।" इस बातपर विचारकर मैं ने इस विषयमें हाथ डालना उचित नहीं समझा है।

मैंने इस पुस्तकको चार भागोंमें बांटा है। प्रथम भागके पढ़नेसे पाठकोंको विदित होगा कि अमीर अबदुर्रहमान जो इतने बड़े राजा होगये किसी समय कैदी थे, कभी उन्होंने गवर्नरी की थी तो कभी सेनाध्यक्ष बनाये गये थे, एक समय उन्होंने लुहारका काम किया था तो दूसरी बार उन्हें अपने चचाको अमीर बनानेकी शक्ति प्राप्त हुई थी। एक समय वह राजाधिराज थे तो दूसरे समय उन्हें खानेके लिये एक रोटीका

टुकडा भी नहीं मिला था। एक बार जो अबदुर्रहमान रूसके आश्रयसे पेट पालते थे तो दूसरी बार काबुलका राज्य पाकर उसी रूसको घुडकनेपर तैयार हुए थे। इसी भागसे पाठक जान जांयगे कि किस २ तरहका कष्ट पाकर उन्होंने काबुलका राज्य पाया और क्योंकर वहां अपना दबदबा जमाया दूसरे भागमें उनके राज्यप्रबंधका दिग्दर्शन किया गया है। तीसरेमें ब्रिटिश और रूसगवर्नमेंटसे काबुलका कैसा संबंध रहा और रहना चाहिये इत्यादि बातें लिखीहुई हैं और चौथेमें काबुलका भविष्यत् प्रबंध और रक्षा तथा परदेशियोंसे बर्ताव और प्रजा राज्यकी उन्नतिके उपाय बतलाये गये हैं। अमीरके मीरमुन्शी सुलतान मुहम्मदखाँने अंगरेजी पुस्तककी भूमिकामें लिखा है कि यह पोथी केवल राजनैतिकही नहीं है किन्तु "सहस्ररजनीचरित्र" से किसीतरह कम इसमें रोचकता नहीं है। आश्चर्यकी बात यह है कि अमीर जैसे राजाधिराजने अपने घमंड छोड़कर इसपुस्तकमें स्पष्ट लिखा है कि "मैं कैद होगया था।" इसबातसे अनुमान होसकता है कि इसमें पक्षपात नहीं है। कुछभीहो परंतु जैसी कुछ भली या बुरी पोथी है पाठकोंके सामने है। इसके गुणदोष देखनेका काम उनका है।

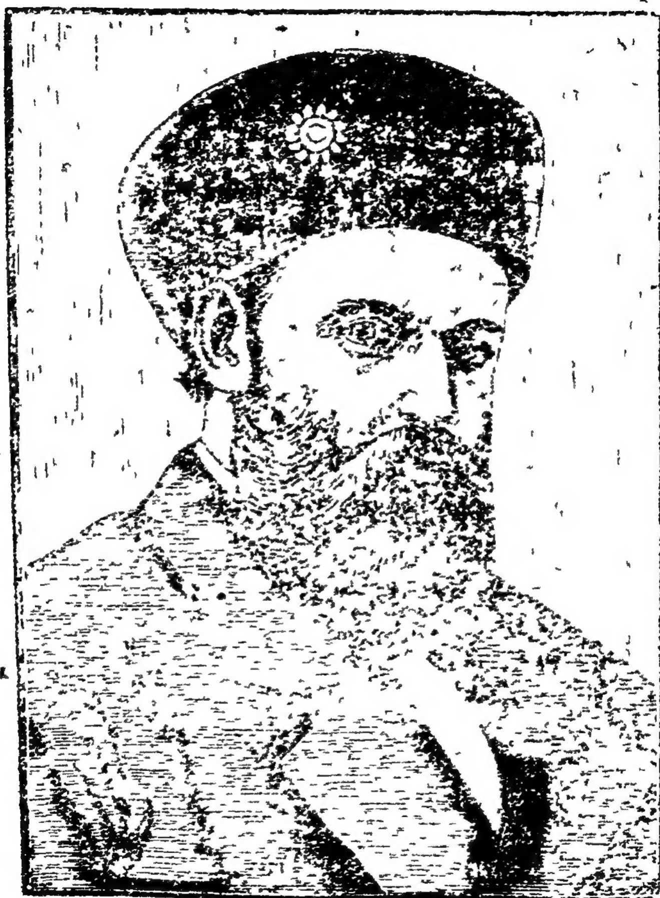
यह ऊपर लिखा जाचुका है कि यह पोथी अंगरेजी पुस्तकोंके आधार पर लिखी गई है। ऐसी दशामें सम्भव है कि इसमें जहां कहीं फारसी शब्द आये हैं उनके उच्चारणमें भूल रह गई हो। इस भूलके संशोधनका साधन मेरे पास नहीं था इस कारण मैं पाठकोंसे क्षमा मांगता हूं।

अंतमें मैं 'श्रीवेंकटेश्वर यन्त्रालय' के स्वामी श्रीयुत सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीको अंतःकरणसे धन्यवाद देता हूं। जो मुझ अधिकारी पुरुषोंको आश्रय देते हैं। इस समय मैं उन हिन्दी रसिकोंको भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता हूं जिन्होंने इससे पूर्व प्रकाशित मेरी पुस्तकोंका आदर किया है। उन्हीं महाशयोंसे मुझे आशा है कि इसी तरह वे लोग समय २ पर मेरा उत्साह बढ़ाते रहेंगे।

बम्बई
आषाढ कृष्णा ७ सं० १९५९.

हिन्दीका क्षुद्रसेवक—
लज्जाराम शर्मा बूंदी निवासी.

अमीर अबदुर्रहमानखाँ ।



श्रीः ।

अमीर अबदुर्रहमानखाँ ।

प्रथम भाग ।

प्रकरण—१.

काबुलराज्यका इतिहास.

यद्यपि भारतवर्षके निवासी अफगानिस्तानकी समस्त प्रजाको अफगान मानते हैं, अफगान शब्दही आजकल वहाकी समस्त प्रजाको जातिसूचक नाम होगया है परन्तु काबुल राज्यमें इस समय जितने मनुष्य बसते है वे सबही अफगान नहीं है। वहा, अफगानोंके सिवाय हिन्दू और गुलाम ये दो जातियाभी निवास करती है। काबुल राज्यका भारतवर्षसे किसी न किसी तरहपर बहुत कालसे संबध चला आता है, अफगानिस्तान भारतवर्षका पडोसी है इस कारण इसबातका पता लगाना बहुत कठिन है कि उस देशमे हिन्दू कबसे आकर बसेहै। हमलोग यह मानते है कि, महाभारतके समयमें जबकि मुसल्मान जातिका संसारमें जन्म नहीं हुआ था वहां हिंदुओंका राज्य था और हिन्दूही वहाकी प्रजा थी परन्तु ऐतिहासिक सिद्धान्तोंपर यह नहीं कहा जासकता है कि, आज कलके काबुली हिन्दू उसीसमय बसनेवाले हिन्दुओंकी संतान है और न ठीक यही मालूम होसकता है कि, उस भूभागमेंसे हिन्दुओंका राज्य कब नष्ट हुआ। पंजाब केसरी महापराक्रमी महाराजा रणजीत सिंहने

काबुलमें अपना झंडा जा गाड़ा था। उनके समयके बनाये हुए अबतक दोचार स्थान उस देशमें विद्यमान हैं। संभव है कि, उसी समयसे थोडे हिन्दू वहां जा बसेहो। कुछभी हो परंतु इतना अवश्य विदित हुआ है कि, कट्टर मुसलमानोंके राज्यमें जहां हिन्दू धर्मका निर्वाह होना कठिन हैं चाहे उन लोगोंके आचरण कैसेहीहो परंतु कुछ लोग ऐसे बसते अवश्य हैं जो अपनेको हिन्दू बतलाते हैं। मिस्टर बेलो कहते है कि वहांपर बरकी नामकी एक जाति है जो हिन्दीसे मिलती जुलती भाषा बोलती है।

हिन्दुओंके सिवाय वहां एक जाति औरभी है जो मुसलमान होनेपरभी, अफगानोंमें गिनेजाने योग्य नही है। यह वह जाति है जिसे अफगानिस्तानके अधीश समयपर युद्धमें उनसे हारनेवाली सेनामेंसे पकडलाये हैं। इस समुदायके लोग गुलाम कहलाते है किन्तु जिस जातिका आजकल काबुलमें राज्य है, जो संसारके वीरोंमे बलिष्ठ दृढ और साहसी गिनीजाती है उसके तीन भेद हैं। एक दुर्रानी वा अफगान, दूसरे गिलजई और तीसरे पठान वा सीमाप्रांतके निवासी। इन तीनोंमेसे प्रत्येक भागके अनेक खंड हैं अफगानोंके दुर्रानी भेदमे बरकजाई विभागके अमीर अबदुर्रहमान, जिनका यह चरित्र है, एक बलाढय, युद्धपटु, साहसी, और राजनीति-परायण नरेश थे।

मुझे इस पुस्तकमें केवल अमीर अबदुर्रहमानखॉका चरित्र लिखना है इसलिये दुर्रानियोंसे पहले अफगानिस्तानकी क्या दशा थी वहॉ कौन जाति निवास करती थी और वहां किसका राज्य था इन बातोंका उल्लेखकर अपनी लेखिनीको विषयांतरमें लेजाना मैं उचित नहीं समझताहूं और न दुर्रानी अमीरोंका इतिहास लिखनेमेंही इस पुस्तकके अधिक पृष्ठ रंगनेकी आवश्यकता है परन्तु मै जहां-तक अनुमान करताहूं अमीर अबदुर्रहमानका चरित्र आरंभ करने पूर्व दुर्रानियोंका काबुलमें कब और किसतरह राज्य स्थापित हुआ,

उनमें कौन २ अमीर कैसा २ होगया और वहाकी अबदुर्रहमानसे पहले स्थिति किसप्रकारकी थी-इन बातोका थोडा २ दिग्दर्शन करना आवश्यक है। बस इसी कारण यहापर उन लोगोंका संक्षेपसे इतिहास लिखतार्ह। इस इतिहासको पढने पूर्व यदि पाठकलोग अमीर अबदुर्रहमानका वंशवृक्ष पढगे तो उन्हे इसका विषय भलीभांति विदित होजायगा।

दुरानियोंमसे सदोजाइ विभागके अहमदखाने अपना नाम अहमदशाह रखकर इस घरानेका आरंभ किया था। अंगरेजी ग्रंथकार इस अहमदखाका समय सन १७४७ के लगभग बतलाते है। इस घरानेके स्थापित होकर प्रकाश पानेका इतिहास इसतरह पर है कि, नादिरशाह नामक किसी तुर्क लुटेरेने जो लुटेरोका सर्दार था उस समयसे पूर्व ईरानपर चढाईकर वहाके कंगाल निवासियोंको भगादिया। उसने ईरानपर अपना आधिपत्य जमानेबाद अफगानिस्तानमें अपना राज्य स्थापित करनेके लिये काबुलपर चढाइ की और दो वर्षकी लडाइमें कन्दहार तथा काबुल लेलिया। उसीने इस प्रदेशमें शांति स्थापितकर प्रजाके मन जीतलिये और अपनी सेनाके बडे २ पद काबुलियोंको देकर उन्हें युद्धकी अच्छी शिक्षादी। जिस समय सन् १७४७ई० म नादिरशाह मारागया उसके साथी ईरानी सरदारोंने अफगानोंको बहुत सताया। वे लोग ईरानसे भागकर अफगानिस्तानमें चले आये। यहा आकर उन लोगोंने पंचायत इकट्ठीकी। इस पंचायतमें दुर्रानी और गिलजाइ लोगोंका भाग अधिक था। इन्होंने सोचा कि, अब ईरानियासे मेल रहना कठिन है इसलिये अपना राज्य स्वतंत्र बनानेके निमित्त अपनी जातिमेंसे एक बलाढ्य पुरुषको राजा बनाकर सबको उसका अनुयायी-आज्ञापालक बनना चाहिये। कई दिनोंके वादानुवादके बाद सदोजाइ दुरानियोंमेंसे अहमदशाहको जिसका वर्णन ऊपर हुआ है राजा बनाना निश्चय हुआ। सन् १७४७ ई० में कन्दहारकी मस्जिदमें हजारो अफगानोंके समक्ष उन्होंकी इच्छासे इसने अफगान

राज्यका मुकुट धारणकर इस राज्यकी नींव डाली । जिस समय यह कार्य होरहा था सिंध और पंजाबके राजाओंकी ओरसे नादिरशाहके पास भेंट लेकर कुछ सेना आई । अहमदशाहने इस सेनाको काटकर नादिरशाहके लिये भेजी हुई भेटको छीन लिया। भेंट ऐसी वैसी नहीं थी इसमें अच्छा खजाना था राज्यके साथ ही असंख्य रुपया और मोहरें पाकर अहमदशाहकाबल दुगुना होगया । बस उसने इस द्रव्यका बहुतसा भाग अपनी सेनामें बाँटकर उसे अपना राज्य बढानेकी अधिक उत्तेजना दी। परिणाम यह हुआ कि, उसका राज्य ईरानमें मशद तक और भारतमें लाहौर तक फैलगया । ऊपर जिस नादिरशाहका वर्णन हुआ है वह वही नादिरशाह है जिसका नाम भारतके इतिहासोंमें काले अक्षरोंसे लिखाहुआ है, और अफगान राज्यको स्थापित करनेवाला अहमदशाहभी वही अहमदशाह दुर्रानी है जिसे भारतका आधुनिक इतिहास पढनेवाले अच्छीतरह जानते हैं ।

अहमदशाह दुर्रानीने इस नवीन राज्यमें छब्बीसवर्ष शासनकर मृत्यु पाई। इसके बाद वहांका राजा तैमूरशाह हुआ। इसने अपना राज्य बढ़ाने और शक्ति दृढ करनेके बदले भोगविलासमें अधिक मन लगाया । यही कंदहारको छोड़कर काबुलमें जाबसा और उसी गांव-को जो उससमय निरा गांवही था अपनी राजधानी बनाया। उसके समयमें आईन बिलकुल न रहा। सडकों और नगरोंमें डाके पडने लगे, राज्यभरमें अराजकता फैलगई और जिसके शरीरमें कुछ शक्ति-हुई वही अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करनेका प्रयत्न करनेलगा। उसके हाथसे मशद, पंजाब, सिंध और बलूचिस्तानका जीताहुआ राज्य निकलगया। अमीर अबदुर्रहमानने अपने चरित्रमें काबुलकी बनावटपर खेद प्रकाशित करते समय इसके लिये लिखा है कि, जिसने काबुलको इस राज्यकी राजधानी बनाया वह निरामूर्ख और पागल था।

सन् १७९३ ई० में तैमूरके मरनेपर अफगानिस्तानमें एक विशेष विप्लव खड़ा हुआ। इसके कईएक पुत्र थे वे जुदे २ सूबोंके सूबेदार थे। उन्होंने अपना २ सूबा स्वतंत्र करनेका विचार किया। केवल इतनाही नहीं वरन काबुलकी राजधानी छीनकर वहाका स्वतंत्र मालिक बननेके लिये भाई भाइयामें युद्ध होने लगा। जमानाशाह तैमूरके बाद गद्दीपर बैठा। उसके भाई शुजाउलमुल्कने जो कंदहारका सूबा था काबुलपर चढाईकी और हिरातके सूबेदार तैमूरके पुत्र महमूदने हिरातका स्वतंत्र अधिकारी बनकर काबुलपर अपना झंडाजा उड़ाया। जिससमय इन तीन भाइयोंमें आपसमें तलवार चमक रही थी एक चौथे मनुष्यने शिर उठाया यह चौथा मनुष्य वही था जिस ने कंदहारमें अहमदशाहके गद्दीपानेके समय विरोध किया था। यह बरकजाई दुरानियोंका सरदार था। इसका नाम पायदाखाथा। यही पायदाखा जिसका नाम वंशवृक्षके मूलमें है अमीर अबदुर्रहमानका परदादा था।

पराक्रमी पायदाने अपनी शक्ति और गौरवसे जमानाशाहकी सहायताकर उसे काबुलकी गद्दीपर स्थापित किया और उसके भाइयोंको कैदकर उन्हें मोटी खुराक खानेपर विवशकिया। उन्होंने जेलमें बंदी बनकर बहुतकष्ट पाये और इस कारण लाचार होकर उन्हें जमानाशाहको काबुलका असली राजा स्वीकार करनापड़ा। जमाना शाहने गद्दीपातेही अंधेर मचादिया। उसका कोष खाली होगया। दरबारियोंमें झगड़ा खड़ाहुआ। ईरानवालोंने उसे ईरानकी ओर आंख उठाकर देखनेसे रोकदिया और भारतवर्षकी ईस्ट इंडिया कंपनीने उसे भारतवर्षपर—उस भारतवर्षपर जो अनेक वर्षोंसे अफगानोंके लूट खसोटका केन्द्र बनरहा था चढ़ाई करनेसे वंचित किया। बरकजाई दुर्रानी जो उस राज्यके पुश्तैनी सरदार थे और राज्य स्थापित होनेके समयसे बड़े उहदे पाते आये थे उनपरकोपकर उसने उनके पद छीनलिये और अंतमें अपनेको काबुलका राज्य दिलाकर उपकार करने वाले पायदाखाका वधकर कृतज्ञताका बदला कृतघ्नतामें दिया। पायदाके

मरतेही उसके लडके भागकर जमानाशाहके भाई महमूदमें जा मिले । उन्होंने उससे हिरातमें मिलकर जमानाशाहपर चढाई करनेको उत्तेजित किया । समस्त बरकजाई जातिने पायंदाके बडे पुत्र फतेहखांको अपना सरदार बनाकर महमूदका लडनेमें साथ दिया इन लोगोंकी सहायतासे महमूदने जमानाशाहको जीतकर उसे गादीसे उतारदिया और उसकी आंखें निकलवाकर वह सन् १८००ई० में काबुलका शाह हुआ ।

उसके समयमेंभी काबुल राज्यमे शांति न होने पाई । इसने केवल चार वर्ष राज्य किया किन्तु चारही वर्षमें कमसेकम आठबार इसे गिलजाइयोंसे लडना पडा । सैंकडों मनुष्योंके प्यारे प्राण नष्ट होनेके बाद जब गिलजाई शान्त हुए तो काबुलमे एक नया बखेड़ा खडा होगया । वहांके शिया और सुन्नियोंमे मारकाट होने लगी । महमूदने शिया लोगोका साथ देकर सदोजाई और बरकजाई लोगोंको अधिक भडका दिया क्योंकि ये दोनों जातियां सुन्नत जमातकी हैं और शाहने अपने शिया जातिवालोंकी सहायता की थी इसलिये ये लोग शाहसे अप्रसन्न होगये । महमूदके पतनका यहींसे आरंभ हुआ । जिससमय फतेहखां बामियानमें हजार लोगोका दमन कररहाथा सरदारोंने गुप्त प्रपंचसे शाहके छोटे भाई शुजाउलमुल्कको बुलाकर उसे सहायता देनेका प्रण किया । शुजाके आतेही महमूदने भागकर बालाहिसारकी शरण ली और बडी धूमधामके साथ शुजा काबुलकी गादीपर बैठा ।

शुजाने गादीपर बैठतेही अपने बडे भाई राज्यच्युत महमूदको पकडवाकर उसकी आंखें निकलवालीं और उसे कैदकर बहुत कष्ट दिया । जिससमय फतेहखांका बामियानसे लौटा काबुलमें शुजा राज्य कररहा था । फतेहखांका शुजा द्वेषी था क्योंकि, उसके बडे भाई जमानाकी आज्ञासे इसीने उसके पिता पायंदाखांको मारा था । उसने गुप्त रीतिपर प्रपंचकर महमूदको कैदसे छुडाकर उसे फिर काबुलकी गादीपर बिठलाया और आप वहांका वजीर बन बैठा । शुजाने फतेहखांके डरसे भागकर पंजाबकेसरी महाराजा रणजीतसिंहकी शरणली परंतु रणजीत सिंह काबुलके कईएक सूबेपर पहलेहीसे दखल करचुके थे इसलिये

उन्होंने इसकी सहायताकर नया बखेड़ा खड़ा करना उचित न समझा और इसके पाससे वह हीरा जो 'कोहनूर' के नामसे प्रसिद्ध है छीन लिया सिक्खोंसे आश्रय न पाकर शुजा वहांसे भागा और सन् १८१५ ई० में ईस्ट इंडिया कंपनीकी शरणमें उसने लुधियानेमें निवास किया।

इस अवसरमें महमूद काबुलका शासक होकर भोग विलासमें पड़गया वह एक प्रभावशाली और शक्तिवान् दीवान (वजीर) फतेहखांके हाथका खिलौना था। फतेहखां उसे जिसतरह नचाता था उसी तरह नाचता था। फतेहखांने शाहको अपनी मुट्ठीमें लेकर काबुलके नष्ट भ्रष्ट राज्यको फिर-से उन्नति देना आरंभ किया और कई अंशोंमें उसे सफलता भी हुई परन्तु उससमयकी उन्नति ईश्वरको स्थायी रखना अभीष्ट नहीं था। महमूदके लड़के कामरांकी जीभ राज्यकी तृष्णामें लपलपाने लगी। वह पिताको मारने परभी फतेहखांके रहते हुए इसकाममें सफल नहीं हो सकताथा। राज्यके लोभी कामरान फतहखांको बहुतही दुःख देकर मारडाला। शक्तिमान् फतेहखां-प्रभावशाली फतेहखांके मरतेही काबुलमें अरा जकता फैलगई। फतेहखां एक वीर पुरुष था, वह वीरत्वके बलसे अपनी राजनीतिकी चालोंसे काबुलकी रक्तको प्यासी प्रजाको दबाये रहता था किन्तु जब फतेहखां मरगया तो काबुलकी प्रजा विना अंकुशका हाथी होगई। महमूद और कामरांको अपने प्राण लेकर भागनापड़ा। इन्होंने काबुलसे भागकर हिरातमें अपना राज्य स्थापित किया और हिरातको छोड़कर अफगानिस्तानका शेषभाग फतेहखांके भाइयोंने बांट लिया। इसप्रकारसे काबुलका राज्य दुर्रानी शाहके घरानेमेंसे निकलकर दुर्रानी वजीरके घरमें आया।

फतेहखांका अधिक प्रेम अपने छोटे भाई दोस्त मुहम्मदपर था वह बड़ा दृढपुरुष था और काबुल जैसे प्रदेशका शासन करनेकी शक्ति रखता था बस काबुल जलालाबाद और गजनी इसीके हिस्सेमें आया। दोस्त मुहम्मदने गद्दीपर बैठतेही अपना नाम अमीर दोस्त मुहम्मद रक्खा। तबहीसे काबुलका नरेश अमीर कह-

जाता है । दोस्तमुहम्मदके शासनमें व्यापार संबंधी संधि करनेके लिये भारत गवर्नमेंटने अपना दूत काबुल भेजा। इस दूतका नाम कप्तान एलेक्ज़ेंडर बर्नेस था । जिस समय कप्तान साहब काबुल पहुंचे वहां रूसके दूतकी काबुल आनेकी चर्चा होरहीथी।प्रसिद्ध इतिहासकर्ता मिस्टर जस्टिस मेकार्थीने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि, दोस्त मुह-म्मद अंगरेजोंका दोस्त था। यदि कप्तान साहब चाहते तो अवश्यही वह रूसके दूतको विना मिले टरकासकता था । पंजाबकेसरी महाराजा रणजीतसिंह अंगरेजोंके मित्र और काबुलके शत्रु थे। दोस्त मुहम्मदने अंगरेजोंसे मिलकर रणजीतसिंहसे मित्रता करना चाहा था परंतु भारत गवर्नमेंटने उसकी बातपर विश्वास नकर उसे शत्रु मानलिया । सरकारको भय था कि रूस गवर्नमेंट यदि काबुलसे प्रेमकर हिरात लेलेगी तो कंदहार द्वारा उसे भारतपर चढ़ाई करनेका मार्ग मिल-जायगा। बस इसीभयसे भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड आक-लैंडने दोस्त मुहम्मदसे लड़ाई ठानली । दोस्त मुहम्मद भागगया और गवर्नमेंटने शाहशुजाकी इच्छा नहोनेपरभी उसे काबुलका अमीर बनाया। शुजासे काबुलकी भयंकर प्रजा अप्रसन्न थी इसीलिये गवर्न-मेंटने उसकी रक्षाका भार अपने ऊपर लेकर वहां ८ हजार सेना रक्खी। थोडे दिनोंके बाद अर्थात् सन् १८४१ई० के नवंबरमें काबुलमें उपद्रव होगया शाहशुजा मारडालागया और अंगरेजी आठ हजार सेनामेंसे काबुलि-योंके छुरेसे आठ मनुष्यभी बचने न पाये। सरएलेक्जेंडर बर्न और सर विलियम्‌मेकनाटन मारेगये और आठहजारमेंसे केवल डाक्टर बाइडु किसीतरह बचकर लुढकते पुढकते दोमासमें जलालाबाद पहुँचे। भारतवर्षके नये वाइस राय लार्ड एलनबरोने १० अक्टूबर सन् ४२ई० के मंतव्यमें प्राचीन गवर्नरोंकी युक्ति निष्फल बतलाकर कहा कि, काबुलकी स्वतंत्र प्रजापर शासन करनेके लिये गवर्नमेंटकी ओरसे अमीर नियत करना अच्छा नहीं है और न वहां सरकारी सेना रखना उचित है। बस इस मंतव्यके बाद दोस्त मुहम्मदको कलकत्तेसे लेजाकर काबुलकी गादी दीगई और इसीसमय सोमनाथके किवाड काबुलसे लौटायेगये।

दोस्त मुहम्मदने दूसरीबार अमीर बनकर अपने राज्यमें शांति स्थापन करनेका विशेष यत्न किया । उसके समयमें व्यापार बढ निकला और यात्रियो और काफलोंके लिये मार्ग निष्कंटक होगया। उसने राज्यवृद्धिकी इच्छा छोडकर अपने वर्त्तमान राज्यकी रक्षा करनेक प्रयत्न किया । यद्यपि उसके भाई वीर लडाकू थे और उसके उमराव भी बडे कट्टर थे परन्तु उसने अपनी नीतिनिपुणतासे सबको सन्तुष्ट रक्खा और इन्हें अपनी सेनामें बडे २ ओहदेकर काबुलकी अव्यव स्थित सेनाको एक शृंखलामें बांधदिया । केवल इतनाही नहीं उसने कंदहार, हिरात, और तुर्किस्तानका विजयकर इन प्रान्तोंको अपने राज्यमें मिलालिया।

यद्यपि दोस्त मुहम्मदके अफजलखा और आज़िमखा नामके दो पुत्र शेरअलीसे बडे थे परन्तु शेरअलीपर उनकी कृपा विशेष थी। इसकारण उन्होंने अपने बाद अपना वारिस उसीको नियत किया । दोस्त मुहम्मदके मरनेसे काबुलमें जो बखेडे खडे हुये थे उनको शांतिकर शेरअलीने भारतगवर्नमेंटसे मित्रता बढाई । इसी मित्रताके उपलक्षमें वह स्वयं ३ मार्च सन् ६९ ई० को भारतमें आकर अंबालेमें लाटसाहबसे मिले । २६ मार्चको उनके सत्कारमें लाटसाहबने अंबालेमें दरबार किया । सरकारने उनका केवल सत्कारही नहीं किया वरन् जिससमय उन्होंने भारतवर्षमें आकर लाटसाहबसे मिलनेकी इच्छा प्रकटकी छः लाख रुपये देकर भाइ आजिमखा और भतीजे अबदु रहमानसे विजय करवाया ।

इसके बाद काबुलमें जो घरेलू झगडे हुए उनकी बात तो आगे चलकर अमीर अबदुर्रहमानके चरित्रमें विस्तारसे कही जायगी परन्तु यहां इतना लिखदेना आवश्यक है कि, सन् १८७८ ई० में भारतके वाइसराय लार्ड लिटनको सन्देह होगया कि, काबुलके दरबारमें रूसका गुप्त प्रपञ्च चल रहा है इसी प्रपञ्चको दूर करनेकेलिये लार्डलिटनने शेरअलीको लिखा कि, हमारा दूत सदा काबुलमें रखनेकी आज्ञा दो । इसबातको

शरअलीने स्वीकार नहीं किया । बस इसीसे असंतुष्ट होकर लाटसाहबने ब्रिटिश दूतको बहुतसी सेना सहित काबुलभेजा । २१ सितंबरको सरकारी सेनाके पेशावरसे विदा होकर अफगानिस्तानकी सीमापर पहुँचतेही वहांके एक कर्मचारीने इसे रोकदिया । इसबातसे गवर्नमेंटने अपना अपमान समझकर काबुलसे युद्ध ठानदिया । लड़ाईमें अंगरेजी सेनाके आगे काबुली सेना न ठहरसकी । काबुलमें सरकारी झंडा जा गडा । अमीरशेरअली अपने प्राण लेकर भागगया । सरकारने उसके पुत्र याकूबअलीको काबुलका अमीर बनाया । सन् १८७९ई०की ५ मईको काबुलसे नवीन संधि हुई ।

इस नवीन संधिके अनुसार गवर्नमेंटने काबुलको प्रति वर्ष छःलाख रुपयेके सिवाय शस्त्र और सेना देकर काबुलकी सहायता करना निश्चय किया । इसीके अनुसार सरकारकी ओरसे नियत होकर काबुलमें अंगरेजी दूत सर लुई केवेगूनरी थोड़ी सेना सहित रहनेलगे । परंतु इस संधिका वर्त्ताव अधिक कालतक न रहने पाया । अंगरेजी जातिके द्वेषी दुष्ट काबुलियोने ब्रिटिश दूतको नौकर चाकर सेना और बाल बच्चों समेत गाजर मूलीकी तरह काटडाला । अपने दुःख सुखकी बात सरकारके आगे रोनेके लिये इनमेसे एकभी मनुष्य जीता न बचा । समाचार पाते ही डवल मार्चकर सरकारी सेना लार्डराबर्ट्स (जो उस समय कर्नल राबर्ट्स थे) के अधिकारमें २५ दिसंबर सन् ७९ ई० को काबुल पहुँची । भीषण संग्रामके बाद लार्डराबर्ट्सने काबुलके किलेपर सरकारी विजय पताका फिर जा फहराई । अमीर याकूब कैद होकर भारतवर्षमें रक्खागया । काबुलमे सरकारी झंडा तो जागड़ा परंतु वहांके अंगरेज विद्वेषी कट्टर अफगानोंका शासन करना बडा कठिन था और इसीकारण सरकार नहीं चाहती थी कि काबुलको सरकारी राज्यमें मिला लिया जाय । बस इसीलिये नया अमीर नियत करनेके लिये योग्य पुरुषकी खोज हुई । खोजमे इस चरित्रके नायक अमीर अबदुर्रहमान

सरकारके हाथ आये। अमीर अबदुरहमान इस अवसरमें रूसका आश्रय छोडकर अफगान तुर्किस्तानमें आगये थे। गवर्नमेंटने इन्हीको बुलाकर काबुलका राज्य सौंपा। इन्हें राज्यासनपर बिठाते समय सरलेपिल-ग्रिफिनने काबुलमें बडाभारी दरबार किया। उनसे सर लेपिल ग्रिफिनने स्वीकार करलिया कि भारत गवर्नमेंट आपपर काबुलमें ब्रिटिशदूत रखनेका कभी दबाव न डालेगी और न कभी आपके भीतरी कामोंमें हस्तक्षेप करनेका प्रयत्न करेगी। इन शर्तोंके सिवाय सरकारने सीमाप्रातमें शांति रखनेके लिये उन्हे १२ लाख रुपया प्रतिवर्ष देना स्वीकार कर उनसे क्वेटाके निकटका प्रदेश ले लिया। इसके बाद अथवा काबुलके घरेलू झगडोंमें जो घटनायें हुई उनका उल्लेख अमीर अबदुरहमानके चरित्रमें किया जायगा। यह काबुलका संपूर्ण इतिहास नहीं किन्तु उसका केवल दिग्दर्शन है। इसके पढनेसे अमीरके चरित्रकी सारी बातें अच्छीतरह समझमें आवेंगी। बस इसी उद्देश्यसे यह प्रकरण लिखागया है इस युद्धमें गवर्नमेंटका एक रुपयेके आठ शिलिंगके हिसाबसे १ करोड ७४ लाख ९८ हजार पौंड व्यय हुआ। अफगानिस्तानके इतिहासोंमें लिखा है कि वहा वाले इसराईलके वंशधर है। सुलेमानकी सेनाके प्रधान सेनाध्यक्ष अफगानाकी संतान होनेसे वहा वालोंका नाम अफगान हुआ और अफगानोंकी भूमिको लोग अफगानिस्तान कहने लगे। अबदुर्रहमानने अपने चरित्रमें अफगानशब्दकी यही व्युत्पत्ति लिखी है।

इस प्रकरणके अंतमें इतना और लिखना आवश्यक है कि, अमीर अबदुर्रहमानके उद्योग, साहस, बल, पराक्रम और धैर्यादि गुण जिनके विषयमें आगे लिखा जायगा उन्हे वंशपरंपरासे प्राप्त हुये थे। वह पायदाखाके प्रपौत्र, दोस्तमुहम्मदके पौत्र और फतेहखांके भाईके नाती थे। यही तीनो काबुलका राज्य स्थापित करनेवाले, उस राज्यको सुधारकर उसे उच्च स्थितिपर लानेवाले पराक्रमी पुरुष होगये है और इन्हीके चरित्रोंसे अमीर अबदुर्रहमानने उच्च शिक्षाली है।

प्रकरण—२.

बालवय और युद्धशिक्षा ।

एक बलाढ्य राज्यके स्वामी, शक्तिमान् राजाके पौत्र और काबुल राज्यके किसीसमय उत्तराधिकारी होनेपरभी अमीर अबदुर्रहमानका जन्म किस सन् के किस महीनेकी किस तारीखको हुवा था इसबातका कुछ पता नहीं है । उनके चरित्रमें यहभी नहीं लिखा है कि, उनका जन्म किस स्थानपर हुआ था परंतु अंगरेज़ी ग्रंथकारोंने अनुमान किया है कि, अमीर अबदुर्रहमानका जन्म सन् १८४० ईसवीमें हुआ था । जिस समय यह नौ वर्षके थे इनके पिताने इन्हें काबुलसे बलख जहांके वह, गवर्नर थे, बुलाया । जिन दिनों अबदुर्रहमान बलख पहुँचे इनके पिता अफज़लखां शिबरग़ानोंसे युद्ध कररहेथे । दो मासके बाद जब यह वहांका विजय करआये तब पिता पुत्रकी भेंट हुई । पिताने पुत्रको देखकर प्रेमाश्रुसे अपना अंतःकरण ठंढा किया और पुत्रने पिताके दर्शनकर अपना जन्म सफल समझा ।

इस भेंटके थोडेही दिन बाद पिताने अबदुर्रहमानकी शिक्षाका प्रबंध किया । अबदुर्रहमान बड़े सुस्त थे । दिन रात पोथी रटते थे भी इन्हें कुछ याद न हुआ । इस बातसे इनको पढनेपर घृणा होगई और तबहीसे इन्होंने सैर शिकार और घोड़की सवारीपर मन लगाया । इनको पिताकी आज्ञासे पढ़नातो पड़ताही था किन्तु जिस संथाको यह पहिले दिन पढ़ते थे उसेही दूसरे दिन भूल जाते थे । एक वर्षके अनंतर बलखके निकट तख़्तपुलमें एक पाठशाला जिसके साथ बागभी था इनके लिये खोलीगई और यहींपर पिता अपने लिये महल और सेनाके लिये छावनी बनाकर रहनेलगे । चौथे वर्षमें पिता, जब दादा दोस्तमुहम्मदकी सेवामें उपस्थित होनेके लिये काबुल गये तो अपने कामका चार्ज इन्हें देगये । यह घटना उस वर्षके वसंत-ऋतुकी है किन्तु जाडेके आरंभमें पिताने इनको लिखा कि, तुम्हारे दादाने कृपापूर्वक तुम्हें ताशकरग़ानकी गवर्नरीका सम्मान प्रदान किया

। तुम एक हजार सवार, दो हजार पैदल और छ तोपे लेकर वहां जाओ। इस आज्ञाको पाकर इन्होंने ताशकरगानको कूचकिया और चौदह वर्षकी उमरमें यह दोस्तमुहम्मद जैसे बुद्धिमान् दादाकी आज्ञासे वहांके गवर्नर बन गये। इन्होने ताशकरगानकी गवर्नरीका भार अपने हाथमे लेकर प्रजाका कर घटाया, कर नियत किया, सेनाका संशोधन कर प्रजाके हृदयमे भक्ति उत्पन्नकी और फसलके बिगडनेपर कर लेनेका नियम उठा दिया।

दो वर्षके बाद जब पिता काबुलसे लौटे तो इस प्रातका हिसाब देखकर असन्तुष्टहुए। इन्होने प्रजाका जितना कर घटाया या छोडदिया था वह उन्हे पसंद न आया और इस बातको स्वीकार नकर उन्होंने कह दिया कि, कर अवश्य लियाजायगा क्योंकि हमारे पास सेना अधिक और प्रात छोटी है। इन्होने उनसे बहुतेरा कहा परन्तु उन्होंने इनकी एक भी न सुनी और तीनमास वहा ठहरकर वहासे एक लाख रुपया इकट्ठा करलिया। इसी बातपर इन्होंने गवर्नरीका इस्तेफा देदिया और उसमें लिखा कि "जबतक मुझे पूर्ण अधिकार न मिले मै शासन नहीं कर सकता हू। ताशकरगानकी गवर्नरी छोड़कर जिससमय अबदुर्रहमानने फिर सैर शिकार और पढने लिखनेमें मन लगाया, हिरातके गवर्नर वजीर यार मुहम्मदखाने इनके पिता अफजलको लिखा कि मै अपनी लड़की आपके पुत्र अबदुर्रहमानखाको देना चाहताहू। इस बातको अफजलखाने बहुत प्रसन्नतासे स्वीकार करलिया क्योंकि वजीर यार मुहम्मदखा काबुल राज्यमें बडे प्रभावशाली पुरुष थे। उनसे सबंध होजानेसे अफगानिस्तानमें इनका बल दुगुना होजाना संभव था। बात यथार्थ निकली। इस विवाहसे वास्तवमें इनकी शक्ति बहुत बढगई। इनके पिताकी सेनाका प्रधान अध्यक्ष एक अंगरेज था। उसने ईसाई मत छोडकर इस्लामी ग्रहण करनेके साथही अपना नाम शेर मुहम्मदखां रखलिया था। यह इनके पिताका बड़ा विश्वास पात्र और योग्य पुरुष था। इससमयभी इनकी सेनाका अधिक भाग कदाचित इसी

अंगरेजकी शिक्षासे शिक्षित हुआ था। जिन लोगोंने काबुलके विषयमें पुस्तकें लिखी है उनमें इस व्यक्तिके नामका कहीं वर्णन नहीं है और न अमीर अवदुर्रहमानने अपनी पुस्तकमें लिखा है परंतु उनके चरित्रमें इसका वर्णन अवश्य हुआ है।

जनरल शेरमुहम्मदखांका अवदुर्रहमानपर बडा स्नेह था। उसने इनके पिताको उत्तेजना देकर कहा कि जिसदिन मैं मरजाऊंगा यहां युद्ध विद्याका जाननेवाला कोई न रहैगा इसलिये आपके पुत्रको मेरे पास सैनिक शिक्षाके लिये छोड दीजिये। पिताकी आज्ञापाकर अवदुर्रहमान इनके पास युद्ध विद्या और सर्जरी सीखने लगे। दो तीन वर्षमें जव यह इसकाममें प्रवीण होगये तो इनके पिताने काबुलसे कईएक वंदूक वनानेवालोंको वुलाकर इसकामका वलखमे कारखाना खोला। यहांपर इन्होंने शस्त्रवनाना सीखा और इसीसमय तीन राइफलें तैयार कीं।

प्रकरण—२.

कैदमें अवदुर्रहमान।

अवदुर्रहमानके पिता अफ़जलखांकी जिन सरदारोंपर कृपा थी उनमें एकका नाम सरदार अवदुर्रहीमखां था। यह अवदुर्रहीमखां अवदुर्रहमानके उत्कर्षको देखकर वहुत जलता था। यह समय २ पर अफ़जलखांको वहँकाकर न मालूम क्यो उन्हे अवदुर्रहमानपर चिढाया करता था। कदाचित् इसे भय था कि, यदि अवदुर्रहमान खूब सीख साखकर कभी तैयार होजायगा तो किसीदिन मेरा पद छिननेमें संदेह नही है। इसने एक दिन लागपाकर अफ़जलखांसे कहा कि, आपका लड़का शराव और गांजापीता है। इस वातको सुनकर पिताने तो इनसे कुछ न कहा परंतु इस प्रकारका कलंक अवदुर्रहमान जैसे लड़केसे कैसे सहन होसकता था और वह कलंकभी ऐसे समयमें जवाकि वह

इन बातोंसे पूरी घृणा रखते थे क्योंकर सह्य होना सभव है। बस इसी लिये अबदुर्रहमानने पितासे बिना कहे सुने वहासे भागकर अपने श्वशुरके पास कंदहार चले जानेका मनसूबा किया । जिस समय यह भागनेकी चुपचाप तैयारी कररहे थे इनके नौकरोंने इनके पितासे जा रिपोर्ट की । रिपोर्ट पातेही अफजलखाने इसका अनुसधान किया और भागजानेकी बात सत्य मालूम होने पर इनको कैद किया । कैद करनेके साथही इनके नौकर चाकर, गुलाम और सिपाही छीन लियेगये और इनके पैरोंमें बेडी डाल दीगई । केवल बलखसे डरकर इन्होंने भागजानेमें जो भूलकी थी उसे अपना चरित्र लिखते समय इन्होंने स्वीकार किया है। इन्होंने लिखा है कि, मेरी मर्खतासे जो भूलहुई उसे रगीन बनाकर अबदुर्रहीमने मुझे तग करवाया।

एक वर्षतक जेलका कष्ट पाकरभी जब अबदुर्रहमान नहीं छूटे तो उस समय एक विशेष घटना हुई। इनके शिक्षक और मुहम्मदखांका देहांत होगया । देहान्त होतेही बलख प्रान्तकी सेनाके प्रधानअध्यक्ष बननेके लिये अबदुर्रहमानका शत्रु अबदुर्रहीम उम्मेदवार हुआ परतु अब अफजलखांका इसपर विश्वास नहीं रहा था, वह उसे कपटी समझने लगे थे इसकारण वह पद जाफिरखांके पुत्र अबदुर्रऊफखांको दिया। अबदुर्रऊफने इस पदको अस्वीकारकर अफजलखासे कहा कि, आपका पुत्र एक वर्षतक कैदरहकर अपने अपराधका दड पाचुका है। यह और मुहम्मदखांका काम करने योग्य है। इनके पिताने इस बातको पहले स्वीकार नहीं किया परतु जब अबदुर्रऊफने अधिक आग्रह किया तब इन्हें जेलमसे बुलाया।

अबदुर्रहमान जिस समय जेलसे निकलकर सीधे पिताके पास पहुँचे उनके पैरोंमें बेडिया पडीहुईथीं, उनके कपडे मैले कुचैले और फटे टूटे थे, उनका मुह धोया हुआ न था और न उनके बालोंमें कघा पडा था। पुत्रकी दुर्दशा देखकर पिताकी आंखें आंसुओंसे डबडबा आईं।

उन्होंने पूंछा कि, तू ऐसी चाल क्यों चलता है । अबदुर्रहमानने उत्तर दिया कि, मेरीदुर्दशाका कारण यही अबदुरहीम है। अबदुर्रहीम सुनकर पीला पड़गया। यह बात सुनकर अफ़ज़लखांने सेनाके सब अफ़सरोंको सुनाकर कहा कि, मैं अपने इस पागल लड़केको आपलो-गोंको अफसर नियत करताहूं। इस बातको सब लोगोंने सहर्ष स्वीकार करलिया। बस इसीतरह जो अबदुर्रहमान जेलमें पडे २ अपने-दिन काट रहे थे बलखकी समस्त सेनाके अध्यक्ष बनगये और इनका विरोधी अबदुर्रहीम इनके अधीन हुआ। इन्होंने सेनाका अधिकार हाथमें लेकर योग्य २ अफ़सर नियत किये और थोडे कालमें उसकी ठीक व्यवस्था कर पिताको प्रसन्न किया। पिताने इनको सैनिक कामोंमें चतुर देखकर इस कार्यका पूरा अधिकार इन्हें देदिया। इन्होंने अपने चरित्रमें स्वयं लिखा है कि, उससमयकी सेना ऐसी उत्तम थी जैसी न कभी हुई और न होगी क्योंकि, अमीर शेरअलीके शासनमें जिसतरह अफ़सर लोग घूंस लेकर काम बिगाडते थे उसीतरहसे आजकलके विलासी अधिक होगये हैं। किसी विद्वान् कविने कहा है कि, "चोरोंसे सलाह कभी न लो क्योंकि, उनकी बुराई अवश्यही तुम्हारे ऊपर कुछ न कुछ असर कर जायगी। परमेश्वरकी कृपासे मेरी प्रजाको मुझसे शिक्षा लेकर अपनी उन्नति आपही करना चाहिये।"

प्रकरण–४.

वीरताके अनेक उदाहरण।

थोड़े कालके पश्चात् जब अबदुर्रहमान अपने पिताके साथ ताशकरगान गये मीरअतालीक़का भाई मीरकी ओरसे नज़राना लेकर अफ़ज़लखांके पास आया। अफ़ज़लखांने उसको बहुतसा सत्कारकर समझाया कि, आपका और आपके देशका अफ़गानिस्तानसे घनिष्ठ संबंध है इस-लिये हमारे साथ द्वेष भाव छोडकर काबुलके अमीर दोस्तमुहम्मदका आधिपत्य स्वीकार कीजिये। इसबातको सुनतेही अमीरअतालीक और

उसका भाई आगबबूला होगया। परिणाम यह हुआ कि, अबदुनमें अफज लखाकी सेनासे अतालीकका संग्राम हुआ। अतालीकका भाई मारागया और भाईका मरना देख उसने बुखाराके अमीरसे पुकार की। बस यह सुनकर बुखाराके अमीर मुजफ्फर उसकी सहायता देनेको तैयार हुए और थोडे दिनकी तैयारीके बाद अफलजखाका युद्ध मीरअतालीकसे क्यों वरन् बुखाराके अमीरसे ठनगया। अफजलखाने अपने भाइ अजी मखाको बुलाकर बुखाराके अमीरसे लडनेके लिये नियत किया और साथमें सेनाका अधिकार देकर अबदुर्रहमानको भेजा। यद्यपि अबदुर्रे हमानकी सेनामें ६० हजार और अतालीककी सेनामें ४० हजार मनुष्य थे परन्तु इस बातका भेद न पाकर अतालीक अबदुरहमानके ठाठसे घबडा उठा। थोडी लडाईके बाद उसे भाग जाना पडा। अबन्तेर गवनरपर अबदुरहमानने दयाकर उसका प्राणदान दिया। बस इस बातको देखकर अतालीककी सेना इनपर मोहित होगइ। और अबदुर हमानने अतालीकका सारा प्रदेश अपने हाथमें लेकर वहांके खुतबेमें अपने पिताका नाम डलवा दिया। जिससमयकी यह घटना है अबदुर हमानकी उमर बहुत थोडी थी। इसके बाद जब सरदार यमनखाने अजीमखासे सेना माँगी और बदख्शाका उपद्रव शांत करनेके लिये चचासे आज्ञा मांगकर अबदुर्रहमानका जानेको तैयार हुए तब चचा अजीमखाने उनसे कहा था कि, "मामला बडा गभीर है। अभी तुम्हारे डाढी नहीं निकली है तुम साहस खो बैठोगे।" परन्तु साहसी अबदुर्रे हमान इस बातसे कब डरनेवाले थे तुरत अपनी सेनाका कुछ भाग लेकर जा पहुँचे। तीन महीनेकी लडाईके अनंतर एकदिन फदागनके मीरके मुख्य धर्मोपदेशकने अबदुर्रहमानको न्योता दिया। साहसी अबदुर्रमान निडर होकर उसके यहा चले तो गये परन्तु उन्होंने ३०० सवार और दोसौ पैदल अपने साथ लेलिये और सौ सवारोंको भेजकर पहले हीसे उस धर्मोपदेशकका मकान घिरवालिया। इस बातकी धर्मोपदेशकको पहलेसे कुछ खबर न थी। जिससमय अबदुर्रे-

हमान उस धर्मोपदेशकके पास बैठकर भोजन कर रहे थे अचानक एक सवारने आकर उन्हें सूचनादी कि, एक बृहत सेनाने आपपर आक्रमण किया है। इस बातको सुनतेही अबदुर्रहमानने उस धर्मोपदेशकको उसके पुत्रोंसमेत क़ैद करलिया और मकानसे बाहर निकलकर सेनामें जामिले। इन्होंने अपनी सेनाको कई भागोंमे बाँट शत्रुकी १० हज़ार सेनाका सामना किया। इतनेहीमें इनकी छावनीमेंसे सहायता आ पहुँची। सहायता आतेही इनका बल दुगुना होगया। इन्होंने शत्रु सेनाके १० हज़ार मनुष्योंमेंसे सौको मारकर चारसौको क़ैद किया और शेषको भगादिया। इसके बाद अबदुर्रहमानको बदख़्शांमें शांतिकर वहांके उपद्रवियोंका दमन करनेके लिये छोटी मोटी अनेक लड़ाइयां करनी पड़ी। परिणाम यह हुआ कि वहांके मीरोंने अंतमें हार मानकर इनको घोड़े आदि अनेक वस्तुवे भेंट की और सोने प्रभृतिकी कईएक खानें इन्हें देदी।

इसके अनंतर बदख़्शांके कितनेही सौदागरोंने अबदुर्रहमानको कष्ट देकर उसका अच्छा बदला पालिया। वे लोग सौदागरी करते २ डाके डालने लगे थे और उन्हींके हाथसे सैकडों मनुष्योंको बदख़्शां और कटाग़नके बीचमें अपने प्यारे प्राण खोदेने पडते थे। अबदुर्रहमानको यह बात असह्य हुई। उन्होंने गुप्त सेना भेजकर इनको पकड़वालिया और जिसदिन बदख़्शांमे पैठका दिन था सरेबाज़ार उन्हे तोपसे उड़वादिया। केवल इतनाही क्यों बरन उनका मांस कौओं और कुत्तोंसे नुचवाया। यहबात मीरजहांदारशाहको विदित न थी। इसकारण उन्होंने इनमेंसे कई कैदियोंको छुडानेके विचारसे अबदुलग़ैज़खांको इनके पास चिट्ठी लेकर भेजा। उसपत्रमे सौदागरोंको लौटा देनेकी अबदुर्रहमानको धमकी दीगई थी। इसपत्रको अबदुर्रहमानने भरे दर्बारमे पढ़कर पत्र लानेवालेसे पूंछा कि मीरसाहब पागलतो नहीं होगये हैं? इसका उत्तर उसने बड़ा कठोर दिया। अबदुर्रहमान जैसे मनुष्यसे किसीकी कठोर बात थोड़ीही सहन होसकती थी उन्होंने

अपने नौकरोंको आज्ञा देकर उसकी डाढी मोंछ नुचवाली और उसकी भौंहें स्त्रियोंकी तरह रँगवाकर उसे छोडदिया। उसको देखतेही जहा दारशाहके हृदयमें आग लगगई और सेना भेजनेकी तैयारी की परतु उसकी सेना पहुँचने पूर्वही काबुली सेनाने उसका राज्य छीन लिया। जब मीर अपना राजपाट खो बैठा तो विवश होकर उसे अबदुरेहमानसे क्षमा मागना पडा और अपनी भतीजी अबदुरहमानको विवाह देनेको तैयार हुआ। इन्होंने उसका अपराध तो स्वीकार कर लिया परंतु भतीजी ऐसा पसद न किया।

इस अवसरमें एक विशेष घटना हुई जिससे विदित होता है अबदुरेहमान बडे आस्तिक थे और बहुत वर्षोंतक परिश्रम करनेपरभी वह कुछ लिखे पढे नहीं थे। उन्होंने अपने चरित्रमें लिखा है कि "एकदिन जिससमय मैं दर्बार कररहा था मेरे पास अमीर आजिमकी लडकीका पत्र लेकर एक मनुष्य आया। इससे मेरी सगाई हुई थी। उसने पत्र लानेवालेसे कहदिया था कि, यह पत्र किसीको न दिखलाना और इसका उत्तर उन्हीं (अबदुरहमान) से लिखवाकर लाना। प्रथम तो मैं पहलेही कुछ लिखापढा न था और जो कुछ मैने सीखा था उसेभीमैं बिल्कुल भूलगया था। इस सवादको सुनतेही मैं बहुत उदास हुआ। मैं अपने आपको कोस २ कर कहने लगा कि अबदुरेहमान तू जो इतना उत्तम मनुष्य बनता है और घमड करता है ऐसा मूर्ख और अपढ क्यों है। रात्रिको एकात पाकर मैं इस बातपर बहुत अछताया पछताया और फूट २ कर रोनेलगा। अतमें मैने प्रार्थना की कि हे परमेश्वर! मेरे हृदयको प्रकाशितकर मुझे लिखने पढनेके योग्य बना जिससे मुझे तेरी सृष्टिके आगे लज्जित न होना पडे। कईबार इसतरहकी प्रार्थनाकर मैं रोता २ सोगया। सोतेही स्वप्नमें एक पवित्र पुरुषने आकर मुझे दर्शन दिये। उसने आकर मुझसे कहा कि–" अबदुरहमान उठकर लिख" जब मैं एकाएक चौंककर जागपडा तो मुझे वहापर कोईभी दिखलाई न दिया। मैं फिर सोगया। सोतेही फिर वही सुन्दर मूर्त्ति मेरे सिरहाने आकर खडी होगई। जब दो बार मैने उसकी आज्ञाका उल्लघन किया तो

तीसरी बार उसने आकर कहा कि—"यदि तू फिरभी सोजायगा तो मैं अपने शस्त्रसे तेरा कलेजा छेद डालूंगा ।" इसबातके सुनतेही मैं डर-गया । डरकर मैंने नौकरसे क़लम दावात और कागज मँगवाया । मँगवा तो लिया परंतु लिखनेका साहस क्योंकर होसकता था । अंतमें मैंने उस पुरुषकी आज्ञा पाकर लिखना आरंभ किया । आरंभ करतेही मुझे भूलीहुई विद्या अचानक स्मरण होने लगी । मैं सूर्योदयसे पूर्व २ ही साठ सत्तर पंक्तियां लिखगया । जब मैं लिखचुका तो उसमें मुझे बहुतसी भूलें विदित हुई । मैंने उस पत्रको फाडकर दूसरा लिखा । इसके तैयार होतेही मेरा साहस बढ़गया । प्रातःकाळ मैंने अपने नाम आयेहुए दो पत्रोंको पढ़कर उनका आशय समझ लिया । फिर जब दर्बारमें गया तब अपने मुन्शीसे कहा कि आज मेरे नामके सब पत्र मैंही पढूंगा । इस-बातपर वह बहुत मुसकराया परंतु मैंने जो पहले दिन एक अक्षरभी पढ़ना नहीं जानता था सारे पत्र सुनाकर उसे चकित कर दिया । उसी-दिनसे मैं स्वतंत्र होगया । अब मुझे मंत्रीकी सहायता अपेक्षित न रही । इसबातकी सूचना पाकर मेरे पिताने मुझे सुनहरी मूँठकी एक तलवार दी ।"

बदख़शां और कटाग़नमें शांति होतेही कोलाबमें उपद्रव खड़ा होगया । वहांके मीर शाहखांने कटाग़नकी १२००० हजार भेडैंचुरानेके लिये २ हजार सवार भेजे । इसबातका समाचार पातेही अबदुर्रमान चुप न रहसके । उन्होने २००० सवार उन लुटेरोंका दमन करनेके लिये भेजे । दोनों सेनाकी आक्सस नदीके तटपर लड़ाई हुई । लुटेरोंके ५०० मनुष्य खेतरहे और बहुतसे कैदहुए । भेडोंका छुटकारा करा अबदुर्रहमानकी सेना जब लौट आई तो कोलाबके मीरने अबदुर्रहमानसे क्षमा मांगी और प्रण किया कि अबसे ऐसा बखेडा कभी उठने न पायगा । अबदुर्रहमानने शाहखांकी प्रार्थना स्वीकार कर ७५ हज़ार रुपयेमें सारे क़ैदी बेचदिये ।

प्रकरण—९.

कैदमें अफजलखां।

जिससमय अमीर दोस्त मुहम्मद काबुलमें बीमार होकर मृत्युकी बाट देखरहे थे और उनके प्यारे पुत्र शेरअलीखां अपने पिताकी सेवा सुश्रुषा करते थे हिरातमें उपद्रव खडा होगया अबदुर्रहमानके चचा अजीम अमीन और असलीम (सलीम ?) ने अपने भाई शेरअलीसे डाह खाकर दोस्तमुहम्मदके कट्टर शत्रु हिरातके गवर्नर सुलतान मुहम्मदसे मेल बढाया और इस मेलसे उन्होंने अपने पिताको बडा कष्ट दिया। अबदुर्रहमानने अपने चरित्रमें इनलोगोंके इस कामकी बहुत निंदाकी है और परमेश्वरसे प्रार्थनाकी है कि, मुझसे ऐसा काम न कराये। सन् १८६३ ई० के जूनकी ९ तारीखको जब अमीर दोस्तमुहम्मदका देहान्त होगया तो काबुलकी गद्दी पिताकी आज्ञाके अनुसार शेरअलीको मिली। जब उनके भाइयोंको विदित होगया कि, हम लड झगडकरभी शेरअलीसे राज्य न पासकेंगे तो उन्होंने लाचार होकर उनको अमीर मानलिया और उनकी आज्ञा बिनाही अपनी २ गवर्नरीको चल दिये। जब शेरअली अपने पुत्र याकूबको हिरातका गवर्नरबना कंदहारको गये तो पीछेसे उनके भाई असलीम (सलीम ?) और अजीमने काबुलमें बखेडा मचाना चाहा। यह सुनतेही शेरअलीने कंदहारसे लौटकर भाई अजीमसे गजनीम भेटकी और बडे भाइके समान उसका सत्कारकर उससे शपथ खाया परन्तु इस शपथको शेरअली बहुत कालतक निबाह न करसके। उन्होंने सौगन्द तोडकर गजनीपर चढाइ की। अजीम शेरअलीके आगे टिक न सका। उसे लाचार होकर वहांसे भागना पडा और अन्तमें भारत वर्षमें जाकर गवर्नमेंटकी शरण लेना पडा। इसबातसे शेर अलीका हौंसिला बढगया। उन्होंने अबदुर्रहमानके पिता अफजलकी जागीरके तीन गांव छीनलिये। ये गाँव अफजलको पिता दोस्तमुहम्मदने दिये थे। इसअन्यायसे अफजलका चित्त दुःखित तो होही चुका था

इतनेहीमें बहुतसे चापलूस उनको भड़कानेवाले आमिले । कईएक सरदारोंको लेकर जिनमें एक शेरअलीका भेदियाभी था अफ़ज़ल अपने पुत्र अवदुर्रहमानके पास आये। यहां आकर इन्होंने अफजलको काबुलकी गादी दिलानेका परामर्श किया । इस सलाहमें उनलोगोंने अवदुर्रहमानको शामिल नहीं किया क्योंकि इन्हें भय था कि, यह हमारे काममें विघ्न डाल देगा। इन लोगोंने अफजलको समझा दिया कि, काबुलके बहुतसे सरदार आपका शासन चाहते हैं। इस कामके लिये उनलोगोंने मीर अतालीक़से मिलकर उसे कटागनका देश पीछा दिलाना और बलख़ तथा कटागनकी सेनाकी सहायतासे काबुलपर चढ़ाई करना निश्चय किया। अवदुर्रहमानने इसविषयमें अपने चरित्रमें लिखा है कि "मैं इसबातसे बहुत अप्रसन्न था।"

अफ़ज़लखांने अवदुर्रहमानको तख्तपुलमें नियतकर शेरअलीपर चढ़ाई करनेका संकल्प किया। इसपर अवदुर्रहमानने पिताको बहुत समझाया कि, आप इस चढ़ाईमें मुझे भेजदीजिये क्योंकि यदि मैं हारजाऊंगा तो आप मुझे छुड़ासकोगे परंतु दैवसंयोगसे आपही पकड़गये तो मुझसे कुछ उद्योग न होसकेगा । अफ़ज़लखां इसबातसे समझगये परंतु उनके साथियोंने उन्हें न ठहरने दिया। उन्होंने कहा कि, आप इस लड़केके कहनेसे क्यों बहँकते हैं । काबुलकी समस्त प्रजा आपको चाहती है। उन लोगोंके बहकानेसे अफ़ज़लखांने अवदुर्रहमानकी सम्मतिपर कुछ ध्यान न देकर काबुलपर सेना भेजदी। अफ़ज़लखांके मुख्तसरदार गुलामअहमदकी भूलसे शेरअलीकी सेनाने अफ़ज़लखांकी सेनाको परास्त किया। बस लाचार होकर अपनी सेनाकी सहायताके लिये स्वयं अफ़ज़लको जानापड़ा। जिससमय अफ़ज़लखां काबुलसे एक मंज़िल रहगया और उसने लडनेकी समस्त तैयारियां करलीं उसके कपटी सरदारोंने उसे धोका दिया । अमीरशेरअलीको लिखा कि, अवदुर्रहमानकी सेना बड़ी दृढ और लड़ाकू है इसलिये लड़ना होतो दृढ़ तैयारी करो नहीं तो हारखाना पड़ैगा। इसपर शेरअलीने डरकर अफ़ज़लसे मेल करलिया और उससे शपथपूर्वक कहलाया।

कि आप मेरे बडे भाई है, पिताके समान है और मैने निश्चय किया है कि भाई भाइयोंमे लडाई होनेसे हमारे पिताके नामको कलंक लगता है। इसबातको सुनकर अफ़जलखाका हृदय पिघलगया। वह स्वयं कुरानको शिरपर लेकर शेरअलीसे जा मिले। शेरअलीने इनका बडा सत्कार किया, खुशामदीकी बातें कर उन्हे वहा रख लिया और उनकी सेना लौटादी। इसबातसे अबदुर्रहमानका माथा ठनका। उन्होंने स्वयं मजारशरीफमें जाकर पिताको समझाया परन्तु पिताने कहा कि मैं शेरअलीसे जब कुरानकी शपथ खाचुका हू तो उसके विरुद्ध काम कभी न करूंगा। अफजलखा यद्यपि अपने वचनपर दृढ रहे परन्तु शेरअलीने शपथ तोडकर ताशकरगानमें उन्हें कैद करलिया।

जब यह समाचार अबदुर्रहमानकी सेनामें पहुँचा तो उनके कोपका कुछ ठिकाना न रहा। उन्होंने अमीरसे बदला लेकर पिताको कैदसे छुडानेके लिये मजारकी ओर प्रयाण किया। मार्गमें अबदुर्रहमानके पास पिताका पत्र पहुँचा कि अमीरसे न लडो नहीं तो मेरी प्रतिज्ञाका भंग होगा। अबदुर्रहमानने यह पत्र पढकर सेनाको सुनाया। सेनाने इसबातको स्वीकार न कर अबदुर्रहमानको वहा ५००। ६०० मनुष्यों सहित छोडकर शेरअलीपर चढाई की। अबदुर्रहमानको इस अवसरमें पिताने लिखा कि, जितनेक नौकर तुम्हारे पास स्वामिभक्त है उन्हींको लेकर तुम बुखाराको चले जाओ। पिताकी आज्ञा मानकर अबदुर्रहमानको भागजाना पडा। वहा जानेपर अमीरके अधीशने उनका बहुत सत्कार किया। दो मासके बाद बुखाराके अमीरने इनसे कहलाया कि मैं आपसे बहुत प्रसन्न हू। आपको मैं बहुतसी जागीर दूंगा। उसे ग्रहणकर मेरे दर्बारमें रहो परन्तु आपको नित्य यहा उपस्थित होना पडेगा। अबदुर्रहमानने उत्तर दे दिया कि न मुझे जागीरकी पर्वाह है और न मैं नौकरी करना चाहता हू। जो मनुष्य इनके यह संवाद सुनाने को आया था उसने इन्हे धमकी दी कि यदि आप अमीरकी आज्ञा स्वीकार न करोगे तो आपको बडा कष्ट उठाना पडेगा। इन्होंने कहदिया कि, "कष्टतो उनको हुआ करता है जो अन्याय करते है। मैं बडा परिश्रमी हू।

मेरा परिश्रम देखकर अमीर उनके और सुल्त दर्बारियोंपर अप्रसन्न होजायँगे। मैंने जब मेरे दादाहीकी नौकरी नहीं की है तब यहांकी क्या करूंगा। न मैं किसी राजाकी प्रजाहूं और न मैं किसी प्रजाका राजाहूं।" अबदुर्रहमानसे ऐसा उत्तर पाकर बुखारेका अमीर मनमें बहुत कुढ़गया। उसने कोतवालको आज्ञादेकर परस्त्रीसे बात करनेका अबदुर्रहमानपर कलंक लगवाया और उनके नौकरोंमें फूट करा उन्हें वहांसे भगादेना चाहा।

इस अवसरमें अबदुर्रहमानको बुखारामेही खबर लगी कि, रूसने ताशकंद लेलिया और बुखारा लेना चाहता है। यह बात जानकर अबदुर्रहमान वहांसे अमीरकी आज्ञा मांगे बिना बलख जानेको तैयार हुए और वहींपर उन्होंने अपने चचा अज़ीमको पत्र लिखकर भारत वर्षसे बुलाया। आज्ञा न मांगनेका दोष लगाकर बुखारानरेश इनसे बहुत रुष्ट हुआ परंतु इन्होंने बेधड़क होकर कहदिया कि "जब मैं आपका नौकरही नहीं हूं तो मुझे आज्ञा मांगनेकी क्या आवश्यकता है।" अमीरने इनके वीर सैनिकोंको बहँकाकर अपना नौकर बनाना चाहा परंतु वे अबदुर्रहमान जैसे मालिकको छोडकर बुखारावालेकी नौकरी करनेपर प्रसन्न न हुए। केवल सिकंदर नामका अफ़सर एक युवतीके प्रेममें फँसकर वहीं रहगया।

प्रकरण-६.

पिता अफ़ज़लका शासन और शेरअलीसे विजय।

जिससमय अबदुर्रहमानकी सेना बिगडकर अफगानिस्तानमें उपद्रव करनेलगी थी और उन्हें पिताकी आज्ञा मानकर बुख़ाराको भागजाना पडा था शेरअलीने अफ़ज़लखां और उनके कुटुंबपर भारी अत्याचार किया। अफ़ज़लखांको सारे कुटुंब सहित कैद करके उन्होंने काबुल भेजदिया और उनके खाने पीनेके खर्चके लिये एक पैसा नहीं

दिया। अमीर शेरअलीने अफजलखाको केवल इतनाही नहीं सताया बरन् उन्हें अपने साथ लेकर उनके कुटुंबको निराधार और निरन्न जगतमें छोड दिया। अफ्जलने वहीं गृहमसे शेरअलीको एक पत्र लिखा। उसका आशय यह था कि "तुमने केवल अपने सौतेले भाई परही अत्याचार नहीं किया है बरन् तुम सगे भाइयोंपरभी अत्याचार करनेवाले हो। अपनी अप्रतिष्ठा करनेका कारण न बनो तुम जानते हो कि तुमही एक बहुत भयानक युद्धका कारण बनरहे हो। तुम्हारी चालसे अफगानिस्तानकी भूमि रक्तसे लाल होजायगी और तुम्हींको इसमें नीचा देखना पडेगा।" इसबातपर शेरअलीने कुछभी ध्यान न दिया। अपने भाइयोंसे दो दिन लडकर वह एक भाइ (अमीन) और पुत्र वा उनके उत्तराधिकारी सर्दार मुहम्मद अलीखाको खो बैठे। इन दोनोंके मारे जानेकी घटना सन् १८६५ ई० के ५ वा ६ जूनकी है। इसबातको सुनकर फिर अफजलखाने शेरअलीको लिखा कि "तुम्हारेही लुच्चपनसे तुम्हारा सत्यानाश होगा।" इसबातपरभी कान न देकर शेरअलीने अपने भाई अमीनकी लाश कुत्तोंसे नुचवाइ। अबदुर्रहमान जो बुखारासे विदा होगये थे उन्हे इनके मरनेकी खबर मिली। खबर मिलतेही उन्हें निश्चय होगया कि, अब अवसर अच्छा हाथ आगया है उन्होंने बलखसे अपनी सेना बुलाकर काबुलपर चढ़ाई करनेका प्रबंध किया।

जिस समय अबदुर्रहमान युद्धकी तैयारी कररहे थे इनके पास चचा अजीमका पत्र पहुँचा। उसमें लिखा था कि मे मीरअतालीककी लडकीसे विवाहकर तुमसे आ मिलूगा। इनदिनों जाडेकी ऋतु शीघ्र आनेवाली थी। काबुल शेरअलीसे खाली था बस इन दोनों बातोंकी अनुकूलता देखकर अबदुर्रहमानने अपनी सेना समेत बाजगाहमें डेरा जा डाला। वहांपर हजारों लोगोंकी सहायतासे अबदुर्रहमानको अन्न मक्खन और कई हजार भेंडे मिलगईं। एक मासके बाद जब अजीम आकर इनसे मिला तब एक और एक ग्यारह होगये। अजीमने इनसे कहा कि इस बीचमें मैंने बडे२ कष्ट पायेहैं। चित्राल

होकर मुझे इधर आनेमे जो कुछ कष्ट जाडेकी अधिकतासे हुआ उसकातो कहनाही क्या है परन्तु ब्रिटिशगवर्नमेंटनेभी मेरे साथ वर्त्ताव अच्छा नहीं किया । तुम जानतेहो कि अंगरेजोंसे अपने पिता दोस्त मुहम्मदकी मित्रता करादेनेवाला मैंहीहूं । जिस समय भारतवर्षका बलवा (सन ५७ का उपद्रव) समाप्त नहीं हुआ था प्रायः समस्त काबुलियोंने मेरे पिता दोस्तमुहम्मदको बहँकाकर पंजाब प्रान्त काबुलराज्यमे मिलादेनेकी सम्मति दीथी । यदि पिताजी चाहते तो उससमय अवश्यही पंजाब हमारे हाथ आजाता परंतु मैंने पिताको सम्मतिदी कि अंगरेज़ोंसे जो संधि हुई है उसे तोडना उचित नहीं है । ऐसा करनेसे आप संसारकी आंखोंसे उतर जायँगे और इसमें आपकी बदनामी होगी। मेरी सम्मतिका पितापर पूरा प्रभाव पड़ा। उन्होने मेरी सम्मति मानकर काबुलके समस्त सरदारोंकी बात न सुनी। इसीसे पंजाब अंगरेजोंके हाथमे बनारहा। इस सहायताके बदले मुझे आशा थीकि ब्रिटिशगवर्नमेंट मुझे भरपूर पारितोषिक देगी और इसीलिये मैं भारत वर्षको गया था परंतु अंगरेजोंने मेरी बातपर ध्यान नदिया । अबदुर्रहमानने अपने चरित्रमें चचा अज़ीमके कथनका आशय जिसतरह प्रकाशित किया है उसीतरह उसपर उन्होंने क्या उतर दिया इसका वर्णन बिलकुल छोड़दिया है। इस कारण मैं इस विषयमें कुछ लिख नहीं सकताहूं । चचाके पहुंचने पूर्व अबदुर्रहमान काबुलपर चढाई करनेको सब तरहसे तैयारतो होही चुके थे बस इनके आतेही दोनोंने मिलकर काबुलकी ओर प्रयाण किया । जिस समय गोरबंद होते हुए चचा भतीजे कोहिस्तान पहुँचे शेरअलीकी ओरसे तूतम दरेमें इनसे लड़नेके लिये अमीनखांनामक एक सरदार आपहुँचा। यह आया तो इनसे लड़नेके लिये था परंतु अज़ीमका पत्र पाकर उसका मन पिघल गया और तुरंतही इनमें आ मिला । इसने आकर काबुली सेनाको नौकरीसे अलग करदिया। इसके अलग होतेही इन दोनोंके लिये काबुलपर धावा करनेका मार्ग निष्कंटक होगया । जिस समय इनकी संयुक्त सेना थारकहालमें पहुँची शेरअलीकी सेना ख्वाजामें

अपना पडाव डाले हुए थी । अबदुरहमानने ढाग देखकर पासवाली पहाडीपर काबुली सेनासे लडनेके लिये मोरचा बाधलिया और दूर-बीनसे देखनेपर उन्हें निश्चय होगया कि इस समय काबुलकी रक्षाका ठीक प्रबध नहीं है।

चचा भतीजेकी चढाईसे घबडाकर शेरअलीके पुत्रने जो उनदिनो काबुलका गवर्नर था और पिताकी अनुपस्थितिमें राज्यका सारा प्रबध करताथा इनके नाम एक पत्र भेजा इसमें लिखा कि "यदि आप चालीस दिनतक युद्ध न करनेका प्रण करें तो मैं आपके पिताका कैदसे छुटकारा करदूगा और आपको तुर्किस्तानभी दूगा।" उन दिनों जाडा बहुत पडता था । बर्फके मारे शेरअलीकी सेनासे अबदुरहमानको लडनेमें बडी कठिनता थी। बस इसीकारण अबदुरहमानने चचाकी सम्मतिसे शेरअलीके पुत्रकी प्रार्थना स्वीकार करली । इस अवसरमें शेरअलीके दरबारियोंमें फूट पडगइ । शेरअलीका वजीर मुहम्मदरफीक उनके कामोंसे असतुष्ट होकर अबदुरहमानमे आ मिला । शेरअलीके पुत्रकी अवधिके चालीस दिन पूरे होते २ मार्च महीना आपहुँचा । उसने अबदुरहमानके पिताको छोडदेनेका जो प्रण किया था उसका भग कर दिया। तब लाचार होकर इन दोनोको काबुलपर फिरसे चढाइ करनीपडी। जब दोनोंकी सयुक्त सेनाको लेकर अबदुरहमान दोदहमस्त पहुँचे इनका सामना करनेकेलिये ग्या हजार सेना लेकर अजीमुद्दीनखा आया । वह आया तो सही परतु उसनेभी अपने मालिकका लवण खाकर काम उलटा किया । वह दशबीस बदूक चलाकर काबुलको लौटगया। बस काबुलको घेरकर अबदुरहमानने नौ दिनके सग्राममें अनतर काबुलमें अपने चचा सहित सन् ६६ के फरवरीमासमें प्रवेश किया। शेरअलीका लडका अत पुर (जनाने) मेंसे निकल इनसे सलाम करने आया । इसतरहसे नाममात्रकी लडाइकर इन्होंने काबुल लेलिया और शेरअलीका पुत्र भागगया ।

छ सप्ताह तक काबुलमें विश्राम लेनेके अनतर इन्हे समाचार मिले

कि शेरअली बहुत बड़ी सेना लेकर इनसे लडनेके लिये काबुल आ रहे हैं। उनदिनों फतेहसिंहकी लड़की जलालाबादकी ओरसे काबुल-पर चढाई कररही थी। अमीर अबदुर्रहमानखांका चरित्र जो अंगरजीमें प्रकाशित हुआ है उसमें यह नहीं लिखा कि यह फतेहसिंह कौन था और उसकी कौन वीर रमणी कन्या काबुल जैसे राज्यके सिंहांपर चढाई कररही थी न इस बातका भारतवर्षके इतिहासोंसे पता लग सकता है परंतु मेरा अनुमान यह है कि छापेकी भूलसे अंगरेजी चरित्रमें फतेहखांकी जगह फतेहसिंह छपगया है। कुछभी हो परंतु इसी वीर नारीसे लडनेके लिये थोडी सेना छोडकर अबदुर्रहमान चचा शेरअलीसे लड़नेके लिये सुर्खसंग पहाड अर्थात् लालपहाड़ीकी ओर विदाहुए और चचा अजीमको काबुलहीमें छोडते गये।

जिससमय यह ९००० सेना सहित शेरअलीके निकट पहुँचे इन्हें विदित होगया कि उनके पास सेनाकी संख्या ४०००० से कम नहीं है। इन्होंने समझ लिया कि इतनी बृहत सेनासे लड़नेमें व्यर्थ मार-खानी पड़ेगी इसलिये यह अपनी सेनाको सैदाबादकी पहाडियोंपर चढ़ालेगये। शेरअलीने वहां ऐसा प्रबंध कर रक्खा था जिससे काबु-लकी सड़क उनके हाथमें आकर समय पडनेपर इन्हें भागनेतकको मार्ग न मिले। अबदुर्रहमाननें मार्ग देखनेके लिये ६०० सवार भेजे थे उनसे शेरअलीकी हिराती और कंदहारी सेनाकी जिसकी संख्या १०००० से कम नथी मार्गहीमें मुठभेड होगई। अबदुर्रहमानके वीर सैनिक अपनेसे सोलहगुनी शत्रुसेना होनेपरभी बडी वीरतासे लडे। इनके लडते २ ही अबदुर्रहमानकी और सेना वहां आपहुँची। इसका परिणाम यह हुआ कि शेरअलीकी सेना इस मोर्चेसे खेत छोड भागी।

शेरअलीने उतनीही सेना फिर भेजी परंतु रणभूमिमे अबदुर्रहमानका कोई मनुष्य न पाकर वह सेना अमीरके पास लौटगई। उसके अफ-सरोंने शेरअलीसे जाकर कहदिया कि अबदुर्रहमान खेत छोड़

भागा है। समाचार पाकर शेरअली बहुत प्रसन्नहुआ । उन्होंने विजय बधाईकी तोपे चलाकर अबदुररहमानका पीछा करनेकी आज्ञादी और साथही यहभी कहदिया कि उसे पकडकर कैद करलो । अबदुररहमानने मैदान छोडकर अपना एक तोपखाना एक बहुत बडी गुफामें जा छिपाया । जिस समय शेरअलीकी सेना इस गुफाके पास होकर निकलने लगी उन्होंने एकाएक उसपर आक्रमण किया । इस आक्रमणसे शेरअलीकी सेना एकहजार सवार खोकर भाग निकली। वह भागतो गई परन्तु शेरअलीके सम्मुख उजलामुख रखनेके लिये वहांके निवासी बारकक लोगोंके १०० शिर काटती लेगई । अमीर वहासे चलकर कैदी अफजलको गजनीम छोडताहुआ अबदुररहमानसे लडनेके लिये सैदाबाद पहुचा। सैदाबादाके निकट ऊंची गावमे लोमहर्षण सग्राम हुआ। अबदुर्रहमानके पास ७००० सवार और १५००० पैदल तथा ५० तोप थी । उन्होने अपने २००० सैनिक कटवाकर शेरअलीका विजय किया। विजय सवाद पाकर गजनीके किले वालोंने अबदुररहमानके पिता अफजलखांको छोडदिया । शेरअली हार खाकर कन्दहारको भागगये और उनकी सेना अबदुररहमानमे आ मिली । चचा अजीमने इस युद्धमें अबदुररहमानका बिलकुल साथ न दिया किन्तु उनका १७ वर्षका लडका अजीज बडी वीरतासे लडा। अबदुररहमानकी सेनाने चार दिनमें शेरअलीका माल खजाना लूटलिया । पाचवदिन अफजल स्वय आकर पुत्रसे मिले । अबदुर्रहमानकी इच्छा थी कि शेरअलीका पीछा हिराततक कियाजाय परन्तु चचाके कहनेसे अफजलको इन्ह इसकामसे रोकदिया । इन्होंने शेरअलीका विजय १० मई सन् १८६६ ई० को किया था। विजय भूमिसे चलकर ये लोग काबुल पहुँचे । काबुलकी प्रजाने इनका बहुत सम्मान किया । बस उस दिनसे अफजलखा जो छोटे भाइ शेरअलीकी कैदमे मृत्यु तुल्य कष्ट पाकर जीवित रहे थे काबुलके अमीर हुए ।उन्हींके नामका खुतबा नमाजमे पढ़ाजाने लगा।

प्रजाको अपने ऊपर प्रसन्न पाकर अमीर अफ़ज़लने राज्यप्रबंध करने-पर मन लगाया और अज़ीम तथा अबदुर्रहमान सेनाकी संभाल करने-लगे। चार पांच मासके अनंतर अफ़ज़लको सूचना मिली कि शेरअली कंदहारमें सेना इकट्ठीकर काबुलपर चढ़ाई करनेके लिये आरहे हैं। समाचार पातेही पिताकी आज्ञासे अबदुर्रहमान उसीदिन तैयार होगये। इस बातसे अफ़ज़लखांको बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि पहले जब लड़ाईका काम पड़ता था तो तैयारीमें कई सप्ताह लगजाया करते थे। यद्यपि यह तैयार थे परंतु अज़ीमको तैयारी करनेमें एक मास लगगया। जब दोनोंकी सेना तैयार होगई तो इन्हें समाचार मिला कि शेरअलीने क़लात तोकी पहुँचकर वहांका किला दृढ कर लिया है। चश्मेपंजकके निकट शेरअलीके अफसर शाहपसंदखां और फतेहमुहम्मदसे इनकी मुठभेड होगई। इस लडाईमे शेरअलीके जनरल हारभागे, उनके ३०० मनुष्य मारेगये और १००० क़ैदहुए। इस हानिसे शेरअली ग्यारह दिनतक फिर लड़नेमें समर्थ न होसके। इसके बाद दूसरा युद्ध शेरअलीसे अबदुर्रहमानका क़ंदहारमें जाकर हुआ। इस लड़ाईमें शेरअली हारकर भागगये और उनकी सेनाकी ३५ तोपें हाथ आईं। विजय होतेही चचा अज़ीम सहित इन्होने कंदहार लेलिया और शेरअली हिरातको चलेगये।

अबदुर्रहमानने अपने चरित्रमें इस युद्धका वर्णन करतेहुए लिखा है कि "चचा अज़ीमकी सेनाका सरदार फ़तेहमुहम्मद जिसे शेर-अलीकी क़ैदसे मेरे पिताने छुडाया था नमकहराम बनकर शेरअलीमें आमिला। उसे मेरे पिताने केवल क़ैदसेही नहीं छुडाया था वरन हज़ाराजातकी गवर्नरीभी दीथी। वही फतेहमुहम्मद फिर शेरअलीसे मिलकर मुझसे लड़ने लगा। उस मनुष्यके चाल चलनके लिये क्या कहा जाय जो अपनेको स्वाधीन करनेवालेसे लड़ता और बंदीबनाने वालेमें जा मिलता है। दुष्टलोग सिखायेसे कभी भले नहीं होते हैं। बागोंमें फूल उत्पन्न होते हैं और जंगलमें कांटे।"

प्रकरण—७

अफ़जलकी मृत्यु और अजीमका राज्य।

अबदुर्रहमानपर संकट।

जिससमय शेरअलीका विजयकर अबदुर्रहमान बामियान पहुंचे इन्हे मालूम हुआ कि बलखका गवर्नर फैजमुहम्मद जिसे इन्होंने नियत किया है उपद्रव कररहा है। इन्हे युद्धसे थका समझ अफ़जलने इनके चचेरे भाई सरवरखांको उसका दमन करनेके लिये भेजा परन्तु वह फैजमुहम्मदके सामने टिक नसका। अपने प्राण लेकर भागआया। यद्यपि अमीर अफजलखां उस समय मृत्यु शय्यापर पडे पडे घटते दिन पूरे कररहे थे और ऐसे समयमें इनका पिताकी सेवा करना आवश्यक था परन्तु यह लाचार होकर उसपर चढदौडे। इनके पैरोंमे गठियाने दबाव डाल रक्खा था घोडेपर चढनेकी इनमें शक्ति नहीं थी और इनकी सेनाभी इस समय लडनेयोग्य न थी परन्तु लाचारीसे इन्हे तामझाममें बैठकर जानापडा। यह गये तो सही परन्तु फैजमुहम्मदके काबुलसे बलख और कटागनको लौट जानेकी बात सुनकर पिताने इन्हे काबुल बुलालिया। यह काबुल आकर अपनी थकावट नहीं मिट पाये थे इतनेहीमें इन्होने सुना कि शेरअली बलख आपहुंचे है और फैजमुहम्मदसे मिलकर काबुल आरहे हैं। सुनतेही यह सेनाका डबल कूचकरा उनका मार्ग रोकनेके लिये पजशर पहुँचे। गुलबहार और किला इल्हदादमें इनकी फैजमुहम्मदसे लडाइ हुई। शेरअलीने फैजमुहम्मदकी कुछ सहायता नकी और लाचार होकर अकेले लडनेमे वह इनसे हारगया। केवल हारही नगया वरन अबदुरहमानकी गोलीसे मारागया। शेरअली १३ सितम्बर सन् १८६७ इ० को बलखकी और दोहजार सवार समेत भागगया और फैजमुहम्मदकी सेनाको अबदुर्रहमानने कैद करलिया।

फ़ैज़मुहम्मदको मारकर अवदुर्रहमान काबुल आये। वहां आकर देखते क्या है कि पिता अफ़ज़लखां अंतिम श्वास लेरहे हैं । इनके काबुल पहुँचनेके तीसरेही दिन अफ़ज़लखांका देहान्त होगया । तीनदिनके पश्चात् अव-दुर्रहमानने अपने चचा अज़ीमसे कहा कि "जबतक मेरे पिता विद्यमान रहे आप उनके छोटेभाई थे और मै आपको (चचाको) बड़ाभाई समझता था अव उनका देहान्त होगया इसलिये आप मेरे पिताके समान है। आपहीको गद्दीपर बैठना चाहिये । मेरे पिताके समय जो काम आप करते थे उसे ही करनेका मेरा अधिकार है " इसपर अजी-मने उत्तर दिया कि तुमही अमीरके बड़े पुत्रहो। तुम्हारा गद्दीपर स्वत्व है। तुम सिंहासनपर बैठो । मैं तुम्हारी सेवा करूंगा । अवदुर्रहमान बोले-"नही २ ऐसा कभी नही होगा । आप मेरे चचा हैं । आपके बाल विलकुल श्वेत होगये हैं । ऐसी दशामें आपको किसीका नौकर बनना योग्य नही है । मैं अभी छोटाहूं । जिसतरह पिताकी सेवा करता था उसीतरह अब आपकी करूंगा । " यह बात राज्यलोलुप अफ़गानोंमें बड़े आश्चर्यकी हुई है। इसपुस्तकके प्रथम प्रकरणको जिन महाशयोंने ध्यानपूर्वक स्वयं पढ़ा है वे स्वीकार करेंगे कि जिस अफ़गानिस्तानमे राज्यके लिये पिता पुत्र और भाई २ में संग्राम हुआ है उसी देशमें चचा भतीजेका इस तरहका वर्ताव बड़ा आश्चर्यजनक है और इससे दोनो की बुद्धिमानी और न्याय प्रकट होता है। चार दिनतक इसप्रकारका वादानुवाद होनेके अनंतर भतीजे अवदुर्रहमानके आग्रहसे चचा अजी-मखांको काबुलका अमीर बनाना पड़ा । न्यायी अवदुर्रहमानने चचाकी नौकरी स्वीकारकी और अमीर अजीमकी काबुलमें दुहाई फिरकर उन्हीके नामका खुतवा पढ़ा जानेलगा ।

परंतु चचा भतीजेका मेल बहुत कालतक न रहनेपाया । जिस अज़ीमको अवदुर्रहमानने अमीर बनाया था उसीकी भतीजेसे आंखें फिरगई । अमीर काबुली सरदारोंके हाथका खिलौना बनगया। उनलोगोंने अजीमको बहॅकाकर अवदुर्रहमानसे उनका मन फेरलिया । इनकी जगह

अजीमके पुत्रको दिलाकर उन्होंने इन्हें बलख भेजनेका मनसूबा किया। यद्यपि अबदुरहमान जानगये थे कि अजीमखाके इनलोगोंके चगुलमें फँसकर भोगविलासमे पडजानेसे शेरअली अवश्यही काबुलपर चढाई करेंगे और उससमय अमीर घबडाकर शेरअलीका सामना न कर सकेंगे परन्तु अजीमके आग्रहसे इन्हे अपना कुटुम्ब छोडकर मार्गमे बर्फका कष्ट उठाते और तीनसौ सैनिकोंके बर्फसे हाथ पैर नष्ट करानेके अनन्तर विवश होकर बलख पहुँचना पडा।

जो चचा भतीजे एक दिन मिलजुलकर काम करते थे उन्हीमे अब विरोध खडा हुआ। बामियान पहुँचनेपर इन्हे विदित हुआ कि वहाके गवर्नर कर्नल सोराबको जो अबदुर्रहमानका नियत किया हुआ था अमीरने सेवाच्युत करदिया। जिससमय यह बामिमानसे चलकर ताशकरगान पहुँचे वहा शेरअलीके अत्याचारसे प्रजाका नाकमे दम आगया था। शेरअलीने बलखके मीरोंको—उन मीरोंको जो एकदिन अबदुरहमानसे डरकर बुखाराकी ओर भागगये थे पीछा बुलाकर यह देश कुछ रुपया लेकर बेच दिया। इस बातपर वहा बडा उपद्रव हुआ परन्तु बलख वालोंने अफगान प्रजा होनेका गर्वकर उन्हे वहा न टिकने दिया जिससमय यह ताशकर गानसे मजार होते हुए तख्तपुल पहुँचे अजीमके प्यारे इस्माइलकी सेनाने इनसे आकर कहा कि हमारे अफसरका आपपर मित्रभाव नहीं है इसलिये हम आपकी शरण लेना चाहते हैं। यह वही इस्माइल था जिसे अमीर अजीम अपनी आँखोंका तारा कहा करते थे इसका उत्तर अबदुर्रहमाने यह दिया कि "मेरे चचा अमीरने तुम्हें इस्माइलके अधीन किया है मै उनकी आज्ञा विना तुम्हें ग्रहण नहीं कर सकता हू।" अबदुरहमानने चचाको इस्माइलके विषयमे लिखा परन्तु उनसे उत्तर बहुतही बुरापाया। उन्होंने लिखा कि "जो मेरे आँखोंके तारे इस्माइलकी निन्दा करेगा वही राजद्रोही है।" बस इसके बाद अबदुर्रहमानके बहुत समझानेपरभी वह

वालोंसे इन्हें लड़ना पड़ा। जो क़िला अभीतक विजय नहीं हुआ था' जिसकी सेनाको इसबातका गर्व था कि भयंकर संग्राम होनेपरभी कोई मनुष्य उसे जीतनेमें समर्थ न होसकैगा उसीको अबदुर्रहमानने अपनी सेनाके सातसौ मनुष्य कटवाकर, तोपोंके गोलोंको कंकरसमान शरीर परझेलकर केवल छः घंटेमें लेलिया। यहांका विजयकर अबदुर्रहमानने शिवगांन प्रदेश उसके असली मालिक मीरहकीमखांको दिया। मीरने इसके उपलक्ष्यमें अपनी लड़कीका विवाह इनसे करदिया।

इस झगड़ेके समाप्त होनेके अनंतर अमीरने अबदुर्रहमानको लिखा कि "मेरे पुत्र अजीज और सरवर क़ंदहारकी लड़ाईमें फंसे हुए हैं उनकी सहायताके लिये आधीसेना भेज दो"। परंतु जिस देशको इन्होंने अपने सैकड़ों मनुष्योंका नाशकर लिया था उसमें शांति स्थापित करनेके लिये आधी सेना भेज देनेसे काम बनना संभव न था और इसपर तुर्रा यह कि शेरअलीकी चढ़ाईका दिनरात भय बनाहुआ था। इसलिये इन्होंने सेना न भेजकर यही बात चचाको लिखदी परंतु चचाने इनकी बातपर कान न दिया और लिखा कि, "यदि तुम्हारे सेना न भेजनेसे मेरे लड़के हार जायँगे तो इसमें अपराध तुम्हारा समझा जायगा और उसी दिनसे तुम मेरे शत्रु होगे।" अबदुर्रहमानको यह उत्तर पाकर क्रोध आगया। इन्होंने उनकी कड़ी बातका कड़ाही उत्तर दिया। इनके पत्रमें लिखागया कि "जब मैं शेरअलीकी शत्रुतासेही नहीं डरताहूं तब आपका मुझे क्या डर है।" यह बात इन्होंने लिखतोदी परंतु इनके कठोर हृदयमें एक कोमल विचार आया। इन्होंने सोचा कि "जिस चचाको मैंने अपने पराक्रमसे गद्दी दिलाई है उसकी हर भांति रक्षा करना मेरा कर्तव्य है।" बस इसी विचारसे यह वहांका यथाशक्ति प्रबंधकर मैमानाको विदाहुए। विदातो हुए परंतु चचाको लिखदिया कि "इसबातसे अंतमें आपको पछताना पड़ैगा।"

जिससमय यह अज़ीमके पुत्रोंकी सहायताके लिये विदा होचुके थे इनके पास अज़ीमका दूसरा पत्र आया। उसमें लिखाथा कि शेरअलीके

पुत्र कद्हारकी ओर आरहे है। वे शरह लेचुके हैं इसलिये तुम अपनी आधीसेना काबुल भेजदो और आधीसे मैमानामें युद्ध करो। इसका उत्तर इन्होने यही दिया कि "जो बात मै पहले कहचुका हू वही सामने आखडी हुइ। आप मेरी बात नहीं सुनते है। आधीसेनासे मैमानामें मेरा विजयपाना असभव है इसलिये इससमय मे नहीं आसकता हू और न आधीसेनाही भेज सकता हू।"

अबदुर्रहमानने मैमानापर आक्रमण करनेके लिये किलेके पासही एक पहाडीपर मोर्चा बाधा और ज्योंहीं उन्होंने किलेपर तोपे दागना आरभ किया उनके पास चचा अजीमकी एक चिट्ठी फिर आइ। उसमें लिखा था कि "मेरा पुत्र मुहम्मद अजीज मुहम्मदयाकूबसे हारकर उसका बदी बनगया है। याकूबने पुतेरोदवा परगनाभी ले लिया है इसलिये तुम्हारी आधीसेना वहा अवश्य भेजो" परतु इन्होंने फिरभी वही उत्तरदिया कि," शत्रुके सामनेसे जिला लेते समय मे,अपनी आधीसेना अलग नहीं करसकता हू क्योकि, मेरेपास सेना अधिक नहींहै।" अबदुर्रहमानने इस किलेपर आक्रमण तो किया परतु अजीमकी आँखोंके तारे इस्माइलने इनका भेद शत्रुको सूचित करदिया इसलिये इन्हें इस काममें सफलता न हुई किन्तु प्रारब्धने इनकी इससमय सहायताकी। शत्रु स्वय इनका दबदबा देखकर डर गया और उसने अपना पुत्र चालीस हजार मुहरें लेकर इनके पासभेजा। मीरहुसैनखाकी शर्तोंपर और * मीरोंका अपराध क्षमाकर इन्होंने सन् १८६८ ई के मइ मासमे वहांका जयलाभ किया।

इक्कीस दिनतक ज्वरकी भयानक पीडा भोगनेके अनतर जब इन्हें थोडा सा आराम हुआ तो यह काबुलकी ओर अपनी सेना सहित चल दिये। मार्गमें इन्हे अपना एक नौकर फकीरका वेष बनाये मिला जिसने इन्हें सूचित किया कि अमीर अजीम गजनी गये है और उनके आलोका

तारा सरदार इस्माईल कोहिस्तानके कईएक रईसों सहित काबुलपर आक्रमण करनेके लिये जारहा है । सरदार इस्माईलने इनके काबुल पहुँचने पूर्वही उसपर धावाकर नगर लेलिया और महलोंमें घुसकर अमीरशेरअलीका ढिंढोरा फेर दिया । उसने नगरमें ढिंढोरा फेरकर वहांसे अमीर अजीम और अबदुर्रहमानके कुटुंबको बाहर निकालदिया । इसके पश्चात् इन्हें यहभी विदित हुआ कि, अमीरअज़ीम भागकर न जाने कहां चलेगये हैं । यह संवाद सुनकर जब अबदुर्रहमान अपनी सेना सहित गोरी पहुँचे वहांके मीर जहांदारशाहने अपनी भतीजी इनको विवाहदी । गोरीमें पहुँचनेकी सूचना देकर इनके चचा अज़ीमको जो हिन्दूकुश और काबुलके बीचकी सडकपर अपना अधिकार जमाये हुए थे इन्होंने अपने पास बुलाया । उनको अब काबुल का राज्य फिर पानेकी छटपटी बहुत लगरही थी इसलिये उन्होंने इनसे एकबार फिर शेरअलीपर चढ़ाई करनेका आग्रह किया और कहा कि यदि तुम मेरी सहायता न करोगे तो मैं बुखारा भाग जाऊंगा । यद्यपि ऋतु उससमय किसीप्रकारसे इनके अनुकूल नथी परंतु चचाके अत्यंत आग्रहसे इन्हें उनके साथ बामियान जानापडा । जिससमय ये लोग गर्दनदावल पहुँचे । इनकी सेनाको देखकर शेरअलीके ३००० सैनिक सरेन्त्रश्मकी ओर भागगये। इससमय शेरअली का साहस तोडनेके लिये अबदुर्रहमान चाहते थे कि इस भगेड़ू सेनाका पीछा कियाजाय परंतु यहीपरभी अजीमके आग्रहने काम बिगाड दिया । अबदुर्रहमानकी इस काममें यह इच्छा थी कि शेरअलीसे एकबार फिर काबुलमें युद्ध किया जाय क्योंकि युद्धकेलिये वह उस जगहको अनुकूल समझते थे परंतु अज़ीम हठ करके इन्हें गज़नी लेगये। इनके गज़नी पहुँचनेका समाचार पातेही शेरअली लड़नेके लिये फिर आ खडे हुए । गजनीकी लडाईमे फिर शेरअलीकी सेनाने इनसे हारखाई और अबदुर्रहमानसे प्रसन्न होकर उनकी सेनाके बडे २ अफसर इनमें आमिलनेको तैयार होगये परंतु अज़ीमके अत्याचारोंको यादकर उन लोगोंका साहस न हुआ । इस अवसरमें शेरअलीके पासका अन्न

बीतगया और इसीकारण उन्होंने लडाईका मैदान छोडकर शाशा गांवके निकट जनाप्राके किलेकी शरणली । उनदिनों सर्दी बहुत पडती थी । अफगानिस्तानकी भूमिपर एक गज गहरी वर्फकी चादर ढकी हुई थी। माग चलना कठिन था। अबदुरहमानकी इच्छा थी कि इससमय शेरअलीको तरह दीजाय परतु अजीमने फिरभी आग्रहकर जनाराापर आक्रमण करवाया । युद्धमें जब इन्हें विजयकी आशा हुइ तो इनके जनरलकी भूलसे मामला उलटगया। जनरल नजीरखा जाडेसे डरकर मद्यमे मतवाला होगया और चचाकी सेना समयपर न आसकी इसलिये अबदुर्रहमानको वेष बदलकर शेरअलीकी सेनामे होकर भागना पडा । रणभूमिसे प्राण बचाकर अबदुर्रहमान चचा अजीमके पास मेमाना पहुंचे । यह जनाखापर चढाइ करते समय बीस ऊट सोना चचाके पास छोडगये थे। इस समय इन्होंने चचासे वही धन मागा। अजीम जैसे बेदबर मनुष्यसे धनकी रक्षा थोडेही होसकती थी। उस धनको लेकर राजानची भाग गया और अबदुरहमान हाथ मलते पछताते रहगये । अब धनहीन, सेनाहीन अबदुर्रहमानसे चचाके पास उन्हीके भरोसेपर रहना न बनसका । उन्होने वजीरी पहाडियोंमें भाग जानेका मनसूबा किया। जिस समय चालीस सवारो सहित यह जारहे थे शेरअलीके ३०० सवारोंने आकर इन्हें घेरलिया । घेरेमे पडकर अबदुर्रहमान अपना कुछभी पौरुष न दिखासके। छत्तीस सवाराके प्राण शत्रुकी तलवारका निशाना बननेके बाद यह चारसवारोंसे जनवरी सन् १८६९ ई० मे जुरमत पहुँचे । उस समय अबदुरहमानकी दशा बिलकुल बिगडगई थी। बहुत कालतक लडते २ इनमे चलनेका साहस नही रहा था। न इनके पास एक पैसा था और न इनके मनमें अब उत्साह रहा था। जा अबदुरहमान एक समय अफगानिस्तानमें सबसे अधिक धनाढ्य थे, जिनके पास एकदिन ८ लाख चालीस हजार मुहर १६ लाख रुपये, १० हजार खिलअत और १ हजार ऊट थे, जिनके यहा नित्य दो हजार मनुष्योंको भोजन मिलता था वही अबदुरहमान समयके फेरसे

इस समय शक्तिहीन होगये । अब इनके पास तांबेके एक थाले, एक लोटे, एक कंबल, फटे चिथड़े, एक तलवार, एक बंदूक एक रिवोल्वर और एक घोडेके सिवाय कुछ न बचा । जो अवदुर्रहमान अफगानिस्थानकी रक्तकी प्यासी प्रजाको अपनी मुट्ठीमें लेकर एक समय अज़ीमको राजा बनाचुके थे उन्हे अन्नके लिये तरसना पड़ा । कालकी गति बड़ी विचित्र है । इसी लिये कहना पड़ता है कि "दिननके फेरसो सुमेर होत माटीको ।" पराक्रमी अबदुर्रहमानको धन जानेका इतना कष्ट नहीं था. वह शक्ति जानेसे इतने दुःखित नहीं हुए थे, उन्हें देश छूट जानेका इतना खेद नहीं था जितने प्योर वीर सैनिकोंके नष्ट होने और उनके बिछुड़जानेसे इनका अंतःकरण जलता था । यही बात उन्होने अपने चरित्र में लिखी है ।

प्रकरण—८.

बुखाराको प्रयाण ।

अवदुर्रहमानको केवल इतनाही दुःख न हुआ बरन जिन प्यारे सैनिकोंको इन्होंने खोदिया वे इनकी आंखोंके सामने शत्रुके हाथ पड़गये और यह उनकी कुछभी रक्षा न करसके । इस बातका इन्हें बड़ा दुःखरहा । जिस समय यह शेररोजासे चले इनके साथ अमीर मुहम्मद नामका सिपाही था । चचा अज़ीमभी एकाकी इनसे जा मिलाथा। बीरमलमे पहुँचतेही इनपर नई आपदा आई । जहां ये ठहरे हुए थे वह जगह बर्फ़से बचीहुई थी । गांवके लोग इसजगह विना आज्ञा इन्हें ठहरे देख इनसे झगडने लगे । अमीर मुहम्मद और अज़ीम दोनों इन्हें छोडकर भागगये । अब इनके पास घोड़ातक न रहा । उसीसमय गांवसे कहीको घोड़ालिये एक मनुष्य जा रहा था । इन्होने उससे घोड़ा छीनकर रकाबमें पैर रखते २ उसके एक कोड़ा फटकारा । कोड़ा खातेही घोडा इन्हे लिये हुए दौड़ता २. चचाअज़ीमके पास

आपहुँचा। बस उसदिनके बाद लडते झगडते शीत, धूप, और बर्फके कष्ट उठाते हुये ये लोग वजीरिस्तानमें गये। यहां पहुँचने पूर्व अबदुर्रह मानको उनकी सेनाके लगभग ३०० सवार और आमिले। इस अवसरमे एक विशेष घटनाहुई। अबदुरहमानके पास मास राधनेके लिये पात्र तो थाही नहीं। इन्होने मट्टीके ठिकरेमें उसे तैयार किया था। जिससमय यह तैयार करचुके अचानक कहींसे कुत्ता आकर उसे ले भागा। इसपर अबदुर्रहमान ईश्वरकी लीलाको धन्यवाद देकर चुपरहगये।

इससमय इनके पास सेनाका जमघटा अच्छा होगया था। समस्त सैनिकोंकी संख्या ६०० से कम नथी। परतु उन्हे खिलानेके लिये पैसेका नामतक इनके पास नहीं था। ऐसे अवसरपर अचानक इनका पुराना नौकर वाजुल्ने दो हजार पौंड (अंगरेजी सोनेके सिक्के) लेकर आपहुँचा। जिससमय द्रव्य और सेना मिलजानेसे अबदुरहमानकी मुरझाईहुई आशालता फिरे लहलहाने लगी थी बन्नू और पेशावरसे इनके चचा अजीमके नाम दोअंगरेजोंके पत्र आये। उनमें लिखा था कि "आपलोग इधर उधर मारे २ क्या फिरते है भारतवर्षमें आकर ब्रिटिशगवर्नमेंटकी शरण क्यों नहीं लेते है।" इसके उत्तरमें अजीमने लिखा था कि "यदि सिंधुनदी पार करनेपर हमें बाध्य न किया जाय तो वाइसरायके निमत्रणसे हम आसकते है।" यह पत्र तैयारकर अजीमने अबदुर्रहमानसे उसपर मुहर कराना चाहा परतु उन्होने स्पष्ट नाहीं करदी। उन्होंने कहा कि "मुझे अंगरेजोंसे मित्रता करनेका लाभ विदित नहीं हुआ है। आप यदि एकबार धारा खानेपरभी जाना चाहते है तो आपको अधिकार है परतु मैं कदापि न जाऊंगा। आप जो पहले अंगरेजोंकी इतनी निन्दा करचुके है फिर अचानक आपका विचार क्योंकर बदलगया।" इसका उत्तर अजीमने यह दिया कि-' मन विचार तो नहीं बदले है परतु किसी प्रयोजनसे लिखरहाहूं। चचासे इस तरहका उत्तर पाकर अबदुर्रहमान चिढगए। इन्होने कहा कि ' तब आप झूठ बोलते है। यह आपकी चाल अच्छी

नहीं है। " अबदुर्रहमानके दबावमें आकर चचाने वह पत्र फाड़डाला और दूसरी चिट्ठी लिखी। जब यह तैयार होगई तब इनसे कहा गया कि तुमभी इसपर अपनी मुहर करो। इन्होंने उत्तर दिया कि "मैं कोई प्रसिद्ध पुरुष नहींहूं मेरे मुहर करनेकी क्या अवश्यकता है" इतना उत्तर पानेपरभी जब चचाने न माना तो इन्होंने अपनी मुहर तोड़कर फेंकदी और पत्र लेजानेवालेके साथ कहला दिया कि मुझे आप लोगोंसे कुछ प्रयोजन नहीं है। आप मेरे मित्रोंके शत्रु हैं और जब उनके शत्रु है तो मेरेभी शत्रु होचुके। "

अंगरेजोंको इसतरहका उत्तर देकर ये लोग मार्गमे चोरों और लुटेरोंसे लड़ते झगड़ते, पैसेकी तंगी और जाड़ेका दुःख झेलते अफ़गानोंसे दावत लेतेहुए मशद होकर आगे बढे तो इन्हें एकजगह जलका अतीव कष्ट सहनापड़ा। अरगंजसे आगे बढ़तेही दो दिनतक इन्हें पीनेको पानी न मिला। प्यासके मारे घोड़ोने चलना बंद करदिया. इनके गले घुटने और मुख सूखनेलगे। अबदुर्रहमानने तृषासे व्याकुल होकर एक घोड़ेकी जीभ काटकर चूसी परंतु उसमें पानीकी जगह रक्ततक न मिला। तीसरे दिन सायंकालको इन्हें एक कुआं मिला परंतु जिससमय यह वहां पहुँचे केवल चार सवारोंके सिवाय इनका सारासाथ प्यासकी व्याकुलतासे पीछे छूटगया था। जलपीनेपर जब इनके जीमें जी आया इन्होने उन्हीं सवारोंके साथ घोड़ोंपर रखवाकर अपने साथियोंके लिये पानी भेजा और वे लोग एक २ दो २ घूंट पानी पीकर इनसे जैसे तैसे आमिले। इस प्रकारका कष्ट पानेके अनंतर ये खीवा जा पहुँचे। वहांके खांने अबदुर्रहमानके सत्कारमें पंद्रहतोपोंकी सलामी करवाई और कई दिनतक इन्हें वहां रखकर इनका अच्छा सत्कार किया। दो घंटेके संभाषणमें खांने इनसे कहा कि "मेरे सात नगरोमेंसे दो आपको जागीरमें देताहूं और जब कभी आपकी बलख जानेकी इच्छा होगी युद्धमें आपकी सेवा करनेके लिये मै अपने १०००० सवार और पैदल आपको दूंगा, जो वहां वालोंको जीतकर बलख प्रदेश आपको दिलवा

देंगे।" अबदुर्रहमानने इस कृपाके लिये खाको बहुत २ धन्यवाद दिया। दोनोंकी बातचीत होजाने पश्चात् खाके खजानचीने आकर इनसे कहा कि, "खासाहबने आपको २ लाख मुहरें देनेकी मुझे आज्ञादी है।" इन्होंने खाको फिर धन्यवाद देकर कहा कि," इतनीका मै क्या करूंगा। मेरा तो केवल दश पदरह रुपया नित्य खर्च होता है।" जब अबदुर्रहमानने ये मुहरें नली तो खा इन्हे सो मुहर नित्य देने-लगा परतु इन्होंने अपने दैनिक खर्चके लिये दशपदरह रुपयेसे अधिक नहीं लिये। पाच दिनके बाद खीवाके वजीरने इनसे खाके उसी प्रश्नका उत्तर पूछा जो उन्होंने पहली भेटमें इनसे किया था। इन्होंने वजीरको समझाया कि "रूस आपका पड़ौसी है। वहाकी सेना बहुत बड़ी है और इस कारण यदि वह किसीदिन आपके देशपर चढाई करेगा तो आपका राज्य बचना सभव नहीं है इसलिये खा साहबसे कहो कि मुझे खीवाका दूत बनाकर रूससे मित्रता करनेके लिये भेजदें।" वजीरके कहनेपर खाने इनकी सम्मति मानली परतु वहाकी प्रजा इस बातसे प्रसन्न न हुई। वजीरसे इसतरहका उत्तर पाकर अबदुर्रहमानने कहदिया कि जहाकी प्रजा ऐसी मूर्ख है वहा मै ठहर नहीं सकता। वजीरने इनसे कहा कि खासाहब अपनी लड़की आपको विवाह देना चाहते है। उन्हे आशा है कि, इसउपायसे प्रजाका आपपर विश्वास होजायगा और तब आपकी सम्मतिके अनुसार काम होसकेगा परतु अबदुर्रहमानने इसबातको स्वीकार न किया और बुखारा जानेकी तैयारी करली। खाको इनके वियोगसे बहुत कष्ट हुआ। उसने इन्हे रोकनेका बहुतेरा यत्न किया परतु इन्होने उसके कथनको स्वीकार न किया। तब इन्हे बेडसो ऊट माना कपडेके देकर बिदा किया।

बारह दिनकी यात्राकर आससनदीको पार करतेहुए अबदुर्रहमानने बुखाराराज्यके अतर्गत कराकोल पहुँचनेपर इन्हे अपने कईएक नौकर और चचेरे भाई इशाहाकका पत्र मिला। कराकोलसे चलकर जब यह बुखारा राजधानी पहुँचे तो वहांपर बुखाराके अमीर नहीं थे। यह

रूसके अधीन सोराब बेगसे लडनेके लिये हिसार और कोलाबकी ओर गये थे। अमीरसे इनकी मित्रता थी इसलिये उसने इन्हें हिसारमे बुलालिया। अपने ऊंटोंको जो इन्हे खीवाराज्यसे मिले थे बेचकर पांचसौ सवारांसहित यह हिसारको विदाहुए। मार्गमें इन्हें एकजगह जहां अमीरके डेरे खडे किये जा रहे थे धरती लोहूसे लाल दिखलाई दी। निश्चय करनेपर इन्हें विदित हुआ कि हिरातके एक हजार कादियोंके गले कटवाकर अमीरने अपने समक्ष इस धरतीको लाल किया है। अमीरकी इस निर्दयताको देखकर इनका हृदय दयासे उछलने लगा और कई घंटोतक यह वहां बैठेर रोते रहे। यद्यपि इनकी इच्छा बुखारामें अधिक कालतक ठहरनेकी थी परंतु इसीलिये अमीरसे मिलकर उससे विदाईमे पांच हजार रुपये लेनेके अनंतर समरकंदको चलेगये।

प्रकरण–९.

रूसमे अबदुर्रहमान।

समरकंद पहुॅचनेपर रूसकी गवर्नमेंटने इनका आतिथ्य किया। इनके आगमनका समाचार पाकर तुर्किस्तानके वाइसरायने इन्हें ताशकंद बुलाया। समरकंदके रूसी अधिकारियोंने इनके लिये मार्गका अच्छा प्रबंध कर दिया। ताशकंद पहुंचनेपर पहले यह वाइसरायसे मिलने गये और फिर इनके सत्कारमे उन्होंने इनके मकानपर आकर भेटकी। बस तबहीसे इनको प्रथमबार यूरोपियन लोगोंकी चाल ढाल देखनेका कामपड़ा। इन्होंने वाइसरायको एक जड़ाऊ मूठकी तलवार, छः बहुमूल्य काश्मीरी दुशाले और दो कमखाब भेंट किये। ईसाइयोंके बड़े दिनके उत्सवमे वाइसरायने इनको उस दावतमें संयुक्त किया जिसमें अनेक सुंदरी युवतियांथीं और सेनाकी कवाइद दिखलाई। दूसरे दिन वाइसरायने इनको सेक्रेटरी भेजकर बुलवाया और कहा कि "रूसके जारने आपका स्वास्थ्य पूछा है। और आपसे भेंट करनेके

लिये राजधानी सेंटपीटसवगम बुलवाया है। "यद्यपि अबदुरहमानकी सेंटपीटसवर्ग जानेकी उत्कट इच्छा थी परतु इनके वहमी नौकरोंने इन्हें न जाने दिया। लाचार होकर इन्ह वाइसरायसे कहना पडा कि "मेरी इच्छातो बहुत है। मै जारके दर्शन करनेमे अपना सौभाग्य समझताहू परतु अभी मेर साथके ५०० आदमी थकेहुए है और जाना बडी दूरका ठहरा इसलिये कुछदिन विश्राम लेनेबाद यदि फिर बुलाया जाऊगा तो अवश्य जाऊगा ।" यह उत्तर पाकर वाइसरायने जारको ऐसाही तार देदिया। जारने इस बातको स्वीकारकर इनके लिये ताशकद वा समरकन्दमें जहा यह रहे एक मकान बनवादेने, १२५० रूसीसिक्के मासिक वेतन देने और अबदुर्रहमानका फोटो भेजनेको वाइसरायको आज्ञादी। अबदुरहममानने उनकी आज्ञा माथे चढाइ और फोटो खिंचवानेको तैयार हुए। इस समय इनके नौकरोंने कहा कि फोटो खिंचवानेसे मनुष्य काफिर (धर्मभ्रष्ट) होजाता है। अबदुरहमान उनकी मूर्खतापर बहुत हँसे और तबहीसे उनकी बात मानना छोडदिया। थोडे दिनतक वहा जनरलोंकी दावत चखने पश्चात् यह वाइसरायसे बिदा होकर समरकद पहुँचे। समरकन्दके गवनर जनरल एब्रामाफने इनसे कहा कि आपके लिये एक लाख रूबल (रूसीसिक्का) खचकर एक बाग और जमीन खरीदनेकी वाइसरायने आज्ञा दी है। आप जगह पसद कर लीजिये। इन्होंने कलदर खाना दवाजेपर बुखारा राज्यका बाग जो अब रूस गवर्नमेंट के अधिकारमें था पसद किया। वहीं इन्हें जनरल ने रहनेकी आज्ञादेदी। इसके सिवाय इन्होंने अपने चचेरे भाई सरदार इशहाकखाके लिये एक हवेली शहरमें बधकलेली और अपने नौकरोंके लिये एक मकान मोल लेलिया। थोडे दिन पश्चात् जिन सरदारोने इन्हें जारके पास न जानेकी सम्मति दीथी वे एक २ करके इनके पाससे खसक गये किन्तु सिपाहियोंने इनको पीठ न दिखलाई इसी कारण इन्होने अपने चरित्रम लिखा है कि "सरदारोंसे मुझे कष्टके सिवाय किसीतरहका सुख न हुआ'।

प्रकरण-१०.

अबदुर्रहमानका सत्कार ।

सन् १८७० ई० से सन् १८८० ई० तकके ग्यारह वर्षतक अबदुर्रहमान रूसगवर्नमेंटकी शरणमें रहे । इनको दिन रात घोड़ेकी सवारी और सैर शिकारके सिवाय कुछ काम न था । इन्होंने अपने सिपाहियोंका मासिक वेतन ५) और कर्मचारियोंका कुछ अधिक करदिया था । यद्यपि इन्हें रूस गवर्नमेंटसे जो कुछ मिलता था उसमें इनका पूरा नहीं पड़ता था और सदाही पैसेकी तंगी भोगा करते थे परंतु मासिक-वेतनके सिवाय इन्होंने गवर्नमेंटसे कभी एक पाई न मांगी और जब २ रूसी कर्मचारी इनसे इस विषयमें कुछ कहते यह यही उत्तर दियाकर ते थे कि "मुझे अपनी योग्यतासे बढ़कर मिलरहा है । मैं परमेश्वरसे प्रार्थना करताहूं कि वह जार साहबको दीर्घायु करै । और उनका राज्य सदा स्थिर रहै ।" समरकंदके गवर्नर इनसे बहुत मित्र भाव रखते थे और सरकारी कर्मचारियोंसे मिलनेका इन-पर किसी प्रकारका दवाव नहीं था । यह जब चाहते मिलते और जब इच्छा नहोती पंदरह २ दिन घरसे बाहर नहीं निकलते थे । इस समय यदि इन्हे कोई बहुत भारी दुःख था तो यही था कि इनकी माता, इनकी स्त्री और इनका पुत्र अबदुल्ला काबुलमें क़ैद पड़े २ सड़ रहे थे । दिन रात उनके कष्टको याद करकरके इनका हृदय जला करता था । इनके समरकंद पहुँचनेके दोवर्षके अनंतर काबुलकी रूससे मित्रता गाढी होगई और शेरअलीका पत्रव्यवहार रूसगवर्नमेंटसे अधिक २ होनेलगा । शेरअलीको जब कभी रूस गवर्नमेंटके पास पत्र भेजनापड़ता था वह बलखके गवर्नर मुहम्मद आलमखांके पास भेजा करते थे । वहांसे बुखाराके अमीरके पास वह पत्र भेजा जाता और वहांसे ताशकंदके वाइसराय जनरल एब्रामाफके पास पहुंच जाता था । बस इसीतरह रूसीगवर्नमेंट शेरअलीके पास चिट्ठी भेजा करती थी ।

जिसवर्ष अबदुर्रहमान समरकंद गये थे कदाचित उसीमें इन्होंने बदख्शांके मीरकी लड़कीसे विवाह किया। विवाहके दूसरे वर्ष वर्त्तमान अमीर हबीबुल्लाका और इनसे दोवर्ष पीछे सर्दार नसरुल्लाका जन्म हुआ। इनके सिवाय वहाँपर इनके दो पुत्र और एक कन्या और हुई। इस अवसरमें समरकंदके रूसीगवर्नरने शहर सब्जकी ओर चढाइकी। सेना भेजते समय उसने अबदुर्रहमानसे कहा कि-"यदि आप जानाचाहें तो मैं आपको भी भेजसक्ताहूं।" परन्तु इन्होंने जानेकी स्पष्ट नाहीं करदी। इन्होंने कहा कि "न तो मेरे और मेरे साथियोंके पास लडाइपर जानेयोग्य शस्त्र हैं और न मैं आपकी सहायताकर मुसलमानराज्यपर चढाइ करसकताहूं। इसबातका पहलेही मैंने रूसगवर्नमेंटसे ठहराव करलिया है। हां यदि आप चाहें तो मैं शहर सब्जके मीरोंको यहां बुलाकर उनसे आपकी संधि करासक्ताहूं।" इसबातको जनरल एब्रामाफने स्वीकार न किया। रूसी सेनाने शहर सब्जपर आक्रमणकर नगर तो लेलिया परन्तु चार बार हमला करनेपरभी उससे किला न टूटसका। जब रूसी सेना किलापानेसे निराश होचुकी तब उसके अफसरोंने एक चालकी। उन्होंने अपना एक दूत भेजकर किले वालोंसे छः दिनतक युद्ध बंद रखनेकी प्रार्थनाकर अपना वचन भंग न करनेका प्रणकिया। वहांवाले उनकी फुसलाहटमें आकर पहाडोंमेंसे अपने स्त्री बालकोंको लानेके लिये किला छोडगये। किला सैनिक शून्य पाकर रूसीसेना अनायास उसमें जा घुसी और वहां रूसी झंडा जा उडाया। उसीदिनसे अबदुर्रहमानका रूसियोंसे मन खट्टा होगया। इस विजयसे घायल होकर जब जनरल एब्रामाफ लौटे तो उन्होंने अबदुर्रहमानको लूटके मालमेंसे एक सुनहरी सुंघनीकी डिबिया एक दूरबीन और एक दुनाली बंदूक भेटकी। इन्होंने इस भेटको स्वीकार न कर कहदिया कि मुसलमानोंकी लूटका माल लेना हमारे धर्मके विरुद्ध है।

एक दिन गवर्नरने अबदुर्रहमानको बुलाकर कहा कि हम काबुलपर चढ़ाई करना चाहते हैं। 'क्या आपभी हमारे साथ चलेंगे?" यह बोले-"यदि आप काबुल लेकर वहां रूसीराज्य स्थापित करना चाहते हैं तो मेरे

जानेसे क्या लाभ है और जो आप मुझेही काबुल दिलाना चाहते हैं तो मैं स्वयं आपकी आज्ञा पानेपर एक हजार पैदल, एक हजार सवार और एक तोपखानेसे अपने राज्यको लेसकताहूं।" जाडा बीतजानेपर वे लोग चढ़ाई करनेको जब बिलकुल तैयार होचुके थे उसीसमय अचानक रूसी सेनामें महामारी फैलगई और लाचार होकर रूस गवर्नमेंटको अपना विचार छोड़ना पड़ा। इससमय अब्दुर्रहमानने रूसी गवर्नरसे कहा कि-"मैंने तो आपसे पहलेही कहदिया था कि इस तैयारीसे आपका मतलब काबुलसे लड़नेका नहीं है क्योंकि अफगान जैसी कट्टरजातिपर आप इतनीसी सेनासे आक्रमण नहीं करसकते। यह आप मेरी हँसी करते हैं।" गवर्नरने हँसकर इसबातको स्वीकार करलिया।

प्रकरण-११.

रूससे शेरअलीका मेल।

बहुत दिनोंतक लिखा पढ़ीकर अमीर शेरअलीने रूस गवर्नमेंटसे पक्की मित्रता करली। इस मित्रताका परिणाम यह हुआ कि उसकी अंगरेजी अफसरोंसे तकरार होगई। अबदुर्रहमानने लिखा है कि "शेरअलीने यह न सोचा कि जो माल एक हाटमें नहीं बिकता है वह दूसरेमें कैसे बिकसकैगा। जब वह एक ओर विश्वासघात करनेपर उतारू हुए तो दूसरी ओर उनपर विश्वास होना क्योंकर संभव है।" अबदुर्रहमानका यह कथन और उनके चरित्रसे लेकर इसप्रकरणमें जो आगे लिखाजायगा उससे मालूम होता है कि अमीर शेरअलीका अंगरेजोंको धोखा देकर रूससे मित्रता करना सच्चा है और उनपर चढाई करनेमें अंगरेजोंने कुछ अन्याय नहीं किया है परंतु अनेक अंगरेज ग्रंथकार इसका दोष भारतवर्षके वाइसराय लार्डलिटनके माथे मढ़ते हैं और उन्हींके कथनके आधारपर इस चरित्रके प्रथम अध्यायमें लिखागया है। कुछभी हो परंतु अबदुर्रहमानने अपने चरित्रमें लिखा है कि शेरअलीने रूससे प्रण किया

था कि आप अफगानिस्तानमे होकर भारतकी सीमातक रेल, तार लगा सकेंगे और मैं आपके कामोंकी रक्षा करूगा। इसके बदलेमें रूसनें उनको काबुलराज्यके वे परगने जिन्हें रूसने पहले छीन लिया था लौटा,देनेका प्रणकिया था। इसबातको सुनकर रूसी सेनाके हर्षका ठिकाना न रहा क्योंकि उसे आशा थी कि भारतवर्षका विजय होनेपर वहांकी लूटकरनेसे बहुतसा धन हमारे हाथ आयगा परंतु उसका विचार मनका मनहीमें रहगया और बीचहीमें खैबर घाटी और शुतरगर्दन (पैवारकोटल) में शेरअलीकी ब्रिटिशराज्यसे लडाइ ठनगइ। अमीर शेरअलीने लडाइ ठनतेही अपने बाल बच्चे तो पहलेहीसे बलखमें भेजदिये थे किन्तु अंगरेजोंकी विजयिनी सेनाके आगे वहभी न ठहरसके लाचार होकर उन्हें बलखकी ओर भागना पडा।

अंगरेजी सेनाने शेरअलीके पुत्र याकूबखांको गादी देकर क्रेटा खैबर, कुरम और पिशिन उससे लेलिया और राजधानी काबुलमें अंगरेज जनरल लुइ केवेगनरीको गवर्नमेंटकी ओरसे दूत नियत किया। अमीर शेरअली रणभूमिसे भागकर फरवरी सन् १८७९ इ० में बलखमें मरगये। मरने पूर्व उन्होंने रूससे मेलकर अंगरेजोंके विरुद्ध उसे उभारनेके लिये चार सरदारोंको समरकंद भेजा था और उन्होंने रूस गवर्नमेंटको कितनेही अंशोंमें प्रसन्नभी करलिया था परंतु शेरअलीके मरजानेसे मामला बिगडगया। इधर यद्यपि काबुलकी प्रजा और सेना याकूबको नहीं चाहती थी परंतु वहांके सरदारोंने उसे अमीर मानलिया। लोग कहते हैं कि ब्रिटिशदूत केवेगनरी अफगानिस्तानका प्रबंध करनेके लिये याकूबको दबाकर अपना मनमाना काम कराना चाहा था और इस बातसे अफगानप्रजा उनसे बिगडगइ थी। इस कारण केवेगनरी मारेगये। किसीका कथन है कि राज्यके उत्तराधिकारी अबदुल्लाजानकी माताने दाऊद शाहखांको तीन हजार मुहरें देकर उन्हें मरवाडाला।इसमें उसका हेतु यही था कि याकूबके हाथसे गादी छूटजाय। काबुलके लोगोंको इसी बातपर विश्वास अधिक है। सरलुइकेवेगन

रीके सेना सहित ३ सितंबर सन् १८७९ ई० को काटे जानेपर लार्ड राबर्टसने काबुलपर चढ़ाई और याकूबको भगाकर काबुल और कंदहारका विजयकर वहां ब्रिटिशकी विजय पताका जा फहराई और अवदुर्रहमानने अपने चरित्रमें लिखा है कि उन्होंनें काबुल राज्यका शासन न्याय और शांतिपूर्वक किया। याकूब दिसंबर सन् १८७९ ई० में कैदकर भारतवर्षको भेजदिया गया । अवदुर्रहमानका कथन है कि "जिस समय मैं ताशकंदमें था याकूबका पत्र रूसी गवर्नरके नाम आया था जिसमें लिखा था कि मैं अपने पिताके प्रणके अनुसार आपके कथनपर चलना चाहताहूं परंतु मुझे अवदुर्रहमानका भय है इसलिये उन्हे समरकंदसे निकाल दीजिये ।" यह बात वाइसरायको पसंद आई और उन्होंने याकूबकी असली चिट्ठी रूसी राजधानी सेंटपीटर्सबर्गको भेजदी । उस समय मुझे निश्चय होगया था कि रूसियोंके विचार मुझसे फिर गये हैं। अब वे मुझसे पहलेकी तरह मित्रता नहीं रखते हैं परंतु उनका वर्ताव पहले जैसाही था।

प्रकरण–१२.

अवदुर्रहमानकी क़ैद ।

रूससे प्रयाण ।

जिस समय शेरअलीके सरदार रूसगवर्नमेंटसे संधिकर काबुली, कंदहारी, गिलजाई, पेशावरी, स्वाती और बाजोरीप्रजाको रूसका मेल करा उसकी सहायता देना चाहते थे अवदुर्रहमानके चचेरे भाई (अज़ीमके पुत्र) सरवरखांने उनके नाम एक पत्र लिखकर अवदुर्रहमानके नाहीं करनेपरभी उस चिट्ठीपर उनकी मुहर करदी और यही मुहर उनपर एक विशेष आपत्ति लानेका कारण हुई। इस घटनाके सातवेंही दिन समरकंदके गवर्नरने अवदुरहमानऔर सरदार

सरवरखाको बुलाया। इनसे मिलकर साधारण सत्कार करनेके अनन्तर इनसे कहा कि "आपको वाइसरायने ताशकन्द बुलाया है। आप अभी चले जाइये।" इन्होंने जानेमें आनाकानीकी और अपने तीनों चचेरे भाइयोंसे जो इनके पास रहते थे आकर कहदिया कि अब मेरे कैद होकर ताशकन्द भेजेजानेकी आशा है। तुम तुर्किस्तान जानेके लिये बलप्रकी ओर भागजाना। वहां जाकर प्रजा और सरदारोंको उभारना। इन्होंने कईएक चिट्ठियां प्रजाके नाम लिखकर उन्हें देदीं। और आवश्यकतापर नई चिट्ठियां इनके नामकी तैयार करनेके लिये अपनी मुहरभी देदी और खर्चके लिये ३० हजार रुपये दिये। इतना कहकर यह अंतःपुरमें जाकर सोगये। रात्रिके बारह बजे रूसी गवर्नर तीनसौ सवार और दोसौ पैदल लेकर इनके पास आये और इन्हें साथ लेकर बिदाहुए। यह जातेसमय अपने साथ कामरां जान और जानमुहम्मदखांको लेते गये। इनमेंसे एकको इन्होंने अपने शासनके समय हिरातका प्रधान सेनापति और दूसरेको काबुलका खजानची बनाया था। इन्होंने जनरल इवानफसे जाकर पूछा कि आप मुझे कैद क्या करते हैं? उन्होंने गवर्नरसे जाकर कहा कि "यदि आप अबदुर्रहमानको बलात्कारसे लेजाना चाहेंगे तो उनको जाना कठिन होगा क्योंकि उनके पासकी सेना शस्त्रधारी है।" इसबातको सुनकर गवर्नरने अबदुर्रहमानको छोडदिया और कहदिया कि आप कल ग्यारह बजे स्वयं हमारेपास आजाना। अपने घरवालोंको समझाकर यह नियत समयपर गवर्नरसे जामिले। गवर्नरने इन्हें गाड़ीमें बिठलाकर काबुली सरदारोंके मकानके सामनेसे इसतरह निकाला जिससे उन्हें मालूम होजाय कि अबदुर्रहमान कैद होगये हैं। इस घटनासे इनका रक्त शरीरमें उछलने लगा नस फड़फड़ाने लगीं और संसार अंधकारमय दिखाई देने लगा। इन्होंने कई बार चाहा कि गाड़ीमेंसे कूदकर अभी शत्रुओंका विनाश करडालूँ और फिर मैं स्वयं अपनीही तलवारसे अपना गला काटदूं। इस

तरहका विचार करते २ यह अचेत होगये । दो दिन एकरात लगातार चलकर यह जिस समय ताशकंद पहुँचे तो वाइसरायने इनका पहलेकी तरहही सत्कार किया और उसी बंगलेमें टिकाया जिसमें यह सदा ठहरा करते थे । दो तीन दिनके बाद गवर्नरने इन्हें वही चिट्ठी दिखलाकर इनसे पूछा कि यह पत्र आपने क्यों लिखा है । इन्होंने उत्तर दिया कि "मैंने यह चिट्ठी लिखी तो नहीं है परंतु मुहर अवश्यही मेरी है । यदि इसमें आपकी गवर्नमेंटके विरुद्ध कोई बात लिखीगई हो तो मेरा अपराध है किन्तु केवल अपने देशियोंको पत्र लिखनाही अपराध न होना चाहिये । यदि मैं इस पत्रके लिखने पूर्व आपकी आज्ञा मांगता तो सरदार लोग काबुलको लौटजाते और मेरा पत्र उन्हें न मिलता इसीलिये मैंने बिना आज्ञा लिखदिया" । इतना सुनकर गवर्नरने कह-दिया कि "अच्छा अब आपको हम छोड़ते हैं । आप प्रसन्नतासे समरकंद जाकर अपने घरवालोंसे मिलिये । वे आपके बिना तड़पते होंगे ।" परंतु इसबातको इन्होंने स्वीकार न किया । यह बोले कि "वहां मैं अब नहीं रहूंगा । वहांसे कैद करके लानेमें मेरी प्रतिष्ठा बिगड़ चुकी है । समरकंदके लोगोंको मैं अब अपना मुँह नहीं दिखलाऊंगा ।" वाइ-सरायने कहा कि "यदि आप अब समरकंदमें नहीं रहना चाहते हैं तो प्रसन्नतासे यहां रहिये और अपने रहनेके लिये मकान पसंद करली-जिये ।" अबदुर्रहमान वाइसरायसे आज्ञा लेकर समरकंदसे अपने कुटुं-बको लेआये और अब वहींहीं रहनेलगे । यहां रहनेसे इनका प्रयोजन यह था कि इनका विचार अफ़गानिस्तानको चले जानेका था । समर-कंदकी अपेक्षा ताशकंदसे जानेमें इन्हें अधिक सुविधा थी । वहां थोड़े दिन रहकर अफ़गानिस्तान लौटनेकी सब तयारियां करनेके अनंतर जन-रल काफ़मानसे आज्ञा लेकर शुक्रवारके दिन यह ताशकंदसे विदाहुए । मार्ग व्ययके लिये रूस गवर्नमेंटने इनको ५ हजार रुपया दिया । परंतु इन्होंने जब रुपया न लिया तो एक पिस्तौल और एक बंदूक इनको दी । बर्फ़की अधिकता और जाड़की कड़ाईके सिवाय मार्गमें कोई विशेष घटना नहीं हुई । हां एक बात यहां अवश्य लिखने योग्य है । अबदुर्रह-

मानसांने अपने चरित्रमें लिखा है कि–"कुछकाल पहले मुझसे स्वप्नमें आकर ख्वाजासाहबकी आत्माने कहा था कि मेरे झण्डोंका सबसे बड़ा झंडा तू लेजाना। जब तू अफगानिस्तानको जावे इसे अपने साथ रखना। इससे तेरा विजय होगा। इसी स्वप्नके अनुसार मैं इस झंडेको अपने साथ लेता गया।" इसी झंडेको उड़ाते हुए जिस समय यह शहर सबूजके मार्गमें जोजगांवमें पहुँचे तो बुखाराके अमीरकी आज्ञापाकर वहांकी प्रजाने इनको रसद न दी और न गांवमें घुसने दिया। इन्होंने गांवके बाहर एक मसजिदमें ठहरकर जब उनसे बलपूर्वक सामान लेने की धमकी दी तो वे लाचार होकर इनके सामने गिड़गिड़ाने लगे। वहां से चलकर इन्होंने शहर सब्जसे बुखाराके अमीरके नाम पत्र लिखा। उसमें लिख दिया कि "परमेश्वरके लिये आप मेरे पास न आइये। मैं आपसे नहीं मिलना चाहताहूं"

ख्वाजा गुजरानमें आनेपर इन्होंने सुना कि शाहजादा हसन और उनके दोनों चचाओंने रुस्तक, कटागन और बदख्शांको आपसमें बांट लिया है और वे धर्मका ढोंग करके उनके राज्यमें किसी अफगानका पैर पड़नेसे उस भूमिका अपवित्र होना मानते हैं। इन्होंने शाहजादा हसनके नाम पत्र लिखा। जो मनुष्य इनकी ओरसे चिट्ठी लेकर गया था उसे हसनने कैद करलिया और इनके पत्रका बड़ा कड़ा उत्तर दिया। उत्तर पाकर इनका क्रोध उमड़ आया। इन्होंनेभी उत्तरमें उसे बहुत गालियादीं और उससे युद्ध ठान लिया। हसनके बारह हजार सवारोंसे इनके केवल १०० सवारोंको लड़नापड़ा। परन्तु इन्होंने लिखा है कि मुझे परमेश्वरका पूराभरोसा है। वह सदा मेरी रक्षा करता है इसलिये मैं लड़नेसे डरा नहीं। मैं जानता था कि यदि मैं भागजाऊंगा तो यहांके लोग मुझे मारडालेंगे और जो यहां मैं रह गया तो मुझे शत्रुओंसे सामना करना पड़ेगा। दोनों तरहसे मेरी मृत्यु है। जिस मनुष्यकी ईश्वर रक्षा करता है उसे संसारमें कोई मारने वाला नहीं है। अमीरकी कृपासे मेरा हृदय इतना कठोर होगया है कि यदि मुझे सारी दुनियासे भी युद्धमें सामना करना पड़े तो मैं उसे परवा

नीचेका कीड़ा समझताहूं । यह मेरा अनुभव है । यदि कोई मनुष्य इसी तरह परमेश्वरपर विश्वास रक्खेगा तो उसको ईश्वर अवश्य सफलता प्रदान करेगा । मुझे भरोसा है कि अब मैं अमीर होगयाहूं ।" दूसरे दिन हसनके बारह हजार सवार इनसे लड़ने तो आये परंतु ईश्वर कृपासे विना लड़ेही वे इधर उधर भागगये । इसके अनंतर बदख्शांके मीरके भेजेहुए जो सवार हसनकी सहायताके लिये आये थे वेभी इनमें आमिले । इन्होंने उनसे कहा कि "मैं मुसलमानोंका वध करनेके लिये नहीं आयाहूं । यदि भगेड़ सवारभी मुझमें आमिलेंगे तो मैं उन्हें अपने साथ लेजाऊंगा क्योंकि अब मुझे अंगरेजोंसे युद्ध करना है ।" बदख्शांके सवारोंको लेकर जब यह रुस्तक गये तो वहांके मीरने इनका बड़ा सत्कार किया और प्रजाने जिरगाके स्वरूपमें इनकी भेटकी । प्रजासे इन्होंने आज्ञा देकर २ हजार सवार और १ हजार पैदल तयार करवाये और इनका अफसर मीर बाबाको बनाकर फ़ैज़ाबाद भेजते समय उसके हाथ एक पत्र दिया । जिसमें लिखा था कि–"अय मुसलमानो ! ईश्वरपर सच्ची भक्ति रखनेवाले अफ़गानोंसे मैं लडने नहीं आयाहूं इसलिये आप लोग मेरी आज्ञाका पालन करो । यही वही आज्ञा है जो ईश्वर और पैगंबरकी दीहुई है । हम सब परमेश्वरके दास हैं । परंतु जिहाद हम सबका कर्तव्यकर्म है । " इसके सिवाय उन्होंने एक पत्र फ़ैज़ाबादके रईसोंके नामभी लिखा । उसमें लिखा था कि "मीरशाहजादाहसन रईस और प्रजा, मैं आपका राज्य अंगरेजोंके हाथसे छुड़ाने आयाहूं । मुसलमानोंका देश फिरंगियोंके हाथ न जानेदो । यदि यह देश उनके हाथ चलाजायगा तो संसार आपको धिःकारेगा । यदि आप मेरी बात न मानोगे तो मैं आपसे युद्ध करूंगा । या तो ईश्वर और मुहम्मदके भक्तबनो अथवा मुझसे युद्धकरो ।" इन पत्रोंको पाकर वहांकी प्रजाने मीरको बहुत समझाया परंतु उसने कहदिया कि काश्मीर राज्यसे मेरी मित्रता है इसलिये मुसलमानोंका वशवर्ती होनेके बदले मैं वहीं चलाजा-

ऊंगा। " यहांकी प्रजाने मीरके हिन्दूको मित्र बननेके दोषमे निका लकर अबदुर्रहमानकी आधीनता स्वीकार करली और मीरभी का श्मीर जाते हुए मार्गमे मरगया । अबदुर्रहमानने अपनी पुस्तकमे ऐसाही लिखा है परन्तु मीरकी काश्मीरनरेशसे मित्रता होनेकी बातमे कहांतक सत्यता है इस बातका मैं पता नहीं लगासक्ताहूं।

अबदुर्रहमानको फैजाबाद लेलेनेपरही सन्तोष न हुआ। रैद इससे पूर्व हस्तकके मीरोका तो अपने अनुयायी करही चुके थे अब उन्होंने काटागनके मीर सुल्तानमुरादको पत्र लिखा । उस पत्रमें काटागन होकर चलेजानेकी आज्ञा मागनेके सिवाय सेना और रुपयेकीभी मदद मागी गई थी। इसके उत्तरमे मीरने लिखा कि हमलोगोंमे अंगरेजोंसे लडने और उनका जी दुःखानकी शक्ति नहीं है इसलिये आपको अपने देशमे होकर न जाने दंगे। " इसके उत्तरमे अबदुर्रहमानने वहांके मीरको युद्धकी धमकी देकर एक हजार चिट्ठियां वहांकी सेनाके नाम इस आशयकी लिखकर एक फकीर वेषधारी नौकरके साथ भेजी कि " तुम अफगानिस्तानकी प्रजा हो । मैं हस्तकको जारहाहूं । परन्तु तुम्हारा मीर मुझे तुमसे मिलनेके लिये आने नहीं देना चाहता है। " अबदुर्रहमानकी आज्ञाके अनुसार वही फकीर काटागन जाकर उन चिट्ठियोंको मसजिदों गलियों और छावनीमे फेक आया और उन पत्रोंको पढ़कर प्रजा मीरपर अप्रसन्न हुई।

प्रकरण-१२

मीरबाबाको दंड ११३

जिससमय अबदुर्रहमानने हस्तकके पास पत्र भेजा उसको लेकर मीरबाबा नामक सर्दार इनकी ओरसे गया था और उसके साथ इन्होंने कुछ सेनाभी दी थी। थोडेदिन पीछे इन्होंने मीरबाबाको पीछाबुलाया और उसे बुलानेके लिये जो पत्र भेजागया उसमें यो लिखा कि तुम अपनी

सेना समेत शीघ्र लौटआओ। तुम्हारी और मेरी सेना मिलजानेपर काटागनके मीरपर चढ़ाई करनेमें अधिक सुविधा होगी। इनकी बुलाहट से मीर बाबा नहीं आया और झांसा देकर इन्हींको उसने फ़ैज़ाबादमें बुलाया। जब यह २ हज़ार सवार समेत आगे पहुंचे तो रात्रिके समय एकमनुष्य इनके पास चलाआया और इन्हें जगाकर एक पत्र दिया जिसमें लिखा था कि "मैं अफगानिस्तानका एक सौदागरहूं। मीरबाबा बदख्शांके कईएक रईसोंसे मिलकर आपको कैद करना और अंगरेज़ोंके पास भेजदेना चाहता है। आप यहां कदापि न आओ।" इस पत्रको पातेही इनके साथियोंने इन्हें फ़ैज़ाबाद न जानेकी सम्मतिदी परंतु इन्होंने न माना। जब यह आगे बढ़कर राजगनकी पहाड़ीपर पहुँचे तो सामनेसे छः हज़ार सवारोंको लेकर इन्हें मीरबाबा आता हुआ दिखाई दिया। दोनोंकी मुठभेड़ होते ही इनकी आज्ञापाकर इनके सवारोंने मीरबाबाको घेर लिया और उसे घेरेमें लेकर यह फ़ैज़ाबाद पहुँचे। इन्होंने जातेही क़िलेपर आक्रमणकर उसपर अपना अधिकार करलिया। अधिकारकर मीरबाबाको अपने चंगुलमें तो इन्होंने फँसालिया परंतु बुखाराके अमीरकी उत्तेजनासे वह वहांकी प्रजासे कहता रहा कि यह रूससे भागकर आये हैं। एक दिन फिर वह इन्हें धोखा देकर तीतरकी आखेटके लिये लेगया। पहाड़ीपर पहुँचनेपर इन्हें मालूम हुआ कि इनसे लड़नेके लिये वहांपर पांचसौ सवार खड़े हैं। सवारोंको देखतेही इन्होंने बाबासे कहा कि—"मैंने सुना है कि तुम मुझे पकड़कर अंगरेजोंकी क़ैदमें डालना चाहते हो। आजसे बढ़कर तुम्हें फिर कभी ऐसा अवसर न मिलेगा।" इतना कहकर ज्योंही इन्होंने अपनी बंदूककी मुहरी बाबाकी छातीकी ओरकी इनके आदमियोंने उसके साथियोंको अपनी २ बंदूकोंका निशाना बनाया। इस घटनासे जब वे लोग घबड़ाउठे तो उन्हें वहां छोड़ अबदुर्रहमानने अपने साथियोंसमेत लौटआये। उससमय तो लड़ाईकी अनी टलगई परन्तु तीनही दिनमें फिर दूसरा अवसर हाथ आया। उसदिन अबदुर्रहमानने मीर बाबाको न्योतादिया। मीर तीनसौ सवारोंको लेकर आया। जब अबदुर्रहमानके पास किलेके फाटकपर पहुँचा तो इनके संतरीने उसे

रोकदिया और कहा कि आप केवल तीससवार लेकर भीतर जा सकते है। सुनतेही मीरबाबा उखड़गया। वह अफगानोंको गालिया देनेलगा और उसने अपने नौकरको आज्ञादी कि गोलिया मारकर किला छीनलो। उसके साथियोंने एक दवाजा लेभीलिया तब इसबातकी रिपोर्ट अबदुर्रहमानके पास पहुँची। जिससमय इन्होने यह बातसुनी यह केवल एककुर्ता और एकही जाकट पहने हुए थे और एकही रिवोल्वर (छ नालीतमचा) इनके पास था। सुनतेही यह फाटकके पासगये। दवाजेके बाहर ५००० सवाराका जमघटा था। एक बृहत् सेनासे लडाईमें विजय पानेकी अशा छोड शत्रुसेनाके बीचमेंसे निकल जानेके विचारसे यह वैसीही दशामे आगे बढे और सीसेंमसे रिवोल्वर निकालकर इन्हाने कुर्तेकी बोहमे छिपालिया। साहस पूर्वक मीर बाबाके सवारों-की भीडमें घुसकर इन्होने मीर बाबाकी पीछेसे गरदन पकड ली और आपना तमचा उसकी कनपटीपर ताना। तमचा तानकर कहा-"देखले मै वही, अफगानहूं जिसे तूने गालियादी थीं। जीनाहोतो तलवार डालदे नहींतो अभी प्राण लिये लेताहू।" सुनतेही उसने तलवार फककर अपने नौकरोंको आज्ञादी कि "किलेके बाहर निकल आओ नहींतो मै अभी माराजाताहू।" मीरकी सेनाके बाहरनिकलतेही अबदुर्रहमानके सैनिकोंने फाटक बन्द करलिए। तब अबदुर्रहमानने मीरबाबाके सैनिकोंसेकहा कि 'क्या आपलाग इसडरपोकके साथ मरना चाहतेहो?" उन्हाने कहा-"नहा आपके साथ" और इतना कहकरवे अपने २ घर च लगये। अबदुर्रहमान शत्रुकी सेनाको निकालनेपरभी किलेमें न गये। मीर-बाबाके साथ उसके घर जाकर एक रात रहे और उसकी स्त्रीके हाथका भोजनकर दूसरे दिन किलेमे आये।

प्रकरण-१४

बलखके विज्ञापन।

अबदुर्रहमानने बलखमे जो विज्ञापन बटवाये अथवा यों कहो कि किसी फकीरके हाथसे मसजिदोंमे और हाट बाट गली कूचमें फिकवाये

थे इनका फल अब हुआ। वहांके सैनिकों द्वारा यह बात बलखके मुख्य अधिकारी गुलाम हैदरके कानमें पहुँची। अंगरेजोंके मित्र मीरसुलतान-मुरादका राज्य लेकर अबदुर्रहमानको भगादेनेका उसे अच्छा अवसर मिला उसने तुरन्तही सुलतानमुरादपर चढाई करदी। गुलाम हैदरके सवार ताशकरगान आकर कहने लगे कि सुलतान मुरादने अबदुर्रहमानको जिहाद न करनेदी इसलिये हमलोग यहां आये हैं। सुलताननें मीर बाबा और मुहम्मद ऊमरसे इस समय सहायता मांगनेके सिवाय अपनी मददके लिये अबदुर्रहमानकोभी बुलाया। इनके पहुँचने पूर्वही सुलतानमुराद गुलामहैदरसे हारखाकर भागगया और इसलिये अबदुर्रहमानका मार्ग रोकनेका उसे अनायास दंड मिलगया।

जिससमय अबदुर्रहमान तालेखांमें पहुचे इनके पास सब मिला-कर आठ हजार सवार थे। कुंदजकी लड़ाईमें हार होनेसे गुलाम हैदरकी सेनाभी अबदुर्रहमानके अधीन होगई। धर्मपर आस्था दिला-कर अबदुर्रहमानने कुंदजकी सेनाभी अपनीमें मिलाली। मीर बाबा जो बहुत दिनोंसे अबदुर्रहमानके साथ चालबाजी किया करता था उसेभी इनका प्रभाव बढ़ता देखकर लाचारीसे अपनी छः हजार सेना सहित इनके पास आना पड़ा। सबको दरबारमें इकट्ठाकर अब-दुर्रहमानने कहाकि–" आप लोग जानते हैं कि मेरी स्थिति इस समय कैसी है। मैं यहां जिहादके लिये आयाहूं परंतु मेरी सेनाके पास न पैसा है और न खानेको है। इस देशके समस्त रईसोंको अपनी शक्ति-के अनुसार इस कार्यके लिये धन देना होगा और प्रजाको मेरे सवारोंका मेहमानो की तरह सत्कार करना पड़ेगा। दो घर पीछे एक भेड़ और एकही गेहूं अथवा जोकी बोरी देनाहोगा। इसके सिवाय मैं आपलोगोंको कोई कष्ट न दूंगा।" प्रजा और रईसोंको ऐसी आज्ञा देकर उन्होंने सरदार इशहाकखांको बुलाया। वहांकी प्रजा और रई-सोंने इनको ३ लाख रुपया दिया और फिरभी देनेका प्रण किया। इसके सिवाय बुखारा राज्यकी लूटके मालमेंसे ६४ हजार मुहरें

और सौ सौ रुपयेके दोहजार नोट अलग मिलगये। मुसल्मानोंके यथार्थके पहले दिन अब्दुर्रहमानने छ हजार स्त्रियां और लड़कियांको जिन्हें शेरअलीकी मृत्युपर लौंडियां बनानेके लिये कैद किया गया था छोडनेकी आज्ञा दी परन्तु मीरबावा जैसे दुष्ट पुरुषसे अब भी चुप न रहागया। उसने कहा कि 'अब्दुर्रहमान शीघ्रही अंगरेजोंके चंगुलमें फँसने वाला है। उसके कहनेसे इन्हें क्या छोड़ते हो।" इस खबरको लेकर अब्दुर्रहमानके दूत जो राज्यके अधिकारियोंके पास जारहे थे उन्हें मीर बावाने मारडाला। उनमेंसे एक मनुष्य जो किसी तरह बचकर भागआया था उसने यह खबर अब्दुर्रहमानको सुनाई। सुनतेही वह लाल पीले होगये। तुरतही उन्होंने मीर बावाको कैद कर लिया और अन्य कैदियोंको छुटकारा देकर उन्हें अपने २ घर भेजदिया। दूसरे दिन इनके कुन्दज पहुँचतेही इनके सम्मानमें १०१ तोपोंकी सलामी हुई और वहांके अधिकारियोंने इनके ८०० शत्रुओंको इनके समक्ष खडाकर निवेदन किया कि' ये गर्दन मारे जानेके लिये उपस्थित किये गये हैं।" इन्होंने उनका अपराध क्षमाकर उन्हें भी छोड़दिया।

प्रकरण—१५.

अंगरेजोंसे लिखापढी।

गत प्रकरणके अंतमें लिखी हुई घटनाके दूसरेही दिन जिससमय अब्दुर्रहमान सेनाका निरीक्षण कररहे थे इनके पास एक मनुष्यने इनके चरणोंमें पड़कर अपने अपराधोंकी क्षमा मांगनेके अनंतर अब्दुर्रहमानको पत्र देते समय कहा कि "मैं आपके पास दूत बनकर मार्गमें घर और जाड़ेका बहुतसा कष्ट झेलनेके अनन्तर तेल जमें आ पहुँचा हूँ।" इसका नाम नजीर मुहम्मद सरवर और इसके पिताका नजर हैदर था। यह सरवर कमें अब्दुर्रहमानको छोड़कर भाग आया था। और यही कारण उसके इनसे क्षमा मांगनेका था। उस पत्रमें लिखा था कि—

" मेरे प्रतिष्ठित मित्र-सर्दार अबदुर्रहमानखां,

ग्रिफिनकी ओरसे बहुत २ सलाम। आपके कुशल मंगलकी इच्छाके अनंतर मैं आपको सूचना देताहूँ कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट आपका आनंद पूर्वक कटागन पहुँचना सुनकर प्रसन्नहुई है। आपने रूस क्यों छोड़ा और अब आपका विचार क्या है इन बातोंके जाननेसे उन्हें बहुत प्रसन्नता होगी "

अबदुर्रहमानने यह पत्र अपनी सेनाको इकट्ठाकर सुनाया। उनको भय यह था कि पत्रको छिपाकर गुपचुप उत्तर लिखदेनेसे लोगोंको भ्रम होगा कि अबदुर्रहमान देश अंगरेजोंको देनेका गुप्त प्रपंच कर रहा है और इसबातका संदेह उत्पन्न होनाभी उनके लिये बड़ा हानिकर था। पत्र सुनाकर उन्होंने सरदारों और सैनिकोंसे इसके उत्तर लिखनेकी सम्मति मांगी। उन्होंने दो दिनमें विचारकर उत्तर देनेका प्रण किया। तीसरे दिन इनके पास सौ के लगभग चिट्ठियां आईं। उनमे अंगरेजोंके लिये लिखा था कि-" तुम हमारे देशको छोड़कर चले जाओ। हम तुम्हें निकाल देंगे अथवा मर मिटेंगे। हमसे मेल करने पूर्व तुमसे हमे जो अबतक हानि पहुँची है उसका बदलादो। हमें सौ करोड़ रुपया दो नहीं तो हम एक भी अंगरेजको देशमें न घुसने देंगे। तुमने अत्याचारसे भारतवर्ष लिया है और इसीतरह अफगानिस्तानको अपने राज्यमें मिलाना चाहतेहो। हम लोगोंमें जबतक शक्तिरहैगी हम तुमसे लड़ेंगे और फिर रूस हमारा सहायक होगा। तुम अत्याचारी काफिरहो! " यह एक चिट्ठीका अनुवाद नहीं है किन्तु सब चिट्ठियोंका सारहै। अबदुर्रहमानने जिसतरह सर् लिपिल ग्रिफिनका पत्र सबको सुनाया था उसीतरहये चिट्ठियांभी सुनादीं और कहा कि " उत्तरभी मैं आप लोगोंके समक्षही लिखता हूं ताकि आपको संदेह नहो कि मैने आपसे पूंछेबिना पत्र लिखलिया। " सब लोगोंके समक्ष उन्होंने कागज़ क़लम और दावात मँगवाकर परमेश्वरसे पहले सुबुद्धि देनेकी प्रार्थना करनेके अनंतर ७ हज़ार उज़बेगों और अफ़गानोंके समक्ष यह पत्र लिखाः-

"ग्रेट ब्रिटेनके प्रतिनिधि मेरे प्रतिष्ठित मित्र ग्रिफिनसाहब, सरदार अबदुररहमानकी सलामके पश्चात् विदित हो कि आपका कृपापत्र, जिसमें मेरे स्वागत प्रसन्नतासे पहुँचजानेपर हर्ष प्रकट किया गया है पाकर मुझे आनंद हुआ। आपने मुझसे रूस छोडनेका कारण पूछा उसके उत्तरमें लिखताहूं। कि मैंने वाइसराय जनरल काफमन और रूस गवर्नमेंटकी आज्ञासे रूस छोडा है। मैंने यह काम इसलिये किया है कि मेरा विचार मेरी जातिको कष्ट और घबराहटमें सहायता देनेका है। सलाम।"

अबदुररहमानने यह पत्र प्रथम सेना और सरदारोंको पढकर सुनाया और फिर उनसे सम्मति पूछी। उन्होंने कहा कि ' हम लोग धर्म और देशके लिये लड़नेको तयार हैं परतु पत्र लिखना नहीं जानते। हम परमेश्वर और पैगंबरकी शपथ खाकर आपको पत्र लिखनेका अधिकार देते हैं। आपने पत्र अच्छा लिखा है। हमलोग इस उत्तरसे सहमत हैं।" सब लोगोंके पसंद करनेपर यह उत्तर अंगरेजी दूत नजीर मुहम्मदसरवरखांके साथ काबुल भेजागया और धीरे२ चलकर अबदुर्रहमान चरीकार पहुँचे। उन्होंने वहां पहुँचकर अंगरेजोंसे कहला दिया कि हम आपसे ठहराव करनेको यहां आगये हैं। इस पत्रका उत्तर सर् लेपिल ग्रिफिनने ३० अप्रैलको दिया जिसमें लिखा था कि "आप शीघ्रही काबुल पहुँचकर अफगान राज्यका शासन ग्रहण कीजिये। ' इसपर अबदुररहमानने १६ मईको उन्हें इसप्रकार उत्तर दिया –

" मेरे बहुमूल्य मित्र, मुझे ब्रिटिश गवर्नमेंटसे बहुत कुछ आशा थी और अबभी है। आपकी मित्रताने मेरी आशाको अमर किया है। आप अफगान प्रजाके ढगको अच्छी तरह जानते हैं। मेरे कथनका उसउसमय तक उसपर प्रभाव नहीं पडसकता है जबतक कि उन्हें यह विश्वास न हो कि मैं उनके भलेकी कह रहाहूं। प्रजा मुझे काबुलमें घुसनेकी आज्ञा देनेपूर्व इन बातोंका उत्तर मांगती है –

१ मेरे राज्यकी सीमा कहांतक होगी ?
२ क्या कंदहारभी उसमें संयुक्त किया जायगा ?
३ क्या यूरोपियन राजदूत और सेना काबुलमें रहेगी ?
४ ब्रिटिश गवर्नमेंटके किन २ शत्रुओंको मेरे राज्यमेंसे निकाल देनेकी आशा कीजायगी ?
५ गवर्नमेंट मुझे और मेरे देशियोंको क्या लाभ पहुँचायगी ?
६ और वह मुझसे क्या २ काम करानेकी आशा रखती है ?

इन बातोंका उत्तर पानेपर मैं अपनी प्रजाको सुनाऊंगा और उनकी सम्मतिसेही आपसे संधि करनेका प्रयत्न करूंगा । परमेश्वरका मुझे भरोसा है कि मैं कुछ दिनमें आपका काम करनेमें संयुक्त होजाऊंगा । यद्यपि गवर्नमेंटको मेरी सहायताकी आवश्यकता नहीं है परंतु संसार मे आवश्यकताके अवसर अनायास आ पडते हैं।" परमेश्वरकी कृपासे प्रजा दौड़ २ कर संधिके शपथ खानेलगी और सब प्रकारसे प्राण और धन देकर इनकी सेवा करनेको उद्यत हुई। जिससमय यह चरीकार पहुँचे ३ लाख गाजी इनमें आमिले। इतने बृहत् समुदायके इकट्ठे होकर इन्हें राजा स्वीकार करनेसे इन्हें अतीव हर्ष हुआ और इन्होंने परमेश्वरको धन्यवाद दिया। उन लोगोंने इनसे प्राण होमकर लड़नेका प्रणकिया परंतु इन्होंने समझा दिया कि "जब अंगरेज लोग मुझे राज्य देना चाहते हैं फिर लड़नेकी क्या आवश्यकता है।"

प्रकरण—१६.

अंगरेजोंसे संधि ।

१४ जून सन् १८८० ई० को ग्रिफिन साहबने अबदुर्रहमानके प्रश्नोंका उत्तर दिया। उसका आशय यह है कि:—

"आपने जो प्रश्न किये थे उनका उत्तर आपके पास पहुँचानेकी भारत गवर्नमेंटने मुझे आज्ञादी है। प्रथम काबुल नरेशके विदेशी राज्योंके संबंधके विषयमें यह कहना है कि ब्रिटिश गवर्नमेंट विदेशी राज्योंका अफगानिस्तानपर हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करती है और रूस और इरानसे यह प्रण करालिया गया है कि वे अफगानिस्तानके राजनैतिक विषयोंसे सदा अलग रहेंगे इसलिये यह बात स्पष्ट है कि काबुलका शासक कभी अंगरेजोंके सिवाय किसी विदेशी राज्यसे राजनैतिक संबंध न रखने पावेगा और यदि कोई विदेशी राज्य अफगानिस्तानपर हस्तक्षेप करेगा और वह हस्तक्षेप अफगानिस्तानके अमीरपर बिना छेडछाड चढाईका कारण होगा तो ब्रिटिश गवर्नमेंट उसकी सहायता करने और आवश्यकता पडनेपर उसके शत्रुको निकाल देनेपर तैयार होगी। केवल शर्त यही है कि वह विदेशीराज्योंसे संबंध (बाहरी मामलों) में उनकी सम्मतिके अनुसार कार्य करेगा। दूसरे यह कि सीमाके विषयमें मुझे आज्ञा हुई है कि कंदहारका समस्त प्रदेश एक अलग शासकको दिया गया है और सीबी तथा पिशीन ब्रिटिश राज्यमें मिलालिया गया है। इस कारण इन विषयोंमें गवर्नमेंट आपसे किसी तरहका नया ठहराव नहीं करसकती है और न पश्चिमोत्तर सीमाके विषयमें करसकती है जिनके विषयमें संधि, भूतपूर्व अमीर याकूबखांसे होचुकी है। इन बातोंके सिवाय ब्रिटिश गवर्नमेंट चाहती है कि आप अफगानिस्तानके (हिरात समेत जिसके लिये गवर्नमेंट आपको गेरंटी नहीं देसकती है और न वह आपके उन कामोंमें रोक टोक करेगी जो आप उसे लेनेके लिये करें) परिपूर्ण और विस्तीर्ण अधिकारोंसे जिन अधिकारोंको अबतक आपका घराना भोगता आया है राजा बनें। यद्यपि दोनों पडोसी राज्योंके साधारण और मित्रताके बनावेके लिये दोनोंकी सम्मतिसे एक मुसल्मान एजंट गवर्नमेंटकी ओरसे काबुलमें रखना उचित समझती है किन्तु इसके अतिरिक्त इन प्रदेशोंके भीतरी प्रबंधमें कभी गवर्नमेंट हस्तक्षेप नहीं करना चाहती है और न कहींपर अंगरेज रेजिडेंट रक्खेगी।"

इस पत्रका उत्तर अबदुर्रहमानने २१ जूनको दिया परंतु उसमें कंदहारके विषयमे कोई सम्मति प्रकट नकी क्योंकि, कंदहार नगर उनके घरानेका निवास स्थान है और उसके विना काबुल राज्य बहुतही कम कामका रहता है। जिससमय अबदुर्रहमान कोहिस्तान होकर परमेश्वर पर भरोसाकर चरीकार पहुँचे गाजियोंकी बृहत सेनाका आगमन देखकर अंगरेजी सेना डरने लगी थी। अबदुर्रहमान अपने चरित्रमें इस विषयमें लिखते हैं कि,–" मेरे जासूसोने काबुलसे खबरदी थी कि, ब्रिटिश अफसर मेरी चढाई सुनर कर घबडा उठे है। जो सरदार और रईस अंगरेजोंसे लड रहे थे वे मुझसे मिलकर मेरी आज्ञा पालन करनेपर उतारू हुए और जो लोग न आसके उन्होने पत्र लिखकर इसबातको स्वीकार किया।"

प्रकरण–१७.

राज्यारोहण।

जो अबदुर्रहमान अपने राज्यकी आशा छोडकर एक दिन कौडी २ के लिये तरसते थे, जिन्हे ११वर्षतक रूस गवर्नमेंटकी शरणमें अपना पेटपालना पडा था जो किसी दिन रूसी कैदी बनाये गये थे वही अबदुर्रहमान ईश्वरकृपा. अपने साहस पराक्रम और ब्रिटिश गवर्नमेंटकी सहायतासे १० जुलाई सन् ८० ई० को अफगानिस्तानके अमीर होगये। अफगान जातिके सर्दार रईस और मुखियोंआने मिलकर इन्हें उसी दिन चरीकारमे अमीर बनाकर इनके नामकी दुहाई फेरी और तबहीसे मसजिदोंमें इनके नामका खुतबा पढ़ा जानेलगा। वह दिन काबुलियोंके लिये बडा मंगल दिवस था। उसी दिनमें उस राज्यकी होनहार उन्नतिकी आशाओंका बीज भरा हुआ था। वहांकी प्रजा उस देशका मुसलमान शासक पाकर बहुत प्रसन्न हुई। चरीकारसे चलकर अमीर अबदुर्रहमान काबुल पहुँचे। वहांपर २२ जुलाईको अंगरेजी अफ़सरों और काबुली सरदारोंके समक्ष ग्रिफिन साहबने इनको अमीर नियत करते समय यह स्पीचदी:–

"जिन सामयिक घटनाओंने सर्दार अबदुर्रहमान खांको इस दजेपर पहुँचाया है यह गवर्नमेंट भारतके वाइसराय और श्रीमती महारानीकी इच्छा और आशाओं को पूर्ण करती है और वे प्रसन्नतासे प्रकाशित करते हैं कि, हम प्रसिद्ध अमीर दोस्त मुहम्मदके पौत्र सर्दार अबदुर्रहमान खांको प्रकाशरूपसे काबुलका अमीर स्वीकार करते हैं। गवर्नमेंट के लिये यह संतोषका विषय है कि, यहांकी जातियों और रईसोंने बरकजाइ घरानेके एक प्रतिष्ठित व्यक्तिको जो प्रसिद्ध सैनिक, बुद्धिमान् और अनुभवी है पसंद किया है। उनके विचार ब्रिटिश गवर्नमेंटके लिये बड़े मित्रता सूचक हैं और जबतक इन विचारोंका उसके शासनमें बरताव होगा वह अवश्यही ब्रिटिश गवर्नमेंटकी ओरसे सहायताका भागी रहेगा। वह अच्छी तरहसे इस बातको दिखला देगा कि, उसकी जिस प्रजाने गवर्नमेंटकी मित्रतापूर्वक सेवाकी है उनके साथ अच्छा वरताव कर गवर्नमेंटसे मित्रताकरली जाय।"

१९ जुलाईको शिमलेसे ग्रिफिन साहबको जो तार मिला उससे मालूम हुआ कि मैवदमें अयूबखांसे अंगरेजी सेनाकी भयानक हार हुई है। समाचार पातेही काबुलसे थोडीसी घुड़सवार सेना लेकर ग्रिफिन साहब जिम्मा जाकर अमीरसे मिले। ३० जुलाईसे १० अगस्त तकके तीन दिन तक इन लोगोंका परामर्श हुआ। इन्होंने साहबसे अपनी प्रजाको दिखलानेके लिये नियम पूर्वक लिखा हुआ सन्धिपत्र मांगा। साहबने प्रसन्नता पूर्वक देदिया। इसमें लिखा है कि—

'भारतवर्षके श्रीमान वाइसराय और गवर्नर जनरल प्रसन्नता पूर्वक सुना है कि आप ब्रिटिश गवर्नमेंटका निमंत्रण पाकर काबुलकी ओर आरहे हैं। इस कारण श्रीमानके मित्रताके विचार और श्रीमान्के अधिकारमें स्थायी गवर्नमेंट नियत होनेसे यहांके सरदार और प्रजाको जो लाभ होगा उसपर ध्यान देकर ब्रिटिश गवर्नमेंट श्रीमानको काबुलका अमीर स्वीकार करती है। भारत वर्षके वाइसराय और गवर्नर जनरलने मुझे श्रीमानको इस बातके सूचना देनेका अधिकार दिया है कि

ब्रिटिश गवर्नमेंट श्रीमान्‌के राज्यप्रबंधकी भीतरी बातोंमें कभी हस्तक्षेप नहीं करना चाहती है और न उसकी यह इच्छा है कि कभी और किसी जगह पर अंगरेज रेजिडेंट रक्खा जावै । साधारण मित्रताके वर्त्तावके लिये, जो दोनों पडोसी राज्योंमें निश्चित हुए हैं, ब्रिटिश गवर्नमेंटकी ओरसे एक मुसलमान एजेंट दोनोंकी सम्मतिसे काबुलमे रखना ब्रिटिश गवर्नमेंट उचित समझती है। .... वाइसराय और गवर्नर जनरल कौंसिल सहित मुझे आपको विदित करनेकी आज्ञा देते हैं कि ब्रिटिश गवर्नमेंट अफगानिस्तानमें विदेशी राज्योंके हस्तक्षेपके स्वत्वको स्वीकार नहीं करती है और रूस तथा ईराननें अफगानिस्तानके विषयोंमें हस्तक्षेप न करना स्वीकार करलिया है इसलिये स्पष्ट है कि श्रीमान् ब्रिटिश गवर्नमेंटके सिवाय किसी विदेशी राज्यसे राजनैतिक संबंध न रखने पायगे । यदि कोई विदेशी राज्य अफगानिस्तानपर हस्तक्षेप करेगा और वह हस्तक्षेप श्रीमान्‌के राज्यपर बिना छेड़ छाड़ चढ़ाईका कारण होगा तो ऐसे अवसरपर ब्रिटिश गवर्नमेंट उसे हटा देनेमें आपकी उतनी और उस तरह सहायता करनेको तैयार होगी जो ब्रिटिश गवर्नमेंटको आवश्यक जान पडेगी इस शर्त्त पर कि श्रीमान्‌को अपनी बाहरी बातोंमे ब्रिटिश गवर्नमेंटकी पूर्ण सम्मति पर अमल करना होगा। "

ग्रिफिन साहबने अमीरको अंगरेजी अफसरोंसे सलामके लिये काबुल जानेकी सम्मति दी और कहा कि, "कर्नल राबर्ट्स अपनी सेना सहित कंदहारको और सर डोनल्ड स्टुआर्ट पेशावरको जाते हैं उनकी मार्गमें रक्षा और रसदका आप प्रबंध कर दीजिये ।" अमीरने प्रथम कर्नल राबर्ट्सके कंदहार जानेकी सलाह दी । इन्होंने दोनों अफसरोंसे विदाईकी भेंटकी और दोनोंके साथ ऐसा प्रबंध कर दिया जिससे दोनो मार्गोंमें अंगरेजी सेनाका बालभी बांका न हुआ और हँसी खुशीसे सरकारी सेना लौट आई ।८ आगस्तको लार्ड राबर्ट्ससे और १० को सर् डोनेल्डस्टुअर्ट तथा ग्रिफ़िनसाहबसे इन्होंने भेंट की । अंतमें इन्होंने अंगरेज् अफ़सरोंसे यहभी स्वीकार कराlिया कि:– " अफ़ग़ानी

तोपखानेकी ३० तोपें जो इससमय शेरपुरमें है काबुलको लौटा दीजाँयगी ब्रिटिश अधिकारियोने काबुलमें रहकर यहांकी प्रजासे उन्नीस लाख रुपया लेकर जो सेनाके काम और किले बनवानेमें व्यय किया है वह इन्हें पीछा दिया जायगा और जो नये किले ब्रिटिशगवर्नमटने इस राज्यमें बनवाये हैं उन्हें अंगरेज नष्ट न करेंगे।'

अमीरने अपने चरित्रमें लिखा है कि "इसतरह अफगानिस्तानके युद्ध और काबुलपर अंगरेजोंके अधिकार करनेका अंत होगया और सारा राज्य मेरे हाथ आया। अफगान प्रजा मुझे राज्य मिलनेसे प्रसन्न हुई और परमेश्वरने मुझे प्रजाके दुःख दूरकरनेका अधिकार दिया।"

प्रकरण-१८

प्रबंधका आरंभ।

कंदहारपर अधिकार।

अमीरने काबुलकी गादीपर बैठकर वहांका किसतरह प्रबंध किया क्याकर वहांकी कट्टर-रक्तकी प्यासी प्रजा इनके हाथमें आसकी, वहांकी उन्नतिका आरंभ इन्होंने किस प्रकारसे किया, इन सब बातोंका विवेचन आगे चलकर किया जायगा। जब यह राज्य शासनका भार अपने हाथमें लेचुके तो इन्होंने सरदार हबीबुल्ला (वर्तमान अमीर) और सरदार नसरुल्ला-इन दोनों पुत्रों तथा इनकी स्त्री बाल्हारों जो अबतक रूस राज्यमें थे, बुलालिया। उसी वर्षके नवंबर मासकी २२ तारीखको इन्होंने अपना एक विवाह मुल्ला अदिफुल्लाकी लड़कीसे किया। यही बीबी सर्दार मुहम्मद उमरकी माता है। विवाहसे पूर्व अपने बालक अपनी स्त्रिया, अपनी माता, अपनी बहन आदिको अपने पास बुलाकर इन्होंने ईश्वरको धन्यवाद किया।

राज्यप्रबंधकी बात तो आगे चलकर इसनत रूपपर लिखी जाँयगी ही परन्तु यहा इतना लिखना आवश्यक है कि वहांके मुल्ला और रईसाम जो २ इनके विरोधी थे उन्हें इन्होंने बड़ा दण्ड देकर अफगा-

निस्तानमें अपना आतंक स्थापित करदिया । इस समय इन्हें अविश्रांत परिश्रम करना पड़ा। जितनी चिट्ठियां इनके पास उस समय आतीं थीं उनके उत्तर यह स्वयही लिखते थे क्योंकि इन्हें किसीका उन दिनों विश्वास नहीं था । प्रबंधका आरंभ करनेमें प्रथम इनको दो कठिनतायें उपस्थित हुईं। एक सेनाका वेतन चुकानेके लिये इनके पास फूटी कौड़ी नहीं थी । दूसरे काबुली सेना लड़ने योग्य शस्त्रोंसेभी वंचित थी । किसी प्रकारसे द्रव्यका संग्रहकर कुछ रुपया काबुलकी टकसालमें गढ़वाया गया जो रुपया इन्होंने अपने नामका चलाया उसमें ६ प्रति सैकड़ा तांबा मिलाया गया । पुराने समयमें काबुल राज्यसे जिन लोगोंने रुपया उधार लिया था अथवा जिनके पास लूटका माल था उनका संग्रहकर इन्होंने रुपयेकी तंगी मेटली। इन्होंने इसप्रकारसे केवल रुपयोंकी तंगीही नहीं मेटी वरन उस राज्यके समस्त लुहारोंको नियतकर राइफलें, तोपें, कारतूस, गोले, गोलियां और समस्त आवश्यक सामान हाथसे बनवाया । यह कार्य इन्हींके निरीक्षणसे उस कार्यालयमें कियागया जो इनके दादा अमीर दोस्त मुहम्मदके समयमें खोला गया था। इसके अतिरिक्त इन्होंने बहुतसा सामान पैसा देकर मोलभी लिया। शेरअलीकी सेनाके अनुभवी अफसरों और अपने विश्वासपात्र सैनिकोंको अपनी सेनामें भरतीकर इन्होंने काबुली सेनामें वर्त्तमान ढंगकी कवाइद का बीजारोपण किया। इन्होंने अपनी छावनियोंमें रोगी सैनिकोंकी चिकित्साके लिये अस्पताल और सिपाहियोंकी शिक्षाके लिये पाठशालायें खोलीं । इसप्रकारसे इन्होंने सेनाका सुधारकर सरदार अबदुल्लाखांतोकीको बदखशांका और अपने चचेरे भाई सरदार मुहम्मद इशहाकको जो आजकल रूसकी शरणमें है तुर्किस्तानका गवर्नर नियत किया।

भाग्यवान् और प्रतापी पुरुषके पास सुख और संपत्ति बिना बुलाये आजाती है । भारत गवर्नमेंटने इनसे संधिके समय कंदहार लेलेनेकी बात कही थी। इन्होंने इसबातका कुछ उत्तर नहीं दिया था।

वही कन्दहार गवर्नमेंटकी ओरसे शेरअली वलीके पास थी। गवर्नमेंटने २१ अप्रेल सन् १८८१ ई को कन्दहारसे अपनी सेना उठाकर वह प्रान्त इनको देदी और वलीको पेन्शन देकर कराचीमें रखदिया । इन्होंने कन्दहार पाकर उसे स्वतन्त्र प्रान्त बनाया। अमीरने वलीको पेन्शन देकर अंगरेजोंके कन्दहार इन्हें देनेके तीन कारण लिखे हैं। (१) कन्दहार पर अय्यूब चढाई करनेकी तैयारी कर चुका था। (२) वलीसे वहाकी प्रजा प्रसन्न न थी और (३) कन्दहार मेरे पुरुषाओंका निवास स्थान था । वहीं हमारे कुटुंबके लोग रहा करते थे इस कारण मन गवर्नमेंटसे कन्दहारके विषयमें कुछ उत्तर नहीं दिया था। ' अमीरने भी इन बातोंका अच्छी तरह विचार कर लिया था परन्तु कन्दहार आय बिना इनका निवाह नहीं हो सकता था और विशेष यह कि, इनके पुरुषाओंका घर कन्दहार) खो देनेपर निन्दा होना सभव था इसलिये इन्होंने अय्यूबसे युद्ध करने और कन्दहारकी अशांतप्रजाको शांत करनेका बहुत बडा बोझा अपने ऊपर उठाना स्वीकार किया और परमेश्वरपर भरोसा कर हाशिमखांको कंदहारका गवनर नियत किया।

प्रकरण–१९

अय्यूबका उपद्रव ।

अमीर अबदुररहमानके चचा शेरअली अमीरके छोटे पुत्र और अमीर याकूब के भाई अय्यूबखांने जिससमय अंगरेजोंकी इनसे संधि होकर इन्हें काबुलका राज्य मिला हिरातपर अपना अधिकार करलिया था। उसे केवल इतनेपर संतोष नहीं था किन्तु वह अमीरको कष्ट देकर कन्दहार परभी आक्रमण करना चाहता था। जबसे अंगरेजोंसे उसकी हारखाई वह भीतरही भीतर कन्दहारपर चढाई करनेकी तैयारी करने लगा । काबुलका राज्य लेकर उसका शासन करना उससमय दाल भातका खाना नहीं था । जिससमय अमीर अबदुर्रहमान नया राज्य

पाकर उसके प्रबंधमें दिन रात व्यग्र रहते थे उनपर एक नवीन आपदा आई । इनकी सेनाका अभीतक सुधार नहीं होने पाया था, न इनके पास युद्धकी पूरी २ सामग्री थी, कितनेही मुल्ला इनके विरोधी बनकर इन्हें गद्दीसे उतारना चाहते थे, उसके पास युद्धकी सामग्री अटूट थी, सेनाकी संख्या १२ हजारसे कम न थी: इस तरह युद्धमें अमीरके सब बातें प्रतिकूल और अय्यूबके सब अनुकूल देखकर उसने हिरातका प्रबंध अपने लड़के शेरदिल और भतीजे मूसा जानके हाथमें छोड़कर कंदहारपर आक्रमण किया। अमीरके कृपापात्र कंदहारके गवर्नर सरदार हाशमने दो तोपखाने, १४ रेजिमेंट पैदल ४ रेजिमेंट सवार और ३ हजार मिलिशिया सवारोंको लेकर उसका सामना किया। गिरिश्कके निकट कारेजमें २० जूलाईको दोनों सेनाका युद्ध आरंभ हुआ। लड़ाईमें प्रथम अय्यूबकी सेना हार-भागी । उसकी सेनाके अस्सी वीर कंदहारी सेनाके घेरेमें आगये। उन्होंने शत्रुकी क़ैदमें मरनेकी अपेक्षा रणभूमिमें मरकर स्वर्ग पाना अच्छासमझा। वे सब इकट्ठे होकर कंदहारी सेनाके सामने हुए। केवल अस्सी सिपाहियोंने अपनी वीरतासे कंदहारकी सेनाको परास्तकर उसके बड़े २ सदारोंके छक्के छुड़ादिये। कंदहारी सेनाके—उस सेनाके जिसपर अमीरका पूरा भरोसा था पैर उखड़गये । केवल अस्सी आदमियोंकी शक्तिसे कंदहारी सेनाको भागते देखकर अय्यूब अपनीसेना (भगेडू सेना) लौटालाया और उसने अनायास. विना प्रयास कंदहारमें अपनी विजयपताका जा उड़ाई । कंदहारी सेनाका सरदार हाशिम मक्काको भागगया।

यद्यपि काबुलकी स्थिति उससमय छोड़कर कंदहार जानेके योग्य न थी, वहांकी उपद्रवी प्रजाका अभी दमन नहीं हुआ था और वहां घड़ी २ उपद्रव होनेका भय था परंतु काबुलका प्रबंध अपने बड़े पुत्र सरदार हबीबुल्ला और सेनापति पर्वानाखांको देकर १२ हजार सेनासहित अमीरने स्वयं अय्यूबपर चढ़ाई की । टाकी और अंद्रा

जातिके १० हजार पठान इनकी सहायतामे औरभी सयुक्त होगये उससमय अय्यूबके पास कुल २० हजार सेना थी । २२ सितबर सन् १८८१ ई० को कन्दहारके खंडहरोमे दोनो सेनाओकी मुठभेड हुई। पहलीही लडाईमें अय्यूब हारगया और मैदान छोडकर हिरातको चला गया। इस ओर अय्यूब जब कन्दहारमे कार्बुलीसेनासे उलझरहा था हिरातमे मैदान सूना पाकर अमीरके अफसर सरदार कुद्दूसखाने तुर्किस्तानसे हिरातपर चढाईकी । अय्यूबकी वहांपर जितनी सेना बची बचाई थी उसीने कुद्दूसका सामना किया। अय्यूबके लडके और नायबखुशदिलका रणभूमिमे आनेका साहस न हुआ। और कुद्दूस साहसकर किलेमे घुसगया। इसतरह अय्यूबने कंदहार लेनेमें लाल सामे हिरातभी खो दिया। अय्यूबको मार्गमें जब इसबातकी खबर हुई तो वह वहाँसे भागकर ईरानमे मशहदकी ओर चलागया। कंदहा-रमे काकरजातिके मुख्य मुल्लाअबदुरहीम अराहने अय्यूबको उभारकर यह प्रसिद्ध करदिया था कि " अबदुरहमान काफिर है और वह राज्य अंगरेजोंको दिलाना चाहता है।" इसी अपराधमें अबदुरहमानने उसका शिर अपने हाथसे काटलिया । जिससमय अमीरसे राजधानी शून्य थी उनके बडे पुत्र बालक हबीबुल्लाने निर्भय होकर वहांकी सेनाको शात रक्खा और कोहिस्तानकी अमीर विरोधी प्रजा जो गादीशून्य राज धानी देखकर उभरना चाहती थी उसे दबादिया।

इससमय मशदकी ओर भाग जानेपरभी अय्यूबकी राजतृष्णा शात न हुई। वह सदा अपने मनमे एसोही गढत करता रहा कि किसी न किसीतरह काबुलका राज्य लेना चाहिये। जिससमय उसे खबर मिली कि, गिलजाइ उपद्रवियोसे काबुली सेना हारगई है वह ईरान गवर्नमेंटसे बिना कहे सुने वहांसे चुपचाप भागआया। परंतु अमीरके जासूसोंने उन्हे इसबातकी तुरतही सूचना देदी । इन्होने समाचार पातेही उसे कैदकरनेका आर्डर दिया । जिससमय काबुलका मुकुट लेनेकी इच्छासे अय्यूब सीमापर आया उसने जानलिया कि काबुल

ज्यमें घुसकर काबुलीसैनिकोंसे प्राण बचना कठिन है बस विवश कर उसे खुरासानकी ओर भागना पड़ा। वहां जाकर जब उसे बहुत ष्ट सहनेपडे तो वह लाचारीसे मशदके वाइसरायके एजेंट जनरल क्लिनके पास स्वयं शरणागत हुआ। कितनेही दिनतक लिखा पढ़ी रनेके अनंतर भारतवर्षके उससमयके वाइसराय लार्ड डफ़रिनने से ईरानसे बुलालिया। वही सरदार अय्यूबखां अब भारतवर्षमें गवर्नटके शरणागत है। अमीरने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि "मेरे वीर सैनिकोंके हाथमें पड़कर प्राण देनेके बदले अब वह सुखसे काल यापन कररहा है।" सरदार अय्यूबखां अबतक गर्मीके दिनों मरीपहाड़पर और जाड़ेमें रावलपिंडीमें रहा करते थे परंतु इसपुस्तकके लिखेजानेके समय दोस्थानोंमें रहनेसे उन्हें कष्ट होता देखकर गवर्नमेंटने उन्हें धर्मशाला नगरमें रखना निश्चय किया है।

प्रकरण—२०.

अशांति और अत्याचार।

अय्यूबखांके परास्त होने और हिरातका राज्य अमीरके हाथ आनेसे वह अफगानिस्तानके पूरे राजा हुए। पूरे कहनेसे मेरा प्रयोजन यही है कि काबुल राज्यके अंतर्गत जितना देश इनके पिता और दादाके समयमे था उतना इनके हाथ आगया। एक बृहद्राज्यके अधीश होने परभी जबतक यह अपनी प्रजाको शांतकर उसे अत्याचारियोंके चंगुलसे न छुड़ासके इनके चित्तको चैन न हुआ। जिस समय काबुल राज्यकी लगाम इनके हाथ आई वास्तवमे वहां बड़ी अराजकता फैल रही थी। प्रत्येक धर्मोपदेशक, प्रत्येक मुल्लां और प्रत्येक सरदार अपने आपको अपने २ गांव वा समाजका राजा समझता था और अपने २ ढाई चावलकी अलग ही खिचडी पकाकर अमीरको कुछ मालं नहीं समझता था। जबसे काबुलका स्वतंत्र राज्य स्थापित हुआ वहां के किसी राजाका यह साहस नहीं हुआ था कि, इन लोगोंकी स्वतं-

मतामें हस्तक्षेप करसके । तुर्किस्तान, हजारा और गिलजाइयाके अधीश काबुलके अमीरसे भी अधिक बलि थे । इनका अत्याचार और निर्दयता असह्य थी, स्त्री और पुरुषका शिर कटवाकर उसे तत्ते तवेपर रखवाना और ज्यों २ वह उछले त्यों २ उसका खेल देखकर हसना उनके लिये साधारण बात थी । अमीरने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि "वे लोग इससेभी अधिक घृणित और हृदयविदारक अत्याचार करते थे परन्तु मे पाठकोंका हृदय दुखानेके लिये उन्हे लिखना नहीं चाहताहू ।" प्रत्येक रईस, कर्मचारी वा धर्मोपदेशक चोर, डाकू लुटेरे और नरघातकको नौकर रखता था और उन्हींके द्वारा मनुष्योंका वध करवा, चोरी २ करा, मार्गलूट और इसी प्रकारके अनेक अत्याचार कर आ रामाल ले लिया करता था । बहुतरे मुल्लाओंने लोगोंको मिथ्या विश्वास दिलारक्खा था कि ईश्वर काम करनेसे प्रसन्न नहीं होता है । लूटना और मारकाट करनाही हमारा धर्म है । इन अपने आप बन बैठनेवाले राजाओंने प्रजापर अनेक तरहके नये २ कर डाल रक्खे थे और इन्हीं दुष्टोंके कारण काबुलराज्यका दिन २ सत्यानाश हुआ जाता था । केवल इसी राज्यका नाश नहीं होता था किन्तु अमीरने लिखा है कि येही कारण मुसलमानजातिके पतनके हैं । अमीर अब दुर्रहमानको ऐसे अत्यचारियोंका दमन करनेमें इतना कष्ट उठाना पड़ा जितना उन्हें शत्रुसे लडनेमें नहीं हुआ था । साद्दू और दादू नामक दो लुटेरोंसे तो कई बार अमीरकी सेनाको हारभी खानी पडी थी। परन्तु साहसी अबदुर्रहमानने पद्रह वर्षके निरंतर और अविश्रांत परिश्रमसे अंतमें ऐसे अत्याचारियोंका दमनकर प्रजाको सुखकी निद्रा लेनेका अवसर दिया। जिस समय इस तरहके सुखका अवसर आया दुष्ट अत्याचारी क्रूर और रक्तके प्यासे राक्षसोंमेंसे कई एक तो राज्य छोडकर भाग गये और जो बचे थे उन्हें पकड २ कर अमीरने उनकी गर्दन उडवादी ।

इन्हीं अत्यचारियोंका दमन करनेसे जितनेही भोले और मूर्खलोग अमीरको "जालिम" कहने लगे थे और समझते थे कि अमीरका

वर्त्ताव बड़ा कठोर है परंतु इस बातका उल्लेख करतेसमय अमीरने अपनी किताबमें लिखा है कि "जो देश आजकल परमसभ्य गिने जाते हैं वहांपरभी ऐसे असंख्य उदाहरण मिलते हैं जिनमें शांतिस्थापन करनेके लिये राजाको प्रजासे युद्ध करना पड़ा है। इसीशताब्दिमे इंग्लैंडके मजदूरोंने गवर्नमेंटका कितना कष्ट दिया है । मैं गर्वपूर्वक कहसकता हूं कि मेरे शासनमें थोडेही दिनोमे इतनी शांति होगई है कि एक बुढियाभी दिनरातमें जब चाहै सोना उछालती हुई जा सकती है किन्तु अफ़गानिस्तानकी सीमापर अंगरेज़ी राज्यमें कोई मनुष्य दृढ शरीर रक्षक सिपाहीको साथ लिये विना नहीं फिर सकता है।"

"लोग कहते हैं कि अबदुर्रहमानखांके अमीर होनेसे वह अब बड़ा सुखी होगया है परंतु मेरी स्वतंत्रता, मेरे सुख और आनंदकी बातोंका नाश होकर मैं अब झंझट कठिनता, बेचैनी और दुःखका बोझा अपने शिरपर लाद चुकाहूं। बडे लोगोंने ठीक कहा है कि जितना बड़ा पद होता है उतनाही उसपर जवाबदिही आ पड़ती है और जितनी जवाबदिही होती है उतनाही कष्ट और चिंता बढ़जाती है । मौलाना रूमने लिखा है कि बगदादके एक पुलसे किसी बकरेका पैर टूट गया था। परमेश्वरने उसके कष्टका दंड वहांके शासक उमर (मुहम्मदसाहबके साथी) को दिया । इसी बातसे मै अपनी उत्तरदातृत्व और मेरे राज्यकी अस्थिर दशापर ध्यान देकर अपना दुःख सुख भूलगया। कुरानशरीफ़में लिखा है कि "जो परमेश्वरपर भरोसा रखकर साहस तथा चित्तकी स्थिरताको नहीं छोड़ता है उसे ईश्वर अवश्य सहायता देता है।" इसके साथ अमीरने अपनी पुस्तकमे चार कठिनाइयां लिखी हैं। (१) उससमय मेरे रहने योग्य यहां कोई स्थान नहीं था और इसकारण मुझे खेमों वा झोंपड़ोंमें रहना पडता था (२) काबुलके कोपमें सेना वा अन्य नौकरोंका वेतन देनेके लिये एक पाई नथी। मुझसे पहलेही अमीरशेरअली, याकूब और अंगरेजी सेना प्रजासे खूब लगान लेचुकी थी (३) प्रजामें शांति स्थापन करने और शत्रुसे युद्ध करनेके लिये यहां कोई ठीक शस्त्र नहीं था और जो तोपें थीं उनमें

भरनेके लिये गोले न थे और (४) हिरात मेरे राज्यसे अलग था, यद् हार अंगरेजी राज्यमें मिला लिया गया था मैमानाका गवर्नर मेरे विरुद्ध चाल चलता था और शुजा, शेरअली और याकूबके समयसे प्रत्येक मुल्ला धर्मोपदेशक और रईस जुदे २ स्वतंत्र राजा बन बैठे थे। अमीरशेरअलीके समयमें मनुष्योंका भेड और गोओंसेभी कम मूल्य था। मनुष्यवधका अपराध करनेपर राज्यसे उसपर केवल ५०) दंड होता था। सबसे बढकर कलंक मुझपर यही लगाया जाता था कि मैं अंगरेजकाफिरोंका मित्र हूं।"

न्यायकी उससमय अजीब स्थिति थी। एकदिन अमीर स्नान करनेके लिये हम्माममें जा रहे थे। एक स्त्री और एकही पुरुष अकस्मात अमीरपर आटूटे। उस समय वहांपर कोई संतरी नहीं था। पुरुषने सामने आकर अमीरकी दाढी खेंचना आरंभ किया और स्त्रीने पीछेसे कमर। अमीरने उनको बहुतेरा आश्वासन देकर उनसे दाढी छोडनेकी प्रार्थनाकी परंतु उन्होंने इनकी एक न सुनी। इन्होंने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि 'मैंने उस समय यूरोपियन लोगोंके दाढी न रखनेकी चालको प्रशंसाकर अपनी चालको बुरा भला कहा।' कुछभी हो परंतु जब अमीर जैसे वीर और साहसी पुरुषको दाढीके कारण इतना कष्ट भोगना पडा तब एक साधारण मनुष्यको समय पडनेपर कितना दुःख होसकता है इसका विचार दाढी प्रेमियोंको अवश्य करना चाहिये। अमीरने उनके शासनारंभके समय प्रजाकी स्थितिका एक दूसरा उदाहरण और लिखा है। वह लिखते हैं कि 'जिस समय मेरे दरबारमें मिठाई लाई जाती थी तब दरबारीलोग उसे आपसमें बराबर बांटनेका कष्ट न उठाकर उसके लिये आपसमें लडते थे मैं उन्हें बहुतेरा समझाया करता था परंतु मेरी बातपर कोई ध्यान नहीं देता था।"

जिस अफगानिस्तानकी इनके शासनारंभके समय ऐसी स्थिति थी, जहां हाथकी हाथ खाये जा रहा था वहांकी प्रजा अबमें अष्टरह

मानके नामसे थरथर कापनेलगी। इस प्रकरणमें मैं इस बातका एक उदाहरण डाक्टरग्रे साहब, जो बहुत दिनतक काबुलमें रहे थे उनकी पुस्तक "एट्दीकोर्ट आफ़दी अमीर" से देताहूं। उन्होंने लिखा है कि जब मैं भारत वर्षसे काबुलको जा रहा था मेरे साथ अमीरकी भेंट करनेके लिये दो राइफलें और एक बंदूक संदूकमें बन्द थीं। डक्कामें पहुँचनेपर मुझे विदित होगया था कि काबुल पहुँचनेतक इन बंदूकोंका चोरोंसे बचना कठिन है। मार्गमें मैं एक जगह खेमेमें पड़ा सो रहा था। बंदूक चोर काबुलीने मेरे खेमेमें घुसकर बंदूकोंका संदूक चुराया। चोर पकड़े गये। काबुली कर्नलने मेरे समक्ष चोर उपस्थित कर मुझसे कहा कि इसे आपकी जैसी इच्छाहो दंड दीजिये। यदि आप अपने हाथसे इसका वध करना चाहें तो इसे मार डालिये। मैंने कहा कि यह काम मैजिस्ट्रेटका है वही इसे दंड देसकता है परंतु मैं यह बात अमीर साहबसे अवश्य कहूंगा। सुनतेही कर्नल घबड़ा उठा। उसने मुझसे कहा कि मैं आपका कुत्ताहूं। आपकी जैसी इच्छाहो वैसा मुझसे काम लीजिये परंतु अमीर साहबसे यह बात न कहिये। जिस समय वह इस बातके लिये प्रार्थना कर रहा था, अमीरका नाम सुननेसे उसका मुख सूखगया था और माथेसे पसीनेकी धारा बह रही थी। मैंने उसकी ऐसी दुर्दशा देखकर उसका संतोष करदिया।" डाक्टर साहबके इसी कथनसे अनुमान होता है कि एकदिन जिस अबदुर्रहमानकी न्याय मांगनेके लिये निडर होकर एक दीन पुरुष दाढी खैंच सकता था उसी अमीरका अंतमें इतना आतंक होगया कि उनके राज्यके कर्नल जैसे उच्चपदाधिकारी डरके मारे थर२ कापने लगे। यद्यपि प्रजाके चित्तमें, राज्यके कर्मचारियोंके मनमें राजाकी ओर भयकी अपेक्षा प्रेम होना अधिक उत्तम गिनाजाता है परंतु काबुलकी प्रजामें उससमय भयकी आवश्यकता थी और अमीर अबदुर्रहमानने अपना आतंक जमाकर "भयबिन होत न प्रीत" इस लोकोक्तिको चरितार्थ कर दिया।

प्रकरण–२१

छोटी मोटी लड़ाइयाँ।

इस विषयमें लिखनेसे पूर्व यहां अमीरके दो एक स्वप्नोंकी बात लिखना आवश्यक है। अमीर अबदुर्रहमान जैसे कट्टर मुसल्मानको स्वप्नपर विश्वास होना आश्चर्य नहीं है। भारतवर्षके धार्मिक हिन्दू और मुसल्मान बहुत कालसे मानते आये हैं कि स्वप्नमें जो बात देखी जाती है उसका होनहारसे अवश्य सबंध होता है। अमीरके स्वप्न विश्वासके दो एक उदाहरण गत प्रकरणोंमें लिखगये हैं। अमीरने अपनी किताबमें लिखा है कि, रूसका राज्य छोड़कर अफगानिस्तान आने पूर्व मैंने एकरात स्वप्नमें देखा कि, दो फरिश्ते मेरे हाथ पकड़कर किसी बादशाहके पास लेगये। उस समय उनके पास चार मनुष्य बैठे थे। उसी समय बादशाहके समक्ष एक पांचवां मनुष्य और आया। उससे बादशाहने जो आज्ञा की उसे तो मैं नहीं समझसका किन्तु उस मनुष्यने उत्तर दिया कि–"यदि मैं राजा बनाया जाऊंगा तो और मतोंके समस्त धर्म मंदिरोंको तुड़वाकर उनकी जगह मसजिदें बनवादूंगा।" बादशाहने उसे अप्रसन्न होकर निकलवा दिया फिर मेरी पारी आई। मैंने कहा कि, मैं न्याय करूंगा और मंदिरोंको तोड़कर कलमा रक्खूंगा। इस बातसे बादशाह प्रसन्न हुए। मैंने अनुमान किया कि, वह बादशाह हजरत मुहम्मद साहब और उनके चारसाथी अबूबकर, उस्मान, ऊमर और अली थे। दूसरा स्वप्न मुझे राज्य प्राप्तिके लिये ख्वाजा अहरारकी दरगाहमें जब मैं उनके दर्शनकर मुसल्मान प्रभावके दुःखोंके लिये रोता २ सो गया था उससमय आया था। स्वप्नमें ख्वाजा साहबने मुझे झंडा देकर कहा था कि, इसे तू सदा अपने यहां फहराता हुआ रख तेरे सब शत्रु दूर होंगे और तू कभी किसीसे न हारेगा। वह झंडा अबतक मेरे पास है और तबसे मैं किसीसे परास्त नहीं हुआ हूं।"

इन्हीं स्वप्नोंसे अमीरको निश्चय हुआ था कि, मैं अवश्य किसीदिन राजा होनेवाला हूं और इसी निश्चयसे उन्होंने ईश्वर की आज्ञा समझ राज्यप्राप्तिका साहस किया था।

जिस वर्ष इन्होंने सन् १८८१ ई० में अय्यूबखांको परास्त किया था दूसरा युद्ध इन्हें कुनारके सैयद महमूदसे करना पड़ा था। इसी सैयदका बेटा अहमद भारतगवर्नमेंटसे सीमाप्रान्तमें लड़कर अब पेन्शन पाता है और काबुलमें रहकर अमीरका कृपाभाजनबना हुआ है। सैयद महमूदसे लड़नेमें यद्यपि काबुली सेनापति गुलाम हैदर घोड़ेसे गिरकर बहुत घायल होगया था परंतु सैयदको रणभूमिसे भागकर भारतवर्षकी शरणलेनी पड़ी तबसे उसने कभी शिर नहीं उठाया है। सन् ८२ में किलजैनके अहमद शेरखांने अपना नाम अमीर शेरअली प्रसिद्ध कर बड़ा उपद्रव किया। इस उपद्रवमें कितनेही मूर्ख और लफंगे लोग उसे सच्चा शेरअली मानकर उसके साथी हुए परंतु उसेभी लड़ाईमें हारखाकर कैदमें अपने प्राण गवांने पड़े। सन् १८८२ ई० में मेमानाका वली दिलावरखां अय्यूबके द्वेषमें इनका शत्रु बनकर स्वतंत्र होगया। तुर्किस्तानके गवर्नर इनके चचेरेभाई इशाकखांको इन्होंने लिखा कि उसपर चढ़ाईकर उसका राज्य छीनलो परंतु उसने कुछ बहाना करदिया। दिलावरने अमीरसे लड़नेके लिये अंगरेजों और रूसियोंसे सहायता मांगी परंतु संधिमें हस्तक्षेप करना उचित न समझ जब दोनों राज्य कुछ न बोले तो दिलावरका साहस टूटगया। लाग स धकर अमीरने सेनाभेजी और थोड़े दिन युद्धकर दिलावरको अमीरके जेलखानेमें अपने अंतिम दिन काटने पड़े।

यद्यपि शिगनन और रोशनका मीर यूसुफअली स्वतंत्र शासक था और उसके कामोंमें अमीरके कथनानुसार उन्होंने कभी हस्तक्षेप नहीं किया था परंतु उसने रूससे शिकायतकी कि अमीर मेरा राज्य छीनना चाहते हैं। इन्हें खबर मिली कि उसने रूसियोंको अपने यहां बुलाभी लिया है। इसबातसे इन्हें बड़ी चिन्ता हुई क्योंकि ये दोनों परगने रूसके

हाथ पडजानेस फिर यह शांतिपूर्वक काबुलका शासन नहीं करसकते थे और किसीदिन काबुल रूसके पेटमें चला जानेकाभी डर था इस लिये इन्होने सेना भेजकर उसे कैद करलिया। दोनो परगने काबुल राज्यमें मिलालिये गये। जिससमय ये परगने अमीरके हाथमें आगये रूसी अफसर एम इवानफ् वहा आये और उनसे निपटारा करनेमें बहुत काललगा। सन् १८९३ ई० में उनसे झगडा निपटा जिसका वर्णन यदि होसका तो सर्मोर्टिमर डयूरेंडके काबुल जानेकी घटनाके साथ किया जायगा।

सन् ८३ मे जलालाबाद प्रान्तकी शिनवारी जातिने शिर उठाया। वे काफिलोंको लूटने और गाँवोंपर डाके डालनेमें अभ्यस्त होगये। इन लुटेरोंके कारण भारतवर्षसे पेशावरके मार्गसे काबुल जाना कठिन था। इन्होंने स्वयं जलालाबाद जाकर शिनवारियोंके मुल्ला और सरदारोंको बुलाकर समझाया परन्तु जब इन लोगोंने इनकी बात पर ध्यान देकर लूट खसोट और मार काट न छोडी तब लाचार होकर इन्हे उनसे लडना पडा। जिस समय उनसे लड़ाई आरंभ हुई प्रसिद्ध लुटेरे बादू दाद और साला खेलवालेभी उनके संयुक्त होगये और इस कारण इन्हे उनसे लडनेमें बडी कठिनता उठानी पडी परन्तु अंतमें लुटेरोंकी हारहुई। लुटेरोंमसे हजारो आदमी खेतरहे और जो जीते बचे उन्होंने इनकी शरणली। युद्धमे उपद्रवियोंके जो मनुष्य मारेगये थे उनकी खोपड़ी इकट्ठी करवाकर उनसे एक जलालाबादमें और दूसरा शाहमर्दमें मीनार बनवादिया। इसका प्रयोजन इन्होने यह लिखा है कि पश्तोभाषामें किसी कविने लिखा है कि सैकडो वर्षोंतक मित्रता रखनेपरभी बिच्छू सांप और शिनवारीका मित्र होना असंभव है। इसीलिये मैंने इन्हें इस कार्यसे परिणाममें इनकी दुर्दशा होनेका भय दिखाया था। इनके सिवाय मंगल और जुमंत जातियां, किलमित पहाड़के निवासियों और जनशीदी रूमसेभी इन्हें लडना पडा था परंतु इनके युद्धका वृत्तान्त ऐसा आवश्यक नहीं है जिसे यहां लिखकर वृथा इस पुस्तकके पृष्ठ रंगेजाँय।

प्रकरण–२२.

रूससे हार ।

जब अमीर अबदुर्रहमान घरेलू लड़ाइयोंसे निवृत्त हुए इन्होंने रूस और भारतवर्षसे सीमा निर्द्धारित करनेका विचार किया। इनकी सम्मतिको पसंद कर दोनों गवर्नमेंटोंने अपने २ प्रतिनिधि नियत किये। भारत गवर्नमेंटसे अमीर पहिलेही संधिमें यह स्वीकार कर चुके थे कि, ब्रिटिशगवर्नमेंट की आज्ञा बिना वह किसी विदेशी राज्यके साथ किसी तरहका व्यवहार न रखसकेंगे। बस इसी संधिके अनुसार भारत गवर्नमेंटने रूसी सीमा निश्चय करनेके लिये यहांसे सर पिटर लम्सडनको भेजा। अमीरको यद्यपि रूस गवर्नमेंटने विपत्तिके समय आश्रय दिया था परंतु वह इनकी इंग्लैंडसे मित्रता देखकर प्रसन्न नहीं था और इन्होंने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि, मैं इसी कारण उसे प्रसन्न भी नहीं करसकता था। जिससमय काबुलका राज्य इन्हें देकर अंगरेजी सेना भारतवर्षको लौट आई थी रूसी समाचार पत्रोंने गप्प उड़ाई थी कि, अंगरेजोंने अबदुर्रहमानको काबुल दिया नहीं है किन्तु वहांसे डरकर भागआये हैं। इसी कलंकको दूर करनेके लिये जिन दिनों अमीर अबदुर्रहमान रावलपिंडीमें लार्ड डफरिनसे मिलने आये थे रूसने पंजदेहपर चढ़ाई करदी। रूसकी चढ़ाईके समाचार पहलेसे पाकर इन्होंने कई बार (जब यह काबुलमें थे) गवर्नमेंटसे रूसके विरुद्धसेना भेजने की आज्ञा मांगी थी। परंतु सर्वदा इन्हें यही उत्तर मिला था कि जो २ जगह अफगानिस्तान के सेनाके अधीन है उस २ पर रूस कभी हाथ भी नहीं लगा सकेगा। सीमाकमीशनके अफसर सर पिटर लम्सडनने भी यही उत्तर दिया था कि रूस आपका कुछ न कर सकेगा। इस विश्वाससे अंगरेजोंके वचनबद्ध होकर यह अपनी ओरसे कुछ सेना न भेजसके और

जिससमय यह रावलपिंडीआये रूसीसेनानेइनका पजदेहनगर छीनलिया।
३० मार्च सन् १८८५-ई० को जब रूसी सेनाने पजदेहकी लड़ाईसिनापर आक्रमण किया वहांपर-अंगरेजी सीमाकमीशन मौजूद था। पहलेसे विश्वास दिला २ कर इन्हे युद्धकी तयारीसे रोकनेके अनंतर कमीशन युद्धके समय भागगया और इसतरह जो पजदेह इनके हाथसे निकल कर रूसी पेटमे जा पडा था वह अबतक न निकलसका। इसबातका अमीर अबदुर्रहमानको बहुत दुःख था। उन्होंने अपनी पुस्तकमे लिखा है कि जो अंगरेज मेरे अफसरोंसे पजदेहपर रूसी आक्रमण होनेके समय साथ देनेका वचन देचुके थे उन्होंने मेरे सिपाहियोंको बदूकतक नदी और डरके मारे अपने परायेका कुछ विचार नकर पहाड़ोंमे भागगये और खेद है कि मेरी सेनाको हार खानापडा। मैने अपनी प्रजाको बहुतेरा समझाया कि इस समय इंग्लैंडके मन्त्रिमंडलमे मिस्टर ग्लैडस्टनका अधिकार है और वह युद्ध करनेके विरोधी है इस कारण इंग्लैंडकी ओरसे ऐसी निबलता हुई है परन्तु प्रजाने इस बातको न माना और उसका ब्रिटिश गवर्नमेंटसे विश्वास हटगया। भारतवर्षके वर्तमान वाइसराय लार्डकर्जन जो उससमय पार्लियामेन्टके मेंबर थे सन् ९५ मे जब मुझसे मिलने आये मैने उनसे इस बातका प्रसंग छेडा था। उन्होंने कहा कि उस समय लिबरल सम्प्रदायका आधिपत्य था इस कारण यह निबलता हुई। मै इस बातपर हँसा और उनसे कहा कि लिबरल बुराई भलाईका बोझा कसर्वेटिवपर और कसर्वेटिव लिबरलपर डालकर ऐसेही टालबाजी किया करते है।"

रूसीकर्नल यानूफ जिन्होंने सन १८९१ ई० के अगस्त मासमे अंगरेज कप्तान यंगहसबैंडको कैद करलिया था सन् १८९२ ई० के जुलाई मासमे सेना लेकर शिगनानपर आक्रमण करनेके लिये सोमातोश आये। यहां आनेपर जब इनकी काबुली सेनाके अध्यक्ष कप्तान शमसुद्दीनसे भेंटहुई तो यानूफने उससे कहा कि 'आप यहांसे अपनी सेना लेकर चले जाइये। यहां अब हमारा अधिकार होगा।" कप्तान शमसुद्दीन

(५) मैंने गिलज़ाइयोंसे लगान वसूल करनेकी आज्ञा देदी थी किन्तु वे देना नहीं चाहते थे और (६) अफ़ग़ानिस्तानके खज़ानेमें सेनाके खर्च और आवश्यक कामोंके लिये एक पैसा नहीं था । राज्यकी आयमेंसे प्रजा आधा रुपयाभी नहीं देती थी और काबुल गवर्न-मेंटसे सुस्त और बदमाशोंको जो द्रव्य मिलता था उसे मैंने बंद कर दिया था । इसीबातसे मुल्लालोगोंने गिलज़ाइयोंको उभारा । अमीर कहा करते थे कि " संसारमें जितने युद्ध होते हैं उनका अधिकभार मूर्ख धर्मोपदेशकों पर है क्योंकि वेही उपद्रवके अग्रणी होते हैं । "

जिससमय गिलज़ाइयोंने उपद्रव आरंभ करना विचारा उन्होंने पहले सर्‌ओलिवरसेंटजानको चिट्ठी लिखकर ब्रिटिशगवर्नमेंटसे सहा-यता मांगी और फिर अय्यूबखांको ईरानसे बुलाया परंतु दोनों कामोंमें वे सफल न होसके । जब दोनों ओरसे वे लोग निराश होगये तो उन्होंने स्वयं शस्त्र ग्रहण कर अमीरसे लड़नेकी तैयारी की । तैयारी कर ये कईएक अफ़ग़ान अफसरों और उनके बालबच्चोंको पकड़ लेगये और उन्होंने काबुल राज्यकाभी बहुतसा माल लूटलिया । अमीरने खबर पाकर सेनाभेजी । छोटी २ लड़ाइयोंके बाद वे लोग इधर उधर भागगये । जाड़ेका आगमन देखकर भागतो गये परंतु उन्होंने उपद्रव करना न छोड़ा । मार्च आतेही मुश्कआलमके बेटे मुल्लाअबदुल-करीमने ढिंढोरा पिटवा दिया । जिससमय इस बातकी अमीरको खबर लगी होटक लोगोंने अलगही उपद्रव खड़ा किया । होटकमें उपद्रव होनेका कारण यह था कि अमीरके अफसर सरहिंदासिकंदर-खांने होटककी प्रजासे घर पीछे एक तलवार और एकही बंदूक दंडमें लेनेकी आज्ञा दीथी । बस होटकवालोंके बिगड़तेही अंद्रा, तरक्की और गिलज़ाई जातियोंमें बलवा होगया । उपद्रव होतेही अमीरने तड़ामारसे सेना भेजना आरंभ किया । पहली लड़ाईमें दो जगह बलवाइयोंका विजय हुआ परंतु तीसरी जगहकी सेनाने उपद्रावियोंको भगाकर उनके छक्के छुड़ादिये । एकस्थानपर हारखाने परभी उनका

ए बढ़ता गया और सन् ८७ इ० की ६ जूनको हिरातकी काबुली सेनाके समस्त गिलजाइ लोग उपद्रवियोंमें जामिले। उन्होंने अमीरके नैगर्जानको लूटकर सेनापतिको कैद करलिया। अवसर देखकर उपद्रवी मुल्लाओंने औरभी प्रजाको अमीरके विरुद्ध उभारना आरम्भ किया। इससमय अमीर अबदुरहमानपर कितना संकट आपड़ा था इसका विचार पाठक स्वयं कर सकते है, परन्तु कैसाही कष्ट पड़नेपर अबदुरहमान जैसा साहसी मनुष्य घबड़ानेवाला नहीं था। उसने तिमापर सेना भेजकर उपद्रवियोंको एक लोमहर्षण और बृहत् तथा भयानक संग्रामके पश्चात शांत किया। उपद्रवियोंके सरदार मुल्लाअबदुलकरीम भागगया। उसका भाई फजलखां कैद होकर मारागया और सन् ८५ म पजदेहके युद्धमें तैमूरशाह गिलजाइ जो अमीरकी ओरसे अफसर था और इससमय उसकी उपद्रवियोंसे लगावट पाइ गई थी काबुलमें १९ जलाइको पत्थरोंकी मारसे मारडाला गया और अमीरकी सेनाके मुख्य सेनापति जनरल गुलामहैदरखांको इस विजयके उपलक्ष्यमें अमीरने एक हीरेका तमगा (पदक) इनाम दिया। इसतरह गिलजाइ उपद्रवका सदाके लिये अंत हुआ।

ऊपर जिन चार उपद्रवोंका वर्णन अमीरने अपने चरित्रमें लिखा है उनमें चौथा हजारा उपद्रव है। हजारा जाति की प्रजा सैकड़ों वर्षोंसे काबुल नरेशोंको कष्ट दिया करती थी। नादिरशाह जैसे पराक्रम और ईरान, भारतवर्ष तथा अफगानिस्तानका विजय करनेवाले बादशाह भी इस जातिको दमन करनेमें समर्थ नहीं हो सके थे। ये लोग सदा लूट खसोट और डकैती किया करते थे। जब किसी विदेशी राजाका काबुल पर चढ़ाव होता तुरंतही ये लोग उससे मिल जाया करते थे। ये लोग शिया है और अबदुरहमान सुन्नी थे भारतवर्षके प्रसिद्ध बादशाह बाबरका सोलहवां बंशावलिमें इनके दमन करनेका साहस नहीं हुआ था। उन्हीं लोगोंपर चढ़ाइ करनेका अबदुरहमानको होसिला हुआ। उनका जिस भूभागमें निवास है वहां पहाड़ बड़े २ हैं और वे

पहाड़ ही ऐसे बने हुए हैं जो समय पड़ने पर किलेका काम दे जाते हैं। सन १८८८ ई० में जिस समय अमीर स्वयं तुर्किस्तानका उपद्रव शांत करने जारहे थे शेखअली जातिके हज़ारा लोगोंने इनका मार्ग रोककर इन्हें बहुत कष्ट दिया था। इसी जातिने दूसरी बार भी ऐसा ही काम किया। ऐसी दशामें चाहे उनके मुखिया अमीरके आज्ञापालक थे परंतु इनसे हज़ारा लोगोंपर चढ़ाई किये बिना रहा न गया। पहले उन लोगोंकी हारहुई। उनमेंसे कई एक मनुष्य पकड़कर क़ैद किये गये और जब उपद्रव शांत होगया अमीरने उन्हें छोड़ दिया। इस योजनासे थोड़े दिनतक तो शांति रही परंतु सन् ९१ में फिर उन्होंने डाका डालना आरंभ करदिया। इसपर अमीरके सैनिक कर्मचारियोंने उनके मुखियाओंको पत्र लिखकर यह उत्तर पाया कि—"यदि अफ़गान लोग अल्पकालीन अमीरकी हिमायत करते हैं तो हमें उस दिव्य अमीरका बल है जो ज़ुल्फ़िक़ारके खड्गका रक्षक है।" यह उत्तर देकर उन्होंने बतला दिया कि तुम्हारे अमीरसे हमारा अली प्रबल है। उन्होंने इस पत्रमें यह भी लिख दिया कि हमें छेड़ोगे तो तुम्हारा सत्यानाश करडालैंगे।

उत्तर पातेही धर्मांध अमीरको भिन्नधर्मी हज़ाराओंपर क्रोध आगया। उन्होंने तुरंतही सर्दार अबदुल कुद्दूसखांके अधिकारमें सेना भेजकर उन्हें धर दबाया। उनके १०० मुखिया पकडे जानेपर उनका परास्त हुआ परंतु एकही वर्षके बाद वे फिर शस्त्र लेकर अमीरसे लड़नेपर उतारू हुए। हज़ारा जातिके मुहम्मद अज़ीमखां जिसे इन्होंने सरदारकी पदवी देकर वहांका वाइसराय नियत किया था उपद्रवियोंमें मिलगया। क़ाज़ी असगर भी इसका साथी हुआ। इसबार इन्होंने काबुलसे कंदहार जाने आने का मार्ग बंद करादिया। इस चढ़ाईमें हज़ारा लोगोंका सरदार मुहम्मद अज़ीमखां क़ैद हुआ और उसके क़ैद होते ही शांति होगई। परंतु इस बार की शांति भी पहली शांतियोंकी तरह अधिक समय तक न टिकने पाई। हज़ारा मुहम्मद हुसैन

जैसे कृपापात्र और राजभक्त सेवकको इन्होंने वहां का गवर्नर बनाया था वही इनसे फिर गया । इसका मन फिरतेही अफगानिस्तानकी हजाराजातिभरम उपद्रवकी आग भडकउठी।इनके उपद्रव करतेहीअमीरको सन्देह हुआ कि कहीं देशभरकी समस्तप्रजा बलवा न करबैठे। ऐसेही अवसरमें लाडरावर्ट्सको भारतगवनमेंटने काबुलको वृहत सेनाके साथ भेजनेका विचार किया । अमीरने इस बातको किस प्रयोजनसे टाला था वह अभीतक और ? प्रकाशित नहीं हुई थी परन्तु उन्होंने अपने चरित्रमें लिखा है कि यदि मैं उन्हे आनेदेता तो अवश्यही यहा की प्रजा समझने लगती कि अबदुररहमान उपद्रव शांत नहीं कर सका इसलिये अंगरेजलोग काबुल लेना चाहते हैं । कुछभी हो परन्तु इसबार इन्हें हजारा लोगोंसे लडनेका विशेष प्रबध करना पडा। इस युद्धमें इन्होंने हजाराओंके देशको सेना भेजकर चारोंओरसे घेरा । इस घेरेमें अमीरकी सेना ३० । ४० हजारके लगभग थी । इस बारभी अमीरने विजय किया । मुहम्मद हुसैन आदि कइएक मुखिया इनकी कैदमें आये और इनके कैद होतेही देश उपद्रवियोंसे खाली होगया । जब देशमें शांति होगई तब कइएक हजाराओगोंने अमीरसे कहा कि हम अपनेही देशमें अफसर बनाओ परन्तु अमीरने अतिमबार इनकी प्राथना स्वीकार नकी । अमीरने इस युद्धका वर्णनकर अंतमें लिखा है कि यही मेरे शासनमें अंतिम उपद्रव हुआ । अब ईश्वर कभी मुझे प्रजाविद्रोहका मुख न दिखलावे ।

प्रकरण–२४

इशाकखांका विद्रोह ।

अमीरकी बतलाई चार बातोमें तीनका वर्णन गत प्रकरणोंमे होचुका है । अब एकही बात रहगई है । वह इन तीनोंकी अपेक्षा अधिक भयानक है उनमें अमीरके विरुद्ध प्रजाने विद्रोह किया था किन्तु इसबार विद्रोह करने वाला इनका चचेराभाई इशाकखां था । यह अबदुर्रहमा

नको गद्दीसे उतारकर आपही अमीर बनना चाहता था । बस इसी कारण मैं इस उपद्रवको अधिक भयंकर बतलाताहूं । अबदुर्रहमानके चचा अजीमके, इशाकखांका एक आर्मेनियन ईसाइन स्त्रीसे जन्म हुआ था । अमीरने अपने चचा अजीमको काबुलका राज्य दिलानेमें जैसी सहायताकर जितना कष्ट पाया था उसे इस पुस्तकके पाठक गत प्रकरणोंसे जान चुके है । जिस समय अमीर रूसकी शरणमें गये इन्होंने इशाकको बुलाकर आश्रय दिया था । जब यह समरकंद छोड़कर काबुलकी ओर मुड़े इनसे इशाकने शपथ खाया था और वैसाही शपथ उसने उस समय खाया था जब वह अमीरकी कृपासे तुर्किस्तानका गवर्नर नियत हुआ । तुर्किस्तानकी गवर्नरी करनेपरभी इशाक जब कभी इनको पत्र लिखता उसके अंतमें सदा यही लिखा करता था कि "मै आपका दास और नौकरहूं" और अमीरभी उसे पत्र लिखते समय प्यारे पुत्र और भाईका संबोधन करते थे । इसी विश्वासपर इन्होंने उसे युद्धके उत्तम २ शस्त्र दिये थे परंतु अमीर इतना लिखनेके साथही यहभी लिखते है कि न मालूम क्यों उसने मेरेही दिये हुए शस्त्रसे मेरे हृदयमें गोलीमारी । वह सेनाका खर्च अधिक बतला २ कर मुझसे रुपया लेतागया और उसी रुपयेसे उसने मुझपर चढ़ाई करनेकी गुप्त तैयारियां कीं । उसने तुर्किस्तानके लोगोंके चित्तपरभी भक्ति उत्पन्न करनेके लिये दिन रात ईश्वरप्रार्थनामें बिताया । वह अपने कार्यमें सफलता प्राप्त करनेके लिये फ़कीर बनगया । वह जिस जातिका फ़कीर बना था उसका नाम नक्शबंद था । मजारेशरीफ़के पीरोंने कहदिया था कि आपको काबुलका राज्य मिलजायगा । तीन वर्ष पहले जब मुझे विदित हुआ कि इशाक प्रजासे अधिक लगान वसूल करके खागया है तब मैने इसबातका विश्वास नही किया था परंतु इशाक अस्तीनका सांप निकला । सन् ८८ के जूलाईमासमें जब मेरे मर जानेकी झूंठी खबर उडी उसने यह प्रसिद्ध करदिया कि अब मैही काबुलका अमीर बनूंगा । उसने केवल इतनाही न किया बरन तुर्किस्तानमें अपने नामका

सिक्काभी चलादिया। जब यह बात अमीरके कानतक पहुँची तब उनको उसपर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने अपने उपप्रधान सेनापति जनरल गुलामहैदरखांके अधिकारमें सेना भेजी। ताशकरगानसे तीन मीलपर गजनी डाकमें २९ सितंबरको इशाकस काबुली सेनाका युद्ध हुआ। यद्यपि इशाकके पास २० । २५ हजार सेना थी परन्तु कायर इशाक गुलाम हैदरके सामने टिक न सका। एकदिन रातदिन घोर संग्राम होनेके बाद जिससमय इशाककी सेनासे काबुली सेना हारने लगी तो कितनेही काबुली सैनिक भागकर इशाकमें जामिले। उस-समय इशाकने समझ लिया कि ये सैनिक मुझे पकड़नेके लिये मेरी ओर आरहे हैं। इसीभयसे उसके पैर उखड़गये। बस इसतरह इस युद्धका अंतहुआ। वही सरदार इशाकगा अब रूसकी शरणमें अपने दिन काट रहे हैं।

जब इशाकका पराभ्त होगया तो तुर्किस्तानका प्रबंध ठीक करने, वहां शांति स्थापित करने, वहांसे राजद्रोहियोंको निकालने और इसी तरहके अनेक कारणोंसे अमीरको वहां जाना पड़ा। इस यात्रासे अमीरका एक प्रयोजन और था। वह चाहते थे कि हिरात जाकर उस ओरकी सीमापर ऐसे किले बनादिये जाँय जिनसे फिर कभी रूसको काबुलकी ओर आँख उठाकर देखनेका साहस नहो। उन्हें विश्वास था कि इस कार्यमें भारत गवर्नमेंट कुछ रुपयेकी सहायता करेगी परन्तु उसने एक कौड़ी न दी। बस इसकारण अमीर इसयोजनामें समर्थ न होसके। दो वर्षतक अमीर तुर्किस्तानमें रहे। इतने दिनतक वर्त्तमान अमीर हबीबुल्लाह राज्यका ठीक २ शासन किया और किसीतरहकी गड़बड़ न होनेदी। इस अवसरमें काबुली दूत जनरल अमीर अहमदखां मरगये और भारतके गवर्नर जनरल लार्ड डफरिनने अमीरको उनके राज्यके भीतरी प्रबंध सुधारनेकी सम्मति (?) दी परन्तु इन्होंने इसपर कुछ लक्ष्य न दिया।

जिससमय अबदुर्रहमान मजारे शरीफमें सन् ८८ के दिसंबरमें सेनाकी कवायद करहेथे एक अद्भुत घटना हुई। यह घटना दो बात उत्पन्न करती है।

एक यह कि जबतक मनुष्यकी मृत्यु नहीं आती है उसे कोई भी मारनेमें समर्थ नहीं होसकता है और दूसरे ऐसे समयपर भी अमीरके प्राण बचाकर परमेश्वर ने दिखला दिया था कि वह अफ़गानिस्तानका भला करनेके लियेही उत्पन्न हुए थे और इस कारण जबतक वह अपना काम पूरा न करसके भगवानने हरभांति उनके प्राण बचाये । घटना यही थी कि सन् ८८ के दिसंबरमें क़वाइद लेते समय एक सैनिकने इनके गोली मारी । आश्चर्य यह हुआ कि गोलीसे यह कोरे बचगये और इनकी कुर्सीको फोड़कर इनके ठीक पीछे एक लड़का खड़ा था उसके जालगी । लड़का घोर रूपपर घायल हुआ । अपराधी पकड़ा गया और उसे दंड भी दिया गया ।

जिन दिनोंमें अमीर तुर्किस्तानमें रहे इनके दो स्त्रियोंने दो पुत्रोंका प्रसव किया । एक १५ सितंबर सन् १८८९ ई० को पैदा हुआ । इसका नाम सरदार मुहम्मद ऊमर है और दूसरा जो अक्टूबरमें उत्पन्न हुआ वह सरदार ग़ुलामअली है । इनमें मुहम्मदऊमर बहुत कोमल मनुष्य है । ग़ुलामअलीको इन्होंने तुर्किस्तानमें इसलिये रहने दिया था कि जिससे लोग इन्हें देखकर अमीरको स्मरण करलियाकरें । इनकी अनुपस्थितिके दो वर्षमें सरदार हबीबुल्लाने काबुलका शासन करतेसमय कईएक छोटे मोटे उपद्रवोंको शांत किया था इसलिये अमीरने लौटकर उन्हें दो बड़ी २ पदवियांदीं । और दरबार करनेका अधिकार दिया ।

प्रकरण–२५.

काफ़िरिस्तानका विजय ।

सर् मोर्टिमर डयूरेंड साहबसे अमीरकी जो सन् १८९३ ई० मे नवीन संधि हुई उसके अनुसार अफ़गानिस्तानका उत्तर तथा उत्तर पश्चिम प्रदेश, जो काफ़िरिस्तानके नामसे प्रसिद्ध है, अमीरके हाथ आया । उन्होंने अपने चरित्रमे लिखा है कि " मैं चढ़ाई करके काफ़िरिस्तानको दमन करना नहीं चाहता था किन्तु मेरी इच्छा थी कि कृपाके बोझसे

इसे दबादू।" इसी उद्देश्यसे अमीरने कइबार वहाके सरदारोंको बुला २ कर भारी २ इनाम दिया। परंतु वे ऐसे जंगली निकले कि अपनी स्त्रियोंको गायोंके मोल बेचने लगे। इससे बहुत झगडे खड़े हुए। उन्होंने इनकी कृपाका बदला बुराइमें दिया। जो रुपया इन्होंने उन्हें इनामम दिया था उसीसे उन्होंने अमीरसे लडनेके लिये शस्त्र खरीदे। इस अवसरमे काफिरिस्तानके पडोसका प्रदेश पामीर रूसियोंने लेलिया। केवल पामीर ही नहीं लेलिया वरन् काफिरिस्तानकी ओर बढने लगे। इसबातसे इन्होंने समझ लिया कि जो इस अवसरपर इस प्रदेशपर चढाई न कीजायगी तो रूसवाले उसे अनायास लेकर स्वतंत्र करदेंगे। काफिरलोगोके कईएक गाव अफगानिस्तानमे हैं उन्हें दिलानेका प्रयत्न करेंगे। ये लोग समयपाकर काबुल राज्यको बडा कष्ट देंगे। उनके स्वतंत्र होजानेसे काबुलमें व्यापारके लिये आने जाने वाले मालपर रोक लगजायगी और सीमाप्रांतमे अबतक डाके लूट खसोट और खून होते हैं उनकी संख्या बहुत बढजायगी। इसतरह एक वीरजाति काबुल नरेशके हाथसे सदाके लिये निकल जायगी। ऐसेही अनेक विचारोंसे अमीरने चढाइ करनेका संकल्प किया। इस संकल्पके लिये जाडेकी ऋतु अधिक अनुकूल थी क्योंकि अमीरने सोचा कि वे काबुली सैनिकोंके गोले गोलियोंसे घबडाकर जब पहाडोंमें भागेंगे तो वहा जाडेके मारे उन्हें शरण न मिल सकैगी, जाडेके सिवाय अन्य ऋतुओंमे उनपर आक्रमण करनेसे वे घाटियां खुली होनेके कारण रूसकी शरण और सहायता लेने चले जायगे किन्तु यह काम जाडेमे न हो सकेगा। वे बडे वीर सैनिक हैं इसलिये गर्मीमे उन्हें दबाना कठिन होगा और यदि शीघ्रही काफिरिस्तानका राज्य न लेलिया जायगा तो इसाइ लोग वहा धर्मोपदेशके लिये जाने लगेंगे। जिससे भविष्यतमें विशेष विद्रोह होनेकी संभावना है। इस विचारसे अमीरने चुप चाप से २ ठीककर उनपर चढाइ करनेके लिये अपनी सेनाके चार विभाग किये। जबतक सेनाकी पूरी २ तैयारी न होगई इन्होंने किसीसे न कहा कि मेरा काफिरिस्तान लेनेका विचार है। सन् ९५ के जाडे

में इन्होंने अचानक आज्ञादेदी कि आजही काफ़िरिस्तानपर आक्रमण- करो । सेना पहलेसे तैयारतो थी ही आज्ञा पातेही चारों कालमोंने काफ़िरिस्तानको चारों ओरसे घेर लिया । चढ़ाई अचानक हुई थी इसलिये काफिर लोग पूरे सँभल नसके । चालीस दिनके युद्ध पश्चात उन लोगोंने हारखाई । जब काबुलीसेना काफ़िरिस्तानका विजयकर काबुल आई तो इंग्लैंडमें पादरियोंने हल्ला मचादिया कि अमीरने जिन काफिरोंपर चढाईकी है वे ईसाई है किन्तु अमीर कहते है कि "वे ईसाई कदापि नहीं हैं। वे मूर्त्ति पूजक और मिथ्या विश्वासी हैं।"

युद्धके अंतमें जो काफ़िर क़ैद हुए थे उन्हें अमीरने काबुलके निकट पगमानमें जा बसाया। उनकी शिक्षाके लिये वहांपर कितनेही स्कूल- खोले और उनके बालकोंको युद्धशिक्षा देनेका प्रबंध किया । इस तरह रूसी आक्रमणसे उस प्रान्तकी रक्षा करनेका संकल्प सिद्ध हुआ। काफ़िरिस्तानके अंतर्गत कुल्लम क़िलेके फाटकपर एक पत्थर है। जिसमें लिखा हुआ है कि "मुग़ल बादशाह तैमूरने इस प्रदेशकी अत्याचारी प्रजाका दमनकर सारा राज्य लेलिया था किन्तु वह भी कुल्लम किलेको न जीतसके।" इसी वाक्यके नीचे अमीरने खुदवा दिया कि- "सन् १८९६ ई० मे अफ़ग़ानिस्तानके अमीर अबदुर्रहमान ग़ाज़ीने कुल्लम सहित समस्त काफिरिस्तानको जीत लिया और वहां की प्रजाने सच्चे इस्लामधर्मको स्वीकार कर यहांपर कुरानकी यह आयत खुदवादी कि सत्यता और नेकीके आगमनसे असत्यका नाश हुआ है।" अमीर अबदुर्रहमानके शासनमें काफिरिस्तानका युद्धही अंतिम युद्ध था।

काबुलका राज्य अपने हाथमें आनेके अनंतर किस २ समय किस २ तरह अमीर अबदुर्रहमानने बाहरी शत्रुओंसे विजय पाया, कैसे २ प्रजा विद्रोहको शांत किया और क्योंकर वह जंगली और रक्तके प्यासे कट्टर मुसलमानोंकी एक जाति (जिसे अंगरेजीमें नेशन कहते हैं) बनानेमें समर्थ होसके-इस बातका अधिकांशमें दिग्दर्शन गत प्रक-

रणोंमे हुआ है और जो शेष है वह आगामि प्रकरणोंमे किया जायगा। यहां उनके प्रयत्नोंमे सफल होनेका एक प्रबल कारण प्रकाशित करना अपेक्षित है। वह कारण यही है कि अमीर अबदुर्रहमान अपनी शक्ति बढानेके लिये अपने दरबारमे काबुल राज्य और उसके अडौस पडौसके नरेशों और शासकोंकी सख्या बढानेका सदा प्रयत्न किया करते थे। उनके प्रतिद्वन्द्वियोंके अनुयायी जो उनके डरसे भागकर रूस वा भारत वर्षको चले गये थे उन्हे बुला बुलाकर इन्होंने अपने यहा बसाया और उन्हे बडे २ पद देकर उनके हृदयमे अपने ऊपर प्रेम उत्पन्न करवाया। इसी तरह उन्होंने धीरे २ काबुल राज्यको निष्कटक करदिया क्योंकि यदि ये लोग विरोधी रहकर रूस वा भारतमे रहते तो किसी दिन अवश्यही काबुलमे उनके उपद्रव करनेकी सभावना थी।

प्रकरण–२६

अमीरकी दिनचर्या।

भारतके राजा महाराजा समझते हैं कि जितना हम काम न करें और दिन रात भोग विलासमे पडे रहें उतनी ही हमारी शोभा है। वे पयादे चलने और हाथसे काम करनेमे अपनी अप्रतिष्ठा समझते हैं परतु अमीरने लिखा है कि "बचपनसे ही मेरी काम करनेकी टेव है। मैं समझता हू कि जो मनुष्य काम नहीं करता है और व्यर्थ बैठा २ समय नष्ट करता है वह ईश्वरके यहा अपराधी है।' अमीरका खाने पीने और कपडेमे सदा सादापन रहता था और वह राजा होनेपर भी सादा और सैनिकोंकी तरह रहना पसन्द करते थे। मनुष्यका जैसा स्वभाव पड जाता है वह मरते दमतक नहीं छूटता है। अमीर अबदुर्रहमान, जिनको सदापरिश्रम करते रहने की टेव थी अपने बुढ़ापे-नहीं २ भयकर बीमारीके समय भी काम करना न छोडसके। उन्होंने लिखा है कि "जितनाही मैं अन्य जातियों और धर्मोंको अधिक २ उन्नति करते देखता था उतनी ही उतनी मुझे बेचैनी बढती जाती थी और मैं सोचा करता

था कि किसी दिन अफगान जातिकी जब मैं उन्नति देखूंगा तब मुझे आनंद होगा। इन्हें स्वप्नोंपर बहुत विश्वास था और इनका कथन है कि जब मुझे कोई नया काम करनेको होता था उसके लिये मुझे पहलेसेही स्वप्न आजाया करता था । यह काम करनेके इतने अभ्यस्त थे कि प्रायः खाना सोना भी भूल जाते थे । कामकी अधिकतासे इन्होंने राजा होनेपरभी अपने भोजन शयनका कोई समय नियत नहीं किया था । इनके चिकित्सक कहा करते थे कि " आपके कामकी अधिकता ही आपकी बीमारीका कारण है । इसकारण आप काम घटाकर खाने सोनेका समय नियत कीजिये । " अमीरने इनको उत्तर देदिया कि "प्रेममें नेम (नियम) नहीं होता है । " अनेक बार प्रजाने उपद्रव कर, युद्ध कर और इनपर झूंठे २ कलंक लगाकर इन्हें हताश किया परंतु इन्होंने प्रजाकी भलाई के लिये जिन कामोंके करनेका बीड़ा उठाया था उन्हें अवश्य समाप्त किया और तबही इनके चित्तको चैन हुआ ।

दिनरातके चौबीसघंटेमें इन्हें कभी चैन नहीं मिलता था । कभी २ काममें यह इतने विह्वल होजाते थे कि जिससे इन्हें यह सुध नहीं रहती थी कि मैंने भोजन किया है वा नहीं । जब इन्हें भूंख लगती खालेते और जब काम करते २ थक जाते थे तबही सोजाया करते थे । यही इनका नियम था । जितने घंटे इन्हें सोनेको मिलते उतनी देरमेंभी कईबार चौंक २ कर अपने देशके प्रबंधका विचार करने लगते थे । यह पहलेकी बात है परंतु जबसे (सन् १८९१ ई० से) इन्होंने सरदार हबीबुल्लाको राज्यके कुछ अधिकार दिये इनके कामका थोड़ा बोझा हलका होगया था । तबसे विदेशीय विभाग, देश विदेशसे जासूसों द्वारा मिले हुए संवादका अनुशीलन, राजकोष, हबीबुल्लाके न्यायालयकी अपील, युद्धकी सामग्री इकट्ठी करनेका प्रयत्न, बड़े अपराधियों और विद्रोहियोंको दंड देनेका विचार और आईनका संशोधन--इत्यादि आवश्यक २ विषयोंपर विचार करनाही इनका दैनिक काम था । काबुल राज्यमें जितने राजकोष हैं, उनकी नित्यके जमा खर्चकी रिपोर्ट मँगाकर सुनना और उससे यह जानना कि इससमय हमारे पास कितना

पया है इनका दैनिक काय था। इनके सिवाय यूरोपियन वा देशी वेदेशी जो कोई महमान इनके यहा आता उसका सत्कार करनाभी ह अपना कतव्य समझते थे। जब कभी इन्हे रात्रिके समय थोडा अव काश मिलजाता यह भारतवासी, ईरानी और अफगान गवैयोंका गाना सुना करते थे। यह कभी किसीसे नही कहते थे कि आज मुझे अमुक जगह जाना है और जब जी चाहता वे कहे सुने चलदेते थे। इसकारण कुछ नौकर, शरीररक्षक और सवारी सदा राजप्रासादके आगे खडी रहती थी। यदि अचानक किसीसे युद्ध ठनजावे तो उस समय सेना तैयार करनेमें विलव न लगे इसलिये यह लडने योग्य सेना सदा तैयार रखते थे यह केवल राजाही नहा थे वरन प्रसिद्ध सैनिक थे और ससारकी अनेक नीच ऊच देखनेमे अपने बाल पकाचुके थे इसलिये सदा स्वयभी लडनेको तैयार रहते थे। यह भोजन अकेले नहीं करते थे किन्तु अपने दरबारियोंसे प्रेम बढानेके लिये सदा उन्हे भी अपने साथ भोजन कराया करते थे और यही नियम इन्होने प्रान्तीय गवनरोंके यहा प्रचलित कर दिया था। इन्हे थोडी चा पीनेकी टेव थी किन्तु ऐसा कभी सुननेमे नहीं आया कि इन्होने मद्य पिया हो। यह अपनी स्त्रियोंको अपने २ भोजन वस्त्रके लिये ३०००) से ८०००) तक उनके दर्जेके अनुसार मासिक दिया करते थे और उनके लिए मकान अलग २ थ। राज्य पानेसे कुछ वर्षोंतक यह अत पुरमें एक सप्ताहमें दोबार जाया करते थे परतु ज्यो २ काम बढतागया इन्होने जनानेमे जाना इतना कम करदिया था कि महीनेम एकही दो बार और पीछे २ वर्षमें दो तीनबार जानेका अवसर मिलता था। इनके स्त्रिया कइएक थीं इस हिसाबसे प्रत्येक स्त्रीके यहा जानेका अवसर कदाचित् चार छ महीनेम होता होगा। परतु स्त्रिया आठवे दशवे दिन आकर इनसे मिलजाया करती थी।

डाक्टर ग्रे साहबने अपने "एट्टीकोट आफदी अमीर" में लिखा है कि "अमीर रमजान महीनेम रोजा नही रखते थे। उन्होने स्वय डाक्टर

साहबसे इस बातको स्वीकार किया था। वह कहा करते थे कि रोज़ा रखनेसेभी राजाका काम बड़ा पुण्यका है। यदि मैं रोज़ा रक्खू तो मेरे लिये "रमज़ान" मरजान होजाय और फिर मुझसे अपने कर्तव्य-का पालन न होसके।"

प्रकरण–२७.

अमीरका स्वभाव और विद्या।

यद्यपि अमीर अबदुर्रहमान कट्टर मुसलमान थे और इस्लामी धर्म-पर उनकी अधिक श्रद्धा थी परंतु उन्होंने अपने चारित्रमें लिखा है कि मैं किसी मतका पक्षपात नहीं करताहूं। मेरे लिये सब धर्मके लोग समान हैं। मैं इंग्लैंडकी तरह उन लोगोंको राज्यके उच्चपद देनेसे वंचित नहीं रखताहूं जो मेरे धर्मके अनुयायी नहीं हैं। मैं बे रोक टोक उन्हें बड़े २ पद देताहूं। इसका प्रमाण यह है कि मैं सुन्नी मुसलमानहूं परंतु मेरे राज्यमें अनेक बड़े २ पदोंपर शिया जातिके लोग काम कर-रहे हैं। यह स्थिति तो अन्यधर्मोंके साथ वर्त्ताव करनेकी है किन्तु काबुल राज्यमें बहुत कालसे ऐसा नियम प्रचलित है कि जो मुसलमान मसजिदमें जाकर पांचोंबारकी नमाज़ नहीं पढता है उसके कोड़े लगाये जाते हैं।

मैं इस पुस्तकका आरंभ करते समय अफ़ग़ानिस्तानकी गुलाम जा-तिके विषयमें लिख आयाहूं। मैंने यहभी लिखा है कि ये प्रायः वेही लोग हैं जो युद्धमें क़ैद होकर काबुल लाये गये हैं अथवा उनकी संतान हैं। अफ़ग़ानिस्तानमें इनकी संख्या अधिक है। जिस समय अमीरने सन् ९६ ई० में काफ़िरिस्तानका विजय किया यह कड़ी आज्ञा दी थी कि "युद्धमें जो लोग पकड़े गये हैं उन्हें गुलामोंके लिये न बेंचो।" इस आज्ञाका पालन हुआ और जहांतक मैंने सुना है मैं कहसकताहूं कि अब वहांके गुलामोंकी दशा बुरी नहीं है। वे राज्यके बड़े २ ओहदे पाते हैं और उनका संबंधभी अमीरोंकी लड़कियोंसे हो सकता है। डाक्टर-

मे साहबने लिखा है कि– "काबुलम गुलामभी एक तरहकी जायदाद है। मालिक उन्हे बच सकता और मारसकता है परतु साधारणत अमीरोंके यहा वर्ताव अच्छाहोता है। उनके यहा इस बातका पहचानना कठिन होता है कि कौन पुत्र और कौन गुलाम है।" यह अमीरकी नीतिकाही परिणाम है।

अमीर इतना काम करनेमे जिसतरह सासारिक घटना और राजनीति सबधी चालोकी सच्ची शतरज खेला करते थे उसी तरह वह अवकाश पानेपर लकडीके मुहरोवाली शतरजभी खेलते थे। यह रातको बिछौनेपर पडतेही निद्रामग्न नही होते थे किन्तु निद्रा आनेसे पहले इन्हे जितना अवकाश मिलता उसमे भिन्न २ देशोके इतिहास, भूगोल, राजाओं, सशोधको और राजनीतिज्ञोंके चरित्र सुना करते थे और जब इनसे छुट्टी पाते तो उनके पास किस्सा कहनेवाले कहानी सुनाने आ पहुँचा करते थे।

यह अपनी पुस्तकमें लिखते है कि 'मै पश्तो, फारसी, तुर्की, रूसी अरबी और हिन्दुस्थानी भाषा जानताहू। पश्तो अफगान प्रजाकी भाषा है, तुर्की तुर्कस्तानकी भाषा है। फारसी हमारे न्यायालयोंकी भाषा है। अरबी और हिन्दुस्तानी भाषा मै अच्छी तरह जानता नहीं हू परंतु समझ लेताहू। मै इनमेंसे जो मनुष्य जिसभाषाको जाननेवाला है उससे उसी भाषामें बातचीत करताहू इसलिये मुझे अभ्यास बढता जाता है। मैने अपने जीवनभरमें हजारो (?) ही पुस्तक सुनी है इसलिये मुझे अनुभव बहुत होगया है। कहानिया जो मैने सुनी है उनमे गप्पे बहुत है परतु उनसे मै कुछ न कुछ शिक्षा अवश्य लेलेताहू।" अमीरके जिस चरित्रके आधारपर इस पुस्तकमे अधिक भाग लियागया है वह असलम फारसी भाषामे अमीरही की लिखवाई हुई है। उसीका तर्जुमा अगरेजीमे हुआ है और अगरेजी पुस्तकके आधारपर यह हिन्दी पोथी है। इस पुस्तकके अतिरिक्त अमीरके कथनानुसार उनकी बनाई हुई और २ भी पुस्तक है परतु उन्होने अपने चरित्रमे उनका नाम नहीं लिखा है।

अमीर अबदुर्रहमान हकीम भी थे । बचपनमें उन्होंने पिताके पास रहकर इसका कुछ अभ्यास किया था । वह डाक्टरों और हकीमोंके काममें, जिससमय वे राजघरानेके किसी मनुष्यकी चिकित्सा करते थे बहुत प्रश्न किया करते थे और यदि अपने प्रश्नों और अनुभवके अनुकूल उत्तर नपाते तो कभी उनकी चिकित्सा स्वीकार नहीं करते थे । काबुलके भोले और धर्मभीरु लोगोंको विश्वास था कि अमीरको वचन सिद्धि है और इस सिद्धिको सत्य मानकरही कदाचित वहाँवाले उनसे अमल करवाकर रोगोंकी चिकित्सा करने की चेष्टा करते थे। डाक्टर ग्रे साहबने लिखा है कि पूर्व देशके राजाओंमें यह चाल है कि जब कोई चिकित्सक उनका इलाज करता है तो राजाके दवा खानेसे पूर्व चिकित्सकको खानी पडती है, परंतु उन्होने यह नहीं लिखा है कि जब उन्होंने अमीरकी चिकित्सा की थी तो उन्हेंभी दवा खानी पड़ी थी वा नहीं ।

डाक्टर ग्रे साहबने लिखा है "कि अमीर दंड बहुत कड़ा देते थे। एक दिन मेरे सामने कई एक सिपाही बेडियां डालकर लाये गये थे। उनका अपराध क्या था सो तो मुझे विदित नहीं, किन्तु कुछ दिन पीछे मैंने उनमेंसे चार मनुष्योंको जब अस्पतालमें देखा तो उनके दहने हाथ कटे हुए थे । मैंने सुना है कि उनपर अपने अफसर की झूँठी निंदा करने का दोष लगाया गया था । ' कुछ भी हो परंतु डाक्टर साहबने स्वीकार किया है कि "अमीरने गादीपर बैठकर बहुत बड़ा काम किया है। अफ़ग़ानिस्तानमें इतनी सभ्यता फैलना इनकी बुद्धि और अनुभव काही परिणाम है । यद्यपि दीनोंपर अत्याचार और किसानो तथा व्यापारियोंका दुःख मिटा नहीं है परंतु जितना देखनेमे आता है वह काबुलके लिये बहुत कुछ है ।"

प्रकरण—२८.

अमीर अबदुर्रहमानकी मृत्यु ।

गठिया अमीर अबदुर्रहमानकी घरेलू बीमारी है । यह बहुत वर्षोंसे गठियारोगसे पीडित रहते थे । कोई २ बार इनका रोग इतना बढ़जा-

ता था कि इनके जीनेकी आशा नहीं रहती थी । इन्होने अपने चरित्रमें लिखा है कि "रूसके चित्तको विचलित करनेके लिये मैं कईबार अपनी मृत्युके समाचार मिथ्याभी प्रकाशित करदिया करता था।" इनकी गप्पका प्रभाव रूसपर पडता था वा नहीं सो मै नहीं जानताहू परन्तु भारतवर्षमें अवश्यही ऐसा कोई वर्ष नहीं जाता था जिसमें दो चार बार इनकी मृत्युकी गप्प न उडतीहो । इसी कारण जब अंतिम बार इनके मरनेकी खबर आई तो किसीको विश्वास नहीं हुआ परन्तु जो बात सत्य होती है वह कभी छिपी नहीं रहती है । अतमें निश्चय होगया कि अमीर अबदुर्रहमानखांका २१ वर्ष शासनकर ३ अक्टूबर सन १९०१ को छ दिनकी बीमारीसे देहान्त होगया ।

अमीर अबदुर्रहमान बडे प्रभावशाली थे । इन्होंने रूस और इंग्लैंड जैसे दो सिंहोंके बीचमें रहकर दोनोंसे मेल रक्खा । दोनोंही इन्हे किसी तरह दबा न सके और काबुलकी वट्टर, रक्तकी प्यासी प्रजाको मोम बनाकर वहा सब प्रकारकी शाति स्थापितकी थी । यह काबुल राज्यको-जगकी काबुल राज्यको उन्नतिके मार्गपर डालकर ससार में अपना नाम करगये । ऐसेही मनुष्योंका जन्मलेना सार्थक है । शास्त्रकारोंने कहा है कि "इस परिवर्तनशील ससार में मरकर सबही जन्म लेते हैं परन्तु जिसके जन्मलेनेसे वंश(जाति) की उन्नतिहो उसका जन्मलेना सार्थक है।" यह लोकोक्ति अमीर अबदुर्रहमानके लिये ठीक चरितार्थ होती है । जिस समय इनकी मृत्युका भारतवर्षमें समाचार पहुँचे नोटोंका भाव गिरगया । भारतवर्ष और अन्यान्य देशोंके मुसलमानोंने इनकी मृत्युपर शोक किया और इनकी मोक्षके लिये मसजिदोंमे नमाजें पढ़ी । जहा २ सरकारी झंडे भारतवर्षमें उडते है वहा २ गवर्नमेंटकी आज्ञासे आधे गिराकर अमीरकी मृत्युपर शोक प्रकट कियागया । केवल इतनाही नहीं किन्तु गवर्नमेंटने अपने आफिसोंमे एक दिनकी छुट्टीभी की ।

भारतवर्ष और विलायतके प्राय समस्त समाचारपत्रोंने अमीरकी प्रशंसाकर उनकी मृत्युपर दुःख प्रकाशित किया । विलायतके इंडिया

आफिसमें इस बातपर शोक सूचक सभाहुई। भारतेश्वर श्रीमान् सप्तम एडवर्डने भारतवर्षके वाइसराय लार्ड कर्जनको तार भेजकर गतअमीरकी मृत्युपर शोक और नवीन अमीर हबीबुल्लाके राज्यपानेका हर्ष किया। भारत गवर्नमेंटने नवीन अमीरको खरीता देकर उनके गादीपानेका अनुमोदन किया और काबुलमें किसी तरहका नया बखेड़ा खड़ा होनेके भयसे श्रीमान् लार्ड कर्जनने कई दिनतक अपना दौरा बंद रक्खा, परंतु दूरदर्शी अमीर अबदुर्रहमान अमीर हबीबुल्लाके लिये पहलेसे सब प्रकारका प्रबंध कर गये थे। इसकारण किसीतरहका बखेड़ा न उठने पाया। अमीर हबीबुल्लाको काबुली प्रजा, राजकुटुंब, सरदारों और मुल्लाओंने सहर्ष स्वीकार किया। सीमाप्रान्तके अफ़रीदियोंने अपना डेप्यूटेशन भेजकर नये अमीरके गादीपानेका अनुमोदन किया और भारत गवर्नमेंटने अपनी ओरसे गवर्नमेंटके आठ प्रधान २ मुसलमान कर्मचारियोंका काबुलको डेप्यूटेशन भेजा। इस डेप्यूटेशनका काबुलके नये अमीरने बहुत सत्कार किया और प्रसन्नतासे अपना कामकर डेप्यूटेशन भारतको लौट आया।

नवीन अमीरने अपने पिताकी उत्तर क्रिया में ४६ हजार रुपया दीन दुःखियाओंको बाँटा। पुराने अमीरके बदले नये अमीरका खुतबा मस्जिदोंमें पढ़ा जाने लगा। नये अमीरके राज्य पानेके हर्षमें २७६ क़ैदी काबुली जेलसे छोड़गये।

रूसके समाचार पत्रोंने लिखा कि "अमीर अबदुर्रहमानखांके मरनेसे हमारी उलझन मिटगई।" इसी कथनसे विदित होता है कि वह रूसके हृदयमें कांटेकी तरह चुभते थे। कांटेकी तरह चुभो चाहे न चुभो परंतु अमीर अबदुर्रहमानका शासन वास्तवमें काबुल जैसे राज्यके लिये अद्वितीय हुआ। जिस काबुलमें राज्यका स्वत्वाधिकारी होनेपर भी विना रक्तकी नदी बहाये कोई राज्य नहीं पासका था, जहांकी गादीने हजारों मनुष्योंके शिर धड़से अलग करादिये थे, उसी काबुलकी गादीपर अमीर अबदुर्रहमानके प्रभाव, उनकी शक्ति, उनकी राजनीति और

उनके सुप्रबंधसे अमीर हबीबुल्ला शांतिपूर्वक शासन करने लगे। इस घटनाने दिखलादिया कि अमीरअबदुर्रहमानको अपने प्राय समस्त प्रयत्नोंमें सफलता हुई। ऐसेही मनुष्योंके उत्पन्न होनेमें इस असार संसारकी शोभा है। यदि वास्तवमें देशका उपकार करनेवाले कोइ संसारमें जन्म लेते हैं तो उनमें यह अवश्यही गिनेजाने योग्य थे। ऐसे पुरुष रत्नको धन्य है। उन्हींके सुप्रबंधसे, उन्हींके प्रतापसे अब अमीर हबीबुल्ला काबुलका शांतिपूर्वक शासन कररहे हैं और यदि उन्हींकी चालपर चलेंगे तो कभी हबीबुल्लाका एक बालभी बाका होनेकी संभावना नहीं है। यह अपने उद्देश्यामें सफल होकर हबीबुल्लाके लिये मार्ग निष्कंटक छोड़गये हैं। हबीबुल्लाका शासन कैसा होगा यह बात अभी भविष्यकी गोदमें है।

इस खंडके आगे जो तीन खंड इसचरित्रके प्रकाशित हुए हैं उनमें विदित होता है कि अमीर अबदुर्रहमान हबीबुल्लाको सबतरहकी शिक्षा देकर काबुलका शासन करनेके योग्य करगये हैं। मुझे आशा है कि अमीर हबीबुल्ला अपने पिताकी आज्ञाका कभी उल्लंघन न करेंगे। इसीमें उनका भला है।



इति प्रथम भाग समाप्त ।

श्री।

द्वितीय भाग।

राज्यका प्रबंध और उन्नति।



प्रकरण—१

प्रबन्धके आठ विभाग।

राज्य प्रासाद।

जिससमय अमीर अबदुर्रहमानने काबुल राज्यका शासन अपने हाथमें लिया था, वहाँका राज्य स्वाधीन होनेपरभी देशभरमें अराजकता फैल रही थी, प्रत्येक धर्मोपदेशक मुल्ला, जातिके मुखिया और रईस अपनेको स्वतन्त्र मान दीनप्रजाको नाना प्रकारके घृणित और क्रूर अत्याचारोंकी चक्कीमें पीसते थे। वे लोग चोर लुटेरा और नरघातकोंको नौकर रख कर उनकी खोटी कमाईका हिस्सा लेते थे। एक जातिकी दूसरी जातिसे रात दिन लड़ाई होकर प्रजाविद्रोहकी आग सदा धधकती रहती थी। राजघरानेके लोगोंमें परस्परकी द्वेषाग्निसे काबुलमें ऐसा कोई वर्ष नहीं जाता था जिसमें दो चार युद्ध होकर रक्तके प्यासे शत्रुओंके गोदके पनाले न बहने लगे, जिसके शरीरमें शक्ति होती थी जो बल, साहस और उद्योगसे सेना अधिक इकट्ठी कर सकता था वही काबुलका अमीर बन बैठता था, काबुलके अमीरको अंगरेजों और रूसियोंके आक्रमणका दिन रात खटका बना रहता था, गिलजाई और दुर्रानी जैसी बलशाली जातियां काबुलराज्यमें बसकरभी अमीरको निजके समान नहीं समझती थीं, राजकोषमें रुपयेके नामपर फूटी कौड़ी न थी सेना अशिक्षित अनभ्यस्त और लुटेरोंका समुदाय थी और न्यायका कोई नाम नहीं जानता था। वहाँके विषयमें "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहा-

वत ठीक चरितार्थ होती थी । अमीर अबदुर्रहमानने राज्यका शासन अपने हाथमें लेकर प्रजामें कैसे शांति स्थापितकी, उनके समयमें काबुलकी भीतरी विद्रोह और बाहरी आक्रमणसे क्योंकर रक्षा हुई, दुष्ट अत्याचारियोंके दमन करनेमें उन्होंने क्या २ प्रयत्न किये और बाहरी आक्रमणोंके समय किसप्रकारसे उन्होने शत्रुके दांत खट्टे किये-इन बातोंका दिग्दर्शन प्रायः प्रथम भागमें हुआ है ।

अमीर अबदुर्रहमानने काबुलकी गद्दीपर बैठकर राज्य-प्रबन्धको मुख्य ८ भागोंमे बांटा । एक काबुलराज्यको अनेक प्रान्तोंमें विभक्तकर उनके पृथक् २ गवर्नर नियत किये " प्रत्येक गवर्नरको वहांके दीवानी फौजदारी माल और सेनाका अधिकार दिया और वहांकी दैनिक रिपोर्ट सुनकर उसके योग्यायोग्यकी व्यवस्था करनेका भार अपने ऊपर लिया । कईएक गवर्नरोंके ऊपर एक २ वाइसराय नियतकर उनकापद नायबुल् हुक्म रक्खा । इन सब वाइसरायों, सेना विभागके अध्यक्षों और दीवानी फौजदारी अदालतोंकी अपील सुननेका अधिकार सरदार हबीबुल्लाको दिया । दूसरे भिन्न २ जातिके मुल्लाओंका बल तोड़कर राज्यकी ओरसे प्रत्येक गॉव, नगर, क़सबा और प्रांतमें एक २ क़ाज़ी नियत किया और इन्हे धर्म्म सम्बन्धी झगड़े. स्त्री पुरुषके परित्यागके अभियोग, विरासतके मामले सुननेका अधिकार और प्राणदंड देनेकी शक्तिदी और यहांपरभी बहुमतसे फैसला होनेकी व्यवस्था की । प्रान्तोंके न्यायाधीशका पद क़ाज़ी और उसके नायह मुफती कहलाते हैं । तीसरा विभाग कोतवालीका है । कोतवाल पुलिसका मुख्य अफ़सर है । समस्त पुलिससेना उसीके अधीन है । वह छोटे मोटे फ़ौजदारी अभियोगोंका फैसला आप करता है और बड़े २ सदरको भेजता है । कोतवालभी जहां २ क़ाज़ी नियत हुए हैं वहां २ नियत कियेगये हैं । काबुल राज्यका कोई मनुष्य राज्यसे परवाना लिये विना एक गांवसे दूसरे गांव नही जासकता है और जो जाता है उसपर दंड होता है । इस तरहके राहदारी परवाने देनेका कामभी कोतवालके हाथमें है परंतु काबुल राज्य छोड़कर जो मनुष्य

बाहर जाता है उसके पवानेपर अमीरकी मुहर होती है। कोतवालही-के हाथमें जासूस रहते है, जो वेष बदलेहुए फिरकर राज्यभरकी खबर लाते है। काबुलमें जासूसोंका बडा आदर है। ऐसा कोइ गृहस्थ न होगा जिसक यहाकी बुरी भली खबर अमीरतक न पहुँचती हो। जिस समय जासूस कोइ झूठी खबर देदेता है तो इस अपराधके बद-लेमे उसे प्राणदडसे कम सजा नहीं मिलती है और इन्हींकी खब-रोंके आधारपर अमीर शासन करसकता है। चौथा विभाग "काफि-लाबशी" है। इसका काम यात्रियोंको सवारी देना और ऊठ, गधे वा खिच्चर वालोंकी यात्रियोंसे यदि तकरार होजावे तो उसका निपटारा करना है। इसी विभागका अफसर इस बातपर ध्यान देता है कि यात्रियोंको कोई ठग न ले। भाडा करनेके लिये उनसे कमीशन लेकर राज्यमें जमा करता है और इसका खर्चभी राज्यसेही होता है। पाचवां विभाग व्यापार सबधी न्यायालयका है। इसमें व्यापारियोंके मुकद्दमाका फैसला होता है और उन लोगोंसे काबुल गवर्नमट जो टैक्स लेती है उसका वसूल करना और उस द्रव्यका हिसाब रखना भी इसीका काम है। यह एक पंचायत है जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों जातिके व्यापारी मेबर होते है। छठे विभागमे लगान वसूल करने और लगान सबधी अभियोगोंका फैसला करने तथा लगान सम्ब न्धी हिसाब रखनेका काम होता है। सातवा विभाग सायर चबूतरे-का है। काबुल राज्यमें बाहरसे जितना माल आता वा यहासे बाहर जाता है, उसपर २॥) सैंकडा करलेना इस विभागका काम है। आठवे विभागका नाम खजाना है। मालके हाकिम किसानोंसे रुपया वसूल नहा करसकते है किन्तु वे किसानोंके अथवा व्यापारियोंके हाथसेही खजानेंमे रुपया जमा करवा देते है और नवा विभाग सेनाका है। उस राज्यमें ऐसा कोइ बडा गाव वा कस्बा नहीं है जहा आवश्यकताके अनुसार सेना न रहती हो। यही सेना समय पड़ने-पर युद्धका काम देती है। इसके सिवाय प्रत्येक प्रान्तमे, सीमापर तथा राजधानीमे जो सेना रहती है वह जुदी है।

जिस समय अबदुर्रहमान काबुलके अमीर हुए राजधानी कोई अच्छा महल उनके रहने योग्य नहीं था। न क बाग बगीचेका नाम था और न सड़कही देखनेमें आती थी प्रबंधका अविश्रांत परिश्रम, अशांतिकी झंझट और बाह आक्रमणोंकी पूरी २ चिन्ता होनेपर भी अमीरको मिट्टीके झोपड़ रहना पड़ता था और जहां कहीं झोंपड़े नहीं होते थे वहां खेमोंमें अपना निर्वाह करलिया करते थे। जबतक वह सब प्रकारका प्रबंध करचुके, जबतक उन्होंने काबुल राज्य और वहांकी कट्टर प्रजा अपनी मुट्ठीमें नहीं लेलिया भारतवर्षके हाकिमोंकी तरह देशकी दुर्द का कुछ विचार न कर ज्येष्ठके सूर्यकी प्रखर किरणोंसे बचनेके लि शिमले जैसे स्वर्गमें जाकर केलिविहार का सुख नहीं लूटते थे। ज वह सब कामोंसे निश्चित होचुके तबही उन्होंने राजधानीमें बड़े २ ब बनवाये और तबही उन्होंने अपने पुत्रों और बीबियोंके लि अलग २ महल बनवाये। अब वहां भारतवर्षकी तरह पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट अलग है। इसीका यह काम है। इसीकी योजनासे सैनि और दूसरे स्कूल, इसीके प्रबंधसे अस्पताल और इसीके प्रयत्नसे स तथा कचहरियां बनाई गई है। डाक्टर ग्रे साहबने अपनी किताब "एट कोर्ट आफदी अमीर" में लिखा है कि अमीरका महल भारतवर्षके बं लेकी सूरतका है। इसके आगे जो बाग बना हुआ है उसमें होकर फुट चौड़ी एक नहर निकाली गई है। बागमें बादामके पेड़ जंगलीढंग उगरहे हैं और उसमें अच्छे २ सुगंधित पुष्पोंके पौदे भी देखनेमें आते बंगला लकड़ीका है। बंगलेमें बड़ी २ खिड़कियां हैं और उसके लक के खंभोंपर नक्काशीका काम होरहा है।" इतना लिखनेके साथ यहां एक बात प्रसंग आपड़नेसे लिखना पड़ता है कि वहांका जो अ सर वा कर्मचारी अमीरके सामने उपस्थित होता है उसे पहले अमी से घुटने टेककर सलाम करना पड़ता है। सलाम करनेके पश्चात अमीरके हाथ चूमकर उन्हें अपने माथे और आंखोंपर फेरता है। जि समय डाक्टर ग्रे अमीरसे मिलने गये उनके समक्ष जानमुहम्मद ना अफ़सरने ऐसाही किया था।

प्रकरण–२

काबुलमें शिल्पकी उन्नतिका प्रयत्न और बंदूकोंका कारखाना ।

जब अमीर काबुलका शासन अपने हाथमें लेचुके थे उससमय वहा की स्थिति कैसी थी इस विषयमें उन्होंने अपनी किताबमें एक किस्सा लिखा है । वह यह है कि–"किसी मनुष्यने ठेकेदारोंको एक बाग बनानेका ठेका दिया था । ठेकेदार लोग मालिकका रुपया खागये । ठेकेके करारकी अवधि जब पूरी हुई तब उन्होंने आकर मालिकसे कहा कि "बाग तैयार है ।" मालिकने आकर देखा तो वहा केवल जंगल पड़ा था । मालिकने कहा–" यहा पेड कहा है ?' ठेकेदार बोले" पेडके सिवाय सब कुछ है ।"मालिकने फिर पूछा–" पेड न सही परन्तु बागकी दीवार भी तो नहीं है ? 'ठेकेदार बोले– हा एक दीवारही नहीं है और सब कुछ है ।' इसी तरह मालिक जिस २ बातके लिये पूछता गया उसीके लिये ठेकेदार ऐसा उत्तर देते गये ।" अमीरने लिखा है कि यही स्थिति काबुलकी थी । यहा "एक यही न था और सब कुछ था" का उत्तर यहाकी प्रत्येक बातके लिये चरितार्थ होता था । उसी काबुलका सुधार करनेके लिये अमीरने जो काम काबुलि वास नहीं होसकता जिसे व लोग करना नहीं जानते थे उसकेलिये विदेशियोंको नौकर रक्खा । वह यदि चाहते तो काबुलियोंको विदेश भेजकर, इन कामोंमें शिक्षित बनाकर उनसे काबुलमें कारखाने खुला सकते थे परन्तु उन्होंने सोचा कि नवीन शिल्पके साथही पश्चिमी सभ्यता और सभ्यताके साथही पश्चिमवालोंके दोष काबुली समाजमें घुसजायेंगे और व लोग पश्चिमी चाकचक्यमें फँसकर दुराचरण ग्रहण करनेके सिवाय कोमल होजायँगे इसलिये उन्होंने अपनी प्रजाको विद्योपार्जनके लिये विदेश भेजना उचित न समझा । अमीरने अपनी पुस्तकमें विदेशियोंको नौकर रखकर अपनी प्रजाको शिक्षित बनाने और अपने यहाके आदमियोंको विदेश न भेजनेके

६ कारण लिखे हैं। (१) इस देशके मनुष्य विद्योपार्जनके लिये विदेश भेजनेमें खर्च बहुत पड़ेगा और उस खर्चको न तो बालकोंके माता पिता और न राज्य उठा सकेगा (२) मेरी प्रजाभी बाहर जाकर सीखना पसंद नहीं करती है (३) अफ़गान प्रजा परदेशी भाषा नहीं जानती है। इस कारण यदि वे भेजे जायँगे तो पहले उन्हें भाषा सीखनेका कष्ट उठाना पड़ेगा। मैंने यहां एक आफिस खोलकर उसके द्वारा भिन्न २ भाषाओंसे भिन्न २ विषय फारसीमें अनुवाद करनेका प्रबंध किया है और मेरा विचार है कि इस आफिसकी एक शाखा भारत वर्षमेंभी खोली जाय। कईएक पुस्तकोंका अनुवाद होगया है और कितनीही छपभी गई हैं। (४) मेरी समझमें पूर्वदेशके आदमी जो पश्चिमको जाते हैं वे उनके गुण सीखनेके बदले मद्यपान, जुआ, दुराचार सीखते हैं। इस कारण मैं उचित समझताहूं कि मेरी प्रजाको मेरेही निरीक्षणमें शिक्षा मिले (५) जबतक लोगोंको शिक्षा उनकी मातृभाषामें न मिले वे उसका आशय अच्छीतरह नहीं समझसकते हैं और (६) मैं अपनी प्रजाको भिन्न २ प्रकारकी कारीगरी शीघ्र सिखलाना चाहताहूं इसलिये इस कामपर जिस किसी यूरोपियन, भारतवासी वा और किसीको नौकर रखताहूं उससे प्रण करवालेता हूं कि जबतक शिक्षक लोग शिक्षा समाप्त न कर सकें उन्हे स्वदेश जानेकी छुट्टी न दीजायगी। इस योजनासे विद्योपार्जनमें विलंब नहीं लगता है और इसीसे क़ाबुली प्रजा शीघ्र २ कारीगर होती जाती है।"—इन्हीं उद्देश्योंसे अमीरने अपने यहां अनेक यूरोपियन नौकर रखकर प्रजाको शिक्षित करनेका प्रबंध किया है। इस योजनाके अनुसार बहुतसे यूरोपियन अपना काम समाप्त करके अवधि पूरी होनेपर स्वदेश लौट गये हैं और कितनेही अभीतक काम कररहे है।

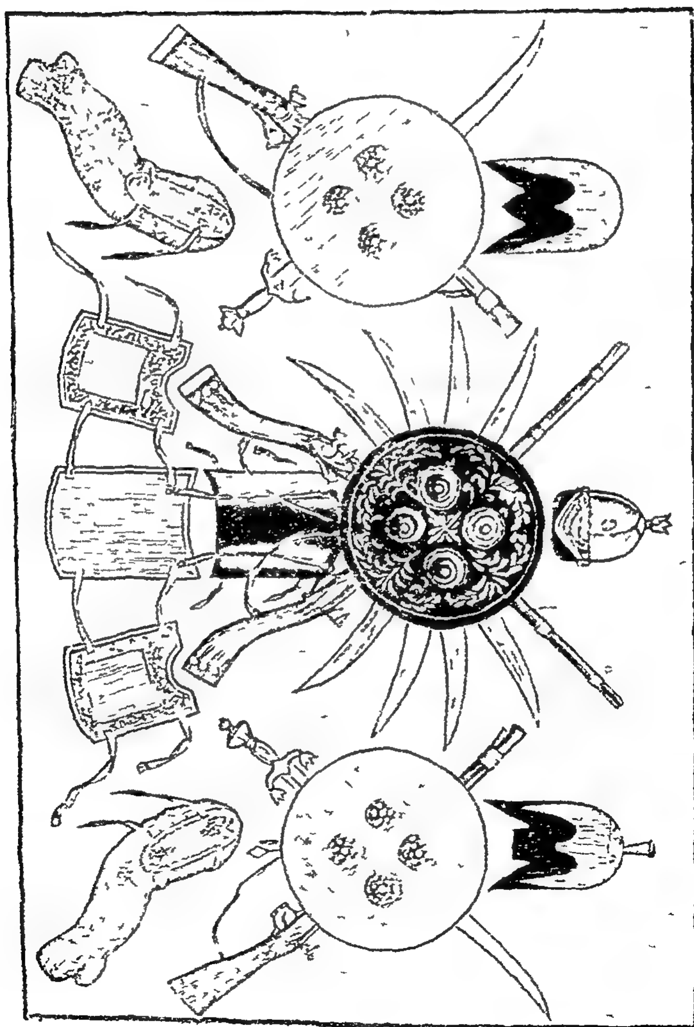
काबुलमें और २ तरहके कारखाने खोलने पूर्व अमीरको तोप, बंदूक, राइफल और कार्तूस बनवानेकी आवश्यकता थी। वह जानते थे कि पुराने ढंगके शस्त्रोंकी अपेक्षा आजकल जो शस्त्र यूरोपमें बनरहे हैं वे अधिक उपयोगी हैं। इसीकारण पहले उन्होंने

हुतसा रुपया लगाकर इसकामके लिये विलायतसे कल गवाई और उससे अपने यहा कारखाना खोला। यह गत प्रकरणोंमें लिखा जाचुका है कि अमीर अबदुर्रहमान स्वय बदूके बनाना जानते थे। जिस समय यह रूस राज्यकी शरणमे रहते थे वहापरभी इन्होंने चमड़ा रँगना, सुनारका काम, गिलट करना आदि कईएक बाते सीखी थीं। राज्यारोहणके अनतर इन्होने अपने यहा शस्त्र बनानेका एक छोटासा कारखाना खोला था—यहभी पहले लिखा जाचुका है। सन् १८८७ई० के अपरेलमे इन्होने मिस्टर पाइनको जो पीछेसे भारत गवर्नमेंटकी कृपासे सर्सालटर पाइन बनाये गये थे, बुलाकर उक्त कलसे पश्चिमी ढगपर शस्त्र बनानेका कारखाना खोला। उस कारखानेको आरम्भ करनेका कार्य ज्योतिषियोंकी अनुमति लेकर शुभ मुहूर्तमे किया गया। इसकार्यालयमें प्रथम उन्ही लोगोंकी भरती कियागया, जो पहलेसे शस्त्र बनाना जानते थे। अमीरने सरसालटर पाइनको नियतकर काबुलियोंको हेनरी मार्टिनि, स्नाइडर और लीमेट फोर्ड आदि नाना प्रकारकी आधुनिक ढगकी राइफले बदूक, किरच, पिस्तोल आदि आवश्यक युद्ध सामग्रीमे चतुर करलिया। पाइन् साहबके अवधि पूरी होनेपर विलायत चले जाने पश्चात्भी ये लोग काम अच्छी तरह करते है और काबुली सेना प्राय इसी कारखानेकी बनाइ हुइ सामग्रीसे आज कल सुसज्जित है।

मिस्टरपाइनके शस्त्रोंका कारखाना खोलने पश्चात् अमीरने उसी वर्ष दांतके डाक्टर मिस्टर ओमीराको बुलवाकर अपने दात बँधवाये। ओमीरा साहबसे केवल अपने दातही न बनवाये वरन् अबदुर्रहकसूफीको यह कामभी सिखलानेका प्रयत्न किया। इस कामके लिये इन्होंने सूफीको धमकाकर कहदिया कि यदि तुम शीघ्रही न सीखलोगे तो तुम्हे दण्ड दिया जायगा। इस धमकीसे डरकर उसने शीघ्रही दाँतकी चिकित्सा सीखली और नियत समयमें ओमीरा साहब चले गये। इन्होंने अपने यहां केवल शस्त्र बनानेहीका कारखाना न खोला वरन्, चमड़ेका

नानाप्रकारका काम, बूट, बारूद, साबुन, मोमबत्ती, मद्य निकालने, खेती और बागवानी, धातुको गलाने और भारी हलकी तोपें बनानेके लिये कलें मँगवाई और उनके कारखाने खोले ।

काबुल राज्यके पुराने शस्त्र ।



इनके खोलनेमे अमीरको कितनी कठिनता पडी होगी, इसका अनुमान इस बातसे होसकता है कि जिससमय अमीर अबदुरहमान लार्ड डफरिनसे मिलने रावलपिंडी आये यहाके किसी फोटोग्राफरने अमीरका फोटो लेनेके लिये अपना कैमेरा लगाया । केमेरा किस चिडियाका नाम है–यह बात काबुली नही जानते थे इसलिये अमीरके एक परम विश्वासपात्र और प्रतिष्ठित कर्मचारीने लपककर कैमेराके ऊसपर अपनी दोनों हथेलिया रखदी । अमीरने जब उससे पूछा कि " यह क्या करते हो ?" वह बोला "आप नही जानते ? यह तोप है और इसीसे यह आदमी आपको उडादेना चाहता है । " अमीर इस बात पर बहुत हँसे और उसे समझाकर फोटो खिचवाने दिया । जब यहाके आदमी भी इतने अनभिज्ञ थे फिर अवश्यही अमीरको कठिनता पडीहोगी। अमीरने लिखा है कि "जब मैने कलें मँगवाकर कारखाने खोलना आरभ किया, यहाके लोगोंको विश्वास था कि हाथसे जैसा काम होता है वैसा कलोंसे नही होसकता है और इसी विश्वाससे वे लोग कारखाने वालोंको राज्यका शत्रु समझते थे। कारखाने खोलनेमे उन्होंने कपनियाँ खडी नही की और न इस कामके लिये प्रजासे एक पाईली किन्तु जो कुछ खर्च हुआ वह राज्यके खजानेसे हुआ और राज्यनेही इतने द्रव्यके व्याजका बोझा उठाया । जिस समय कोइ कारीगर किसी तरहके यत्रका व्यवहार न जानसका तो इन्होंने स्वय समझाया ।

उदाहरणके लिये जब सन् १८९३ ई० मे लार्ड लैंसडाउनने भारत वर्षसे हाचकिस तोपे काबुल जाना बद करदिया और यहाके कारीगर कहने लगे कि बिना नमूना देखे हम तोप यहा नहीं बनासकते है तो अमीरने मीर मुन्शीको आज्ञादी कि "इस विषयकी अगरेजी किताबका फारसी अनुवाद करके मुझे सुनाओ और उसके विषयमे जितनी बात लिखी है मुझे समझाओ । " अमीरने इस योजनासे उस किताबका आशय समझकर उसी तरहकी तोप तैयार करवाली और जब वह

तोप ठीक असलके अनुसार निकली उसतरहकी तोपें बनानेका कारखाना खोल दिया। इसके सिवाय मैक्सिम गार्डिनर और गाटलिंग गनभी वहां बनती है।

अमीर अबदुर्रहमान भलीभाँति जानते थे कि बाफ और बिजलीकी शक्तिने यूरोपका बड़ा उपकार किया है, वह यह भी समझते थे कि ये दोनों पदार्थ यदि मेरा काम करेंगे तो मैं भी किसी दिन जंगली काबुलको–धनाढय काबुल बना सकूंगा। बाफकी कलोंका थोड़ा वर्णन ऊपर होचुका है और शेष आगे कियाजायगा किन्तु यहां यह लिखना आवश्यक है कि उन्होंने बाफके अतिरिक्त विजलीकी शक्तिसे भी काम लिया। इस कार्यके लिये फरांसीसी इंजिनियर एम. जी. रामको नौकर रक्खा और उन्हीके द्वारा विजलीके कार्यमें चतुर देशीकारीगर भारतवर्षसे बुलवाकर इसका कारखाना खुलवाना चाहा। इंजिनियर साहबने काबुलमें सब तरहका ठहरावकर कलकत्ते आकर कारीगरोंको तो भेजदिया परंतु स्वयं नहीं लौटे। इसकारण इस कामके लिये मंगवाई हुई कलें बहुत कालतक ज्योंकी त्यों रक्खी रहीं। इनकलोंको देख २ कर काबुली लोग बहुत हँसते रहे और अमीरने अपनी किताबमें लिखा है कि मुझे भी बड़ा खेद रहा परंतु मैं जिस बातको उठाता हूं उसे समाप्त किये बिना मुझे कल नहीं पडती है। मैने अपने एलचीको लिखकर भारतगवर्नमेंट द्वारा मिस्टर पाइनको बुलवाया और उन्होंने उस कलसे मेरे यहां विजलीकी रोशनी लगवाई।" इसके आगे जो घटना हुई इसी प्रकरणमें ऊपर लिखीगई है। विजली और बाफका परस्पर संबंध नहीं है और काबुलकी उन्नतिका बाफही मुख्यकारण है इसलिये इस जगह पहले बाफ और फिर बिजलीका वर्णन किया गया है।

अबदुर्रहमानने स्वयं लिखा है कि "परमेश्वरकी कृपासे इस समय काबुलकी प्रजा जो अभीतक लूट खसोट, मारकाटसे पेट भरती थी नाना प्रकारके कारखानोंमें कामकर देशका उपकार कररही है। यहांके भिन्न २

कारखानोंमें इस समय सब मिलाकर एक लाख मनुष्य हैं। इन्होंने काम करनेका इतना अभ्यास करलिया है कि अब वे बिना लूट खसोट न्याय पूर्वक पेट भरसकते हैं।मेरा अपने पुत्रोंसे यही उपदेश है कि केवल युद्धकी सामग्री बनानेहीमें देशकी भलाई नहीं है। जैसे बने तैसे देशी कारीगरी-की उन्नतिकर पैसा परदेश जानेसे बचाना चाहिये। यदि मेरी प्रजा धनाढ्य होगी तो राज्य बलिष्ट होजायगा और राज्यके बलिष्ट होनेसे उपद्रव न होंगे।"

लोग कहते हैं कि अमीरको रेल और तारसे चिढ थी। वास्तवमें उन्हें चिढ थी परंतु चिढका कारण यह न था कि वह अपने देशमें रेल बनवाना न चाहते हों। उन्होंने अपने यहां कुछ मीलतक रेल्वे और टेलीफोन लगवाया है। उन्हें निश्चय था कि भारत और रूसके साथ रेल जोडदेने से जब अंगरेज और रूसी चाहेंगे काबुलको ले सकेंगे। बस इसी कारण उन्होंने रेल नहीं बनाने दी थी। यहां प्रसंगोपात यह बात लिखीगई है। आगे चलकर इसका विशेष वर्णन करनेकी चेष्टा कीजायगी।

प्रकरण—३.

काबुली टकसाल और चमड़ेका सामान। साबुन और बत्ती।

बहुतकालसे काबुलकी टकसालमें भारत वर्षके देशी राज्योंकी टकसालोंकी तरह रुपया हाथसे गढ़ा जाता था। उसमें एक ओर "जबदारुस्सलतनत काबुल" और दूसरी ओर "अमीर अबदुर्रहमान" रहता था। परंतु न तो उसपर काबुली शस्त्रोंका चिह्न था और न कोई वाक्य था। सन् १८९६ ई० में काबुली प्रजाने अमीरको "जियाउल मिल्लत व दीन" की पदवी दी। मिस्टर मेकडमट जो कलकत्तेकी अंगरेजी टकसालमें काम करचुके थे उन्हींको बुलवाकर अमीरने अपने यहां अंगरेजी ढंगकी टकसाल खोली। इसके लिये कल विलायतसे

मँगवाई गई। कलें आजानेपर मिस्टरमैकडमंटने काबुलियोंको काम सिखलादिया। अब काबुली लोग केवल रुपया पैसा ढालही नहीं सकते हैं वरन् यहांपर स्टांप और रुपये बनानेके ठप्पेभी बनाये जाते हैं। काबुली टकसालमें प्रतिदिन ८० हजारसे १ लाखतक सिक्का तैयार होसकता है। जबसे नया सिक्का चला है काबुली रुपयेमें अमीरकी नवीन उपाधि और काबुली शस्त्रोंका चिह्नभी है। डाक्टर ग्रे साहबने लिखा है कि "काबुली रुपया भारतवर्षके कलदार रुपयेसे छोटा है। उसका मूल्य ।।।) है। वहां पांच पैसेका एक आना होता है। रुपया ठीक अंगरेज़ी ढंगका है। वहां आधे रुपयेको करन कहते हैं। काबुलमें किसी तरहके सोनेके सिक्केका प्रचार नहीं है किन्तु मुहरकी जगह वहां कुछ २ बुखारा राज्यका "तिला" सिक्का चलाकरता है।

अमीर काबुलने केवल अस्त्र बनाने और सिक्का तैयार करनेहीके काबुलमें कारखाने नही खोले हैं वरन जिससमय वह इन बातोंका प्रबंध करनेलगे थे उन्हें ध्यान हुआ कि इन कामोंके लिये जो २ वस्तु अपेक्षित होती है सब काबुलकी बनी हुई होना चाहिये। इन्हें भारतवर्ष वा यूरोपसे स्वच्छ और रंगीन चमड़ा मँगवाने में प्रतिवर्ष बहुत रुपया खर्च करना पड़ता था। केवल सेनाहीके लिये बूट, कमरपेटी, कलोंके लिये पट्टे, लगाम और चारजामें बाहरसे प्रतिवर्ष हज़ारों रुपयेके मँगवाये जाते थे। इसकारण इन्होंने चमड़ा रँगने और स्वच्छ करनेकी कलें बाहरसे मँगवाकर इंग्लैंड, ईरान, रूस और भारतवर्षके ढंगसे चमड़ा तैयार करनेके लिये मिस्टर टास्करको बुलवाया। उन्होंने काबुली अजीमखांको वहां जाकर यह काम सिखलादिया। अब उसीकी योजनासे इस समय काबुलमें चमड़ेका कारखाना चलरहा है। इन्होंने केवल इसीको नहीं सिखलाया है किन्तु ईरानसे दो कारीगर बुलाकर वहांकासा चमड़ा और देश विदेशसे नमूने मँगवाकर सब तरहका काम काबुलमें तैयार कराने लगे हैं। इसके अतिरिक्त रूसराज्यका रहनेवाला उजबेगजातिका मुसलमान अहमद मक्का जाते समय जब काबुल आया, तो इन्होंने उससे कहा कि "हमारे यहां रह-

कर काबुलियोंको बूट बनाना सिखलाओ । ' वह बोला-' मैं नहीं ठहरसकता; । मुझे यात्रीके लिये मक्का जाना है । " इन्होंने उसे समझाया कि-"बहुतसी नमाजें पढ़कर सुस्त बैठा रहना अच्छा नहीं है । रोजे रख २ कर अन्न बचानेके सिवाय कुछ लाभ नहीं है । दूसरेकी सहायता करनाही धीरपूजन है । " इनके समझानेसे वह काबुल ठहरगया और उसने काबुली मोचियोंको बूट बनाना सिखलादिया। अब वहांकी सेना और प्रजा इन्हीं मोचियोंके बनाये बूट पहनती है। इन्होंने केवल अहमदसेही बूट बनाना अपने मोचियोंको नहीं सिखलाया किन्तु इनके चचेरे भाइ सरदार करीमखां जिस समय भारत गवर्नमेंटकी शरणमें थे उन्होंने इस देशमें बढ़िया बूट बनाना सीखा था। इनके बनाये बूट बहुत अच्छे होते हैं। इन्होंने सरदारको समझा दिया कि देशका उपकार करना हो तो लोकनिन्दासे न डरो । ऐसे काममें प्रतिष्ठा घटती नहीं है किन्तु बढ़ती है । अब इन्हीं सरदारके सिखाये हुए कारीगरोंके हाथके बूट वहांके राजघरानेमें बरते जाते हैं। अमीर चाहते थे कि जिस समय काबुलके चमड़ेके कारखानोंसे देशकी आवश्यकताके अनुसार सब तरहका सामान बननलगे विदेशी सामान इस राज्यमें आना बन्द करदिया जाय । इसी उद्देश्यसे उन्होंने आज्ञा देरी थी कि अफगानिस्तानसे किसी तरहका बिना रँगा या बिना स्वच्छ किया हुआ चमड़ा बाहर न जासके।

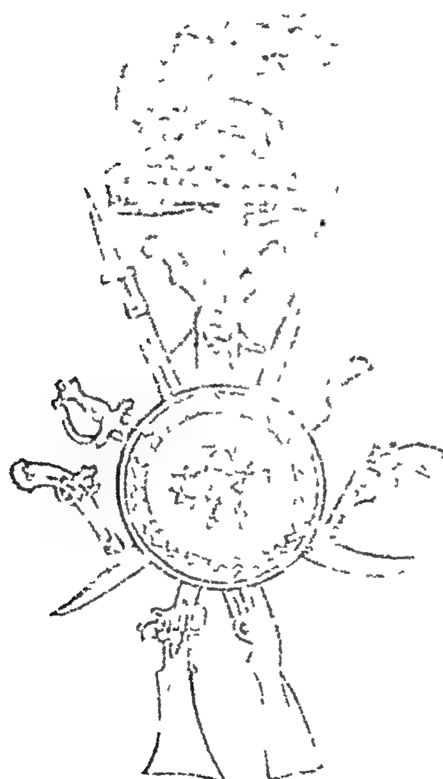
अमीर जानते थे कि ठंढे प्रदेशोंमें गर्म मुल्ककी अपेक्षा चर्बी कम बिगड़ती है इसलिये इन्होंने ऐसीही जगहोंमें साबुन और बत्ती बनानेके कारखाने खोले । काबुलकी समस्त प्रजा मांस भोजी है । अ प्रदेशों की अपेक्षा वहांकी प्रजाका अधिक आधार मांसपर है। इनके कारखाने खोलने पूर्व चर्बी व्यर्थ फेंकदीजाती थी। अब प्रायः इन कारखानोंमें सारी चर्बी काममें आजाती है। काबुलको बत्ती और साबुनके लिये एक पैसाभी विदेशियोंको नहीं देना पड़ता है और इनका कारखाना धड़ा धड़ उन्नति कररहा है। यह चाहते थे कि बत्ती और साबुनके कारखाने

प्रत्येक नगरमें खोल दिये जांय ताकि आदमी मरने बचजाय । अभी-तक काबुलमें साबुन और दरी बनानेके लिये कलें नहीं मंगवाई गई हैं। सारा काम हाथसेही होता है।

प्रकरण–४.

काबुली शस्त्र और यंत्र।

नये शस्त्र।



काबुली शस्त्रोंके कारखानेका वर्णन इस खंडके दूसरे प्रकरणमें होचुका है। यहां इसी विषयमें थोड़ी आवश्यक बातें लिखना है। बात यह है कि काबुलके कारखानोंमें एक विशेषता है। विशेषता यह है कि

एकबार जो कार्तूस चल जा चुके हैं उन्हें दुबारा भरनेके लिये अमीरने काबुलहीमें एक नई कल बनाई है। मार्टिनिहेनरी राइफलके कार्तूस इस कलसे सुधरकर ज्योंके त्यों होजाते हैं। इनके साथ नवीन टोपी और लगानी पड़ती है। काबुलमें नित्य दशहज़ार कार्तूस तैयार होते हैं किन्तु समय पड़नेपर बीस हजारतक बनसकते हैं। इसी तरहके कार्तूस वहां हाथहीसे नयेभी बनते हैं इनकी दशघंटेमें १० हजार संख्या तैयार होती है। इसके सिवाय कार्तूस बनानेके लिये अमीरने मिस्टर एडवर्डको नौकर रक्खा था। उन्होंने गोली आदि स्नाइडरका समस्त सामान बनाना सिखलादिया है। इन्होंने दमदमकी गवर्नमेंट फैक्टरीकी मिस्टर कैमरनको भारतवर्षसे बुलाकर विलायती कलसे काबुलियोंको मार्टिनि हेनरी राइफलें बनाना सिखलाया है। अब वहां इस तरहकी पद्रह राइफलें नित्य तैयार होती हैं और काम पड़नेपर तीसतक बन सकती हैं। जिस तरह ठप्पा बदलनेसे काबुली टकसालमें एकही इंजिनसे भिन्न २ तरहके छोटे बड़े सिक्के तैयार होजाते हैं इसीतरह थोड़ा बहुत उलट फेर करनेसे लीमेटफोर्ड राइफलेंभी काबुलमें तैयार करली जाती हैं। इसतरह अमीरने प्रायः सबतरहकी युद्धसामग्री काबुलमें तैयार करनेका प्रबंध करलिया है।

अमीरने शस्त्रआदि बनानेके यंत्र तो अनेक मँगवालिये परंतु जबतक उनके चलानेका काम हाथसे कियाजाय आवश्यक सामग्री तैयार करनेमें शीघ्रता नहीं होसकती है। केवल शस्त्रोंहीके लिये नहीं वरन समस्त प्रकारके कल कारखानोंके लिये अमीरको इंजिन मँगवानेकी आवश्यकताहुई। इन्होंने एकही इंजिन सौ घोड़ेकी शक्तिका मँगवाया और उसे अनुभवी अँगरेज इंजिनियर मिस्टर स्टुआर्टको नौकर रखकर इसीकी शक्तिसे प्रायः सब कलें चलानेका प्रबंध किया। मिस्टर स्टुआर्टके उपासे काबुली और वहां नौकरीके लिये जाने वाले भारतवासी इंजिन बाइलर और लोहा गलानेकी भट्टी बनाना सीखगये हैं। काबुलके एक बढ़इने लकड़ीका इंजिन तैयार किया है। यह विलायती इंजिनकी बरा

कर काम देता है। इसे अमीरकी ओरसे बहुतसा पारितोषिक मिलता देखकर वहांके क़ासिम नामक कारीगरने लोहा फ़ौलाद और तांबेका इंजिन बनाया है। यद्यपि ऐसे भारी २ इंजिनोंको रेलविना काबुल लेजानेमें बड़ी कठिनता पड़ी थी परंतु अमीर जैसे साहसी पुरुषने अपना विचार दृढ रखकर काम पूरा करदिया।

प्रकरण—८.

अन्यान्य कारखाने।

नया लिबास।

कारतूसोंमे लगानेके लिये काबुलमें जितने मद्यकी आवश्यकता होती थी। पहले वहां हाथसे बनाया जाता था। काबुलमें अंगूर और मुनक्केकी बहुतायत है। अमीरने सोचा कि यदि इनसे मद्य बनानेके लिये कल विलायतसे मँगवाकर कारखाना खोलाजाय तो व्यापार खूब चमक सकता है। अमीर बड़े उत्साही पुरुष थे। जो बात एकबार इनके ध्यानमें आजाती थी उसे किये विना इनका चित्त संतुष्ट नहीं होता था। इन्होंने कलें मँगवाकर मद्यका कारखाना खोला जिसमें अब प्रति दिन आठ घंटेमें डेढ हज़ार बोतलें तैयार होती हैं। अमीरने मद्यका कारखाना खोलते समय सोचा था कि कार्तूसोंमें लगानेके सिवाय जो लोग मुसलमान नहीं हैं उनके पीनेमेंभी मद्यकी बिक्री होगी परंतु मद्यत्यागी मुसलमान जो मद्यका स्पर्श करनाभी पाप समझते हैं, शराबके चटरसमे पड़गये। अमीरको मालूम हुआ कि विना किसी प्रकारका प्रबंध किये किसी दिन सारीप्रजा मद्य सागरमें डूब जायगी। इस कारण उन्हो ने पीनेके लिये मद्य बेचने और खरीदने वाले मुसलमानोंपर कड़ा दंडकर प्रजाको इस दुर्व्यसनसे बचाया। न कभी उन्हो ने मद्य पिया और न बीमारीके सिवाय अपने पुत्र कलत्र तथा दर्बारियोंको पीने दिया।

पहले समयमें काबुली प्रजा और राजा तथा समस्त कर्मचारी ढीले कपडे बहुत पहिनते थे। एक २ वस्त्रमें पन्द्रह बीस गज कपडेका खर्च था। अमीर कहते हैं कि कुरानमें अतिव्यय करना पाप लिखा है। इसकारण प्रजा और राज्यको वृथा खर्चसे बचानेके लिये इन्होंने भारतवर्षसे कितनेही दर्जी बुलवाये। ये दर्जी सेनाके लिये अंगरेजी ढंगकी वर्दी बनाना जानते थे। इनके पास सैकडा काबुली दर्जी नौकर रखकर समस्त सैनिकों और कर्मचारियोंके लिये अंगरेजी ढंगके वस्त्र बनवादिये। इन वस्त्रोंका मूल्य उनके वेतनमेंसे काट लिया और आज्ञा देदी कि अबसे जो मनुष्य ढीले ढाले वस्त्र पहनकर मेरे समक्ष आवेगा उसका छ मासका वेतन काट लिया जायगा। इस आज्ञाका अच्छा प्रभाव पडा। अब धीरे २ ढीले पाजामे और अलफालख कुरतेके बदले काबुली कोट पतलून पहनते जाते हैं। इन्होंने नये ढंगके वस्त्रोंका प्रचार तो किया परन्तु इन्हें भारतके दर्जियोंके हाथके बने हुये वस्त्रोंकी काट छांट पसन्द न आई इसलिये मिस्टर वाल्टर दर्जीका नौकर रखा और मीरमुंशीसे एक पुस्तक तैयार करवाकर उसीके अनुसार भिन्न २ पदके मनुष्योंकी भिन्न २ वर्दियां तैयार कराई।

इनके सिवाय अमीरने अपने यहां यूरोपियन और एशियाई ढंगकी टोपियां, दूरबीन सुनहरी लैस, ईरानी तथा हिन्दुस्तानी कालीन, पर्दे, फुलियां पगडियां, रोमें, गिल्टसाजी, तलवार, रिवोल्वर, कागज, जिल्दसाजी, बिस्कुट, लालटैन, आइना, सोना चांदी और तांबा ढालने और सामान बनाने, चूना और ईंट पकाने, दिल्लीके ढंगपर पत्थरका काम, तेल पेरने, सेनाके लिये बिगुल आदि बाजे बनानेकी कलें मँगवाकर उनके पृथक २ छोटे कारखाने खोले। काबुलमें सैनिक बैंड बिलकुल अंगरेजी ढंगके हैं। इस कामकी अंगरेजी पुस्तकका उन्होंने फारसी अनुवाद करालिया है।

काबुलमें कारीगरीकी उन्नति करने परतो अमीरका विशेष लक्ष थाही, इनके यहां भारी अपराध करनेवाले या युद्धके कैदी जितने आये

क़ाबुली सवार।



काबुलकी प्रजाको युद्ध शिक्षा देनेके लिये अमीरने एक उत्तम प्रबंध किया है। यह वही प्रबंध है जिसे अँगरेजीमें वालंटियर कहते हैं। इस कामके लिये जो नवीनयोजना हुई है, उसके अनुसार प्रजा को प्रत्येक आठ मनुष्योमेंसे एक सैनिक स्कूलमें भेजना पड़ता है।

उसका सारा खर्चा प्रजा देती है । जब वह नियत अवधिमें सीख सारवकर लौट जाता है और अपनी खेती वा अन्य घरेलू पेशेमें प्रवृत्त होता है तब प्रजा उन्हीं आठोंमेंसे दूसरा मनुष्य इस कामके लिये भेजती है । यह योजना प्रजाकी इच्छासे सन् १८९६ ई० से कीगई है । इस योजनासे काबुलराज्यकी समस्त प्रजा युद्ध पटु होती जाती है और निश्चय है कि, जिस समय काबुलको किसी विदेशी शत्रुसे लडनेका काम पडगा वहाकी शिक्षित वेतन पानेवाली सेनाके सिवाय ये वालंटियर लोग जिनकी संख्या हजारों पर होगी जहाद वा गजाके नामपर अमीरकी सहायता करनेको तैयार होंगे। अमीरने इस बातका उल्लेख करते समय एक रूसी घटनाका वर्णन किया है । घटना यह है कि, उन्होंने लिखा है कि, "जिससमय मै रूसकी शरणमें था ताशकंदके रूसी वाइसरायने किले उडादेनेके लिये एक बहुत भारी तोप मँगवाई थी । मैभी उसकी जांचके समय उपस्थित था। मुझसे कहा गया कि ऐसीही तोपोंसे हम हिरातका किला उडावेंगे ।" मुझसे इसकठोर और कर्णकटु वाक्यका उत्तर दिये बिना न रहागया मैंने कह दिया कि "यदि भगवानने मेरे नसीबमें अफगानिस्तान का राज्य लिख दिया है तो हिरातहीमें इस तोपको मै निरर्थक सिद्ध करेंदूगा । परंतु जो मेरे प्रारब्धमे नहीं लिखा है तो जुदी बात है । इस पर रूसी अफसरने कहा कि, आप हमारी गवर्नमेंट के द्रव्यसे अपना पेट भरकर ऐसा कहते है ? मैने उत्तर दिया 'मैने मेरा देश जाति धर्म और स्वदेशप्रीति बेचकर आपका वेतन स्वीकार नहीं किया है। मै वैसा कादर नहीहूं जो मेरे देशके नष्ट होनेकी बात सुनकर उत्तर नदूं। यदि आप मुझसे सत्यबात नहीं सुनना चाहते है तो मेरे समक्ष अपनी तोपकी प्रशंसा न कीजिये ।"

पुराने समयमें जब अफगानिस्तानमें आज कलकी तरह युद्ध शिक्षा नहीं होती थी प्रत्येक जमीदार और एक २ मुल्लाके हजारों अनुयायी होते थे । जिससमय उन्हे किसीसे युद्धकी आवश्यकता होती थी वह ढोल और शहनाई बजाकर उन्हें इकट्ठा करलेते थे । ये लोग आकर

धर्मके लिये जमीदारके झंडेके साथ विपक्षीसे लड़ने लगते थे। अबभी प्रत्येक अफगान सोते समय परमेश्वरसे प्रार्थना करते है कि हमारी युद्धमें मृत्यु हो। उन लोगोंका विश्वास है कि जो युद्धमें मरता है उसे सीधास्वर्ग मिलता है। इन्हीं लड़ाकू वीरोंको युद्ध संबंधी शिक्षा देकर अमीरने अधिक भयंकर बना दिया है। अमीर दोस्त मुहम्मदसे पहले वहां क़वाइद्का कोई नामभी नहीं जानताथा और न किसीतरहकी व्यवस्था थी। उन्होने जिस व्यवस्थाका बीज डाला था उसीको अबदुर्रहमानने पूर्ण करादिया। इस कार्यमे अमीरको केवल यूरोपियन सैनिकोंनेही सहायता नही दी है वरन् जो लोग भारतवर्षसे सन् ५७ के बलवेमें भागगये थे वेभी सहायक हुए हैं। इनकी सेनामे ब्रीचलोडिंग-बंदूकों, पहाडी तोपों, मेक्सिमगन, गार्डिनर और गाटलिंगगनका व्यवहार होता है। यद्यपि अमीरने अपने चरित्रमे यह नही लिखा है कि उनके पास इस समय कितनी सेना है परंतु वह लिखते है कि "नवीन सामग्री और बोझा ढ़ोनेवाले जानवरों सहित समय पड़नेपर ३ लाख सेना तैयार होसकती है। मेरी इच्छा है कि काबुली सेनाकी संख्या १० लाखको पहुँचजाय।" यह बात अफगानिस्तानके लिये कठिन नही है क्योंकि यहांका प्रत्येक पुरुष और स्त्री शस्त्र धारण करते हैं। विवाहके समय, लड़कीकोभी दहेजमें शस्त्र दियेजाते है। अब केवल इससमय रुपयेकी आवश्यकता है। इसविषयमें अफगानिस्तान और इग्लैंडकी समान स्थिति नही है। इग्लैंडके पास सैनिकोंकी कमी है और मेरे पास रुपया नही है परंतु काबुल राज्यको ऋण नही देना है। यहांके आदमी दृढ हैं। कोसोंतक घोड़ोकी बराबर चल सकते हैं। काबुली लोगोंको खाने पीनेकीभी कुछ पर्वाह नही है। उनकी बनाई रोटी एकवर्षतक चल सकती है। खांड और सत्तूपरही वे महीनों निकाल सकते हैं। उनकी युद्धके समय तीसरी खुराक मलबेरी फल और आटेसे बनाई जाती है यहभी महीनोतक ठहरती है। मैने इंग्लैंड और जर्मनीसे जो बंदूकें खरीदी हैं उनके साथ पांच २ हजार कारतूस है। सब काम मेरे कारखानोंमें तैयार होने लगा है।

काबुली सिपाही।



अमीरने सेनाको शिक्षा देनेके लिये अफसरोंका स्कूल खोला है। इसीजगह उन्हें युद्धके लिये सबप्रकारकी शिक्षा दीजाती है। युद्धका समाचार विभाग जिसके द्वारा अमीरको देश विदेशका समस्त संवाद ठीक समयपर विदित होता रहता है बहुत काम कररहा है। लोग अमीरको सम्मति देते रहे हैं कि राज्यमें रेल क्यों नहीं बनवाते। उन्होंने लिखा कि "मैंभी इसलाभको जानता हूं परन्तु जबतक देश पूरा २ दृढ़ नहो ले रेलबनाना बहुत भयंकर है। इंग्लैडने मुझे मेरे देशरक्षाका जो वचन दिया है उसे वह नहीं तोड़सकता है। उसका इसीमें भला है कि अफगानिस्तान स्वतंत्र और दृढ होकर रूस और भारतके बीचमें बना रहै।"

यद्यपि काबुलमें युद्धकी सामग्री ढोनेके लिये ऊंट, गधे, खच्चर, और घोड़े समयपर भाड़े बहुत मिलसकते हैं परंतु भाड़ेके भरोसे रहना अमीरने उचित नहीं समझा। उन्होंने इस कामके लिये २४ हज़ार घोड़े खरीद किये। इनके सिवाय उनके पास, हाथी, गधे, और ऊंट भी कम नहीं हैं। उन्होंने भारतवर्ष तुर्की वेलर और कई जातिके ८० सांड मोललेकर दो हज़ार घोडियोंसे सेनाके लिये घोड़े उत्पन्न करनेका कार्य आरंभ किया है। काबुलके देशी शालिहोत्रियोंसे घोड़ोंकी चिकित्साका काम ठीक नहीं होसकता था इसलिये मिस्टर क्लिमेंटको नौकर रखकर काबुलियोंको पशुचिकित्साके लिये तैयार कर लिया है। मिस्टर क्लीमेंट अपने साथ यूरोपकी कुछ भेडे लेते गये थे उनसे नसल तैयार कर अफगानिस्तानमें इन्होंने उनके व्यापारसे भी बहुत कुछ लाभ उठाना आरंभ किया है।

यह तो सेनाकी साधारण तैयारीकी व्यवस्था है किन्तु अमीर अबदुरहमान सदा इस बातके लिये तैयार रहना चाहते थे कि जब कभी जहां कहींसे लड़ाईका संवाद आवै सेना भेजनेमें विलंब नहो। वह अपने और अपने मंत्रियोंके घोड़े कसाये रखते थे। उनके कोटोंकी जेबोंके रिवाल्वर सदा भरे रहते थे और उनके घोड़की काठियोंमें एक

दो दिनका भोजन और सुदरोकी थैलिया रक्खी रहा करती थीं। यह जहा बैठते वहा भरी हुई बदूक और तलवार उनके पास रक्खी जाती थी और उनके सोनेके समय उनका बिस्तर भी शस्त्रसे खाली नहीं रहता था। उनके महलके द्वारपर इनकी बडीगाड सेना मैक्सिम तोप सहित सदा कमर कसे तैयार रहा करती थी। और घोडोंके जीनकी रोटियां नित्य बदली जाया करती थीं। जिस समय यह सो जाते थे तबही इनके दर्बारियांको सोनेका समय मिलता था। ऐसे समयमें भी सैनिक अफसरा, चा पिलाने वाले, पानीवाले, दवादेनेवाले, दर्जी आदि जिन लोगोंकी इन्हें आवश्यकता हुआ करती थी उनका दिन रात पहरा रहा करता था। इनके पासके सेवकोंमें यहांके सरदारों, रईसों प्रधानकर्मचारियोंके लडके और काफिरी, चित्राली, गिलजानी, बदख्शी, और हजारा जातिके गुलाम रहा करते थे। इनके वस्त्र राजकुमारों से होते थे। ये घोडेकी सवारीमें बडे प्रवीण है। ये लोग भी अमीर जहा जायें उनके साथ रहनेमें शस्त्र, आहार और अन्य सामग्रीसे सदा तैयार रहते है और इन्हें समयपर बडेरपद दिये जाते हैं। प्रधान पार्षद और उपसेनापति अमीरके पासवाले इन्हीं दासोंमें से थे।

प्रकरण—७

राज्यप्रबंधकी विशेष बातें ॥

न्याय विभाग ।

जिस समय अबदुर्रहमानके हाथमें काबुलका शासन आया उस समय राज्यप्रबन्धकी कोई व्यवस्था नहीं थी। एकही मनुष्य वहां सब काम करता था। वही दीवान, वही खजानची, वही हिसाब रखने वाला और वही सब कुछ था। उसके पास दश बारह नौकर थे। इन्हीं लोगोंकी सहायतासे वह राज्यभरका प्रबंध अपने घरपर बैठकर किया करता था। वह किसीसे डरता नथा और जो चाहता कर

लिया करता था । इसके अत्याचारोंकी जांच करनेवाला कोई नथा । भारतवर्षके राजाओंकी तरह काबुलके अधीश महीनोंतक जनानेसे बाहर नहीं निकलते थे । अमीरको काबुलकी इस गड़बड़के मेटनेमें बड़ा परिश्रम करना पड़ा । अबभी उन्होंने लिखा है कि, काबुलके मनुष्य प्रबंधका काम अच्छीतरह नहीं समझे है । मुझे कईबार ऐसे अवसरपर बड़ा कष्ट होता है जब एक विभागका मनुष्य काममें गड़बडकर अपने कामको दूसरेमें मिलादेता है और जैसे बनता है तैसे अपना अधिकार बढ़ानेका प्रयत्न करता है परंतु अफगानिस्तानकी यदि पहली स्थितिसे इस समय तुलना की जाय तो उसने बहुतही शीघ्र उन्नतिकी है ।"

प्रबंध विभागका थोड़ा वर्णन इस भागके प्रथम प्रकरणमें किया गया है । उसमें खजानेके विषयमेंभी कुछ लिखा गया है । काबुली राजकोषके दो विभाग है । एक खजाने अमीर और दूसरा खजाने खास । खजाने अमीरमें राज्यके द्रव्यकी व्यवस्था होती है और खजाने खासमें अमीरके निजका खर्च । अमीर खाने कपड़ेके सिवाय राज्यसे कुछ रुपया नहीं लेते है । जिस मकानमें दोनो तरहके खजाने रहते हैं वे काबुलके किलेके भीतर हैं । किलेके बाहरी अहातेमें राज्यके अन्यान्य आफिस है । इन खजानोंकी शाखायें राज्यके समस्त सूबोंमे हैं । सालभरतक वहां जो खर्च होनेपर बचता है वह सब काबुलके सदर खजानेमें दाखिल किया जाता है । प्रतिदिनके आय व्ययके हिसाबकी रिपोर्ट अमीरके दृष्टिगत कीजाती है । सदर खजानेसे अमीरकी मुहरी आज्ञाविना किसीको एक पाई देनेका अधिकार नहीं है । राज्यमें मुख्यआय भूमिकर फल उत्पन्न करनेवाले वृक्ष, राज्यका माल बाहर वा बाहरका माल राज्यमें आनेकी चुंगी, डाकघर, स्टांप, सरकारी व्यापार सरकारी दुकानों और मकानोंके भाड़े, खानियां और भारतगवर्नमेंटकी ओरसे अठारह लाख रुपया प्रतिवर्ष काबुलको मिला करता है, इनसे होती है । प्रजा यदि राजकरमें रोक रुपया न देना चाहे तो सेनाके लिये घास,

अन्न, जानवर, लकडी लेकर इनका रुपया उनके करमेसे काट दिया जाता है। यह सामान बाजार भावसे लिया जाता है। पहले वहां हिसाब लिखने पढनेकी व्यवस्था नहीं थी। जो कुछ लिखाजाता था उसके लिये जुदी २ फर्द होती थी। जाल करनेवाले चाहे जब चाहे जिस तरहका गोलमाल करसकते थे। अमीरने फर्दोंकी जगह अंगरेजी ढंगके रजिस्टर प्रचलित करदिये हैं। इन रजिस्टरोंके पहले पृष्ठपर उसके पृष्ठोंकी संख्या लिखकर अमीरकी मुहर कराई जाती है। काबुलमें नगरकी स्वच्छताके लिये म्युनिसिपेलिटी है। वहांके अन्यान्य आफिसोंका वर्णन तो प्रथम प्रकरणमें हुआही है किन्तु एक आफिस वहां हिसाब नवीसी का है जिसका काम अबदुर्रहमानके समयमें सरदार हबीबुल्लाके पास था। उन्हें इस काममें सहायता देनेके लिये दो मन्त्री रहते हैं। इसी आफिसमें राज्यके समस्त हिसाबकी जांच होकर उनका जमाखर्च होता है। इस आफिसकी रिपोर्टसे विदित होसकता है कि अमुक वर्षमें राज्यमें इतना रुपया आया और इतना व्यय हुआ है। अमीर अबदुर्रहमानने जिस तरह अपनी सेनाकी संख्या प्रकाशित नहीं की है उसीतरह यहभी नहीं लिखा है कि राज्यकी वार्षिक आय क्या है और व्यय कितना होता है और न डाक्टरग्रे साहबकी पुस्तकसे यह बात विदित होसकती है।

मैं काबुलके प्रधान विभागका वर्णन बहुत कुछ करचुका हूं अब न्याय विभागके विषयमें कुछ लिखना आवश्यक है। वहां न्याय का कोई स्वतन्त्र विभाग नहीं है। ऊपर जिन विभागोंका वर्णन हुआ है। उन्हेंही न्याय करनेका अधिकार प्राप्त है और उसी क्रमसे उनके न्यायकी अपीलें होती हैं। कितनीही तरहके अभियोगोंमें मुसल्मानी धर्मके अनुसार अमीरके पसन्द करनेपर फैसला होता है किन्तु अन्य अभियोगोंके लिये अमीरने नया आइन बनाकर न्यायका ढांचा बिलकुल बदल दिया है। पहले यह नियम था कि मनुष्य घातक-पर केवल ३००) दण्ड होता था। अमीरने इसका परिवर्तनकर घातकका दण्ड मृतकके नातेदारोंकी इच्छापर छोडा है। यदि वे लोग उसका अपराध क्षमा करना चाहें तो

राज्यकी मंजूरीकी आवश्यकता है किन्तु वधके बदलेमें घातकसे ७ हजार रुपये अवश्य दंड लिया जायगा । अफगानिस्तानके पुराने आईनके अनुसार स्त्री केवल उसके पतिकीही सम्पत्ति नहीं समझी जाती थी वरन उसके देवर जेठ और अन्य नातेदारोंका भी उसपर स्वत्व था । पतिके मरनेपर उसका निकटस्थ नातेदारही उसका पति बन सकता था । यह कार्य स्त्रीकी इच्छाके विरुद्ध भी किया जाता था और इस अत्याचारको वहां वाले धर्मके अनुकूल समझते थे । केवल इतनाही नहीं बरन यदि पतिके कुटुम्बको स्त्री उसकी मृत्युके पश्चात छोड़ जावे ता वहां वाले बड़ी लज्जाकी बात समझते थे । अमीरने इसका बिलकुल परिवर्त्तन करादिया । पतिकी मृत्युके अनतर अब वहांकी स्त्रियां स्वतंत्र है । वे चाहे जिसे पति बनासकती हैं । उनकी इच्छा को रोकनेका किसीको अधिकार नहीं है । अमीरने केवल विधवा स्त्रियोंकोही इतनी स्वतंत्रता नहीं दी है किन्तु जिन स्त्रियोंका विवाह उनकी युवावस्थासे पहले होगया है वेभी यदि अपने पतिको छोड़ना चाहें तो छोड़ सकती हैं। वहांके भद्र पुरुषोंके घरानेमें पहले यह चालथी कि विवाहसे पूर्व दामादसे उसकी शक्तिसे अधिक रुपयोंका एक सरखत लिखाया जाता था। इसके अनुसार ठहरा हुआ धन पतिको अपनी स्त्रीके तांई देना पड़ता था । यही धन स्त्रीधन था । लोग इस निमित्त हजारों रुपया लिखा लिया करते थे और इसका रुपया न चुकनेपर बड़े २ बखेड़े उठते थे दामादको दास बनकर रहना पडताथा।अमीरने स्त्रीधनकी अवधि नियत करदी । अब कोई भी आदमी २ हजारसे अधिक और ३००) रुपयेसे कम नहीं दे सकता है । परंतु जो लोग अधिक देना चाहै उनपर न देनेका दबाव नहीं डाला जाता है । इन बातोंसे मालूम होता है कि दीन मनुष्यको भी कमसे कम ३००) देने पड़ते है । वहां अब विवाहकी रजिस्टरी करानेका भी आईन प्रचलित हुआ है और एक विशेष बात यह भी है कि विवाहके बाद यदि पति क्रूर निकले अथवा स्त्रीका पालन न करसकै तो वह न्यायालयमें नालिशकर तलाक दे सकती है ।

अमीरने अपने चरित्रमें लिखा है कि "मेरे यहां अदालतोंका का बड़ा सरल और सुगम है। प्रत्येक मनुष्य प्रार्थना करनेके लिये मे समक्ष आसकता है और इसी तरह प्रत्येक अफसरके पास उपस्थित सकता है। उसका कथन सुनकर प्रमाणोंके अनुसार फैसला करदि जाता है। यदि कोई मनुष्य समक्ष आकर अपना प्रमाण देनेमें असम हो तो उसे ३) रुपये के कागजमें अर्जी देनी पड़ती है। न्यायाधीश समक्ष प्रार्थियोंकी भीड़ नहीं होनेपाती। वे एक २ करके आते पाते है मेरे निकट किसी जाति पातिका भेद नहीं है। गरीब अमीरका समा न्याय होता है। अब पुराने अफगानिस्तानकी तरह शक्तिमान् का दबा निर्बलपर नहीं पड़ता है। जो भारी २ अभियोग हैं उनमें धर्मोपदेश आदिसे सम्मति लीजाती है। सब जगहकी अपील राजभ्रम हबीबुल्लाके यहां और दीवानी म्यालतका काम मिस्त रसरल्लों यहां होता है।"

वहांके न्यायका वर्णन जो ऊपर लिखा गया है-उसका आधार अमी रके चरित्रपर है किन्तु डाक्टर गे साहबने, जो बहुत कालतक काबुल रहचुके हैं, अपनी पुस्तकमें लिखा गया है कि पहले काबुल नगर रात्रिके समय घूमना बड़ा भयावह था। वहां कोई रात्रिऐसी नहीं जा थी जिसमें लूट और खून न हो। किन्तु अब अमीरने प्रबंध करदिया कि रात्रिके दशबजे पश्चात् जो मनुष्य फिरे उसे पकड़कर मजिस्ट्रे समक्ष खड़ा कियाजाय। अमीर अपराधियोंको बड़ा कड़ा दंड देते ह चोर और लुटेरेको विलक्षण दंड दिया जाता है। नगरके कसाई बुलवाकर पहले अपराधीके हाथ रस्सीसे कसवा दिये जाते हैं। फि कसाई गर्म २ तेलमें डुबोकर अपने मोटे छुरेसे उसके हाथ काट डाल हैं। इसके बाद अपराधीको अस्पतालमें भेजकर उसकी चिकित्सा करा जाती है। किसी मौलवीने अमीरको सम्मति दीथी कि इस तरहका दं देनेका काम किसी यूरोपियन डाक्टरद्वारा कराना चाहिये पर अमीरने इस बातका स्वीकार नहीं किया। वहां मनुष्य घातक फांसी देनेकी चाल नहीं है। अपराध प्रमाणित होनेपर उस मृतक

नातेदारों वा मित्रोंको सौंप दियाजाता है । वे जिसतरह चाहते हैं उसके प्राण लेते हैं । केवल इतनाहीं नहीं वरन राज्य घातकसे और उसके घरानेसे बहुतसा रुपयाभी लेता है । यदि कोई मनुष्य अपने नातेदार वा मित्रके घातकको अपने हाथसे नहीं मारसकता है तो वहां केवल इसी कामसे जीविका करने वालेभी बहुत मिलजाते हैं । यह काम करने वाला अपने वेतनमें एक मनुष्यको मारनेके लिये छःहजार (?) रुपया लेता है इस तरहकी कठोरतासे काबुलमें अपराधियोंकी संख्या बहुत घट गई है । ”

प्रकरण–८.

किले और सड़कें ।

पहले अफगानिस्तानमें बलख, गजनी, बाला हिसारका और पांच छः मसजिदोंके सिवाय पक्के मकानका नाम न था । जिधर देखो उधर मट्टीके झोपड़ेही झोंपडे देख पड़ते थे। यात्रियोंके लिये सड़कोंका कहीं पता न था । अमीरने छोटी मोटी सड़कोंके सिवाय काबुलसे बलखतक. काबुलसे हिरातक, हिरातसे कंदहारतक. कंदहारसे गजनी होकर काबुलतक. काबुलसे हजारा जात तक, जलालाबादसे काफिरिस्तान और अस्मारतक, और काबुलसे पेशावरतक पक्की सड़कें बनवाई । इन सड़कोंके बननेसे वहां चाहे रेल न हुईहो परंतु रूससे भारतवर्षतकका मार्ग सीधा होगया क्योंकि बलखकी सड़क ठेठ रूसीसीमातक जामिली है । सड़कोंके साथ नदियों और नालोंके पुल बनवाये गये हैं और सड़कके दोनों ओर पेड़ लगाये जारहे हैं । यात्री जिस गांवकी सीमामें होकर निकले उसका हानि लाभके उत्तरदाता उस गांवके निवासी समझे जाते हैं और सड़क टूटने वा पेड़ नष्ट होनेका बोझाभी उन्हीं पर है । यात्रियोंके खून वा मालकी चोरी अथवा डांका पडनेके वही उत्तरदाताहैं जिनके गांवकी सीमामें दुर्घटना हो परंतु यदि ये अपराधीको पकड़वा देते हैं तो उनपर कुछ दंड नहीं होता है इसलिये वे लोग बुरे मनुष्यको अपने गांवमें नहीं रहने देते हैं ।

अमीरने सड़कोंके अतिरिक्त प्रत्येक भाग पर जहां २ आवश्यक समझा किलेभी बनवाये है। उन्होंने अपने चरित्रमें ,बलखके निकट दहदादीके किलेकी प्रशंसा की है। वह लिखते है कि, यह किला रूसराज्य तक की, सड़ककी खबर लेता है यह किला अफगानिस्तानके सब किलोंसे अधिक दृढ़ है।"

अमीरने मकान बनवानेके लिये पक्की ईंटें और चूना पकानेकी भट्टियां भी बहुतसी तयार करवाई है । पंजाबगवर्नमेंटके भूतपूर्व नौकर मुन्शीमुहम्मद बख्शको नौकर रखकर अमीरने अपनी प्रजाको सड़कों और मकानों तथा किलोंके नक्शे बनाना सिखलाया है । येही काबुली अब वहांके पबलिक वर्क्स डिपार्टमेंटका समस्त काम करते है। सड़कों और किलोंके सिवाय अमीरने अपने लिये वा अपने स्त्रीपुत्रोंके लिये काबुलमें महल और बाग बनवाये है। इनका वर्णन गत प्रकरणोंमें हुआ है । विस्तार भयसे यहां लिखनेकी मुझे आवश्यकता नहीं दीखती है।

प्रकरण–९

काबुलमें अस्पताल।

डाक्टर ग्रेसामने लिखा है कि ' जिस समय मैं काबुलमें था भूकपसे सैंकड़ों मनुष्य मरगये थे। सैंकड़ोंही घायल होकर पड़े २ कराह रहे थे परन्तु उनकी किसीने कुछ खबर नली। " डाक्टर साहबने काबुलके हैजेकी बहुतही भयानक दशा लिखी है। वह कहते है कि नगरमें गदगी बहुत है और प्रारब्धके भरोसे रहनेवाले काबुली कभी विश्वास नहीं करते है कि हैजा गंदगीसे पैदा दूषित होकर फैलता है। मैंने लोगोंको सड़े गले फल और शाक खानेका बहुतेरा निषेध कियापरन्तु किसीने मेरी न सुनी। मैंने बहुतेरा अनुरोध किया कि स्वच्छ पानी पियो परन्तु लोगोंकी टेव न छूटी। जब उन्हें प्यास लगी तो नगरकी सड़ी नालीका पानी पानेसे वंचित न रहे। पहले २ उन्होंने डाक्टरी दवा लेनेकाभी निषेध

किया परंतु जब उन्हें मालूम होगया कि वहांके हकीमोंकी अपेक्षा हैजेपर मेरी दवा अधिक अक्सीर है तब एकदमसे लोग मेरी दवापर टूट पडे।"

अमीरके चरित्रकी एक टिप्पणीमें लिखा है कि "भारतवासियोंकी तरह अफगानलोग डाक्टरोंको अविश्वस्त नहीं समझते। वे दौड २ कर उनके पास जाते हैं और उनकी दवा लेना पसंद करते हैं क्योंकि हकीमोंकी दवा कड़वी कसैली बहुत होती है।" अमीरने लिखा है कि "सबसे पहला अस्पताल मेरे यहां मेरेही शासनमें सन् ९४ ई० में मेरी आज्ञासे मिस-हेमिल्टनने खोला था। वह चिकित्सा शास्त्रमें बड़ी कुशल है। उन्होंने बछड़ेके रक्तसे शीतलाका टीका लगानाभी प्रचलित किया है। इस प्रयत्नसे यहांके बालक कम मरने लगे हैं। मैंने कईएक हकीमोंको मिस हैमिल्टनके पास भेजकर टीका लगानेका काम उन्हेंभी सिखला दिया है। अब यहां दो तरहके अस्पताल हैं। एक में यूनानी सिद्धांतके अनुसार काम होता है और दूसरेमें डाक्टरी ढंगका। मैंने राज्यभरके प्रत्येक कसबेमें दोनों तरहके अस्पताल खोलदिये हैं।" यद्यपि अमीरने ऊपर लिखा है कि भारतवासियोंको डाक्टरोंको विश्वास नहीं है परंतु यह बात मिथ्या है। मै नहीं कह सकताहूं किस २ आधारपर अमीरने यह गप्प उड़ादी है।

डाक्टरग्रे और मिस हैमिल्टनपर अमीरका बहुत विश्वास था। दोनोंही समय २ पर अमीरके कुटुंब और उनकी चिकित्सा करते थे। सन् ९५ मे जब सर्दार नसरुल्ला विलायत गये मिस हैमिल्टन उनके साथ गई थी और उ के साथ इन्हें श्रीमती महारानी विक्टोरियासे मिलनेका भी सौभाग्य प्र त हुआ था। अमीरने मिस साहबाकी बहुत प्रशंसा की है। डाक्टरग्रे हिबभी अपनी किताबमें लिखते है कि अमीरका मुझपरभी बहुत विश्वास था। इन बातोंसे मालूम होता है कि काबुलके अमीर और वहांकी प्रजा डाक्टरी इलाजको चाहने लगी है परंतु अमीर जिसतरह और २ पेशे काबुलियोंको सिखलाकर यूरोपियन लोगोंको टरकाचुके थे इस तरह डाक्टरीके विषयमें नहीं होसका क्योंकि इस

बातका उन्हा ने अपनी पुस्तकमें कहीं उल्लेख नहीं किया ह और न यह लिखा है कि यूनानी हिकमतकी उन्होंने किसतरह उन्नतिकी। यह उनके चरित्रमें त्रुटि है।

प्रकरण—१०

व्यापार और खनिज पदार्थ।

अमीरने लिखा है कि "काबुलमें बहुतसी खानें है। उनके कारण अफगानिस्तान संसारके धनाढ्य देशोंमें गिना जासकता है परन्तु जो हीरेका मोल नहीं जानते उनके लिये काच और हीरा समान है। मुझसे पहले किसी अमीर या प्रजाने खानोंसे लाभ नहीं उठाया था। मेरे समयमें, लाल, सोना, चांदी, सीसा, लोहा, तांबा, कोयला, पत्थर, और नमक, आदिकी खानें निकली है। मेने कलें मंगवाकर इनके योग्य रीतिपर चलानेकी व्यवस्थाकी है। अंगरेज इंजिनियर मिडल्टन साहबने जलालाबादकी लालकी खान और घोरबन्दकी सीसेकी खानमें बहुत अच्छा काम किया है। मैंने अपने पुत्रोंको सलाहदी है कि तुम किसी परदेशीको खान खोलनेका अधिकार न देना और न इनमें किसी विदेशीसे काम करवाना। यदि इस कार्यमें विदेशियोंका हस्तक्षेप होने देंगे तो तुम्हारी बहुत हानि होगी। मेने ठौसे यहभी कहदिया कि किसी परदेशी (यूरोपियनों) को काबुल राज्यमें सदा बसने भी न देना क्यों कि जब कभी झगड़ा होगा उनकी सहायताका बहानाकर यूरोपियन राज्य तुम्हें आ दबावेंगे। जबतक तुम्हें किसी यूरोपियनको नौकर रखनेकी आवश्यकता पड़े उसे प्रसन्नतासे नौकर रखना परन्तु जब वह तुम्हारी प्रजाको काम सिखादे उसे तुरतही बिदा करदिया करना।'

काबुलकी कारीगरोंका वर्णन गत प्रकरणोंमें हो चुका है। इसी प्रकरणमें वहांकी खानोंके लिये भी थोड़ा बहुत लिखा गया है। अब यहां इस बातके लिखनेकी आवश्यकता है कि आजकल वहांके व्यापारकी कैसी स्थिति है। अमीरने इस कामके लिये एक स्वतन्त्र विभाग

नियत किया है । इसीके निरीक्षण में वहांके व्यापारकी उन्नति होरही है । अमीरने लिखा है कि "जितनाही माल बाहरसे अधिक आता है देशका रुपया नष्ट होता है इसलिये मैने ऐसी आज्ञा देदी है कि जो माल काबुलका बना अथवा उत्पन्न मिल सकता है उसे बाहरसे कोई न मँगवावे । इस आज्ञासे काबुलकी कोई प्रजा बाहरसे आया हुआ नमक नहीं खाती है किन्तु उसके व्यवहारमे वही लवण आता है जो यहांकी खानोंमें उत्पन्न होता है । यहांसे फल चमड़ा, लाल, सोना, ऊन, लकड़ी और अफ़ीम बाहर बहुत जाती है और इससे मेरे राज्य तथा प्रजाको बहुत लाभ है । " कृषि विभागकी भी इनके समयमें उन्नति हुई है । पहलेकी अपेक्षा अब वहां मेवे और तरकारी अधिक उत्पन्न होती है और भारतवर्षसे नारंगी, गन्ना तथा केले मँगवाकर काबुलमें उनकी खेती आरंभ की गई है ।

" पहले काबुलका व्यापार भारतवर्षके मुसलमानों और हिन्दुओंके हाथ था । वे खर्चसे जितना रुपया बचापाते थे उसे भारतको ढो लेजाते थे । इससे देशकी दशा बिगड़ चुकी थी ।" अमीरने इस बातका उल्लेख करते समय लिखा है कि "मैंने राज्यसे काबुली लोगोंको बिना व्याज रुपया उधार देकर उन्हें इस कामकी उत्तेजना दी । मैं वैसा मनुष्य नहीं हूँ जो किसीको बिना व्याज रुपया दे दूँ । काबुलमे बाहरसे और बाहर से काबुलमें जितना माल आता है उसपर मै २॥) रुपया सैंकड़ा जकात लेता हूँ । यह मेरा व्याज लेना नहीं है तो क्या है।" उन्होंने इतना लिखकर उन मुसलमानोंको जो व्याज लेना पाप समझते है दिखला दिया है कि व्याज विना व्यापारकी उन्नति नही होसकती और व्यापारके बिना देशकी उन्नति असम्भव है ।"

प्रकरण—११.

साधारण शिक्षा ।

कारीगरी और युद्ध शिक्षाका वर्णन गत प्रकरणोमें किया जाचुका है । यहां साधारण शिक्षाके विषयमें कुछ लिखना है अमीरने राजकु-

टुम्ब, दरबारी, युद्धके कैदी, निजके सेवक और अन्यान्य लोगोंके लिये कई एक स्कूल खोले हैं। उन्होंने अपने चरित्रमें यह नहीं लिखा है कि इन पाठशालाओंमें क्या पढ़ाया जाता है परन्तु वह लिखते हैं कि परीक्षक मण्डलके समक्ष परीक्षा देकर उत्तीर्ण होनेका सार्टिफिकेट लिये बिना कोई मुल्ला वा धर्मोपदेशक चाहे जितने उच्चपदका हो, अपना काम नहीं कर सकता है। यह बात गत प्रकरणमें लिखी गई है कि वहां मुल्लाओंका बड़ा प्राबल्य है। ऐसी दशामें जब वहां येही लोग बिना परीक्षाके नियत नहीं होसकते तो अन्य कर्मचारियोंकी परीक्षा होना साधारण बात है। अमीरने अपनी प्रजाको शिक्षा देनेके लिये अङ्गरेजी जैसी सात समुद्र पारकी भाषाका बोझा उसपर नहीं डाला था किन्तु जो २ बातें उसे सिखानी अभीष्ट थीं उनका फारसीमें अनुवाद कराया और उन्हीं अनुवादित पुस्तकोंका अपने यहां प्रचार किया है॥

अमीरने अपनी सर्वसाधारण प्रजाको ही शिक्षा देनेका प्रबन्ध नहीं किया था बरन अपने पुत्रोंकी शिक्षा पर उनका सबसे बढ़कर ध्यान था। उन्हींके प्रयत्नसे वर्त्तमान अमीर हबीबुल्ला पिताकी तरह काबुली कट्टर प्रजाको मुट्ठीमें लेकर भांति २ के सुधार करनेमें समर्थ हुए हैं। अमीर हबीबुल्ला अगरेजी अच्छी तरह लिख पढ़ और बोल सकते हैं। उन्हें इतिहास, भूगोल, हिसाब, नक्शे बनाने, पैमाइश करने और ज्योतिष शास्त्रका अच्छा ज्ञान है। पिताने धीरे २ उन्हें राज्यप्रबन्धका अधिकार देकर सब कामोंमें योग्य बना दिया था। अमीर अब्दुरहमानने अमीर हबीबुल्ला और सरदार नसरुल्ला आदि पुत्रोंको किस प्रकारकी शिक्षा दी थी इसका वर्णन चौथे भागमें होगा। यहां केवल प्रसंगोपात लिखा गया है॥

प्रकरण–१२

रेल तार और डाक।

अमीरने लिखा है कि "मेरे बहुतसे कर्मचारी, जो अपनेको बहुत बुद्धिमान् समझते हैं मुझसे कहा करते हैं कि जबतक अफगानिस्तान में रेल और तारका प्रचार न होगा यहांके खनिज पदार्थों और देशकी

उपजसे लाभ होना असंभव है । मैं इस बातको स्वीकार करताहूं परंतु वे लोग नहीं सोचते हैं कि यदि यहां रेल और तारका प्रचार हो जायगा तो विदेशीराज्योंकी काबुलपर सहजमें चढाई होसकैगी और वे लोग धीरे २ राज्यभरमें फैल जाँयगे । भगवानने हमको प्रत्येक पहाड़की प्रत्येक चोटी स्वाभाविक दुर्गका काम करनेके लिये दी है । परदेशी जानते है कि अफगान लोग जन्मसेही सिपाही होते है जबतक उन्हें पहाड़ोमे छिपनेकी जगह मिलैगी वे हमसे खुले मैदानमें लड़कर नष्ट न होगे । इसमें संदेह नहीं है कि रेल और तारके प्रचारका समय शीघ्रही आने वाला है परंतु अभीतक वह समय नहीं आया है । जब समय आवैगा तब अवश्यही देशको इनसे लाभ होजायगा । यह बात उसी समय करना उचित है जब कि हमारी सेना विदेशियोंसे लड़नेको तैयार होजाय । जबतक ऐसा न हो हमें रेल तार लगवाकर अपनी शक्ति घटाना न चाहिये । ऐसा करना उस मनुष्यके समान है जो सुनहरी अंडोंका खजाना पानेके लालचसे मुर्गीको मार डालता है ।" अमीरका यही कथन उनके सिद्धांतोकी दृढता और राजनीति कुशलता भलीभांति प्रकाशित करता है ।

यद्यपि अमीरकी सम्मति रेल और तार लगानेके विरुद्ध थी परंतु वह राज्यभर में सडकें बनवानेकी तरह डाकघर खोलनाभी अच्छा समझते थे । उनके डाक विभाग स्थापित करने पूर्व चिट्ठियां आने जानेके लिये काबुल और पेशावरके बीचमें बड़ी कठिनतासे काम होसकता था । अब अमीरके प्रयत्नसे डाकघर खुलगये हैं । उनमे भारतवर्षके डाकघरोंकी तरह रजस्टरी चिट्ठियां, पारसल, मनी आर्डर आदि सब तरहका काम होता है । राजधानी काबुलसे अफ़गानिस्तान राज्यभरके बड़े २ नगरों और प्रान्तोंमें तो पत्र आने जा का प्रबंध हैही परंतु रूस, ईरान, चीन और भारतवर्षकोभी पत्र आतजाते है । काबुलसे भारतवर्षमें पत्र आनेजाने में केवल छत्तीसघंटे लगते है । भारतवर्षसे जो पत्र काबुल वा उस राज्यके किसी नगरको भेजा जाता है उसपर भारतवर्षके महसूलके सिवाय

काबुल राज्यका महसूल अलग लगता है। इस प्रयत्नसे राज्यको अच्छी आय होती है। वहांके डाकघरोंकी आयसे इस विभागका केवल खर्चही नहीं निकलता है वरन् राज्यको बचतभी बहुत होती है। डाक्टरग्रे साहबने लिखा है कि—" मैं अपनी चिट्ठिया ब्रिटिश गवनमेंटके एजेंट द्वारा भेजता था। अमीरकी डाकमें ब्रिटिश एजेंटकी थैली अलग जाती आती है। कभी २ लुटेरे डाकको लूटभी लेते हैं। मैंने पहले १ अपने पत्र ब्रिटिश एजेंट द्वारा भेजे थे फिर जबसे अमीरने मेरे पत्रोंपर महसूल छोड देनेकी आज्ञादेदी मैं अमीरकी डाकसे भेजने लगा। इससे मेरी बहुत बचतहुइ क्योंकि तुर्किस्तानमें चिट्ठीका महसूल उसके तौलके बराबर चांदी लीजाती है। अमीरकी कृपासे जब मुझसे राजडाकका महसूल छोड दियागया तो मुझे अपनी चिट्ठियोंपर केवल भारतवर्षका महसूल लगाना पडता था।"



इति द्वितीय भाग समाप्त ।

श्री ।

तृतीय भाग ।

अन्य राज्योंसे-सम्बन्ध ।



प्रकरण—१

ब्रिटिश और अफगान प्रजाके विचार ।

मित्रताका अभाव ।

काबुल और रूस राज्यकी सीमा निर्द्धारित होनेकी बात मे पहले भागमे लिखचुका हू वहा मैने काबुलराज्यके पजदेह स्थान रूसके हाथमे चलेजानेका वर्णन किया है, अबदुर्रहमानकी ब्रिटिश गवर्नमेंटसे सन्धि होनेका भी उसी भागमे उल्लेख होचुका है और डयूरेंड साहबकी सन्धि की भी उसीमे थोडी बहुत चर्चा की गई है। यहां उन्हा बातोंको दुहरा कर पिष्टपेषण करनेकी आवश्यकता नहीं है। इस भागमे मुझे यही दिखलाना है कि इग्लैंड और अफगानिस्तानका परस्पर सम्बन्ध अमीर अबदुर्रहमानके समयमे कैसा रहा है और अमीरके इस विषयमें विचार कैसे थे। अमीरने अपने चरित्रमे लिखा है कि इस विषयमे ब्रिटिश प्रजा और अफगान प्रजाके विचार जुदे २ है। अगरेजी समाचार पत्र और ब्रिटिश प्रजा कहती है कि "हमने अबदुर्रहमानको काबुलकी गादी दिलाई है इसलिये वह हमारा वैतनिक सेवक (?) है।" इसके उत्तरमे अफगान प्रजाका कथन है कि—'क्या ब्रिटिश गवर्नमेंटने रूससे अबदुर्रहमानको बुलाकर गादी दीथी? क्या अगरेजोंने रूससे काबुलतक आनेमें अमीरको धन वा और तरहकी सहायता दी थी? काबुलराज्यमे घुसते समय, अफगान और तुर्किस्तानके पीरोंने, अंगरेजोंहीके लिये अमीरको रोक दिया था। वे मूसाजान आदिको गादी देना चाहते थे परंतु ये लोग इस कामके योग्य नहीं थे। अमीर अबदुर्रहमानको गादी

मिलनेके इतने कारण हैं उन्होंने परमेश्वरकी कृपा और अपनी सेनाके बलसे सारेके समस्त कांटे उखाड दिये थे। इन्हों ने तुर्किस्तानको विजयकर समस्त गाजियों और काबुली सेनाको अपना अनुयायी बना-लिया था। मुल्लाजानने गार्दीलना स्वीकार नहीं किया था। समस्तप्रजा गाजियोंसे मिलकर अंगरेजोंके विरुद्ध होगई थी। अय्यूब हिरात छोड-कर कंदहारसे अंगरेजोंसे लडनेको तैयार हुआ था। बस इन्हीं कारणोंसे उन्होंने अबदुर्रहमानको अपना मित्र बनाया है। हम लोगोंने अपना डेप्युटेशन भेजकर अबदुर्रहमानको रूससे बुलाया और हमहीने उन्हें गादीपर बिठलाया है। हम लोग जब चरीकारमें अमीरको गादी देचुके तब सर लिपिल ग्रिफिनने हमारी योजनाको केवल दृढ किया है। अंगरेजी सेनाकी दशा सन् १८४० ई०से भी इससमय अधिक बुरी थी। ऐसे समयमें अमीरने उसकी रक्षाकर उसे जीता जागता भारतवर्षको भेजदेनेमें अपने वचनका पालन किया है। अंगरेज़ गवर्नमेंट अमीरको प्रतिवर्ष धन इसी लिये देती है कि उसका इसमें लाभ है। अमीरने परदेशी राज्योंसे बिना अंगरेजोंकी सलाहके मेल न करने और सीमा-प्रान्तकी रक्षा करनेका वचन दिया है। यदि भारतगवर्नमेंट अमीरसे मित्रता रखनेमें अपना लाभ नहीं समझती है तो भारतके और राजा-ओंको रुपया क्यों नहीं देती है। अफगानिस्तानकी शांति और शक्तिसेही विदेशी राज्योंके आक्रमणके समय भारतवर्षकी रक्षा है।" यद्यपि अमीरने यह लिखदिया है कि "ब्रिटिश प्रजा अमीरको अपना वैतनिक सेवक समझती है" परंतु सरलेपिल ग्रिफिनके पत्रों और गवर्नमेंटकी संधिको देखकर इस कथनपर कोई भी विचारवान् पुरुष विश्वास नहीं कर-सकता। अमीरने अपनी पोथीमें दोनों प्रजाके विचारोंका उल्लेख करने पश्चात् लिखा है कि "इंग्लैंड और अफगानिस्तानकी परस्पर मित्रतासे दोनोंहीका लाभ है। मैं अपने पुत्रोंको यही सम्मति देता हूं कि वे सदा श्रीमती महारानी विक्टोरिया और उनके उत्तराधिकारियोंकी दिन २ मित्रताको अधिक २ दृढ करते रहें। अफगानिस्तान और भारतवर्षका भला दोनोंके मेलहीमें है। मेरी प्रजाके चित्तमें जो बात समा गई है

उसे निकालनेके लिये मैं लिखताहूँ कि सरलेपिलग्रिफिन् आदि अगर जोने ब्रिटिश गवनमेंटकी काबुलसे सधि कराके दोनोंका उपकार किया है। उन्होने शर्त करनेमें बडी बुद्धिमत्ता की है। जैसे-राबर्ट्स साहब कन्दहारके लाड कहलाते है वैसेही वह (सरलेपिलग्रिफिन्) काबुलके लार्डकी पदवी पाने योग्य है।"

अमीरने अपनी पुस्तकमें इतनी बातोंका उल्लेखकरके इस विषयमें विचार किया है। वह लिखते है "कि लार्डलिटन अफगानिस्तानका राज्य नष्ट कर उसके खडकरदेना चाहते थे। उन्होंकी यह सम्मति थी कि कंदहार आदि कईएक परगने ब्रिटिशराज्यमें मिलाकर शेषके अनेक छोटे२ राज्य करदियेजॉय। इस सम्मतीको किसीने स्वीकार न किया किन्तु भारतवर्षके राज्य बढानेकी पालिसी उन्हींके विचारसे उत्पन्न हुई है।" काबुलके युद्ध होनेके क्या कारण थे इनमें अंगरेजोंका दोष था या नहीं-इन बातोंपर विचार करनेकी यहां विशेष आवश्यकता नहीं है। इस विषयमें थोडा बहुत प्रथम भागमें लिखा गया है। इस भागके इस प्रकरणमें यही लिखना है कि, अबदुर्रहमानके अमीर होने बाद उनका संबंध भारतवर्षसे कैसारहा। उन्होंने लिखा है कि लार्डरिपन बडे उदार पुरुष थे। उनके समयमें अर्थात भारतवर्षसे मित्रता रहनेमें किसी प्रकारका विघ्न नहीं पडा। मैं शासनके आरम्भसेही इसीहद मित्रताको जारीरखनेका यत्न किया। उन्होंने भारतवर्षमें मेरा मुसल्मान दूत रहना स्वीकार किया और सधिके अनुसार भारत गवर्नमेंटकी ओरसे एक मुसल्मानदूत मेरे दरबारमें नियतकर १६ जून सन १८८२ ई० के सीमाप्रांतपर किले बनवानेके लिये मुझे गवर्नमेंटकी ओरसे प्रतिवर्ष १२ लाख रुपये मिलतेथे, परन्तु जिस चालसे फौजमें खर्च लगते हैं उसीके निमटनेमभी खर्च चाहिये। अफगान और अंगरेज जातिकी शत्रुता पचास वर्षसे चली आती थी। दोनों जातियां एक दूसरीको कर अविश्वासनीय, और शपथ तोडनेवाली समझती थीं। मानोंक्षान इस तरहकी पुस्तक लिखी है। दोनों परस्पर कट्टर शत्रु है। दोनोंके परस्पर मामुआत मटनेके लिये

उनके हृदय पटल परसे पुरानी बातें धोकर एक दूसरेका विश्वासनीय बनाना यदि असम्भव नहीं है तो बहुतही कठिन है। केवल इतनाही नहीं वरन मित्रता न होनेके कई एक कारण भी हैं। इण्डियन गवर्नमेंट को न तो मुझे पूरी २ अथवा आवश्यक सहायता देनेका अधिकार है और न वह देसकती है। उसने मेरी सत्यता और मित्रताका पूरा विश्वास भी नहीं किया है। मेरी प्रजा मूर्ख और धर्माभिमानी (तास्सुब रखनेवाली) है। यदि मैं अपना झुकाव अंगरेजोंकी ओर दिखलाऊं तो काफिरोंका साथ देनेसे मेरी प्रजा मुझे काफिर मानकर मेरे विरुद्ध जेहाद करसकती है। इसीलिये जबतक मैं इन उपद्रवियों और धर्माभिमानियोंको राज्य सेन निकाल दूं अङ्गरेजोंके साथ मित्रता नहीं करसकता हूँ। इसी कारण मैं प्रकाशरूप पर मित्रता नहीं दिखला सका हूँ। मैं अयूबकी तरह मूर्ख नहीं हूँ जिसने प्रजाकी सम्मति विना अङ्गरेजोंकी ओरसे सर लुई केवेगनरीका काबुलमें आना स्वीकार कर सत्यानाश करडाला। भारत गवर्नमेंटने मुझसे जो सन्धिकी है उसके अनुसार वह मेरे घरेलू बलेड़ोंमें हाथ नहीं डाल सकती है। यहांतक कि यदि काबुलकी प्रजा—समस्त प्रजा मेरे विरुद्ध होकर बलवा कर खड़ी हो तो भी मैं भारत गवर्नमेंटसे सहायता पानेका स्वत्व नहीं रखता हूँ। इस मित्रताके लिये मुझे ब्रिटिश गवर्नमेंटकी खुशामद कर कायर बनना पसन्द नहीं है क्योंकि यह बात मेरी जातिके स्वभावमेंही नहीं है। मैने कष्ट और युद्धके समय भी इस विचारको छोड़ा नहीं है। अभीतक अंगरेज लोग अफगानोंकी और अफगान अंगरेजोंकी चाल ढालसे विल्कुल अनभिज्ञ है। यह भी मित्रता न बढ़नेका कारण है। मैने इस बातका बहुतेरा प्रयत्न किया है परन्तु भारत गवर्नमेंटके विचार बड़े दीर्घसूत्री हैं। वहां किसी बातका कभी निश्चयही नहीं रहता है कि किस तरहका वर्त्ताव करना चाहिये। इसमें अंगरेजोंका दोष नहीं है क्योंकि उन्हें मेरी मित्रतासे लाभ नहीं हुआ है। आगे २ मित्रताके परिणाममें कई एक बार युद्ध होचुका है। शेरअली और याकूबके वर्त्तावसे उनका विश्वास उठ गया है। पूर्व और पश्चिमदेश की नीति रीतिमें रात दिनका अन्तर है। बहुतसे मनुष्य हमारे आपुसमें

वैमनस्य कराइनेका प्रयत्न करते रहत हे। अभी शेरअलीके अनुयायी और वे लोग जो काबुलसे भागकर भारतगवर्नमेंटके शरणागत हुए हैं उनके सग काम करते रहते हैं। यद्यपि मैं और लार्ड रिपन इन बातोंको मेटनेका पूरा २ प्रयत्न करते रहे थे परन्तु मैंने इसीलिये भारतवर्ष जाकर वहांके वाइसरायसे मिलनेका विचार किया। जबतक लार्ड रिपन भारतवर्षमें रहे मुझे उनसे मिलनेका अच्छा अवसर न मिला और इस समय तक लार्ड डफरिन वाइसराय नियत होकर भारतवर्षमें आगये॥

प्रकरण–२

लार्ड डफरिनसे भेंट।

जिस समय अमीर भारतके वाइसरायसे मिलनेका विचार कररहे थे एकाएक कईएक कारण ऐसे आ उपस्थित हुए जिनसे इनको वाइसरायसे मिलनेमें शीघ्रता करनी पड़ी। वे कारण ये थे, (१) रूसी समाचार पत्र प्रसिद्ध कररहे थे कि अंगरेजोंने अमीर अबदुर्रहमानकी मित्रताको काबुल नहीं छोड़ा है किन्तु वहांसे भागगये हैं। इस संवादको मिथ्या कर ब्रिटिश गवर्नमेंटकी मित्रता दृढ करनेके लिये अमीरको भारतमें आनेकी आवश्यकता थी (२) सन् ८५ ई० में रूसके भारतपर चढ़ाई करनेके समय भारतगवर्नमेंटकी आगेकी पांच चौकियां थी। सीस्तान, जगदलक, बुखारा, पामीर, हरात और हिरात मार्गसे रूस भारतमें आसकता था। अमीर बहुत रात रूसकी शरणमें रहचुके थे इस कारण उनके विचारोंको अच्छीतरह जानते थे और रूसका भेद प्रकाशित करनेमें भारतमें मित्रता होसकती थी। इसीलिये उन्होंने गवर्नमेंटको ये बात सुझानेके प्रयोजनसे यहां आना उचित समझा यद्यपि इन्होंने पहले इस विषयमें जो सम्मति दीथी पश्चिमोत्तर सीमाके रक्षाकी बात कही थी उसपर किसीने ध्यान नहीं दिया था और अंगरेज लोग केवल रूसकी मित्रता भरोसेमें भूलरहे थे। रूसी लोगोंने जब रूसने सीस्तान जगह पाकर अफगानिस्तानके फाटक मर्व और सरख्स लेलिया और

तुर्किस्तान और अंटर्पीटर्सबर्गके बीचमें रल तथा तारोंका आवागमन होने लगा तथा आक्सस नदीकी ओर उसकी सेना बढ़ने लगी तो अमीरको खटका होगया।

ऐसे अवसरमें फ्रांससे इंग्लैंडकी खटपट खड़ी हुई। ग्रेटब्रिटेनने फ्रांसकी इच्छाके विरुद्ध ब्रह्मदेश और मिसर लेलिया। यह बात देखकर रूसने अपना मतलब गांठना उचित समझा। वह पहलेसे रस्ता देखही रहा था। उसने सन् ८५ ई० में अफगान राज्यका पंजदेह परगना लेलिया। जिस समय अमीर लार्डडफरिनसे मिलने भारतवर्षमें आये थे पंजदेह इनके हाथसे जारहा था। यह बात प्रथम भागमें लिखी जाचुकी है। अमीरने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि " यदि मैं सीमाका ठीक प्रबंध न कररखता तो रूस अवश्य मेरा औरभी प्रदेश छीनलेता। रूसियोंकी चाल धीमी और दृढ है परंतु परिवर्तनशील नहीं है। यदि वे एकबार किसी बातका करना विचार लेते हैं तो फिर उसे किये बिना विश्राम नहीं लेते और न अपने विचारोंको कभी बदलते हैं। उनके यहां और राज्योंकी तरह नहीं हैं कि एक पार्टीके समयमें जो काम आरंभ होता है उसका दूसरी अनुमोदन नहीं करती है। वे साठ वर्षसे भारतकी ओर बढ़रहे हैं। वे धीरे २ आगे बढ़ते जाते हैं अपना राज्य स्थिरकर वहां शांति स्थापन करते हैं, किले बनवाते जाते हैं और सब तरहसे उसे दृढ़ करते जाते हैं। जब वे एक जगह लेलेते हैं तो पहले वहांका सबतरह सुधारकर फिर आगेको पैर बढ़ाते हैं। रूसकी एक कहावत है कि- "संधि तो तोड़नेके लियेही कीजाती है।" उनका ढंग लोमड़ी और मेमनेके किस्सेकी तरह है।"

इन बातोंके सिवाय अमीरने भारतके वाइसरायसे मिलनेका एक औरभी कारण लिखा है। वह कहते हैं कि " भारतगवर्नमेंटसे स्वीकार करचुका था कि मैं रूस वा किसी विदेशी राज्यसे अंगरेज सरकारकी सम्मति बिना पत्रव्यवहार न करसकूंगा और गवर्नमेंटने मुझे वचन दे दिया था कि हम जब कभी विदेशी राज्य काबुलपर आक्र-

मण करेंगे उसकी रक्षा करेंगे। मेरे इस प्रण और इससे सम्बंध तोड़देनेसे उसका जो मैंने लवण खाया था उसका सबब जाता रहा और उसके लवणका बदला न मिलनाही इसके लिये मेरा बड़ाभारी अपराध हुआ। इस कारण मुझे अंगरेजोंमे मिलता देखकर रूस यदि चिढ जाय तो आश्चर्यही क्या है। कितने ही अंगरेज कर्मचारी काबुल और भारतवर्षके परस्पर वर्त्तावकी गड़ बड़ देखकर कहने लगे थे कि, काबुलसे जो सन्धि हुई है वह नियमानुसार नहीं है इस कारण मैंने लार्ड रिपनसे लिखापढी करके उसे फिर सन् १८८३ ई०में दृढ कराया। इसकी अभीतक अफगानिस्तानसे लड़ाई नहीं हुई है और न कभी होनेकी सम्भावना है क्योंकि उसकी इंग्लेंडसे मित्रता होनेके सिवाय इसके लिये काबुलसे शत्रुता करनेका कोई प्रबल कारण नहीं है। इन कारणोंसे लार्ड डफरिन जैसे राजनीतिज्ञ बुद्धिमान् और चतुर वाइसरायने मुझसे मिलना पसंदकिया। इस कामके लिये रावलपिंडी स्थान ठीक किया गया। मै काबुलसे चलकर ३१ मार्चको रावलपिंडी पहुँचा। वहां लार्ड डफरिन और ड्यूक आफ कनाटने मेरा बड़ा सत्कार किया। उस समय भारतके बहुतक राजा महाराजा भी उपस्थित थे। वहाँपर मेरी लार्ड डफरिनसे जो बातें हुई थीं उन्हें मैंने पुस्तकाकार छपवाकर प्रकाशित कर दिया।"

इस भेंटसे काबुल और भारतका स्नेह पक्का होगया। जबतक लार्ड डफरिन भारतके वाइसराय रहे दोनोंमें आपसमें किसीतरह का बखेड़ा न उठने पाया। जिन॰ बातोंके अमीरपर दोष लगाये गये थे वे सब धुलगये। इसी भेंटमें पश्चिमोत्तर सीमाकी किले बंदी करनेका ठहराव हुआ और वाइसरायने अमीरको एक भारी तोप, बंदूक और रुपया दिया और समय पड़नेपर सहायता देनेका प्रण किया। इस भेंटके समय अमीरने लार्ड डफरिनसे कहा कि-"मै भारतके वाइसरायोंको कई बार रूसी चालके विषयमें सचेत करचुकाहूं परन्तु गवर्नमेंट मेरी नहीं सुनती है इसीलिये खीवा तथा बुखारा-

के जंगल पारकर रूसने मर्व तथा सगाखुश ले लिया है। केवल इतनाही नहीं वरन् मेरे आपके प्रेममें रहते हुए उसने मेरा पंजदेह लेलिया है। इसके पश्चात पामीर लेकर हिरातलेगा। हिरातके बाद वह हिरातपर आक्रमण करेगा।" उत्तरमें लार्ड डफरिन बोले। "हिरात तथा पश्चिमोत्तर सीमाकी रूपसे रक्षा करनेके लिये रुपया, शस्त्र, युद्धसामग्री इंजिनियर अंगरेज कर्मचारी आदि जिन २ के देनेकी आवश्यकता होगी आपको दीजायगी और जो कभी रूस काबुलपर आक्रमण करेगा तो अवश्यही हम आपके सहायक होंगे। हमने इस बातकी पूरी २ तयारी कररक्खी है।" अमीरने अंगरेज कर्मचारी और इञ्जिनियरको नौकर रखनेके सिवाय और सब बातोंको स्वीकार करलिया। अमीरने कह दिया कि "जब तक अंगरेज संधिके नियमोंका भंग न करेंगे मैं सच्चा रहूंगा।" ८ अपरेलको रावलपिंडीमें दरबार हुआ। यहां लार्ड डफरिन और श्रीमती महारानीके पुत्र ड्यूक आफ कनाटसे भेंट हुई। भरे दरबारमें अमीरने प्रण किया कि "मैं अफ़गानिस्तानकी रक्षा करनेका उत्तरदाता हूँ" और जो बातें इनसे लार्ड डफरिनकी हुई थीं उनका उन्होंने इसी समय समर्थन किया। ६ अपरेलको अमीरके सम्मानमें सेनाकी क़वाइद हुई। अमीरने लिखा है कि मैं जन्मसे सिपाहीका काम करता हूँ। ब्रिटिश गवर्नमेंटकी दृढ़ सेना देखकर मुझसे उसकी प्रशंसा किये विना रहा नहीं जासकता है। जिस जातिके पास ऐसी सेना है उसके लिये कभी डरका कारण नहीं उपस्थित होसकता है। उसी रातको जब मेरी दावत हुई मैंने लार्ड डफरिनसे खुलाखुली कह दिया था कि यदि भारतगवर्नमेंट ख्वाजासालारसे लेकर पामीर चित्राल तकके प्रदेशको अपने हाथमें न लेगी तो रूस पामीर ले लेगा।" इसबातके लिये फिर भी अमीरने सन् ८६ में गवर्नमेंटको चिताया परन्तु सरकारकी दीर्घसूत्रतासे अन्तमें रूसने पामीर ले लिया।" लार्ड डफरिनसे भेंटकर, भारतगवर्नमेंटसे नवीन मित्रताकर अमीर कुशल क्षेमसे काबुलको लौट गये।

प्रकरण–९

दरबारके विषयमें सम्मति।

अमीर अब्दुरहमानने रावलपिंडीमें लार्ड डफरिनसे भेट करके भारत काबुलकी परस्पर खेंचातानका जो निपटारा किया उसका वर्णन गत प्रकरणमें किया गया है। अब दरबारमें उपस्थित राजा महाराजाओंको देख कर उनके मनपर जो विचार उत्पन्न हुए उनका प्रकाशित करना भी आवश्यक है। उन्होंने लार्ड डफरिन और ड्यूक आफ कनाटके साथ लेडी डफरिन तथा डचेस आफ कनाटकी जो प्रशंसा की है उसके लिख-नेकी आवश्यकता नहीं है किन्तु वह लिखते हैं कि "इस यात्रामें दरबारके समय देशी राजाओं और नव्वाबोंको देखकर मेरे हृदयको बड़ी वेदना हुई। ये सबके सब स्त्रियोंकी तरह हीरा मोतीके आभूषण और वस्त्र पहने हुए थे। ये मूर्खता, सुस्ती और नखरेमें डूब चुके थे। ये बिचारे नहीं जानते थे कि संसारमें क्या होरहा है। ये समझते हैं कि पैरों चलने से हमारी प्रतिष्ठा बिगड़ती है इसलिये उनकी टेवही ऐसी पड़ी हुई है कि वे बिना सवारी नहीं चलसकते हैं। ये राजा और नव्वाब पजाबके हैं। ये लोग अपना समय मद्य और अफीम पीनेमें खर्च करते हैं। मुझे इन बिचारोंपर बड़ी दया आती है। दया इस बातकी है कि जब इनकी यह दशा है तो इनकी प्रजाको किस तरह न्याय मिलता होगा। इस यात्रासे मुझे निश्चय होगया कि ज्यों २ मुझे मेरे पुत्रों और मेरे कर्मचारियोंको लार्डडफरिन जैसे मनुष्योंसे मिलनेका अधिक२अवसर मिलेगा उतनीही दोनों राज्योंमें प्रीति बढ़ेगी और प्रीति बढ़नेसे सब बखेड़े मिट जायँगे। मैने इसी सिद्धांतसे स्वयं इंग्लैंड जानेका विचार किया था और मैं चाहता था कि मेरा प्रतिनिधि लण्डनमें रहे। इससे दोनों राज्योंमें मित्रता अधिक घनी होगी परंतु ज्यों २ मैं काबुलको इंग्लैंडके निकट लेजाना चाहताहूं त्योंत्यों अंग-रेज कर्मचारी दोनोंको दूर २ रखनेका प्रयत्न करते हैं।"

यद्यपि अमीरने पंजाबी राजाओंकी स्थितिपर शोक प्रकाशित करनेके

समय उनका नाम नहीं लिखा है और मैं भी उनके नाम निर्देश्य करनेका प्रयत्न करना अच्छा नहीं समझताहू परंतु मैं जहांतक जानताहूँ भारतवर्षके राजाओंकी दशा आजकल बहुत बुरी है। उन्हें अमीरके इस तानेपर ध्यान देकर जरा अपने कर्तव्य पालनका विचार रखना चाहिये क्योंकि वे लोग उन्हीं राजाधिराजोंके वंशधर हैं जो किसीसमय अपने बाहुबल और चातुर्यसे केवल अफगानिस्तानही क्यों वरन् संसारको चांकत करचुके हैं। दूसरी बात अमीरने ब्रिटिश नीतिके विषयमें कही है। उसपर आगे चलकर विचार किया जायगा।

प्रकरण–४.

अंगरेजोंकी राज्यवृद्धिकी लालसा।

नया बखेड़ा।

अमीरने अपने चरित्रमें लिखा है कि "जब लार्ड डफरिनके बिदा होनेसे लार्ड लैसडाउन भारतवर्षके वाइसराय हुए अफगानिस्तान और इंग्लैंडका आपसमे मनमुटाव फिर आरंभ होगया। इसका सविस्तर वर्णन प्रकाशित करना मै उचित नहीं समझताहूँ। केवल इतनाही कहना बहुत है कि लार्ड डफरिन जैसे वाइसराय और शांतिके समर्थक सरडोनेल्ड स्टुआर्ट जैसे उनके मंत्रदाता प्रधान सेनापति भारतसे विदा होगये। मेरे भारतस्थित दूत जनरल अमीर अहमद खांका देहांत होगया और राज्य बढानेकी नीतिके पक्षपाती लार्ड राबर्ट्स भारतके सेनापति हुए। बस फिर देरही क्या थी भारतगवर्नमेटने अफगानिस्तानकी सीमाप्रान्तके सर्दारोंके काममे हस्तक्षेप करना आरंभ करदिया, खोजक पहाड़मे होकर मार्ग निकाल लिया, अफगानिस्तान सीमापर नवीन चमनकी ओर रेल बढ़ानेका लग्गा लगाया, उस ओरसे सेना बढ़ाना आरंभ करदिया और क़िले बनाने वा सेनाकी तैयारीका प्रबंध करदिया इससे मूर्ख अफगानोने जानलिया कि अंगरेज़ अपनी रेल कंदहारको लेजाकर काबु-

ऊपर चढ़ाइ करना चाहते हैं। बस इसीबातपर वे लोग जहादकरनेको तैयार हुए। ऐसेही अवसरमें मेरे पास लार्ड लैंसडाउनका एक पत्र आया जिसका ढंग ऐसा था जैसा पहले किसी वाइसरायके समयमें नहीं हुआ। उन्होंने मुझे मेरे राज्यके भीतरी प्रबंधकी बातोंमें सम्मति दी और यह भी कहा कि आपको प्रजाके साथ इसतरहका बर्ताव करना चाहिये। इस बातको मैंने स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करनेमें भारतगवर्नमेण्ट समझने लगती कि काबुलके भीतरी कामोंमें हस्तक्षेप करनेका उसे अधिकार है।" जिस समय यह पत्र पहुँचा अमीर देहदादीमें किला बनवा रहे थे। इसके बनानेका प्रयोजन यही था कि रूस तुर्किस्तानपर आक्रमण न करे। इसी उद्देश्यसे वह हिरातके किले देखने और दुर्रानी तथा गिलजाई जातिके लोगोंमेंसे वालण्टियर भरती करने गये थे। ऐसे समयमें काबुल और कंदहारसे इनके पास बहुतसी चिट्ठियाँ आईं। इनमें लिखा था कि "अंगरेज काबुल राज्यकी ओर रेल बढ़ाते आरहे हैं। सीमाप्रान्तमें सेना इकट्ठी करते जाते हैं। उन्होंने सीमापर तथा सरदारोंके अधिकारमें हस्तक्षेप करना आरंभ कर दिया है और काबुल तथा कंदहार लेनेका पक्का मनसूबा करलिया है।" इन्हीं खबरोंके साथ लार्डलैंसडाउनकी धमकीका पत्र पाकर अमीर विचलित होगये। यद्यपि उस समय उनका देहदादीमें रहना रूसकी चढ़ाई रोकनेके लिये बहुत आवश्यक था परन्तु वह वहाँ एक दिन भी न ठहर सके। वहाँसे मारा मार चलकर सन् १०३० का गर्मीकी ऋतुमें यह काबुल पहुँचे। यहां आकर कन्दहारके गवर्नर सरदार मुहम्मदहसनको जिसने अंगरेजोंकी रेल बढ़नेका पहा रोका था पदच्युत करदिया।

इनका कहना है कि "लार्ड लैंसडाउनका बर्ताव इतनेहीसे सन्तोष न हुआ। मैंने अपनेही द्रव्यसे भारतवर्षमें जो बन्दूक खरीदी थी उन्हें काबुलकी सीमामें न घुसने दिया। केवल इतनाही नहीं बरन् काबुली सौदागरोंने मुझसे रिपोर्ट की कि गवर्नमेंट और माल भी काबुलको नहीं

ाने देती है और कहती है कि तुम लोग लोहा, तांबा, फौलाद आदि ातु शस्त्र बनानेको ले जा रहे हो । इस बातसे प्रजाकी दृष्टिमें मेरा बड़ा रपमान हुआ और वह अपमान भी ऐसे लोगोंके हाथसे जो स्वतंत्र व्यापारके ाक्षपाती हैं । यदि मैं शेरअलीकी तरह उतावला होता तो अवश्यही युद्ध छिड़ ाता और मुझे रूससे सहायता लेनी पड़ती । इस बातसे मेरा तो सत्यानाश ोहीजाता परन्तु भारतवर्षपर एक नवीन आपदा खड़ी होती । मैंने ्न बातोंपर कुछ ध्यान न दिया । भारतगवर्नमेंट इसीसे संतुष्ट होगई । उसने संतुष्ट होकर औरभी झगड़ा बढ़ाया । जिससमय मैं हज़ारायुद्धमें उलझ रहा था और मेरे कई एक आदमी उपद्रवियोंमें जा मिले थे भार- त गवर्नमेंटने मुझे अल्टीमेटम (युद्धपत्र) के समान एकपत्र दिया उसमें लिखा था कि "अब हम हमारे दूतके काबुल जानेके विषयमें आपका अनिश्चितप्रण स्वीकार नहीं करसकते । इसकारण लार्डराबर्ट्सको उनके शरीर रक्षकों सहित भेजते हैं ।" अमीरने यह पत्र पानेके साथही जाना कि लार्डराबर्ट्स १० हज़ार दृढ़सेना सहित आने वाले हैं । यह समय इनके लिये बड़ा भयानक था । भारत गवर्नमेंटसे युद्ध होतेही इनका अबतकका किया कराया काम मिट्टीमें मिलजाना सम्भव था । इन्होंने १० हज़ार सेनाके स्वागतके लिये १ लाख सैनिक इकट्ठे करनेका मन- सूबा किया । इन्होंने केवल इतनाही न किया वरन विलायतके प्रधान अमात्य लार्डसालिसबरीके नाम एक गुप्त पत्र लिखकर किसी मित्रके द्वारा विलायत भेजा । इसपत्रकी अपने प्रधानमंत्रीके सिवाय किसीको ख़बर न होने दी । यद्यपि लार्डसालिसबरीने इनकी सब बातें स्वीकृत नकीं परन्तु इसपत्रके पहुचनेसे लड़ाईकी अनी टलगई । उन्होंने लिखा है कि जबतक लार्डराबर्ट्स विलायत जाकर सरजानव्हाइट भार- तके प्रधानसेनापति न हुए मेरा मनमुटाव भारतगवर्नमेंटसे दूर न हुआ और न लार्डलैंसडाऊन शांतहुए । इन बातोंका निपटारा सरमोर्टिमर- डचूरैंडके सन् १८९३ ई० में काबुल जानेपर हुआ ।

प्रकरण—६.

लंडनमें सरदार नसरुल्ला।

काबुलमें लार्ड कर्जन।

पुराने इतिहासपर दृष्टि देनेसे अमीरको निश्चय होगया कि जबतक काबुलका दूत लंडनमें न रहे भारतके वाइसराय जब चाहें युद्ध करसकते हैं। विलायतकी पार्लियामेंट केवल एकही ओरके प्रमाण सुनकर डिगरी करदेती है और वह डिगरी वाइसरायके लाभमें होती है। यदि अफगानिस्तान राज्यकी ओरसे लंडनमें प्रतिनिधि रहे तो गवर्नमेंटको काबुलकी ओरका उत्तरभी मालूम होसकता है। इसी विचारसे इन्होंने विलायतमें अपना प्रतिनिधि रखनेका विचार किया। लार्ड लैंसडाउनके साथ इससे पहले जो खटपट होचुकी थी उससे इन्हें दूत रखनेकी और भी आवश्यकता हुई। इन्होंने समझा कि काबुलका दूत लंडनमें रहनेसे अफगान प्रजा जो अभीतक ब्रिटिश प्रजाकी उदारता और ब्रिटिश गवर्नमेंटकी शक्तिसे बिलकुल अनभिज्ञ है, परिचित होगी और दूत रहनेहीसे दोनों राज्योंका घनिष्ट संबंध होकर मित्रता बढ़ेगी। इस उद्देश्यसे इन्होंने स्वयं लंडन जाकर श्रीमती महारानी विक्टोरियासे मिलनेका विचार प्रकट किया। गवर्नमेंटने इस बातको स्वीकृतकर महारानीकी ओरसे इन्हें निमंत्रण दिया। केवल महारानीकाही निमंत्रण न आया किन्तु प्रिंस आफ वेल्स, ड्यूक आफ कनाट और ब्रिटिशराज्यके अन्यान्य प्रधान कर्मचारियोंकेभी पत्र आये परन्तु इन्होंने लिखा है कि, उस समयमें मैं दुर्भाग्यसे बीमार पड़गया। रोग बड़ा भयानक था और शीघ्रही मिटनेवाला न था। मेरे डाक्टर जिनमें मिस हैमिल्टनभी थीं मेरी स्थिति देखकर घबड़ा उठे। इस चिट्ठीका उत्तर देनेसे पूर्वही मुझे मान्यवर मिस्टर कर्जन (आजकलके वाइसराय लार्ड कर्जन) का पत्र मिला जिसमें लिखा था "कि मैं पिमार पामीर होता हुआ काबुल आकर आपसे मिल

ना चाहताहूं। आपकी आज्ञा आनेसे मैं आ सकूंगा" मैंने उन्हें उत्तर देकर बुलवालिया। यद्यपि वह फारसी नहीं समझते थे परन्तु एक दुभाषिये द्वारा उनसे मेरी बहुतसी बातें हुई। बातोंसे मुझे मालूम हुआ कि, वह बड़े उत्साही, परिश्रमी, अनुभवी, और साहसी युवा हैं और उन्हें संसारकी बहुत बातें मालूम हैं। वह हाजिरजवाब और मसखरे हैं। उनकी बातें सुन २ कर मुझे कईबार हँसी आई। यद्यपि वह मित्रताके नातेसे आये थे, उनके आगमनका सरकारी कामोंसे कुछ सम्बन्ध न था परन्तु उनसे राजकीय विषयोंमें बहुतसी बातचीत हुई। बातोंमें पश्चिमोत्तर सीमा और मेरे उत्तराधिकारी येही दो मुख्य विषय थे। मैं उनसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ और उनकी भेटसे मेरी तथा मेरे पुत्रोंकी इच्छा हुई कि, विलायती प्रबन्ध विभागवालों और कर्मचारियोंसे जितने हम लोग मिलें उतनाही अच्छा है।" लार्ड कर्जन कुछ दिन काबुल ठहरकर वहांसे विदा होगये परन्तु अमीरको आरोग्य न हुआ। अमीरकी भयानक बीमारी देखकर भविष्यतके विचारसे सरदार हबीबुल्लाभी न जासके। तब अमीरने अपने द्वितीय पुत्र सरदार नसरुल्लाको अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजना निश्चय किया।

सन् १९९५ के अपरैलमें काबुलसे चलकर सरदार नसरुल्ला लंडन पहुँचे। अमीरने इनको एक पुस्तक लिख दी थी उसमें लिखा हुआ था कि अमुक २ अवसरपर इस २ तरह बर्त्ताव करना। इसीके अनुसार इन्होंने काम किया। यह लंडनमें श्रीमती महारानी, प्रिंस आफ् वेल्स (श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड) और राजकुटुम्बसे मिलकर, वहांके प्रतिष्ठित २ लोगोंकी दावतमें संयुक्त हो, अंगरेज रमणियोंके नाच देखकर अगस्त मासमें लौटआये। अमीरने अपनी पुस्तकमें लिखा है कि, यद्यपि कितनेही राजकर्मचारियोंका बर्ताव इनके साथ अच्छा नहीं हुआ परन्तु इसबातसे मैं श्रीमती महारानी, राजकुटुंब और वहांके महत्पुरुषोंने जो इनका सम्मान किया उसे नहीं भूल सकताहूं। मैं इस कृपाके लिये उन्हें धन्यवाद देताहूं। इसीयात्राके समय गवर्नमेंटने सरदार हबीबुल्ला और

सरदार नसरुल्लाको जी सी एम जी की उपाधिया दी। सरदार नसरुल्लाने काबुल आकर अपनी यात्राके अनुभवपर एक पुस्तक लिखकर काबुलहीके प्रेसमे छिपवाई परन्तु अमीरने इसे न मालूम क्यो प्रकाशित न होनेदिया।

सरदार नसरुल्लाका सम्मान तो लन्डनमे बहुत हुआ परन्तु अमीरने जिस कामके लिये इन्हे अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा था उसमे सफलता न हुई। उन्होंने लिखा है कि "इस यात्राके खर्चका दोनों राज्योंको बोझा व्यर्थही उठानापड़ा। मैंने इसके साथ यह कहलवाया था कि, मेरा प्रतिनिधि लन्डनमे रहना चाहिये। यदि ऐसा न होसके तो मुझे विलायती गवर्नमेंटसे पत्र व्यवहार करनेका सीधा अधिकार मिलना चाहिये। यह बात पार्लियामेंटमे उपस्थित भी न करने दीगई। यदि की जाती तो अवश्यही वहांके अनुभवी मेंबर दो जातियोंकी इससे मित्रता दृढ होनेके लाभोंको समझते। अभीतक जिसतरह काम होरहा है उससे कभी उन्नति होना सम्भव नहीं है। आजकल भारतगवर्नमेंटका मुझसे जो कुछ पत्र व्यवहार होता है उसका मार्ग काबुल और कलकत्तेके मुसल्मान प्रतिनिधि है। मैं चाहताहूं कि, मेरा प्रतिनिधि जैसे भारतवर्षमें रहता है उसीतरह लन्डनमेभी रहाकरे।"

प्रकरण—६

रूसी सीमा।

अमीरने अपनी पुस्तकमे लिखा है कि वर्तमानशताब्दिमें बड़े राज्योंने अपनीसीमा बढ़ानेके लिये बड़े एक नये ढंग ग्रहण किये हैं। प्रथम यह कि,जब उन्हें कोई देश लेनेकी इच्छा होती है तब वेवहांके छोटे२ रईसोंमे फूट डालकर धीरे२ सबको अपनी मुट्ठीमे करलेते हैं। दूसरे २।३ बड़े राज्य परस्पर सम्मिलित होकर किसी देशमे प्रवेश करते हैं और धीरे२ अपना काबू सबपर गांठते जाते हैं तीसरे सीमानिर्द्धारित करनेके समय सीमा प्रदेशके किसी छोटे राज्यको प्रथम स्वतन्त्रकर पीछेसे उसे जा दबाते हैं।

पहली युक्तिसे ईरान रूसके हाथ आया है । दूसरी युक्तिसे यूरोपवाले चीनको लेरहे हैं और तीसरी युक्तिसे रूसने बुखारा लेलिया है । ऐसी दशामें रूस और भारतवर्षकी सीमा निर्द्धारित करनेका काम परम आवश्यक और परम कठिन था क्योंकि मेरा राज्य सिंह और भालूके बीचमें बकरेके समान है । दोनोंने बकरेपर आंख लगा रक्खी है । दोनोंही राज्य एशिया खण्डमें परम बलाढ्य हैं और दोनोंही दुर्बलोंको दबाकर अपना २ राज्य एशियामें बढ़ा रहे हैं। बचानेवाला केवल सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है ।" अमीरको ब्रिटिश गवर्नमेंटकी अपेक्षा रूसका खटका अधिक था । इन्होंने इसी विचारसे पहले रूसी सीमा निर्धारित करनेका संकल्प किया । यह बिना ब्रिटिश गवर्नमेंटसे पूछे किसी विदेशी राज्यसे किसी तरहका व्यवहार नहीं कर सकते थे । इस कारण इन्होंने भारत गवर्नमेंटसे लिखा पढ़ीकर प्रथम रूसी सीमाका निपटारा करनेके लिये सन् १८८४ ई० में कमीशन नियत कराया । इसमें भारतवर्ष, रूस और काबुलके कर्मचारी नियत हुए । कमीशनके ब्रिटिश एजेंट जनरल सर पिटर लम्सडनको इन्होंने लिखा कि-"मैंने रूस राज्यमें रहनेके समय उससे किसी तरहका प्रण नहीं किया है जिससे वह मेरी ओर बढ़ सके । मैं किसी प्रकारसे उससे डरता नहीं हूं । जबतक मेरे हाथमें शक्ति रहेगी मैं अफगानिस्तानकी एक अंगुल भूमि भी रूसके हाथ न जाने दूँगा । आप इसलिये रूस काबुलकी सीमाका निपटारा साहस और शक्तिके साथ कीजिये, परन्तु खेद है कि इसका परिणाम अच्छा नहीं निकला।" रूस जैसे बने तैसे अफ़गानिस्तानकी ओर बढ़ना चाहता था किन्तु इस कमीशनसे उसकी इच्छा पूर्ण नहीं होसकती थी । यह बात उसे बुरी लगी । एक ओर रूसी जनरल ज़ेलेनी कमीशनके साथ सीमाका निपटारा करने लगे और दूसरी ओर रूसने अफगानिस्तानके भीतर प्रवेश करना आरम्भ किया । अमीरने सीमाप्रान्तपर सेना रखनेकी आज्ञा माँगी तो अंगरेजोंने निषेध कर दिया । इसीका परिणाम यह हुआ कि कमीशनके समक्ष रूसने पंजदेह ले लिया । यह पहले लिखा जा चुका है कि रूसने सन् ८५ ई० में पंजदेह लिया था इसी वर्षके मई मास

मे भारतवर्षके वाइसरायने अमीरको लिखा कि 'रूसने पंजदेहके बदले आपको जुल्फिकार देना स्वीकार किया है।" यह बात अमीरको भी पसन्द आई।

जनरल लम्सडनके चले जाने पर सर् वेस्ट रिज्वे भारतगवनमेंटकी ओरसे नियत हुए। उन्होंने बहुत बारीकीसे अफगानोंके दावापर ध्यान देकर सीमाका निपटारा कराया। अमीरने इनके कामसे प्रसन्न होकर इन्हें और इनके साथियोंको अनेक पदक (तमगे) दिये। २२ जुलाइ सन् ८७ ई० को सीमाके निर्द्धारण पत्र पर रूसगवनमेंटके हस्ताक्षर होगये। इस बातपर अमीरने लार्ड डफरिनको धन्यवाद दिया। सन् ९३ में रूससे फिर झगड़ा खड़ा हुआ। चमने-बेदक जलसे रूसी प्रजा अपनी भूमिको सींचना चाहती थी। इसका निपटारा भारतगवर्नमेंटकी ओरसे कर्नल येटने आकर किया।

जिस समय सर् वेस्ट रिज्वेने जुल्फिकारसे ख्वाजा सालार तककी सीमाका निपटारा किया अमीर लिखते हैं कि मैंने कहदिया था कि 'पामीर तकका फैसला करदो परन्तु मेरी बातपर बिलकुल ध्यान नहीं दियागया। सन १८७३ ई० की सन्धिके अनुसार बदख्शां और वाखन अफगानिस्तानके भीतर गिने जाने चाहिये थे और रोशान तथा शिगनन बदख्शांका एक भाग है परन्तु ये दोनो स्थान रूसी सरहदपर होकर उसकी चराई को रोकते हैं इस कारण रूसने दोनोंके लेनेका मनसूबा किया था परन्तु मैंने रूसके लेनेसे पहले ही इन दोनो स्थानोंको अपने अधिकारमें करलिया" इस विषयमें रूसी कर्नल यानफसे अमीरके कमन्दारका जो झगड़ा हुआ उसका उल्लेख पहले किया जाचुका है। इसबातका निपटारा सन् ९३ ई० में ड्यूरंड मिशनके समय हुआ। अमीर लिखते हैं कि, मैंने अपनी सेना वहांसे हटाकर नवीन सन्धिके अनुसार दरवाज लेलिया। सन् ९५ ई० में जो रूस और इंग्लैंडकी सन्धि हुई उसके अनुसार आक्सस नदीके इसपार दरवाजका इलाका तुरानसे काबुलको मिलगया और काबुलने रोशान तथा शिगनन रूसको लौटादिया। इसतरह रूसी सीमाका निर्द्धार होनेके अनन्तर उस ओर किसी तरहका नया झगड़ा न हुआ

प्रकरण—७.

भारतवर्षकी सीमा ।

लार्ड रावर्ट्स ।

अफगानिस्तान की रूसके साथ सीमा का निपटारा करने के विषयमें अंगरेजोंने अमीरको जो सहायतादी उसका वर्णन गत प्रकरणमें हुआ है। यहां काबुल राज्यकी भारत गवर्नमेंट के साथ सीमा क्योंकर नियतहुई, इसका उल्लेख करना आवश्यक है । सीमाका निपटारा करनेके लिये लार्ड रावर्ट्सको काबुल भेजनेके विषयमें अमीरकी लार्ड लेंस डाउनसे जो खटपट हुई उसका उल्लेख इसीभागमें होचुका है। उसके सिवाय लार्डलेंसडाउन ने एक बार फिर लार्ड रावर्ट्स को नियतकर अमीरको पत्रलिखा।अमीरने समझा कि लार्ड रावर्ट्स सिपाही हैं,राज्यबढ़ानेकी नीतिके पक्षपाती हैं, संधिकरनेमें सैनिक की आवश्यकता नहीं है वह एक बार काबुलियों से लडकर उन्हें परास्त करचुके हैं इसकारण प्रजा उनसे अप्रसन्न है । वह शीघ्रही पेंशन लेकर विलायत जानेवाले हैं इसीलिये इन्होंने अपने सेवक सबुसालटर पाइनको कलकत्ते भेजकर इस मिशनको रुकवाया । इस कार्यमें अमीरको सफलता हुई । बलाटलगई । लार्डरावर्ट्स पेंशन लेकर विलायत चलेगये ।

यहां यहभी लिखना आवश्यक है कि लार्ड लैंसडाउनने सीमाके विषयमें अमीरके पास जो नक्शा भेजा था, उसमें वजीरी, नवीन चमन वगैरह बुलंद खेल और मुहम्मद अस्मार तथा चित्रालको भारतवर्षमें मिला लिया गया था । अमीरने इसका यह उत्तर दियाः—

"यदि सीमाप्रान्तके यागिस्तानकी वीर और लड़ाकू प्रजाका अधिकार मुझे दिया जायगा तो मैं उसे अंगरेजोंके और मेरे शत्रुओंसे लड़नेके योग्य बना सकूंगा परंतु यदि आप उन्हें मुझको न देंगे तो वे न मेरे काम आवैंगे

और न आपके। व लुटेरे हैं। डाका डालेंगे और आपको उनसे सदा लड़ना पड़ेगा। केवल इतनाही नहीं किन्तु उनका मेरे हाथसे निकल जाना प्रजाकी दृष्टिमें मेरे अपमानका कारणहोगा। अपमानसे मैं निर्बल पड़जाऊंगा और मेरी निर्बलतासे भारतगवर्नमेंटकी हानि होगी।

परन्तु अमीर कहते हैं कि " मेरी सम्मति गवर्नमेंट के पसन्द न आई। उसने सीमाप्रान्तके निवासियोंको मेरे हाथ में से छीन लेनेके उद्देश्य से कुर्रम वैली और वानाजोबसे मेरे कर्मचारियोंको निकल जानेकी धमकी दी। मेरी इच्छा लड़ाई और शत्रुता करनेकी न थी इस कारण मैंने उन्हें बुला लिया। अस्मारके मिर्जा तैमूरशाहसे सन् ८७ ई० में सन्धि होकर वह और उसका राज्य मेरे आधिपत्यमें आगया था। मेरी रक्षामें आनेसे वह उसके शत्रु बाजोरके उमरावोंके हाथसेतो बचगया परन्तु उसीके किसी गुलामने उसके प्राण ले डाले। उसके मरतेही अस्मारमें सन् ९१ ई० के दिसम्बरमें मेरा राज्य हो गया। इस बातसे भारत गवर्नमेंटको बहुत दुःख हुआ क्योंकि वह काफिरिस्तानका मेरे अधिकारमें जाना अच्छा नहीं समझती थी। गवर्नमेंटने मुझको लिखा कि अस्मार छोड़ दो परन्तु अस्मार, कुनार, लमगान, काफिरिस्तान और जलालाबाद आदि प्रान्तोंका फाटक है। इसके रहनेसे पामीर, चित्रालकी सड़क रक्षित रह सकती थी और हिरात कन्दहार तथा बलखकी रक्षाके लिये भी इसके रखनेकी आवश्यकता थी इस कारण मैंने अस्मारका अधिकार न छोड़ा। इसी तरह इस ने मुझे चमन छोड़नेकी भी धमकी दी थी। इधर अंगरेज लोग मुझसे कहते जाते थे कि हम अफगानिस्तानका स्वतंत्र रहना पसन्द करते हैं और उधर सीमाप्रान्तके अंगरेज अफसर काबुल राज्यमें रेल बनाकरके मेरे पक्षमें छुरा मारनेकी चिन्तामें थे और बहुत शीघ्रतासे सीमाकी ओर बढ़ रहे थे। ऐसे अवसरमें यह गप्प उड़ी कि कन्दहारतक रेल लेजाना पार्लिमेंटमें निश्चय होगया है। केवल इतनाही नहीं बरन् रूस भी मुझे पैर पैर पर कष्ट दे रहा था। "

प्रकरण–८.

डयूरेंड मिशन ।

गत प्रकरणोंमें जिन बातोंका अमीरने वर्णन किया है उनके निपटारेके लिये भारतगवर्नमेंटसे फिर लिखा पढ़ी करके अमीरने डयूरेंड मिशन नियत करवाया। यह बात गत प्रकरणोंमें प्रकाशित होचुकी है कि भारत गवर्नमेंटके बहुत कालसे कहते रहने पर भी जबतक लार्ड राबर्ट्स इस देश में रहे अमीरने भारतवर्षसे मिशन जाना स्वीकार नहीं किया था। जब वह पेन्शन लेकर चले गये और सरकारने डयूरेंड साहबको भेजना चाहा तो अमीरने हर्ष पूर्वक स्वीकार कर लिया। अमीरने लिखा है कि "सर मोर्टिमर डयूरेंड बड़े चतुर राजनीतिज्ञ है। वह अपनी रक्षाका भरोसा मेरे ऊपर डालकर कई एक योग्य २ अंगरेजों सहित १ सितम्ब सन् १९०२ ई० को काबुल पहुँचे। डयूरेंड साहब केवल राजनीतिज्ञही नहीं है वरन् फारसीके अच्छे पंडित है।" इनके वहां पहुँचनेपर उत्तम प्रकारसे उनका स्वागत करनेके अनंतर अमीरने इनसे संधिकी बात चीत की। अमीरने इस समय एक बातका बड़ा चातुर्य किया। जिस समय सर् मोर्टिमर डयूरेंडसे संधिका प्रस्ताव होरहा था परदेकी ओटमें इन्होंने गुप्त रीति पर अपने मीर मुन्शी सुलतान मुहम्मद खांको छिपा रक्खा और उनसे आज्ञा देदी कि "मेरी डयूरेंड साहब से जो २ बातें हों उन सबको लिखते जाओ। इसीतरह उन लोगोंके आपसमें जो २ बातें हो उन्हेंभी लिखलो। डयूरेंडसाहबके मुझसे जो प्रश्नोत्तर हुए उन सबको इन्हों ने लिखलिया। ये कागज़ अभीतक मेरे दफ्तरमें रक्खे हैं।" इन सारी बातों-का सार यही था कि रोशन और शिगनन प्रान्तके विषयमें काबुलका रूससे जो विवाद था वह प्रकरण ६ के लेखानुसार मिटगया। इसी संधिके अनुसार वाखनका परगना अमीरको मिला। यह परगना काबुल-की सीमासे बहुत दूर था इसलिये उन्हों ने भारतगवर्नमेंटको प्रबंध करनेके लिये सोंपदिया। इसबार काबुल भारतवर्षकी सीमा चित्रालसे बरोगिलघाटी होकर पेशावर तक और वहांसे कोहमलिक स्याहतक

चलेगए। इसतरह वाखन, काफिरिस्तान, असमार, लालपुरा और वजी रिस्तानका एक हिस्सा अमीरको मिला। और अमीरने नवीन चमनके रेल्वेस्टेशन, चेगेद, शेष वजीरिस्तान कुलदरोल, कुरम, अफरीदी, बाजोर, स्वात, बनेर, दिर, चिलास और चित्रालका दावा छोडदिया। दोनों सधिपत्रोंपर दोनों ओरके हस्ताक्षर हुए। बिगडी हुई मित्रताकी फिर मरम्मत होगई। गवर्नमेंटने तबसे १२ लाखके बदले १८ लाख रु पया प्रतिवर्ष काबुलको देना निश्चय किया। इसके सिवाय कितनेही शस्त्र लेकर भविष्यतमें काबुलको भारतमें शस्त्र खरीदनेकी स्वतन्त्रतादी। १३ नवबरको अमीरने सलामखाना महलमें भव्यदर्बार किया। इस दर्बारमें डयूरेंडसाहब अपने साथियो सहित उपस्थितहुए। अमीर और डयरड साहबने अपने २ व्याख्यानमें संधिका वर्णनकर दोनों राज्योंकी मित्रतापर हर्ष प्रकट किया। डयूरंड साहबने भारतवर्षके वाइसराय, और स्टेट सेक्रेटरी लार्डकिम्बर्लीके तार पढकर सुनाये। इन व्याख्यानोंकी दो ह जार प्रतियां छपाकर काबुलके मख्य २ लोगोंमें वितरण कीगई। अमीरने मिशनके लोगोंको अपनी ओरसे पदक (तमगे) दिये और इसत रह सीमाप्रान्तके झगडोंका निपटाराकर सर मोर्टिमर डयूरेंड अपने साथियों सहित प्रसन्नता पूर्वक भारतवर्षको लौट आये।

अमीरने लिखा है कि "लार्ड लेंसडाउनने सन् १८९४ ई० में भारतव र्षसे विदाहोते समय जो व्याख्यान दिया उसमें कहागया था कि इस प्रबंधसे सीमाप्रान्तकी प्रजा गवर्नमेंटके साथ अब किसी तरहका छेड़छाड नहीं करेगी परंतु उनका अनुमान ठीक न निकला। मेरेही अनुमा नके अनुसार अंगरेजोंको चित्राल, बाजोर, मलाकंद, वजीरी, और अफ रीदी युद्धमें परिणत होना पडा। इसका कारण यहीथा कि उन्हें सदाके लिये इसलामी शासनमें आनेकी आशा नरही और अंगरेजोंके अधीन रहना उन्होंने अच्छा नहीं समझा।" इस संधिके बाद काबुलसे भारत गवर्नमेंटका मनमुटाव मिटगया। फिरकोइ नया उपद्रव नहीं हुआ किन्तु सरकारको सीमाप्रान्तवालोंके साथ कएक लडाइयां करनीपडीं। लोग कहते है कि इन लडाइयोंमें अमीर अबदुररहमानने गुप्तरूपपर अंगरेजोंके शत्रुओंकी सहायता कीथीपरंतु यह बात किसी तरह प्रमाणित नहींहोसकीहै।

प्रकरण—९.

अंगरेज़ इतिहासकारोंकी सम्मति ।

"यद्यपि कितनेही ओहदेमनवाले अंगरेज कर्मचारि और ग्रन्थकारोंने भारतवर्षकी सीमा आगे बढ़ानेकी नीतिसे इंग्लैंड और काबुलमें परस्पर वैमनस्य उत्पन्न करदिया था और इसीतरह कितनीही अफगानजातों को अंगरेजोंने अपने अधीन करलिया है परन्तु इस नीतिसे ब्रिटिश गवर्नमेंटको शांति रक्षाके लिये भारी खर्चेके बोझेमें उतरनेके सिवाय कुछ लाभ नहीं हुआ है। केवल इतनाही क्यों वरन् इस नीतिसे गवर्नमेंटकी चिन्ता भी बहुत बढ़गई है परन्तु सौभाग्य वश अंगरेज जाति, उसके राजनीतिज्ञ और समस्त प्रजा वास्तवहीमें अफगानिस्तानको दृढ़ और स्वतंत्र रखना अच्छा समझती है। उन्हें निश्चय है कि अफगानिस्तानको स्वतंत्र रखनेहीमें भारतगवर्नमेंटकी रक्षा है । हर्षकी बात है कि ऐसे शांति प्रिय लोगोंकी संख्या दिन २ बढ़ती जाती है। वे दिखला रहे हैं कि अफगानिस्तानका लाभ हमारे अंतःकरणमें निवास करता है। वे लोग केवल बातोंहीसे नहीं किन्तु कामोंसे भी काबुलकी सहायता करते हैं। अंगरेज मन्त्रिमण्डल काबुलकी रक्षा करनेका तन मन धनसे प्रयत्न कर रहा है। आजकल अफगानिस्तान चक्कीके दो पाटोंके बीचमें है। इतिहाससे निश्चय होता है कि इंग्लैंडने अफगानिस्तानपर अधिक हस्तक्षेप कर हानि भी अधिकही उठाई है किन्तु रूसने जैसे आक्रमण कम किया उसी तरह उसकी हानि भी कम हुई है।" यह अमीरका कथन है किन्तु मैं यहांपर एक अनुभवी अंगरेजग्रन्थकारकी भी इस विषयमें सम्मति लिखना उचित समझता हूँ। इस विषयमें सबसे बढ़कर सम्मति लार्ड कर्जनकी माननीय है । उन्होंने अपनी पुस्तक 'रशिया इन् सेंट्रल एशिया' में लिखा है कि:—

"रूस बहुत वर्षोंसे भारतवर्षपर आक्रमण करना चाहता है । सन् १७९१ ई० में रूसकी रानी कैथेराइन्‌ने बुखारा और काबुल होकर भारतपर

चढ़ाइ करनेका विचार किया था। सन् १८०० में रूसी सम्राट पाल और फरासीसी राजा नेपोलियन मिलकर भारतपर आक्रमण करनेको तैयार हुए थे। सन् १८०७ ई० में सम्राट नेपोलियन और एलेक्ज़ेंडरने ईरानकी सहायतासे भारत लेनेका मनसूबा किया था किन्तु आपसकी फूटसे उनकी बात मनकी मनमही रहगइ। सन् १८३७ ई० में रूसने भारतलेने की इच्छासे इरानसे मिलकर हिरातपर आक्रमण किया था परन्तु हिरा तका किला उनसे टूट न सका। सन १८५५ ई० में फिर भारतपर आक्रमण करनेकी तयारी की परन्तु यूरोपियन राज्योंने परस्परकी सन्धिके अनुसार उसे इस कामसे रोक दिया। सन ७७ से ७८ तक उसने अमीर शेरअलीको भडका कर अंगरेजोंके विरुद्ध कड वार चालें की थीं।'

इसी तरहकी बात और ॰ ग्रन्थकारोंने भी लिखी है। लार्ड कर्जनकी सम्मतिसे दो बात निकलती हैं। एक रूस भारतवर्षपर कमसे कम दोसौ वर्षसे आक्रमण करना चाहता है दूसरे चाहता तो है परन्तु कर नहीं सकता है। इसबातको लिखकर अमीर अब्दुर्रहमानने यह प्रकाशित करना चाहा है कि रूस जो भारतवर्षपर आक्रमण करनेकी इच्छा रखनेपर भी नहीं कर सका है उसका कारण अफगानिस्तान है और यही दिखलाकर उन्होंने अपनी पुस्तकमें अंगरेजोंको अनेक जगह सम्मति दी है कि यदि रूससे बचना चाहो तो काबुलसे मित्रता रखकर उसे दृढ करनेका प्रयत्न करो। उन्होंने इसी तरह अनेक स्थलपर अपने पुत्र और प्रजाको भी यही रायदी है कि काबुलका भला इसीमें है कि वह इंग्लैंडसे मित्रता रक्खे। एलफिन्स्टन साहबने अपनी किताबमें काबुलका इंग्लैंडके साथ सबध दिखाकर अंतमें लिखा है कि—"ऐसी घटनासे भारतवर्षका लाभ धूलमें मिलजायगा और उस समय सम्भव है कि यूरोपियन राज्योंकी ओरसे हस्तक्षेपहो।" शिमलामेनिफेस्टोमें लिखा है कि—" हम अमीरको उसके राज्यसे वंचित नहीं करसकते थे किन्तु हमने दोस्त मुहम्मदको जिसने हमारी कुछ हानि नहीं की थी व्यर्थ सताया। यह बात केवल हमारी पालिसीके विचारसे ही की गई और उसका परिणाम उसे भोगना पड़ा।" मार्किस आफ वेलस्ली कहा करते थे कि पठान, जगक्ष, रूप, बंध और

पहाडवाले देश (काबुल) पर चढ़ाई करना मूर्खता है ।” अमीरने इस प्रकारके प्रमाण उद्धृतकर अपने कथन की पुष्टि की है ।

प्रकरण—१०.

रूसी चालें और इस्लामी राज्य ।

अमीरने लिखा है “कि मैं बालवयसे सन् ८० ई० तकके चालीस वर्षमें रूस राज्य वा उसके सीमाप्रांतमें रहा हूं । मैंने रूसकी चीनी और ईरानी सीमाकी यात्रा की है । मैंने अपनी आयुका अधिक समय राजनैतिक विषयोंके अनुभवमें व्यतीत किया है । मैंने इंग्लैंड और रूस के विचारों, उनकी चालें और राजनीतिपर अधिक विचार किया है । इस कारण मेरा इस विषयमें बहुत अनुभव है । मैं इस विषयमें रूस वा इंग्लैंडका पक्षपात करके नहीं कहता हूं किन्तु जैसा कुछ मेरा अनुभव है उसीके अनुसार लिखना मेरा उद्देश्य है । रूसका बहुत कालसे यही उद्देश्य है कि न्यायसे वा अन्यायसे, मित्रतासे वा शत्रुतासे, शांतिसे वा युद्धसे, जैसे बने तैसे एशियाके मुसलमानी राज्योंको जड़से उखाड़ देना चाहिये । वह चाहता है कि रूम, ईरान और काबुलका संसारसे बिलकुल नाश होजाय और यदि वे रहें भी तो केवल रूसके हाथका खिलौना होकर रहें । वह सदा इन तीनों राज्योंको हडप जाना चाहता है । यदि इस काममें उसकी सफलता न हुई तो उसकी इच्छा है कि इनसे अंगरेजोंका अवश्य विरोध रहै और उसे विश्वास है कि यदि इनका अंगरेजोंसे विरोध होजायगा तो वे अवश्यही हमारी सहायतामें उनसे लड़ेंगे । इसी लिये वह काबुल और इंग्लैंडका परस्पर मनमुटाव करानेका प्रयत्न किया करता है । इसके सिवाय एशियाके समस्त मुसलमानी राज्यों और जातियोंमें भी फूट फैलाना वह अपने लिये हितकर समझता है । उसे भय है कि यदि रूसको कभी किसी मुसलमान राज्य वा इंग्लैंडसे लड़ना पड़ेगा तो उसकी समस्त मुसलमान प्रजा बलवाकर उठेगी ।” इसविषयमें अमीरने कई एक प्रमाण दिये हैं वह

पने चरित्रमें लिखते हैं कि-"जिनदिनों में रूसमें रहता था अनेक
र मेरी रूसी तुर्किस्तानके गवर्नर जनरल, जनरल काफमान
और अपरापर रूसी राजनीतिज्ञोंसे राजनैतिक विषयोंमें बातचीत
हुई थी। उसी समयसे मुझे यह विदित होगया है कि, रूस उत्तरा-
ी राज्योंको नष्ट भ्रष्ट करनेकी चिंतामें है। उस समय उन्हें आ
ा न थी कि, मैं किसीदिन अफगानिस्तानका अमीर होकर उनकी
स घृणित चालका कट्टर विरोधी हूंगा सन् ८५ ई० में जब मैं जनरल काफ-
मानसे बातचीत कररहा था उन्होंने रूसके लण्डनस्थित मिनिस्टर
कौंटस्कोवलफको लिखा था कि- "रूस और इंग्लैंडका एशियामें एक
ही उद्देश्य और एकही शत्रु है। उनका उद्देश्य सभ्यता फैलाकर इसा
ई धर्मकी उन्नति करना और उनका शत्रु इस्लामी धर्म है और म
यतो केवल नयारी हैं किन्तु मुसल्मानही अंगरेजोंके भारतराज्यके
शत्रु हैं। भारतवर्षके अंगरेजी राज्यका इस्लाम मत बहुत शत्रु भयानक
शत्रु है और समय पड़तेही भारतवर्षके समस्त मुसल्मान अंगरे
जोंके विरुद्ध बल्वाकर उठेंगे। इस कारण इंग्लैंडको रूसके संयु-
क्त होकर अफगानिस्तान आदि एशियाके समस्त राज्योंको आधा
बांटलेना चाहिये। इससे भारत और रूसकी सीमा पास २ आजायगी
और इंग्लैंडको भयानक चिंता दूर होगी क्योंकि तब इसका साम्राज्य
उसका मित्र बनजायगा और यही भारतवर्षमें (मुसल्मानी) बल
वा होनेपर इंग्लैंडका सहायक होगा अथवा और किसी अवसरपर
सहायक होगा इस कारण इंग्लैंडको रूसकी मित्रतापर विश्वास क
रना उचित है। इसी सम्मतिके अनुसार लण्डनका रूसीराज दूत इंग्लैं-
का सदा रूसकी मित्रता और अफगानिस्तानसे विरोध करनेको भड़
काया करता है। इसीलिये रूसने अमीर शेरअलीको अपनी मि
त्रकी लुभानी बातोंसे उभारकर इंग्लैंडका बाबुलसे युद्ध कराया और
इसीसे दोनो राज्योंको बहुत हानि उठानी पड़ी। इसका यह भाव क
ी कहावतके समान है जिसमें कहा जाता है कि, चोरसे कहो कि तू

चोरीकर और साहसे कहो कि तुम जानते रहो। अमीर शेरअलीने रूसकी बातोंमे आकर अपना सर्वनाश करडाला। अफगानिस्तानको निर्बल करनेकी रूसी चालको इंग्लैंडभी नहीं रोकसका। केवल इतनाही क्यों उसने उस समय कन्दहार कुर्रम और खैबर आदि अनेक प्रान्त लेकर और भी निर्बल करदिया। इसका फल यह हुआ कि, रूसी सीमा भारतकी सीमाके निकट आ पहुँची और अफगानिस्तान निर्बल पड़गया। यही जनरल काफमानकी उक्त नीतिका फल हुआ। इसीनीतिके अनुसार मध्यएशियाके मीरों और बुखाराके अमीरके साथ वह बर्ताव कर रहा है और इसी तरह रूस ईरान और काबुलपर उसकी आंख लगरही है। धीरे २ वह एशियाके मुसलमानी राज्योंको निर्बल करनेमे सफलभी होता जाता है। उसने इसी उद्देश्यसे एशियाके कई एक इसलामी राज्योंको पूरा और कई एकको अधूरा ले लिया है। जब कभी वह किसी मुसलमानी राज्यको सेनाकी उन्नति करते देखता है तो उसका कलेजा जलकर राख होजाता है क्योंकि जनरल काफमानकी सम्मतिके अनुसार मुसलमानी धर्म उसका कट्टर शत्रु है "

प्रकरण—११.

इंग्लैंड और इसलामीराज्य।

अमीरने अपने चरित्रमे लिखा है कि "अंगरेजीराज्य संसारके समस्त मुसलमान और एशियाके मुसलमान राज्योंसे मित्रता रखता है। उसकी पूर्ण इच्छा यही है कि ये राज्य सदा स्थिर रहै और इनकी स्वतंत्रतामें किसी तरहका विघ्न न पड़े परंतु इस नीतिमें कभी २ परिवर्त्तन होजाया करता है। अंगरेजी नीति रूसकी तरह दृढ, चिरस्थायी और निरंतर नहीं है। जो मनुष्य वहांका जिससमय अमात्य होता है उस समय उसीके विचार और नीतिका राज्यभर अनुकरण करता है किन्तु जिस समय दूसरे मत वालेका मंत्रिमंडल होजाताहै साम्राज्यकी नीतिभी बदलजाती है। इसकारण यह नहीं कहाजासकता है कि इंग्लैंडकी अमुक नीति

है परंतु इतना निश्चय है कि इंगलैण्डकी साधारणनीति इसप्रकारकी है। इसलामी
राज्य जो भारतवर्ष और एशियाके रूसीराज्यके बीचमें दीवारहैं, बने रहें
और उनकी स्वाधीनता दृढ़ रहे जिससे रूस भारतकी ओर न बढ़सके प
रंतु रूस इस नीतिके विरुद्ध है। वह अपनी सीमाको भारतवर्षकी सीमा
से मिलाना चाहता है। इसे केवल भय इतनाही है कि जिसदिन वह रूस
ईरान और अफगानिस्तानसे युद्ध करेगा समस्त मुसलमान प्रजा उसके
विरुद्ध खड़ी होजायगी।

इसमें सन्देह नहीं है कि संसारभरके मुसलमान रूसकी अपेक्षा इंगलैण्डकी
मित्रताको अधिक अच्छा समझते हैं। वे जानते हैं कि शान्ति इंगलैण्डसे
ही रहसकती है। इसकारण इंगलैण्डके कामोंसे वे चाहे जितने असन्तुष्टहों
परन्तु रूससे न मिलेंगे और यदि मिलेभी तो विपरीतदशाके दबाव पड़नेसे
मिलेंगे। इन बातोंपर विचार करनेसे इंगलैण्ड भारतवर्ष, रूस, ईरान और अ
फगानिस्तान इन सबके लाभके लिये एक आवश्यक प्रस्ताव है। वह प्रस्ता
व यही है कि रूस, ईरान और अफगानिस्तान तीनों राज्य एकही धर्मके
अनुयायी-अतिभाई हैं इसलिये तीनोंका आपसमें सन्धि द्वारा तीनों राज्यों
का संबंध दृढ़ और जाने होजाना योग्य है। ऐसा होनेसे भारतवर्षपर रूस
के चढ़ाई करनेका खटका भी मिट जायगा और रूसके आक्रमणके
भयसे ईरानकी सीमाकोभी बचना होगा। इसकी लागतसे इंगलैण्डका अधिक लाभ
है इसलिये वह जितना शीघ्र इस बातके लिये होसके प्रयत्न करे इत
नाही अच्छा है। अफगानिस्तानका सन्धिके अनुसार इंगलैण्डसे मित्रताका
संबंध हुआ है किन्तु ईरान रूस और इंगलैण्डकी सन्धि करना असंभव है।
यही बात ईरानके शाह और रूमके सुलतानभी इंगलैण्डसे इस
बात कहा चाहते हैं। किन्तु हम सब जानते हैं कि इंगलैण्ड हमारा साथ नहीं
चाहता है किन्तु सहायता करनेमें उसका अपना आग्रह। सामान्य
समझनेवाले सब समझते हैं। इसकारण हम लोग उनकी मित्रताके
लालची बने रहते हैं। यह तबतक होगा जबतक कि वह इसके
अनुसार चलेगा विपरीत इसके न चलेगा और इसके

राज्योंकी सहायता करता रहेगा । जिससमय सन् १८७७ ई० में अमीर शेरअली इंग्लैंडके विरुद्ध जहाद करनेको उद्यत हुए थे और अपनी सेना भारतवर्षकी सीमापर इकट्ठी करने लगे थे, रूमके सुल्तानने अपना एक मुसलमान प्रतिनिधि भेजकर कहलवाया था कि "अंगरेजों से लड़ने में मुसलमानोंकी बड़ी हानि होगी" परंतु शेरअलीने इस बातपर विश्वास न किया । कारण यह हुआ कि पहलेसे शेरअलीके साथ रूमका किसी तरहका पत्र व्यवहार न था इसलिये उन्होंने समझ लिया कि सुल्तान यातो रूसके हाथका खिलौना बनकर धोखा देते हैं अथवा यह मनुष्य इंग्लैंडका जासूस है । इन्हीं विचारोंसे मूर्ख शेरअलीने रूम राज्यकी सम्मति न मानी । यदि पहलेसे दोनों राज्योंका पत्र व्यवहार होता तो इंग्लैंड और अफ़गानिस्तानको इससे बड़ा लाभ होता ।

यदि भूलकर भी रूस भारत लेनेकी इच्छासे किसी मुसलमानी राज्य पर चढ़ाई करेगा तो उसे केवल इस्लाम राज्यसे लड़नेमेंही कठिनता न पड़ेगी किन्तु एक ओर उसकी समस्त मुसलमान प्रजा बलवाकर उठेगी और दूसरी ओर इंग्लैंड अपनी शक्तिमती जल सेनासे सेंटपीटर्सबर्ग अथवा रूसके यूरोपियन प्रांतोंपर आक्रमण किये बिना न रहेगा । रूस राज्य प्रेमसे शासन करनेके बदले प्रजाको डराकर अपनी मुट्ठीमें रखना चाहता है इस कारण रूसके उस समय टुकड़े २ होजायँगे परंतु खेद की बात है कि ब्रिटिशराज्य मुसलमानी राज्योंकी सहायता कर उन्हें दृढ़ करनेके बदले या यों कहिये कि रूसकी चढ़ाई रोकनेके स्थानमें अपनी संधिके विरुद्ध चाल चलता है । जिस समय रूस किसी पूर्व देशी राज्य का एक भाग ले लेता है तो इंग्लैंड दूसरा लेनेकी चेष्टा करता है । इस तरह इस्लामी राज्यके दिन २ टुकड़े २ होते जाते हैं और रूस भारतवर्षके पास २ आता जाता है । जो रूस एक दिन भारतवर्षसे हजारों मील दूर था वह अब हिन्दुस्तानके अति निकट आ पहुँचा है ।

दैव संयोगसे यदि रूसका इंग्लैंडसे युद्ध हो पड़े तो समस्त मुसलमानी राज्य और प्रजा इंग्लैंडकी सहायता देगी क्योंकि वह जानते हैं कि हमारानी विक्टोरियाके राज्य में वह अपने धर्मके कार्य स्वतंत्रतासे कर

सकते हैं, दूसरे उन्हें भय है कि यदि एशिया से अंगरेजी राज्य जाता रहेगा तो रूस मुसलमानी देशोंको निगल जायगा और उसे रूसी अत्याचारमें पिसना पड़ेगा किन्तु जबतक एशियामें दूसरा शक्तिमान राज्य बना रहेगा रूस अत्याचार न कर सकेगा। जो मनुष्य इरानको रूसके चगुलमें फँसा समझते हैं उनकी भूल है। रूसकी सेनाका बलही ईरानको डराकर रूसके दबावमें लाता है। यदि ईरानको विदित होजाय कि रूस इंग्लैंडसे घबड़ा उठा है तो वह तुरतही रूस रीछके पंजेसे निकल जायगा"

अमीरके इसकथनसे अंगरेजोंको फुसलानेकी बातें कहनेके दोही प्रयोजन हैं। एक वह अंगरेजोंको अपनी मित्रताके लाभ दिखलाकर अपना मतलब गाठना चाहते थे और दूसरा यह कि उनकी इच्छा थी कि इरान, रूम और अफगानिस्तानकी परस्पर संधि होकर संसारमें मुसलमानी राज्य इसाइयोंसे टक्कर लेने योग्य तैयार होजायँ। उनकी नीति बड़ी गूढ़ है। उन्होंने अपने शासन कालमें काम भी ऐसेही किये हैं। इन बातोंसे निश्चय होता है कि अमीर केवल लड़ाकू सिपाहीही न थे किन्तु बड़े भारी राजनीति कुशल भी थे।

प्रकरण—१२

रूसकी भारत पर चढाई।

अमीरने अपने चरित्रमें लिखा है कि 'वर्तमान स्थितिको देखते हुए रूस यद्यपि भारतवर्ष लेनेकी दृढ इच्छा रखता है परन्तु उसका चढाई करना असम्भव है। इस विषयमें अङ्गरेज राजनीतिज्ञोंकी सम्मति रह तरहकी है। जो लोग कहते है कि रूस भारत पर चढाई कर इंग्लैंडसे भिड़ना नहीं चाहता है उनकी सम्मतिको मैं चार भागोंमें बाँटता हूँ। इनमें प्रथम वे लोग हैं जो राजनीतिके पेचोंको नहीं जानते। ये संधि-पत्रों पर विश्वास कर इस बातपर ध्यान नहीं देते कि रूस समय पड़ने पर संधिका भंग करनेमें कभी आनाकानी नहीं करता है और न उसे शपथ तोड़नेमें संकोच है। दूसरा भाग इस प्रकारकी सम्मति देनेवालों

का वह है जिसमें किसी न किसी तरह रूससे सम्बन्ध रखनेवाले लोग हैं। तीसरी सम्मति वाले मनुष्य इंग्लैंडके महत्वके घमंडमें रूसको कुछ माल नहीं समझते हैं और चौथे लोग अपना "शांतिप्रिय" नाम धरते हैं। वे देखते जाते हैं कि मध्यएशियामें रूस प्रांतपर प्रांत हड़प किये जाता है, धीरे २ भरतखंडकी सीमाके पास पहुँचता जाता है और भारतपर आक्रमण करनेके उसके अनेक कौशल प्रकाशित और सच्चे सिद्ध हो चुके हैं परन्तु इन्हें विश्वास है कि यदि इंग्लैंड रूसके कामोंमें हस्तक्षेप न करेगा तो रूस भी कभी भारतपर आक्रमण न करेगा। शाहनामेमें फिर्दौसीने लिखा है कि " यदि तुम अपने शत्रुसे यह प्रकाशित कर रहे हो कि हम युद्धके लिये तैयार नहीं है तो तुम उसे अपने ऊपर चढ़ाई करनेका न्योता देते हो। " इस कारण जो लोग अपनेको शांतिप्रिय बनाकर रूससे नहीं लड़ाना चाहते है वे उस कबूतरके समान हैं जो बिल्लीका आक्रमण देखनेपर अपनी रक्षाका उपाय न कर डरके मारे आँखें बंद करलेता है।" अमीरके इस कथनमें भी बड़ी गूढ़ नीति है। वह जानते थे कि रूससे बचनेके लिये अंगरेजोंको काबुलसे मित्रता करनेकी परम आवश्यकता है और जितनाही इंग्लैंडको रूसका डर रहेगा उतनी ही काबुलसे मित्रता दृढ होगी। साथही यह भी बात है कि काबुल और इंग्लैंडकी मित्रतासे दोनोंका लाभ है। उन्होंने लिखा है कि"इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं है कि रूस हरघड़ी इसी चिंतामें रहता है कि किसी न किसी तरह भारतपर चढ़ाई कीजाये। इस विषयमें मेरे अनुभवसे स्वतंत्र पुस्तक लिखी जानेकी आवश्यकता है परंतु मुझे यहां इतना अवश्य कहना चाहिये कि रूस स्वभावसे ही चढ़ाई पसंद, दूसरेका माल छीन लेने वाला और उंगली पकड़ते पोंचा पकड़नेवाला है। वह निश्चय जानता है कि एशियामें इंग्लैंडके सिवाय मेरी सांकल पर कोई पैर देनेवाला राज्य नहीं है। इसी कारण वह इंग्लैंड को अपना कट्टर शत्रु समझता है।यदि इंग्लैंड उसके कामोंमें विघ्न न डाले तो उसे ईरान, काबुल, चीन और रूमसे कुछ भी भय नहीं है। एशियामें इंग्लैंडके सिवाय किसी और यूरोपियन राज्यका अधिक अधिकार

नहीं है। इस कारण यदि रूस सारे एशियाको हस्तगत करना चाहै तो इंग्लेंडको छोडकर सारे राज्य थोडा २ टुकडा लेनेसे संतुष्ट होजाँयगे। एशियामें रूसकी अपेक्षा इंग्लेंडके पास प्रजा अधिक है। इस कारण रूसका निर्बलराज्योंपर आक्रमण न होने देना और भारतवर्षकी सीमासे उसे अलग रखना इंग्लैंडका मुख्य कर्तव्य है। रूस को इंग्लैंडपर बहुत घृणा है। वह अभीतक क्रिमियायुद्धमें और अन्यत्र इंग्लैंडसे भिडकर जो स्वाद चख चुका है उसे भूला नहीं है।

रूसवाले भारतवर्षको कारूका खजाना समझते हैं। मैंने स्वयं अपने कानोंसे रूसी सिपाहियोंको भारत जैसे धनाढ्य देशको लूटनेकी आशापर उछल कूद करते देखा है। वे लोग रूस इंग्लेंडका भारतकी सीमा पर युद्ध होनेके दिनकी बडी आतुरतासे राह देखरहे हैं। रूसवालोंको मालूम नहीं है कि भारतवासियोंकी इंग्लेंडपर भक्ति है। रूसके बडे २ राजनीतिज्ञोंको भरोसा है कि जिसदिन रूसकी भारतपर चढ़ाई होगी समस्त भारतवासी रूससे मिलकर बरोंके छत्तोंकी तरह अंगरेजोंको काट खायँगे। इन लोगोंमें यहांतक मूर्खता घुसीहुई है कि वे अपनी चढ़ाई होनेपर अंगरेजोंके भाग जानेका स्वप्न देख रहे हैं। मुझे भय है कि इस विश्वाससे उन्हें बहुत जोखिम उठानी पड़ेगी। वे निरंतर अपने वचनों और संधियोंका भंग करते २ सफल होनेसे मानने लगे हैं कि पूर्वके सब दूर राज्य रूसके सहायक होंगे। रूसको यह भी निश्चय है कि हम इंग्लैंडसे समुद्रमें युद्ध करके जीत न सकेंगे। इसलिये वह रूस, चीन और भारतकी सीमाकी ओर रेल बनाकर इंग्लैंडसे भिड़ना चाहता है। मैं पैगंबर नहीं हूं। इस कारण यह नहीं कहसकता हूं कि कल क्या होना है परन्तु मेरी सम्मति यह है कि रूसका भारतवर्षपर किसी न किसीदिन चढ़ाई करना जैसे निश्चय है उसीतरह यह भी निश्चय है कि वह दूसरे राज्यकी सहायता बिना इंग्लैंडसे भिड नहीं सकता है। इसमें सन्देह नहीं है कि यूरोपके कईएक राज्योंसे इंग्लैंडका उत्कर्ष सहन नहीं होता है। इसी कारण वे स्वभावसेही इंग्लैंडसे शत्रुता रखते हैं। कुछ वर्षोंमें फ्रांसका

झुकाव रूसकी ओर है । वह एक ओर रूससे मित्रता बढ़ाता जाता है और दूसरी ओर इंग्लैंडसे द्वेष। भारतवर्ष और वाटर्लूकी लडाईमे फ्रांसको इंग्लैंडसे पहले नीचा देखना पड़ चुका है इसलिये इंग्लैंड उसकी आंखोंमें खटकता है । यदि फ्रांस रूसकी सहायता देगा तो जर्मनी अवश्यही इंग्लैंडके साथ होगा । फ्रांस और रूसकी संयुक्त सेनाकी अपेक्षा इंग्लैंड और जर्मनीकी मिलीहुई सेना अधिक प्रबल है क्योंकि इंग्लैंडके समान किसीके पास जलसेना नहीं है और जर्मनीके बराबर स्थलसेना । यद्यपि आस्ट्रिया, इटाली और एमेरिकाका दोनोंसे संबंध नहीं हैं परंतु समय पड़नेपर संभव है कि ये राज्य इंग्लैंडहीका साथदें । इन बातोंको विचारकर मैं कह सकताहूं कि रूसको भारतपर आक्रमण करते समय कोईभी राज्य सहायता न देगा । यही अनेक राजनीतिज्ञोंका मत है ।

अब यूरोपियन राज्योंके विषयमें विचार करनेके अनंतर एशियाई राज्योंके लियेभी लिखना आवश्यक है । जापानको छोडकर एशियामे जितने राज्य हैं उनसे इस समय अपने २ राज्योंकी रक्षा होना कठिन होगया है । वे दोनोंको शत्रु समझते हैं । इस कारण जहांतक होसकै दोनोंको अपने से अलग रखना चाहते है । वे जानते है कि एशियामें दोनोंही राज्योंका बल बराबर रहनेसे उनका लाभ है क्योंकि उन्हें निश्चय है कि जबतक इन दोनों राज्योमें बढ़ाचढ़ी रहेगी हमारा बचाव है । जापानराज्य मध्य एशियामें नहीं है इस कारण अफ़गानिस्तानकी तरह वह दोनोंमेसे किसीएकका सहायक होना नहीं चाहता है । इसके सिवाय एक बात यह है कि. जापान इंग्लैंडकी जलसेना एशियामें अधिक रहनेहीमें अपना लाभ समझता है । उसकी यह आंतरिक इच्छा है कि, इंग्लैंडसे जापानका मेल बना रहै क्योंकि, पूर्वमें रूसकी शक्ति बढनेसे वह बहुत डरता है परंतु अफ़गानिस्तानराज्यकी शक्ति बढ़ रही है।यह ऐसा राज्य है जिसे दोनोंही साम्राज्य परम आवश्यक समझते हैं । इस कारण दोनोंही राज्योंका यूरोप एमेरिका आदि अन्यराज्योंकी मित्रताकी अपेक्षा अफ़गानराज्यसे मेल रखनेमे अधिक लाभ है । काबुली सेना बड़ी

वीर है। यहा पर लाखा मनुष्य ऐसे तैयार ह जा जन्मसेही वीर उत्पन्न होते है। यहांके किसानभी सिप ी है और मरते दमतक युद्धसे हटनेवाले-नही है। य अपने धर्म, अपन देश, अपने राज्य और अपनी स्वाधीनताके लिय लडनेको सदा तैयार रहते है। यदि रूस इग्लेडकी लडाईके समय अफगानराज्यकी यही स्थिति रही ता जय उसीका होगा जिसकी काबुल सहायता देगा। इस कारण निश्चय है कि, जब तक काबुलसे इग्लेडका प्रेम रहेगा रूससे भारतवर्षका एक बालभी बाका न होसकेगा। रूस इस बातको अच्छी तरह जानता है इस लिये चाहता है कि, याता काबुलसे मित्रता उत्पन्न की जाय अथवा उसे किसी चालसे अपना माग रोकनसे बचित कियाजाय। रूसकी इसी चालपर इग्लड और अफगानिस्तानके स्वामियोंको जरा ध्यान देनेकी आवश्यकता ह।"

प्रकरण—१२

दोनोंके बीचमें एक।

अमीरने लिखा है कि "यद्यपि रूस इस बातको अच्छी तरह जानता है कि, काबुलसे लडना बडा कठिन है किन्तु जो लोग यहाकी भाषा नही समझते है, यहाके चालढालसे बिलकुल परिचित नहीं है, वे दो चार दिनके लिये यात्राकर इस देशकी नीति और प्रजाके ढगपर बडी २ पुस्तके लिखते ह अथवा बडे २ लेख देते है या नकशे तैयार कर ते हैं।उन्हींकी भूलपर लोग विश्वास करके कुछका कुछ मान बैठते ह। ये पुस्तकें बडीहानि कारक होती है। गत चालीसवषमे कितनेही लेखको ने अटकलकी है कि काबुलमे ५० लाख मनुष्य बसते ह। उनमें लडने योग्य केवल ३५ हजार है। वे लोग मानते ह कि इस सख्यामेसे कभी घटती बढती नहीं होती है। उनके लिखनेसे अवश्य धोखा होता है। कुछभी हो परतु इतना अवश्य ह कि अफगानिस्तान अकेला किसीसे नहीं लड सकता है।इस कारण दोनामेसे किसी न किसीका आश्रय लेना उसका आवश्यक कर्त्तव्य है परन्तु जबतक आवश्यकता न हो दोनोंमसे एकका भी

रांचीपर आक्रमण करै अथवा चीनी मार्गसे ब्रह्मा बंगालको चाहे तो यह न समझना चाहिये कि उसने अफगानिस्तान छोड़ है। वह मेरे मरनेकी राह देख रहा है। वह अनेक बार मेरे मरनेकी गप्प भी उड़ा चुका है तु मरना जीना भगवानके हाथ हैं। वह अफगान सीमा पर सेना इकट्ठी कररहा है। इसके दो कारण हैं। एक वह मुझे डराता है और दूसरे इंग्लैंडके मनमें भय उत्पन्न कररहा है। कदाचित वह इशाकको काबुल दिलानेहीके लिये ऐसा कररहा हो। उसके मनकी बात कोई नहीं जानता है। लोग कहते हैं कि रूस हिरात लेना चाहता है परन्तु मैं एक सप्ताहके नोटिस पर वहां १ लाख सेना इकट्ठी कर सकता हूँ और मेरे सामना करतेही तुर्किस्तानके समस्त मुसलमान रूसके विरुद्ध बलवाकर उठेंगे। मैंने पश्चिमोत्तर सीमापर देहदादीका जो क़िला बनाया है वह आक्सस नदीसे अफगान सीमातक मार्गकी रक्षा करनेवाला है। लोगोंका अनुमान ठीक है कि आजकल अंगरेजी शस्त्रोंके सामने किला कोई वस्तु नहीं है परन्तु मैंने उसमें शीघ्र चलनेवाली तोपें, क्रूप, हाचकिस, नार्डनफील्ड, मैक्सिम आदि तोपें रक्खी हैं। उसके बनवानेमें १२ वर्ष लगे हैं इस कारण वह संसारके बड़े २ दृढ़ किलोंसे कम नहीं है। अब रूस यदि काबुल पर आक्रमण करना चाहै तो मर्व और अश्काबाद होकर हिरातही पर कर सकता है। दूसरा मार्ग उसके लिये बलख है। यह काबुल पेशावरकी सड़क पर है। यदि रूस काबुल और भारतवर्ष पर साथ २ आक्रमण करै तो उसकी चढ़ाईके लिये पामीर होकर वाखन, चित्राल और काश्मीर मार्ग है। यह भी सम्भव है कि किसी दिन उसे ब्रह्मदेश तथा ईरान होकर भी मार्ग मिल जाय परन्तु रूस इस समय काबुल वा भारतवर्षसे युद्धके लिये तैयार नहीं है। इस समय वह केवल निर्बलोंका राज्य छीन कर धीरे २ आगे बढ़ता जाता है। इसी तरह जब वह भारतकी सीमासे जा भिड़ैगा तब इंग्लैंडसे युद्ध ठान देगा। इसमें अभी बहुत वर्षोंकी देरी है और इस बीचमें अनेक विघ्न पड़ना भी सम्भव है।

मेरी समझमें रूसकी गतिरोकनेके ये उपाय हैं। इंग्लैंड काबुलसे मित्रताके विषयमें मैं पहले बहुत कह चुका हूं। यहां इतना कहना आवश्यक है कि हिरात पर यदि रूस आक्रमण करे तो इंग्लैंडको उसकी रक्षाके लिये अवश्यही अफगानिस्तानका सहायक होना चाहिये क्योंकि हिरातही भारतवर्षकी कुञ्जी है। यदि रूस भारतकी सीमासे अपनी सीमा जा भिड़ावेगा तो इंग्लैंडको उसमें भारत की रक्षा करना कठिन होजायगा क्योंकि भारतके राज्यकोषमें इतनी सेना इकट्ठी करनेका रुपया नहीं है और जब रूसके साथ अफगानिस्तानकी जातियां और तुर्कलोग मिल जॉय तबका तो कहनाही क्या है। ऐसी दशा में अफगानिस्तान और इंग्लैंडकी मित्रताहीमें भला है क्योंकि दो तो मिट्टीके भी बुरे होते हैं। दूसरी बात यह है कि जबतक इंग्लैंड अपनी राज्य बढ़ानेकी नीतिको छोड़कर रूसको युद्धकी धमकी न देगा वह रुकने वाला नहीं है किन्तु उसका सामना करतेही रूस अपना मुँह मोड़ लेगा और जबतक इंग्लैंड चुपचाप रहैगा वह बढ़ना न छोड़ैगा। यदि रूस, काबुल, इरान, और रूममसे एकको भी ले लेगा तो शेष दोनोंको बड़ी हानि पहुँचैगी। तीसरी बात यह है कि रूसकी चढ़ाई रोकनेके लिये इंग्लैंडको उचित है कि काबुलको धन और शस्त्र सबंधी सहायता देकर रूसको यह दिखला दे कि जिस समय तुम्हारा काबुलपर हस्तक्षेप होगा अथवा किसी दूसरेको काबुलकी गद्दीपर बिठलानेका यत्न करोगे रूस इंग्लैंडमें भयानक संग्राम हुए बिना न रहैगा। काबुल रूसके अफगानिस्तानकी रूसी सीमापर युद्ध होनेके समय इंग्लैंडकी सेना नहीं चाहता है क्योंकि अंगरेजी सेनाका अफगानिस्तानमें होकर जाना काबुलियोंके मन में कांटेकी तरह चुभता है। उसे केवल रुपये और शस्त्रकी आवश्यकता है।

यदि इंग्लैंड और रूस आपसमें मेल करके काबुलको आधा २ बांट लेना चाहैं तो यह भी भारतवर्षमें दोनों राज्योंके परस्पर युद्धका प्रबल कारण होसकता है। इस तरहके बटवारेमें बदख्श, तुर्किस्तान, कटागन, हिरात और फरह जैसा उपजाऊ प्रदेश रूसके पास चला जायगा क्या

रूसी सीमाकी ओर है और इंग्लैंडके हाथमें जलालाबाद काबुल जड़ भूमि आवैगी जिससे उसका खर्चा निकलना भी कठिनहै।" हकी बातें लिखकर अमीरने अपनी पुस्तकमें यह दिखलाया है न और भारतवर्षके बीचमें काबुलका स्वतंत्र और दृढ़ राज्य रहने दो परस्परके शत्रु राज्योंमें तीसरा बिचवैया पड़नेसे जो काम होस- धता है वही होगा और इस कामके लिये उन्होंने अपनी पुस्तकमें इंग्लैंड का अधिक लाभ दिखलाकर उसीसे शस्त्र तथा रुपया संबंधी सहायता मांगी है। अमीरके इतने कथनमें चाहे किसी प्रकारकी अत्युक्ति हो परंतु इसमें किसी प्रकारका संदेह नही है कि उन्होंने रूस काबुल और इंग्लैंड की नीतिका अच्छा चित्र खीचा है और अमीरके कथनमें जो बातें है, इंग्लैंड भी प्रायः उसी विचारसे रूसको भारतकी सीमासे अलग रखने के लिये काबुलकी थोड़ी बहुत सहायता करता है और अपनाे मतलब गांठनेहीके लिये इंग्लैंडकी काबुलसे मित्रता है। यह निश्चयहै कि काबुल की मित्रता जैसे इंग्लैंडको लाभदायक है उसी तरह काबुलकाभी इससे कम लाभ नहीं है इसी तरह दो सिहोंके बीचमें पड़कर काबुल बकरा मौज कर रहाहै क्योंकि रूस इंग्लैंडसे और इंग्लैंड रूससे डरकर काबुल का एक बाल भी बांका नहीं कर सकता है।

प्रकरण—१४.

तीन इस्लामी राज्योंका मेल।
इंग्लैंडकी सम्मति।

अमीर अबदुर्रहमान बड़े राजनीतिके पेच जानने वाले थे। उन्होंने केवल इंग्लैंड और रूसकोही नही डराया है किन्तु अपनी पुस्तकमें एक बहुत बड़ा विचार प्रकट किया है। रूमराज्य जो एक दिन अपनी वीरतासे संसारको भीत चकित करता था आजदिन यूरोपवालोंके हाथ- का खिलौना बनरहा है। ईरान अधिकांशमे रूसके पंजेमें फॅस चुका है। अमीरकी इच्छा थी कि इन दोनोंको सोतेसे जगाकर अपने साथ

बनाया जाय और तीनो राज्योंके मेलसे मुसल्मान साम्राज्यका सि
एकबार फिर चमकाया जाय। वह जानते थे कि जबतक तीनो इस्ला-
मीराज्य सयुक्त होकर अपनी शक्ति न बढ़ासकेंगे ईसाइ राज्योंसे टक्कर
झेलना कठिन है। वह इस युक्तिसे किसीदिन जापानकी तरह काबुल
को ससारके वर्तमान बलाढ्य राज्योंकी गणनामें सयुक्त करना चाहतेथे।
बस इसी उद्देश्यसे उन्होंने अपनी किताबमें एक अपने हितकी बात कही
है। उससे अगरेजोका हित हो वा नहो परतु वह लिखते हैं कि "इग्लै-
डको ईरान और रूमसे ताँई न भूलना चाहिये। इग्लैडका यह कर्तव्य
है कि वह रूसके हाथमे पडनेसे इरान और रूमको बचावे। केवल इत-
नाही नहीं वरन् उसे उचित है कि इन दोनो राज्योंको मित्र बनाकर उन्हे
दृढकरे। यदि इग्लैड चाहे तो ईरान, रूम और अफगानिस्तानको पर-
स्पर सधि होकर ये एक होसकते है। ऐसा होनेसे समस्त इस्लामी
दुनिया एक होकर रूस इग्लैडके बीचमे एक दृढ दीवार बनजायगी।
केवल इतनाही नही वरन् इस योजनासे रूसके युद्धकी आशका नष्ट
होकर एशियामें शाति स्थापित होगी। ये तीनोंराज्य एकही धर्मके अनु-
यायी है। तीनोका भला इसीमें है कि ये परस्पर मित्रता बढावें। इस का
रण यदि इग्लैड इस बातका प्रयत्न करेगा तो समस्त मुसल्मान जाति
उसकी सहायता देगी।"

अमीरने केवल रूम इरानको सहायता देकर तीनो इस्लामी राज्योंको
सयुक्त करनेकीही सम्मति नहीं दी है वरन् अगरेजोंको औरभी कई तर
हकी शिक्षा दीहै। उन्होंने लिखा है कि "इग्लैड और अफगानिस्तानको
अपनी २ सेना बढ़ानेके सिवाय और बातमें करना आवश्यक है। वह
यही है कि अपनी प्रजाको धनाढ्य बनानेके लिये शिल्प व्यापारकी
उन्नति करे। यदि अफगानिस्तान अपनी प्रजाको धनाढ्य बनाकर सं-
तुष्ट करेगा और वह पेट भरकर भोजन पासकेंगी तो अवश्यही इस
राज्यका बल बढ़ेगा"-अमीरने यह बात केवल काबुलके लियेही नहीं

न्तु अंगरेज़ोंको भी उपदेश दिया है। काबुल अमीरकी सम्म- ार काम कररहा है वा नहीं इसके कहनेका यहां स्थान नहीं ा बहुत अंश गत भागोंमें प्रकाशित होचुका है और जो रहा- वह चौथे भागमें लिखदिया जायगा। यहां प्रसंगआपडनेसे मुझे साथ लिखना पड़ता है कि इंग्लैंड भारतवर्षकी शक्ति बढानेके लिये जितनाही सेना अधिक करनेका उत्सुक है उतनाही प्रजाके शिल्प व्यापारके विषयमें उदासीन है। यदि ऐसा नहोता तो अवश्यही अवतक एकसभ्य और न्यायी जातिके राज्यमें वसकर कंगाल होनेके बदले भार- तकी प्रजा धनसम्पन्न होजाती।

प्रकरण—१९.

भारतमें अंगरेज़ोंको वर्त्ताव।

अमीरने अफ़ग़ानिस्तान और इंग्लैंडको अपनी २ शक्ति बढ़ानेके लिये और भी सम्मति दी है। वह लिखते है कि "राजा और प्रजामें सामा- जिक संबंध करने, प्रजाके विचार और उसकी रीति भांतिको भली प्रकार जानने, उसके कष्ट दूर करने तथा जाति और रंगके भेद विना सब लोगोंको समान स्वत्व प्रदान करनेसे राज्यकी शक्ति बढ़ती है। रूसकी यह बात प्रशंसनीय है कि उसकी एशियाई प्रजा सेनामें कर्नल जनरलके पद पासकती है और रूसी लोगोंके वहांकी प्रजासे विवाह भी बहुत होते है किन्तु अंगरेज़ोंका भारतवर्षमें वर्त्ताव इसके बिलकुल विपरीत है। वहां अंगरेज़ और भारतवासी मिलकर नहीं रहते हैं। यदि कोई अंगरेज़ किसी भारतवासीसे विवाह करलेता है तो समस्त अंगरेज़जाति उस दंपतिको घृणाकी दृष्टिसे देखने लगती है। इसका परिणाम यह होता है कि अंगरेज, भारतवासियोंकी स्थिति और उनकी चाल ढालसे बिलकुल अनजान रहते हैं। भारतवर्षमें और भी एक बात खेदजनक है। पहले अंगरेजों और भारत वासियोंकी परस्पर

मित्रता रहाकरती थी वैसी अब नहीं है। अब उसका ह्रास होत है। इसका कारण यही है कि नवशिक्षित युवा सिविलियन जो कठ परीक्षामें उत्तीर्ण होकर भारतवर्ष आते हैं उन्हें उसदेशका विलकु अनुभव नहीं होता है। वे समझते हैं कि हमें भारतवर्षमें सदा थोडाही रहना है। अब इंग्लैंडसे भारत आने जानेका मार्ग सुगम होगया है। इन कारणोंसे उन्हें अपने इंग्लैंडवाले मित्रोंसे मिलनेमें अधिक बाधा नहीं होती है और इसीलिये वे भारतवासियोंसे मित्रता करनेकी पर्वाह नहीं करते हैं। पुराने ऍंग्लोइंडियन लोग भारतवर्षमें आकर बसजाते थे। भारतको अपना घर समझने लगते थे और इसकारण उन्हें यहाके देशियोसे मेल जोल और मित्रता करनी पडतीथी।" अमीरने भारतवर्षमें अंगरेजोंके वर्तावके विषयमें जो बात कही है वही आसामके भूतपूर्व चीफकमिश्नर और भारतवर्षके परम अनुभवी पुराने सिविलियन सर एच् जे एस् काटन साहबने आजसे पच्चीस वर्ष पूर्व अपनी पुस्तक "न्यूइंडिया" में लिखी है। इंग्लैंड औरभारतवर्षके धर्म और रीतिमें पृथ्वी आकाशकासा अंतर है इसलिये भारतवासियोंका अंगरेजोंके साथ विवाह संबंध होना तो असंभवके लगभग है परंतु इसमें संदेह नहीं है कि जो लोग इस तरहका विवाह करलेते हैं उन्हें दोनोंदेशके लोग बुरा समझते हैं। अमीर चाहे इस बातको पसंद करते हों परंतु मेरी समझमें इससे कोई लाभ नहीं है। हा उन्होंने ऊपर अंगरेजोंके अन्यान्य वर्तावोंके विषयमें जो कुछ लिखा है उसका अक्षर२ सत्य है। भारतवासी तो स्वभावसे ही राजभक्त है और राजा कैसाही क्यो न हो अपना प्रेम छोड़ना नहीं जानते हैं किंतु अमीर और काटन साहबके कथनानुसार वे भारतवासियोंसे अलग रहकर दोनोंकी बडी हानि कररहे हैं। दोनोंमें परस्पर प्रेम न होनेका यही कारण है। इसी कारणसे शासनकर्ता लोग प्रजाकी स्थितिसे अनभिज्ञ रहते हैं और अनभिज्ञ रहनेसे राज्य तथा प्रजाकी उन्नति नहीं होने पाती है।

प्रकरण—१६.

रूस और इंग्लैंडकी भूल ।

कथन है कि "यद्यपि मैने रूस राज्यमें निवासकर रूसियों की हुत सुख पाया है परंतु मैं खेदके साथ उन्हें सम्मति देताहूं कि भारत काबुलपर चढ़ाई करनेका विचार करनेमें उनकी भूल है । उन्हें जानना चाहिये कि जबतक उनसे अफ्गानिस्तान न मिलजायगा वे भारतपर चढ़ाई न करसकेंगे । उन्होंने मुझपर बड़ा एहसान किया है। वे मेरे सच्चे मित्र हैं । इसकारण मैं उन्हें सम्मति देताहूं कि आप इस विचारको छोडदीजिये । यदि भविष्यत्में किसी अमीरने भारतपर चढ़ाई करते समय रूसकी सहायताभी की तो वह सहायता और २ राज्योंसे बहुत बढ़कर होगी परंतु रूस काबुलका मेल असंभव है । रूस और इंग्लैंडको अपने देशमें बुलानेसे वही परिणाम होगा जो अमीर शाह शुजाके समयमें हुआ था। ब्रिटिशगवर्नमेंट दो बार इसतरहके प्रयत्नकर अपनी भूल के लिये बड़ी जोखिम उठा चुकी है अब तीसरी बार ऐसा कभी न करैगी और यदि रूस बुद्धिमान्हो तो उसे काबुलपर चढाई करनेमें अंगरेज़ोंका जो खर्च हुआ है, जैसे २ कष्ट उन्हें उठाने पड़े हैं उन पर ध्यानदेकर शिक्षा लेना चाहिये और इसबातपरभी लक्ष्य देना उचित है कि अमीरके बुलानेपरभी जब अंगरेज़ काबुल आये हैं तब उनकी क्या दशाहुई है ।

सन् १८१६ ई० में जिससमय काबुलके अमीर शाहशुजा थे तबके अफ्गानिस्तानके नक्शेको यदि देखाजाय तो मालूम होजायगा कि अंगरेजोंने राज्य बढ़ानेकी लालसामें अफ्गानिस्तानका कितना भाग ले लिया है वे बड़े२कष्ट सहनेपरभी तबसे चित्राल, यासीन, कलात, गंडमक, पिशिन, सिबि, कुर्रम, शिनवारी, खैबर, पैवारकोटल, अफगानिस्तानका दक्षिणीय विभाग, बलूचिस्तान, बाजोर दिर, स्वात, नवाजी, बुलंदखेल, वगाई वजीरी और न्यूचमन लेचुके हैं" । अमीरकी सम्पाति यह है कि इस तरह

राज्य दबानेमें अंगरेजोंने अपनी भूलसे जैसा स्वाद चक्खा है वैसी भूल होनेकी अब आशा नहीं है। क्लारेंससाहबकी निश्चितकी हुई पुरानी प्राकृतिक सीमासे ये लोग जितने आगे बढ़े हैं उतनीही उनकी जोखिम बढ़ गई है।

अमीरने लिखा है कि "रूस बहुतही धीरे २ अपना कदम बढ़ाता जाता है। यदि रूस इंग्लैंड की और काबुलकी संयुक्त सेनासे युद्ध करना चाहे तो वह (१) पामीरके मार्गसे काश्मीर चित्रालपर (२) बदख़शांके मार्ग से फैजाबाद वखानपर (३) समरकंदसे बल्खपर (४) मव इस्काबाद और खुश्क से हिरातपर और (५) ईरानसे कंदहारकेटापर आक्रमण करेगा परंतु इस युद्धमें उसकी हानि बहुत होगी। उसकी सेना चीन जापान आस्ट्रिया, जर्मनी और रूमकी सीमापर बहुत बटीहुई है और उसे ऐसे अवसरमें अपनी मुसल्मान प्रजाके बलवा करनेका भय है इसलिये वह कदापि चढ़ाई नहीं करसकता है।

प्रकरण–१७

हिरातपर रूसी आक्रमण।

अमीरका मत है कि "यदि रूस भारत और अफगानिस्तान पर आक्रमण करनेका विचार छोड़कर केवल हिरात और बल्ख पर ही चढ़ाई करे तो उस समय मैं उसका सामना करनेको कितनी सेना भेज सकूंगा यह मैं नहीं कहना चाहता हूं। मैं इस कामके लिये अंगरेजोंसे सैनिक सहायता मांगकर उनकी सेना मेरे राज्यमें न घुसने दूंगा। मैं जानता हूं कि इस अवसर पर यदि इंग्लैंड रूसके यूरोपियन राज्यपर तोपोंके गोले लगाने लगे तो फिर रूसके पास इतनी सेना नहीं रहेगी जिससे वह मुझसे सीमाप्रान्त पर भिड़नेमें समर्थ होसके क्योंकि मेरे साथ २ ही उस रूसकी मुसल्मान प्रजा और अनेक मुसल्मान राजाओंको जो रूससे हारकर मेरी शरणमें आगये हैं लड़ना कठिन होजायगा। सन् ८५ ई० में जिस तरह इंग्लैंडने रूसके पंजदेह पर आक्रमण कर उसे रो

लेनेके समय सहायता देनेमें आना कानी की थी उसी तरह यह फिरभी ऐन समय पर नाहीं कर अपनी सन्धिका भंग करडालेगा । रूसियोंको ऐसाही विश्वास है । यह उनकी भूल है यदि ऐसे समयमें इंग्लैंड सहायक न होगा तो भी अफगान लोग मरते दम तक अपने देशके लिये लड़ेंगे और जबतक उनका एक बच्चा भी जीता रहेगा हिरातकी एक इञ्च भूमि भी रूसके हाथ न जाने पावेगी।यदि वे हारकर रूसको निकालनेमें असमर्थ हुए तो अपना देश इंग्लैंडको दे देनेमे प्रसन्न होंगे । यदि काबुल और इंग्लैंडकी संयुक्त सेना एक जगह रूससे हार खायगी तो दूसरी जगह लड़ैंगी । उस समय अपनी थोड़ीसी सेना रूसकी मुसलमान प्रजा की दयापर छोड़ना रूसके लिये बड़ा भयानक काम होगा । यदि रूस हार जायगा तो उसके राज्यके टुकड़े २ होजायँगे क्योंकि यह प्रजापरप्रेम करके राज्य नहीं करता है । रूस कंगाल देश है । इस कारण वह सिंध लाइन तक लड़ते झगडते आगे बढ़नेका खर्च भी नहीं करसकैगा क्योंकि इस काममें उसका करोड़ों रुपया खर्च होगा। जिस समय काबुलका युद्ध हिरातमें रूससे ठनजाय उसकी शस्त्र और द्रव्यसे सहायता देकर इंग्लैंडको यूरोपमें रूसपर चढ़ाई करनेका अवसर मिलैगा । इस कारण इंग्लैंडको अपनी सीमाप्रान्तके किले दृढ़ करनेके साथही रूसी सीमाके किले दृढ़ करनेके लिये काबुलको सहायता देना उचित है ।

यदि मान लिया जाय कि हिरातपर रूसी आक्रमण होनेके समय इंग्लैंड अपनी संधिका भंगकर काबुलको सहायता देनेके बदले उसीपर चढ़ाई करदे तो अफ़गानिस्तान रूसकी शरण लेकर इंग्लैंडका कट्टर शत्रु बन जायगा और उस समय अफगानिस्तानका यदि रूस और इंग्लैंड बटवारा करना चाहेंगे तो रूसके हाथ उपजाऊ और धनाढ्य भूमि आवैगी और इंग्लैडके हाथ बंजर. और भारतगवर्नमेंटको नवीन सीमाकी रक्षा करनेका खर्चा इतना पड़ जायगा जिसे वह सँभाल न सकैगी और ऐसी दशामें रूसको भारतपर आक्रमण करनेमे सरलता पड़ैगी ।

यह बात निश्चय है कि इंग्लैंडके पास रूसके समान तैयार सेना न-

हीं है परंतु जनरल नेपोलियन कहा करते थे कि अंगरेजोंकी एक कारणसे कभी हार नहीं होती है। उसकी प्रजा राजभक्त है और रा ज्यपर उसकी बड़ी श्रद्धा है। इस कारण इंग्लैंड चाहे जितनी सेना समरभूमिमें नष्ट होजाय तुरतही वहांकी प्रजाका उत्साह बढ़जाता है और वह अपनी इच्छासे आ २ कर स्वदेशरक्षाके लिये स्वयं भरती होती है और भरती होकर मरने मारनेको तैयार होती है। यह चाल केवल इंग्लैंडकीही नहीं है किन्तु उसके उपनिवेशभी इसी उत्साहसे भरे हुए हैं और सेना अधिक न होनेपरभी प्रत्येक अंगरेज समय पड़नेपर अपनी विजयिनी पताकाके नीचे लड़नेको तैयार है। इस कारण समस्त अंगरेज प्रजा वहांकी सेनाही है। इसके सिवाय अंगरेजोंके पास शस्त्र और रुपयेकी न्यूनता नहीं है। ऐसे कारणोंसे यदि रूस इंग्लैंडका संग्राम होगा तो जय अंगरेजोंहीका होगा।"



इति तृतीय भाग समाप्त ।

श्री ।

चतुर्थ भाग ।



काबुलका होनहार ।

प्रकरण—१

काबुलका उत्तराधिकारी ।

अमीर अबदुर्रहमानने लिखा है कि " मेरे पश्चात् काबुलकी गद्दी किसको दी जायगी इस विषयमें मैंने अभी तक प्रकाशित नहीं किया है, इसकारण भिन्न २ लोग भिन्न २ प्रकारकी अटकलें लगाते हैं । मैंने काबुलकी मूर्ख प्रजाको अपने विचार सुनाना उचित नहीं समझा है। मैं मानता हूं कि पहलेसे अपने उत्तराधिकारीका नाम प्रकाशित करनेमें उसकी जान जोखिममें आपड़ती है । अमीर शेरअलीने अपने पुत्र अबदुल्ला जानको अपना उत्तराधिकारी बना दिया था । इस कारण उसके भाइयोंने बलवा मचादिया । सिंहासन ईश्वरका है और वही राजा नियत करने वाला है इसलिये किसीका नाम प्रकाशित करनेके बदले उसकी इच्छा पर छोड़ना अच्छा है । अपनी इच्छासे राजा बनाकर प्रजाको दबानेमें बड़े २ उपद्रव होते हैं इस लिये प्रजाओंको अधिकार देना योग्य है कि वह राजा स्वयं चुनले । मैं स्वयं उत्तराधिकारी नियत करनेकी अपेक्षा प्रजापर मेरे पुत्रोंमेंसे किसीको राजा बनानेका अधिकार देना उचित समझता हूं । इससे मेरा प्रयोजन यही है कि जो योग्य होगा प्रजा उसीका पसंद करेगी । ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनमें किसी राज्यका उत्तराधिकारी बननेके पश्चात राजकुमारोंने अपने पिताको मार डाला है। मुझे अपने पुत्रोंपर पूरा विश्वास है परन्तु प्रजाके स्वभावको मैं जानता हूं जहां भाई २ और पिता पुत्रोंमें राज्यके लिये झगड़ा होना साधारण बात है

और सबसे बढ़कर कारण यह है कि मैं अपने जीतेजी अपने कुटुंबमें क्लेश बढ़ाना नहीं चाहता हूं। मेरे पीछे यदि मेरा कुटुंब बुद्धिमान् होगा तो आपसमें मेल रखकर किसी योग्यपुरुषको अमीर बना लेगा। मैंने किसी एक पुत्रका नाम निर्देश्य करनेकी अपेक्षा कामोंसे दिखला दिया है कि कौन पुत्र मेरा उत्तराधिकारी नियत होनेके योग्य है। बहुतसे मनुष्य मेरी बीबियोंकी खुशामद करके उनसे रुपया ठगते हैं। वे प्रत्येक बीबीसे यही कहते हैं कि आपहीका पुत्र राज्य पावेगा। उन्हें अफ़गानिस्तानके प्राचीन इतिहास पर ध्यान देना चाहिये। मैं पुराने इतिहासहीपर ध्यान देकर अपने पुत्रोंका परस्पर संग्राम कराना नहीं चाहता हूं। इसी लिये मैं उन्हें सदा अपनेपास रखता हूं और वे सब मेरे बड़े पुत्रकी आज्ञा पालन करते हैं। मैंने ठेठसे इस तरह प्रबंध किया है कि प्रथम अपने बड़े पुत्रको राज्यका थोड़ासा अधिकार दिया। फिर धीरे २ उसका पद और दर्जा बढ़ाता गया। अब वह मेरे बदले दरबारतक करता है। यह अधिकार बहुत भारी है। अब मुझे दरबारमें उपस्थित होनेकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि मैने उस पर इस कामका भार डाल दिया है। मैंने अपने दूसरे पुत्र नसरुल्ला हबीबुल्लाके भाईको अपने बड़े भाईके आधीन रखकर राज्यके आय विभागका काम सौंपा है। वह बड़ेही भाईकी आज्ञासे चलता है और उसीको सब तरहकी रिपोर्ट करता है। हबीबुल्लाके अधीन रखकर समय पाने पर मेरे अन्य पुत्र अमीनुल्ला,मुहम्मद ऊमर,गुलामअली आदि भिन्न २ अधिकारोंपर नियत किये जायँगे।अब मेरे समस्त पुत्र, मुल्की और सैनिक अधिकारी मेरे बड़े पुत्रके दरबारमें उपस्थित होतेहैं और उसीको सब कामोंकी रिपोर्ट करते हैं। मैने राज्यके प्रत्येक कर्मचारीको आज्ञादीहै कि हबीबुल्लाकी आज्ञाका पालनकरो। मैंने सन् ९७ ई० से उसे राजकोष और राजस्व विभागकाभी अधिकार देदिया है किन्तु सब कामोंमें मेरे स्वीकार करनेकी आवश्यकता है परंतु मैने इस कार्यको ऐसे ढंगपर डाला है जिससे सारी प्रजा समझती रहे कि हबीबुल्लाको समस्त अधिकार हैं। वही अपीलका प्रधान है। वही धार्मिक कामोंका अधिष्ठाता है, वही फ़ौजदारीका अफसर है और मेरे दरबारके सिवाय राज्यमें ऐसी कोई कोर्ट नहीं है जिसपर उसका अधिकार नहो।

कितनेही ग्रथकार कहते हैं कि काबुलकी गद्दी उसेही मिलती है जिसकी माता बड़े दर्जेकी हो। यह उनकी भूल है। मुसलमान धर्ममे कहो, पर ऐसी आज्ञा नहीं है कि माताके दर्जेके विचारसे पुत्रोंका दर्जा छोटा बड़ा समझाजाय। यदि दासीसेभी पुत्र उत्पन्न हुआहो तो उसका स्वत्व अन्य भाइयोंके समान है। अमीर शेरअली एक बार अपनी उच्चकुलमे उत्पन्न बीबीके छोटे पुत्र अबदुल्लाजानको गद्दी देकर काबुलमें बड़ा बखेड़ा खड़ा करचुके है। मिस्टर कर्जन जो आजकल लार्ड कर्जन हैं सन् ९५ ई० मे जब काबुल आकर मिले तब हँसी २ की बातें करतेही मुझसे राजनीति सबंध के गहन प्रश्नोंमें बातचीत करउठे थे। मैभी उनकी हँसीमें आकर इस विषयके प्रश्नका उत्तर देगया। इतनाही अच्छा हुआ कि उस समय हमारा सभाषण गुप्तरीतिपर हुआ था इसलिये रहस्य प्रकाशित न हुआ। नहीं तो लोग उसका कुछका कुछ आशय समझकर गड़बड़ करडालते। हमारे देशकी रीति और धर्मके अनुसार यदि बड़ा पुत्र योग्यहो तो उसेही गद्दी मिलना चाहिये। केवल शर्त यही है कि प्रजाभी उसे पसद करले। इसी कारण मैंने प्रजा, मेरे कुटुंब और राज्य को धीरे २ उसे परिचितकर उसका अनुभव और प्रभाव बढानेके लिये हबीबुल्लाको इतने अधिकार दिये हैं। मैंने सोचा है कि मै यदि प्रथमहीसे उसे योग्य बनादूगा तो उसे अपना अधिकार जमानेके लिये फिर फिर न लड़ना और किसी प्रकारका प्रयत्न करना न पडेगा। उसके भाइ नौकर होकर रहेंगे और कोईभी उसका सामना न करेगा। वे लोग जैसे रक्तके बधनसे उसके भाइ हैं उसीतरह राज्यके नातेसे उसके सेवक हैं। अनेक अंगरेजी समाचारपत्र मेरे बाद मेरे पदके कईएक दावीदार बतलाते हैं परंतु यदि मेरी प्रजा बुद्धिमती होगी तो मेरे पुत्रोमेंसे किसी एकको विदेशियोंके हस्तक्षेप विना जिसे वह योग्य समझे अपना अमीर बनालेगी।

काबुलकी गद्दी भिन्न २ जातियोंके मुखियाओंके हाथमें है। इसकारण मैंने अपने बड़े पुत्रका उनके घरानेसे विवाह सबंध करदिया है। उसकी

पहली बीबी तगावके सरदार मुहम्मद शाहखांकी कन्या और काबुल राज्यके प्रधान सेनाध्यक्ष जनरल अमीर मुहम्मदखांकी भतीजी है । इस संबंधसे हबीबुल्लाका प्रभाव तगाव गिलजाइयोंपर पहुँच गया है। काबुल राज्यकी शांतिका आधार सेनापर है और सेनाके प्रधान उसके चचिया ससुर हैं । मेरे बड़े पुत्रका बडापुत्र इनायतुल्ला इसी स्त्रीसे उत्पन्नहुआ है । हबीबुल्लाकी दूसरीस्त्री जो दर्जेमें पहलेके समान है हिरातके अफसर काज़ी सैयदुद्दीन खांकी पुत्री और अफगानिस्तानके समस्त धर्मालयोंके अधीश अबदुर्रहीम खानेआलमकी पौत्री है । इस स्त्रीके भी एक पुत्र है । इसके चचा और चचेरेभाई काबुल, जलालाबाद, कंदहार, हिरात और बलख आदि बड़े २ नगरोंके मुल्ला हैं । तीसरी बीबीके एक पुत्र और एक ही कन्या है । यह शगासी सरवर खांकी लड़की है। यह सरवरखां इशाकके पीछे तुर्किस्तानके गवर्नर थे । अब बीमारीके कारण पेन्शन पारहे है । पेन्शन तो पारहे हैं परंतु बड़े चतुर, बुद्धिमान और अनुभवी है और समय पड़नेपर हबीबुल्लाके बहुत काम आसकते हैं । चौथा संबंध हबीबुल्लाका अमीर शेरअलीकी नातिनसे हुआ है । यह शेरअलीके बड़े पुत्र इबराहीम खांकी लड़की है । इस संबंधसे मेरे पुत्रका शेरअलीके कुटुंबसे योग होकर हमारे घरानेसे निरंतर युद्धका भय बिलकुल जाता रहा है । अभी यह विवाह नहीं हुआ है । हबीबुल्लाकी पांचवी बीबी कोलाबके भूतपूर्व मीर सोराबेगकी कन्या है और सर्दार कुदूसखांकी भानजी है । इस संबंधसे हबीबुल्लाका उजबेगोंपर प्रभाव डालगया है। उसका छठा विवाह खोस्त और मंगल प्रांतके सर्दारकी कन्यासे हुआ है । इससे एक पुत्र हयातुल्ला है, जो इनाय तुल्लासे उमरमें छोटा है । उसका सातवां विवाह लालपुराके मोहमन्द अकबरखां की लड़कीसे हुआ है । इस संबंधसे मेरे पुत्रका भारत की सीमाप्रान्तकी मोहमन्द जातिपर प्रभाव पड़ा है । हबीबुल्लाके बड़े पुत्र इनायतुल्लाकी सगाई बाजोरके उमराखांकी लड़कीसे हुई है । यह स्पष्ट है कि जिस समय काबुल राज्यके इन प्रतिष्ठित और प्रभावशाली पुरुषोंका मेरे कुटुंबसे संबंध होगया है फिर

मेरे बड़े पुत्रकी सहायता करना उनका स्वाभाविक कर्तव्य होइन सबको मे निश्चय है कि उसकी बाहरी आक्रमणों और भीतरी उपद्रवोंसे अवश्य रक्षा होगी।"

प्रकरण—२

हबीबुल्लाकी योग्यता।

अमीरने अपने चरित्रमें लिखा है कि "अनुमान दो वर्षतक मैं तुर्किस्तानमें और रहा उतने दिनोंमें हबीबुल्लाने राज्यका प्रबंध अच्छा किया। उसने उस समय बड़ी बुद्धिमानी। चालाकी और मेरी इच्छाके अनुसार काम किया इसलिये मैंने उसको उपाधियां दीं एक उसके प्रबंधकी योग्यताके लिये और दूसरी कन्दहार हजारा बेटालियन सेनाके उपद्रव को शांत करदेनेपर। इस समय इसने बड़ी वीरताका परिचय दिया था। वह ष्याकी उपद्रवियोंके पास चलाया और उस समय मारेजाने अथवा घायल होनेसे बिलकुल न डरा। इस चालसे उसने सैनिकोंको दिखला दिया कि मैं किसीसे डरता नहीं हूं। और इसीलिये उसने शरीर रक्षकभी साथ न लिया। उसने केवल इसी उपद्रवको शांत न किया वरन् दो एक छोटे २ और भी बलवोंको न उठने दिया। उसी दिनसे मैंने उसे दरबार करनेका अधिकार दिया है। वह अंगरेजी, इतिहास, भूगोल, हिसाब, नक्शे बनाना, पैमाइश और गणित ज्योतिष जानता है।"

डाक्टर ग्रेसाहब अपनी पुस्तक "एट्दीकोर्ट आफ अमीर" में लिखते है कि हबीबुल्ला लंबा चौड़ा और दृढ मनुष्य है। उसकी उमर (सन् १८८९ ई० में) बीस वर्षकी मालूम होती थी और उसका भाइ नसरुल्ला सत्रह वर्षका था। वह बड़ा सुंदर है। मोछाके सिवाय उसका सिर और मुख घुटा हुआ था। उसकी आकृति उत्तम और मुसकुराहट चित्ताकर्षक है। भाइ नसरुल्ला हबीबुल्लासे अपेक्षा अधिक कोमल है। दोनों भाइ पिताके समान लंबे नहीं है। यद्यपि हबीबुल्लाका ढांचा छोटा

है परंतु वह पिताके ढंगसे मिलता जुलता है । अमीर अबदुर्रहमानका स्वर बहुतभारी है किन्तु हबीबुल्ला बहुत मंदस्वरसे बोलता है । अमीरने मुझसे कहा था कि बचपनमें किसीने इसे बिष देदिया था तबहीसे इसका स्वर बिगड़गया है। दोनों राजकुमार यूरोपियन वस्त्र पहनेहुये थे और उनके शिरपर अस्त्राखाकी टोपियाँ थीं ।"

अमीरने अपनी पुस्तकमें हबीबुल्लाको सम्मति दी है कि "तुम समझे रहो कि यदि तुम गद्दीपानेकी योग्यता न प्राप्त करोगे तो कदापि तुम्हें राज्य न मिल सकेगा । तुम मेरी सम्मति और बर्त्तावपर खूब ध्यान दो । नहीं तो काबुलके सिंहासनपर तुम्हारा टिकाव होना कठिन है । पहला काम तुम्हारा यह है कि तुम अपनी चालोंसे प्रजाको विश्वास दिला दो कि मैं दृढ विचारवान आत्मावलंबी, परिश्रमी और प्रजाके शुभचिंतक हूं । यदि इन तीनोंमेंसे एकभी खो बैठोगे तो केवल राज्य ही तुम्हारे हाथसे न जाता रहेगा बरन औरभी जोखिम उठाओगे । मेरा प्रयोजन यह नहीं है कि तुम अपने विचारपर इतना भरोसा करने लगो कि किसी तुम्हारे शुभचिंतककी सम्मतिको सुनोही नहीं परंतु किसी सम्मतिदाताको अपने मुँह न लगाओ । सुनो सबकी परंतु करो मनकी । तुम जानतेहो कि इस समय गरीबसे लेकर अमीरतकको मेरे राज्यमें मुझे अर्जी देने, मुझे सम्मति देने और मुझे सूचना देनेका अधिकार है। यदि उनका लेख ठीक हो और बात तुम्हारे जासूसोंसे प्रमाणित होजाय तो सूचना देनेवालेको पारितोषिक दो। यदि असत्य निकले और सूचकने असद्भावसे लिखा हो तो उसे दंड दो । खूब ध्यान रक्खो कि मैं इन रिपोर्टोंको सुनकर अपने दरबारियोंके कथनसे उनकी जांच करता हूं। कर्मचारियोंकी रिपोर्टोंसे उन्हें मिलाताहूं । अपने जासूसोंकी खबरसे उन्हें पक्का करताहूं और समाचार पत्रोंमें जो बातें काबुलके विषयमे प्रकाशित होती हैं उन्हें सुनता हूं। अंतमें सबकी जांचकर परिणाम निकाला करता हूं । यदि तुम शेरअली, याकूबखां और चचा अजीमकी चाल न चलोगे तो कभी तुम्हें भय न होगा । कभी मद्य न पियो और न कभी भोग विलासमें

पड़े। यदि मेरी सम्मतिपर चलोगे तो काबुलका राज्य तुम्हारे हाथसे कभी न जाने पावेगा।"

अमीरने हबीबुल्लाको जैसी शिक्षा दी थी, अपने राज्यारम्भसे अबतक जिस सांचेमें ढालकर जैसा उन्हें तैयार किया था उनकी इच्छाके अनुसार वैसेही वह तैयार हुए हैं। अबदुर्रहमानकी मृत्युके पश्चात् उनकी सम्मति और बतावके अनुसार कामकर काबुली प्रजासे प्रशंसा प्राप्त कररहे हैं। उनके गुणों उनके कर्त्तव्यों और अबदुर्रहमानकी सम्मतिका कुछ वर्णन गत दो प्रकरणोंमें हुआ है और शेष आगामि प्रकरणोंमें करनेकी चेष्टा की जायगी।

प्रकरण—३

हबीबुलकी सम्मति और काबुलका व्यापार।

अमीर अबदुर्रहमानने अफगानिस्तानके भविष्यत् प्रबंधको मुख्य दो भागोंमें बांटा है। एकमें अफगानिस्तान राज्यकी भीतरी प्रबंध, राज्य प्रबंधकी रीति, प्रजा और राज्यकी उन्नति करनेके उपाय और उसके भिन्न २ विभागोंका वर्णन और दूसरेमें काबुल राज्यका विदेशी राज्योंसे सबंध रखनेमें बर्ताव कैसा करना चाहिए इत्यादि पर सम्मति दीगई है। वह कहते हैं कि प्रथम भागमें [illegible] और लिखा है कि "अफगानिस्तान [illegible] दो पाटोंके बीचमें है। इंग्लैंड चाहता है कि काबुलका शासन नियम, न्याय और आईनके साथहो और उसकी इच्छा है कि मेरे पंजे मजबूत [illegible] रहें किन्तु मुसलमानी राज्य चाहता है कि [illegible] में अपने [illegible] न छोड़ेगा।' [illegible] जिस तरहसे [illegible] राज्यका [illegible] है उससे [illegible] होता है कि परम [illegible] से अफगानिस्तान [illegible] और स्वतंत्र राज्य होजायगा। इसमें सन्देह नहीं है कि काबुल राज्यको स्वतंत्र और प्रसिद्ध

होजायगा अथवा मिट्टीमें मिलजायगा । दूसरीदशा उसी समय होनेकी सभावना है जब कि राज्य शासनभार किसी निर्बल और अनुभव शून्य अमीर को मिलजाय । ऐसी स्थितिमें अफगानिस्तानके टुकडे २ होसकते हैं । ऐसा कहनेसे मेरा प्रयोजन यही है कि यहांके शासकको बीचके मार्गसे चलना उचित नहीं है । दुनियांके बड़े २ राज्योंसे अफ़ग़ानिस्तानमें भूमि कम नहीं है और न यहांके मनुष्य थोड़े वा मूर्ख है इसलिये यदि यहां-का शासक दृढ अभिमानी और दीर्घदर्शी होगा तो अवश्यही काबुलराज्यके सौभाग्यका उदय होजायगा । यदि निर्बलहुआ तो बुखारा और भारतवर्षके देशी राज्योंकी तरह यह भी विदेशियोंके हाथ पड़जायगा और सबही ओरसे लोग उसे दबा डालेंगे ।

अफ़ग़ानिस्तान एक ऐसा देश है जहांकी भूमि उर्वरा है और यदि उसे योग्य मनुष्यके हाथमें सौंपा जाय तो सब तरहके फूल फल और अन्न उत्पन्न करसकती है । काबुल राज्यके पास आय बढ़ानेके बड़े २ मार्ग हैं । प्रथम यहांकी खानोंसे लाल, पुखराज, सोना, चांदी, तांबा, लोहा और कोयला निकलता है । इन खानोंसे खर्च निकालकर राज्यको बहुत आमदनी होनेकी आशा है परंतु जबतक इनका प्रबंध ठीक २ न किया जाय ये गड़ेहुए धनकी तरह कुछ लाभ नहीं पहुँचा सकती हैं । देश-की आय बढ़ानेका दूसरा मार्ग यहांका व्यापार है । यह निश्चय है कि अफगानिस्तानमें खनिज पदार्थों और भूमिसे उत्पन्न होनेवाली वस्तुओं-की बहुत बहुतायत है । यहां उक्त वस्तुओंके सिवाय एक तरहका काला हीरा जिसनें इंग्लैंडको वर्त्तमान स्थितिपर पहुँचाया है निकल सकता है । यहां कलोंको चलाने और कारीगरीकी उन्नति करनेके लिये अनेक झरने हैं जिनके जलके गिरावकी शक्ति बहुत कुछ लाभ पहुँचा सकती है ।"

प्रकरण—४

प्रजा और पड़ौसी।

अमीरने लिखा है कि "अफगानिस्तानकी समस्त प्रजा (स्त्री पुरुष) बड़ी वीर है, बुद्धिमती है, पढ़ने लिखनेमें उसकी रुचि है, स्वाधीनताका उसे प्रेम है, शरीरसे स्वस्थ और दृढ है और मद्यपान जुआ आदि दुर्व्यसनोंसे बची हुई है। यह पढ़ने और नवीन संशोधन करनेमें तैयार है और अब उसे विदेशियोंसे व्यर्थ धर्मांधता नहीं रही है। एक शताब्दिसे ऊपर ब्रिटिशराज्यमें बसनेपर भी भारतवासी प्रजा जिस तरह अंगरेजी चाल ढालसे अपरिचित है और अंगरेजी ढंग ग्रहण करना नहीं चाहती है वैसी दशा काबुलियोंकी नहीं है। अफगानोंने थोड़ही दिनोंमें तुर्कों और यूरोपियनोंकेसे वस्त्र अंगीकार करलिये हैं और वह अब विदेशी स्त्री पुरुषोंमें मिलकर उनके चाल चलन सीखना पसन्द करते हैं। अफगानिस्तान राज्यपर किसी तरहका ऋण नहीं है और न उसे किसी राज्यको युद्धकी हारके बदलेमें कर पाई देना पड़ता है। न यहां किसी राज्यको रेल बनानेका अधिकार दिया गया है और न ब्रिटिश रेजिडेंट काबुलमें रहकर भीतरी प्रबंधमें हस्तक्षेप करसकता है। इस कारण राज्यकी ओरसे यदि किसी समय युद्धकी तैयारी कीजाय तो कोई रोकनेवाला भी नहीं है।

अफगानिस्तानके दोनों ओर रूस और इंग्लैंड दो बलाढ्य राज्य हैं। यद्यपि ये राज्य काबुलके लिये परम भयका कारण हैं परन्तु ये आपुसमें खैंचातान कररहे हैं। उनकी खैंचातान काबुलके लिये लाभदायक है। इनकी खैंचातानका यह फल है कि दोनोंमसे एक भी काबुल राज्यकी एक इंच भूमि नहीं दबा सकता है। केवल इतनाही नहीं किन्तु दोनोंही काबुलसे मित्रता करनेमें अपना लाभ समझते हैं। अफगानिस्तानकी शक्तिका प्रबल कारण यह भी है कि यहां समस्त प्रजाका एकही धर्म है। यहां अन्य धर्मके अधिक लोग नहीं बसते हैं। इस कारण विदेशी राज्य

रूसकी यूनानी और आर्मेनियन प्रजाकी तरह उन्हें उभारकर राजासे युद्ध नहीं करासकते हैं। अफ़ग़ानोंको विदेशी राजाके शासनसे बड़ी घृणा है। यदि कोई भी विदेशी राज्य उनपर शासन करनेको तैयार हो तो उनकी स्त्रियांतक शस्त्र लेकर लड़नेपर उतारू होती हैं। इसी कारण अफ़ग़ान स्त्री पुरुष परमेश्वरसे युद्धमें मरनेकी प्रार्थना करते हैं। उन्हें स्वातंत्र्यसे पूर्ण स्नेह है और इस कारण कदापि किसी विदेशीसे शासित नहीं होसकते हैं। वे सैनिक सेवाके सिवाय किसी काममें विदेशियोंके सहायक नहीं होसकते हैं और सैनिक सेवा करनेपर भी किसी विदेशी राज्यकी सेनाका अफ़ग़ानिस्तानमें होकर निकलना पसंद नहीं करते हैं।"

अमीरके इतने कहनेका प्रयोजन यह है कि यदि प्रजाके मनको जीत उसे धन सम्पन्नकर, विदेशियोंके दबावसे न डर हबीबुल्ला राज्यका प्रबंध कर अपना गौरव रक्षित रक्खेगे तो फिर क़ाबुलकी ओर किसी भी बलाढ्य राज्यको आँख उठाकर देखनेकी शक्ति न रहेगी और खानोंकी आय, व्यापारकी वृद्धि, सेनाकी शक्ति तथा अनेक तरहके संशोधनसे काबुल राज्य आजकलके शक्तिशाली यूरोपियन राज्योंकी तरह बलाढ्य एक राज्य हो जायगा और वहांकी प्रजा 'नेशन' कहलाने योग्य होगी।

वह लिखते हैं कि "अफ़ग़ानिस्तान और इंग्लैंडका परस्पर वैमनस्य जो इंग्लैंडकी राज्य बढ़ानेकी लालसासे उत्पन्न हुआ था और जिससे बहुतसा अफ़ग़ानिस्तान अंगरेजोंके राज्यमें मिलगया है अब मिटगया है। इंग्लैंडमें आजकल शांति प्रिय लोगोंका दल अधिक है और अब दोनोंमें दृढ मित्रता होनेसे फिर कभी युद्ध होनेकी आशा नहीं है क्योंकि दोनोंहीमें अब आंतरिकप्रेम है। अब वे समझने लगे हैं कि काबुलकी रक्षासे भारतवर्षकी रक्षा है। अंगरेजोंने काबुल राज्यकी विदेशी चढ़ाइसे रक्षा करनेका भार अपने ऊपर लेलिया है। इस कारण मेरे उत्तराधिकारीको विदेशी आक्रमणकी बिलकुल चिन्ता नहीं रही है। वह बाहरी शांतिका भार इंग्लैंडपर डालकर सुखसे भीतर उन्नति करसकता है।"

प्रकरण–९.

काबुलकी उन्नतिके उपाय ।

एकता और ब्रिटिशके शरणागत ।

"अफगानिस्तानकी भीतरी उन्नति करनेके लिये राज्यकी सीमा निर्द्धारित करनेकी परम आवश्यकता थी । मैंने पडोसी राज्योंकी सीमाका निपटारा कर उनके काबुलकी ओर बढनेको रोकदिया है । इससे केवल संधि टूटनेकाही भय जाता नहीं रहा है किन्तु अब बाहरी आक्रमण होनेकीभी संभावना नहीं है । इस कारण मेरे उत्तराधिकारियोंको राज्यकी उन्नति करनेका अच्छा अवसर मिलगया है । अब उन्हें उन्नति करने और राज्य की रक्षा करनेमें किसी तरहका खटका नहीं रहा है । जब बाहरी आक्रमणका भय जाता रहा तो भीतरी उपद्रवियोंकोभी निकालनेकी आवश्यकता हुई । इतना कहनेसे मेरा प्रयोजन यह है कि मैंने सौभाग्यसे अनेक छोटे मोटे राजाओं, लुटेरे, डाकुओं और हत्यारोंका दमनकर राज्यभरमें शांति स्थापन करदिया है । मैं काबुलको एक स्वतंत्रराज्य बनानेमें समर्थ हुआहूं । मैं ने कितनेही शत्रुओंको मित्र बना २ कर उन्हें बडे २ पद दिये हैं और जिन लोगोंने मेरा शासन स्वीकार न किया वे देशसे निकाल दिये गये हैं । अब यहां राजासे लेकर रंकतक कोभी मनुष्य ऐसा नहीं रहा है जो मेरे समयमें अथवा मेरे पीछेसे मेरे उत्तराधिकारीके शासनमें राज्यका किसी अंशमेंभी सामना करनेका साहस करसकै । जिस राज्यमें एक समय रक्तकी प्यासी लुटेरी प्रजा बसती थी वह अब एक सभ्य राज्य है । यह दशा काबुलकीही नहीं है किन्तु इस समय जो राज्य सभ्य गिनजाते हैं उनमभी पहले इसी तरहकी अराजकता रहचुकी है । मैंने जिसतरह तलवारकी पैनीधारसे दुष्टोंका दमनकर राज्यमें शांति स्थापित की है उसी तरह कलमकी पैनी नोकसे विदेशी राज्योंसे शिक्षा पढाकर इस राज्यको वास्तविक राज्य कहनेके योग्य बनादिया है । इन दोनोंके साथही मैंने नानाभांतिके सुधार करने और कलाकौशल्यकी उन्नति कर-

नेमेंभी कसर नहीं रक्खी है यद्यपि इतना होचुका है परंतु अभी उन्नतिका बीज डालागया है । अभी काबुल उस स्थितिको नहीं पहुँचा है जिससे उसे उन्नत कहा जासके परंतु यदि मेरी योजनाके अनुसार कार्य होता रहेगा तो किसीदिन अवश्य उन्नत होजायगा ।

मेरी योजनाके अनुसार काम करनेके लिये मेरी पहली सम्मति यह है कि यदि मेरे उत्तराधिकारी और प्रजा काबुलको वास्तविक राज्य बनाना चाहतीं है तो उसे एकता उत्पन्न करनी चाहिये । केवल एकताहीसे राज्य बलवान् होसकता है । यदि समस्त राजकुटुंब, रईस, और प्रजा का एकमत एकलाभ और एकही सिद्धांत होजाय तो मेरे उद्देश्यकी सफलतामें संदेह नहीं है। बचपनसे लेकर अबतक मेरा एकदिन ऐसा नहीं गया है जिसमें मैंने कहीं न कही के इतिहास पढ़े विना खोयाहो। इतिहासों से मुझे यही निश्चय हुआ है कि जिसदेशका-विशेषकर जिस इसलामीराज्य का पतन हुआ है उसका कारण घरेलू झगड़े और विरोधही है। मुसलमानी राज्योंकी उन्नतिका मूल सूत्र "समस्त मुसलमान भाई २ है" । इस मूलसूत्रको जिन्होंने खोदिया है वेही दुःख पाते हैं । मेरी सम्मति अपने पुत्रों और प्रजावर्गसे यही है कि एकतापर ध्यान देकर वे मेरे मार्ग पर चलें और जो लोग राज्यसे निकाले गये हैं उन्हेभी मित्रबनाकर रक्खै । मैंने अपने समयमें सब कामोंकी व्यवस्था इस ढंगसे करदी है कि मेरी मृत्युके बाद मेरे कुटुंबके लोग और यहांका प्रजावर्ग हबीबुल्लाको अमीर बनानेमें आनाकानी न करेंगे। यदि मेरी सम्मतिके अनुसार मेरे पुत्र न चलेगे और आपसमें लड़ेंगे तो उन्हें, राज्यके अनेक खंड होकर अफ़ग़ानराज्य नष्ट होनेका अवश्य दंड मिलेगा यदि वे मिलजुलकर रहेंगे तो भी उन्हें एक दूसरीकठिनताका सामना करना पड़ेगा।वह कठिनता यहीहै कि राज्यकुटुंबके वे लोग जो काबुलराज्यके बाहर रहते हैं किसी दिन भयका कारण हो सकते है । इनमेंसे कितनेही भारतगवर्नमेंटके शरणागत हैं और कईएक रूसमें रहतेहैं । जो लोग भारतगवर्नमेंटकी शरणमें हैं उनका कुछडर नहींहै क्योंकि उनके कुछ साथीतो उन्हें छोड़ आयेहैं और

शेष छोड़ २ कर आरहे हैं। अब उनके पास प्राय वेहीलोग बचे हैं जो मेरे जासूस हैं। मुझसे वेतन पाकर उनके नौकर बने हुए रहते हैं। इस कारण वे राज्य कामनामें मरजायँगे किन्तु स्वप्नमेंभी उन्हें राज्य न मिलेगा। इसके सिवाय एक बात औरभी है कि ब्रिटिशगवर्नमेंट उन लोगों के रूससे मिलकर बड़े २ उपद्रव करनेकी बात अभीतक भूली नहीं है। इसलिये मुझे आशा नहीं है कि कभी अंगरेजलोग उन्हें सहायता देकर वर्तमान स्थितिके उलट काबुलकी गद्दीपर बिठलानेका साहसकरें। यदि ब्रिटिशगवर्नमेंट अपने वचनसे बँधीहुई है तोकभी ऐसेलोगोंको छोड़कर मेरे पुत्रोंको कष्ट न देगी। कदापि अंगरेज कर्मचारी मित्रताके नातेको तोड़कर इन लोगोंको छोड़ दें तो मैं ऐसे अवसरके लिये अपने पुत्रोंको सलाहदेताहूं कि जिसतरह गवर्नमेंटके शेरअलीखांको छोड़देनेके समय मैंने प्रयत्न किया था उसीतरह करनाचाहिये। वह प्रयत्न यही है कि प्रथम उन्हें वीर मनुष्योंके समान लड़ना चाहिये। ईश्वर न करे कदाचित हारभी जांय तो ऐसे अवसरपर किसी दूसरे राज्यसे सहायता लेनाहोगा। मुझे आशा है कि ऐसा अवसर कदापि नहीं आवेगा क्योंकि भारत साम्राज्यकी रक्षा इसीमें हैकि वह काबुलको दृढ़ और उसकी स्वाधीनतामें विघ्न पड़नेदे।" अमीरके इस लेखमें जिसतरह उन्नतिका मुख्य उपाय 'एकता' बतलाया गया है, उसी तरह अंगरेजोंके शरणागत काबुली सरदारोंका भय किया गया है, निश्चय होता है कि अमीर अब्दुर्रहमानको इन लोगोंकी ओर का बहुत बड़ा खटका था।

प्रकरण—६

रूसमें काबुली और दुशाकरों।

गत प्रकरणोंसे स्पष्ट होताहै कि काबुली सरदारोंमेंसे जिन लोगोंने भारत गवर्नमेंटकी शरण ली है वे अमीर अब्दुर्रहमानके हृदयमें काँटेकी तरह चुभते थे परन्तु उनसे भी बढ़कर भय उन्हें उन लोगोंका था जो रूसमें जा बसे हैं। उन्होंने अपनी पुस्तकमें लिखाहैकि "मेरे पुत्राके यही प्रबल

शत्रु हैं । यद्यपि इनका भय समयके अनुसार न्यूनाधिक होसकता है, परंतु ये तीन शत्रु मेरे पुत्रोंके लिये बड़े भयानक हैं । भयके कारण ये हैं कि रूस काबुलके टुकड़े २ कर भारतका मार्ग निष्कंटक करना चाहता है । इस कार्यके लिये उसकी इच्छा है कि अफ़ग़ान राज्यही बिलकुल नष्ट हो जाय। शेरअलीखांको उत्तेजना देकर काबुलसे लड़नेके समय वह अंगरेजोंके विचारकी दुर्बलता देख चुका है । उसे विश्वास है कि काबुलको जितना कष्ट दियाजाय उतनाही रूसका लाभ है क्योंकि वह जानता है कि पार्लियामेंटमें वादानुवाद और समाचार पत्रोंमें आन्दोलन करनेके सिवाय अंगरेजलोग कुछ न करेंगे। इस विषयमें सावधान होनेका एक और भी कारण है । कारण यह है कि मुहम्मद इशाकके अनुयायी लोगोंकी संख्या अधिक है । वे अवश्यही मेरे पुत्रोंको सता सकते हैं । मेरे मनुष्य इशाकके अनुयायियोंको फुसलानेमें अबतक समर्थ नहीं हुए हैं परंतु मुझे आशा है कि किसी दिन अवश्य सफलताहोगी । मैंने इन शत्रुओंका पहलेसे अच्छा प्रबंध करलिया है । प्रथम यह कि इशाकसे काबुलकी सारी प्रजा प्रसन्न नहीं है । उसके पिता अज़ीमने मेरे पिताकी शेरअलीखांसे लड़ाई कराके बड़ा हत्याकांड किया था । वह बड़ा निर्दय, शराबी और दुराचारी है और कादर भी बहुत है । ये बातें काबुलियोंकी दृष्टिमें बड़ी घृणित हैं । वह मुझसे विश्वासघातभी करचुका है । वह मुझसे लड़कर सेनाके दुःखका कुछ विचार न कर एकबार कादरताका पूरा परिचय दे चुका है । वह वीर नहीं है और काबुलकी गद्दी वीरबिना रह नहीं सकती है । उसका पुत्र इसमाईल हबीबुल्लासे दश वर्ष बड़ा है । उसे काबुलकी प्रजा और सरदारोंने कभी देखातक नहीं है और वे उस मनुष्यपर कदापि विश्वास नहीं करते हैं जो उनका अपरिचित होता है । यदि ये दोनोंही काबुलपर चढाई करना चाहैं तो उन्हें यहांतक पहुँचनेमें तीन मास लगेंगे । इन तीन महीनोंमें यह कदापि संभव नहीं है कि काबुलीसेना उनका मार्ग न रोकै । यदि ये रूसहीकी सहायता लेकर आवैं तो उस समय अवश्यही रूस इंग्लैंडका घोर संग्राम होगा । इन कारणोंसे इन दोनों पिता पुत्रोंका मेरे पुत्रोंको कष्ट देकर

सफलता पाना कठिन है तथापि मैं अपने पुत्रोंको सलाह देताहूं कि वे भारत गवर्नमेंटके आश्रितसरदारोंकी अपेक्षा इशाकखा और उसके पुत्रकी चालपर अधिक ध्यान दें।" अमीरने रूसके आश्रित तीन शत्रु बतलाकर तीसरेका नाम नहीं प्रकाशित किया है। मैं नहीं जानताहू कि तीसरा शत्रु कौन है।

प्रकरण—७

प्रबंधका नवीन संगठन।

अबदुर्रहमानने केवल लडने झगडने और प्रजाको शांत रखनेहीकी अपने पुत्रोंको सलाह नहीं दी है वरन राज्य प्रबंधके नवीन संगठनकीभी नींव डालदी है। वह कहते थे कि मैंने नियम पूर्वक राज्यशासन करने की प्रणालीका बीजारोपण करादिया है। प्रत्येक शासकका कर्तव्य है कि वह भिन्न २ राज्योंके प्रबंधकी भिन्न २ प्रणालीपर ध्यानदे। शीघ्रतामें, बिना सोचे समझे किसी तरहका प्रबंध आरंभ करना अच्छा नहीं है। देशकी दशाके अनुसार धीरे २ उसे सुधारना चाहिये। मेरी समझमें पैगंबर मुहम्मद साहबने अरबमें जो प्रणाली प्रचालितकी थी वह सबसे अच्छी है। वह प्रतिनिधि प्रणाली थी। उस समय राज्यका शासन प्रजा प्रतिनिधिकी प्रणालीसे होता था। प्रत्येक मेंबरको सम्मति देनेका अधिकार था और अधिक सम्मतियोंसे काम किया जाता था। अफगानिस्तानमें तीनप्रकारके प्रतिनिधि हैं जो भिन्न २ कामोंपर मुझे सम्मति देते रहते हैं। इनमें एक प्रकारके लोग सरदार हैं जो इंग्लैंडके लार्ड लोगोंके समान हैं, दूसरे खवानीने मुल्का हैं जो प्रजाके प्रतिनिधि हैं और तीसरे मुल्ला वा धर्मोपदेशकोंके मुखिया हैं। इनमेंसे प्रथम मेरे दरबारमें राजाके स्वीकार करनेपर बैठनेका पैत्रिक स्वत्व रखते हैं। दूसरे देशके रईसोंमेंसे इस प्रकार चुने जाते हैं कि प्रत्येक गाव वा कसबेकी ओरसे वहाके भले आदमी किसीको चुनते हैं। ये उस गावके मलिक वा अधाव कहलाते हैं। अनेक गावोंके मलिक लोग मिलकर किसी एक प्रभावशाली मनुष्यको

प्रांतके लिये चुनते हैं। वह वहांका ए । कहलाता है। मेरी कामन्ससभामें येही लोग हैं। प्रजाके चुनलेनेपरभी कार्यकी योग्यताका विचारकर इसे पसंद करने न करनेका राजाको अधिकार है। तीसरे विभागके लोग खाने आलम कहलाते हैं। इनमें काज़ी, मुफ्ती और मुल्ला संयुक्त हैं। काज़ी धर्म संबंधी न्यायालयोंके अध्यक्ष, मुफ्ती छोटी २ अदालतों और मस्जिदोंके अफ्सर और मुल्ला धर्मोपदेशक हैं। मुल्ला वही होसकते हैं जो धर्म और आईनकी परीक्षामें उत्तीर्णहों और धर्मसंबंधी विभागमें काम करचुकेहों। अभीतक इन प्रतिनिधियोंको पूर्ण शिक्षा नहीं मिली है और न इनमें पूरी योग्यता है इसलिये इन्हें आइन बनाने वा राज्यप्रबंध करनेका अधिकार नहीं दियागया है परंतु जब समय आनेपर इन्हें इसबातका अधिकार मिलजायगा यहांका शासन प्रजाकी सम्मतिसे होने लगेगा। मेरे पुत्रों और उत्तराधिकारियोंको इन प्रतिनिधियोंके हाथका खिलौना न बन जाना चाहिये। इन्हें सेना तैयार करने और ऐसे अन्य आवश्यक कामोंका सर्वाधिकार अपने हाथमें रखना उचित है। इसके सिवाय किसीप्रकारके संशोधन करने वा आईन पास करनेका कामभी इन्हें अपने अधिकारमें रखना योग्य है केवल इन विषयोंमें इस सभासे सम्मति लेना चाहिये। मेरे पुत्रोंको चाहिये कि नवीन सुधार करनेमें शीघ्रता नकरें। यदि वे किसी तरहकी एकाएक, चपलता वा शीघ्रता ग्रहण करेंगे तो प्रजा उनके विरुद्ध होकर उनकी निन्दा करने लगेगी।" मैं नहीं कहसकताहूं कि इस कार्यमें अमीरको कितनी सफलता हुई है परंतु इतना निश्चय है कि ढांचा अच्छा है और जहांतक मुझे मालूम है मैं कहसकताहूं कि हबीबुल्लाने इसी सिद्धांतपर न्याय विभागमें नया सुधार कियाभी है।

प्रकरण–८.

काबुलकी शिक्षित सेना।

यद्यपि इस विषयमें पहले बहुत कुछ लिखा जाचुका है परंतु यहांपर भी कितनीही आवश्यक बातोंका उल्लेख करना मैं उचित समझताहूं। अमीरने लिखा है कि" राजाकी रक्षा सेनाके सुधारपर निर्भर है। सेनाके

लिये शस्त्र उत्तम और नये ढगके होना चाहिये। राज्यकी रक्षाके लिये और विदेशी आक्रमण रोकनेके अभिप्रायसे दसलाख लड़ाकू सिपाही रखनेकी आवश्यकता है। यदि इतनी सेना समयपर तैयार होसकै तो फिर काबुल राज्यको संसारके किसी बड़ेसे बड़े साम्राज्यका भी डर न रहेगा। मैंने इस कामके लिये युद्धके समय तैयार रखनेको प्रत्येक तोपके साथ ५०० गोले और प्रत्येक हेनरीमार्टिनी बदूकके लिये ५ हजार कार्तूस तैयार रखनेका प्रबध किया है। यह सामग्री दसलाख सिपाहियोंके लिये कम नहीं है। इनमेंसे ३ लाख शिक्षित सैनिक होना चाहिये और ७ लाख वालटियर। वालंटियरोंको भी योग्य शिक्षा दी जाती है। इस सेनाके लिये पूरी२ बारबदारीके योग्य हाथी, घोड़े ऊट और गधे तो तैयार रहतेही है परतु सदा तीन वर्षका भोजन भी रक्षित है। बड़े२ राज्योंको समय पड़नेपर बोझा ढोनेवाले जानवर नहीं मिलते है परतु वीर अफगान समय पड़नेपर युद्धकी सामग्री, तोपें, डेरे और खुराक अपनी पीठपर लादकर ऊचे२ पहाड़ोपर ले जासकते है। इस कारण बोझा ढोनेवाले अधिक जानवरोंकी आवश्यकता नहीं है। एक लाख अगरेजी सेनाको १० लाख जानवरोंकी आवश्यकता होती है किन्तु काबुलियोंको इतने अपेक्षित नहीं है। सेनाका सुधार करनेके लिये रुपया चाहिये। मेरे यहा रुपयेकी तगी है इसलिये मै काम धीरे२ करता जाताहू। यद्यपि इस समय मेरे पास शिक्षित सेना ३ लाख होना चाहिये किन्तु मै दोवर्षतक १० लाख सेनाके निर्वाह योग्य रुपया इकट्ठे रखना उत्तम समझताहू। इसके सिवाय देशके कला कौशलकी वृद्धिके लिये रुपया अलगही चाहिये। मैने अब इस ढगका प्रबध करलिया है कि आजही मै इतनी सेना इकट्ठी करसकताहू क्योकि मेरे यहा चाहे शिक्षित सेना अधिक न हो परतु बहादुर सिपाहियोंकी तो कमी नहीं है। मै इस सख्याको शस्त्र भी आवश्यकताके अनुसार देसकताहू। इतनी सेना इकट्ठी करनेके लिये अभी कई बातोंकी आवश्यकता है परतु काम धीरे२ होरहा है। चाहे इस समय आवश्यकताके अनुसार मेरे खजानेमें रुपया न हो परतु जितना रुपया इस समय है उतना भी पहले अमीरोंके

समयमें इकट्ठा नहीं हुआथा। सेनाके लिये मैंने जो स्थान२पर अन्न इकट्ठा कररक्खा है उसके विषयमें मै अपने पुत्रोंको सम्मति देताहूं कि वे पुराना अन्न सस्ते भावपर सेनाको देकर प्रतिवर्ष खत्तियोंमे नया अन्न भरते रहें और जो पुराना अन्न बेचा जाय वह घोड़ों और बोझा ढोने-वाले जानवरोंके काम आवे।

मेरे उत्तराधिकारीको केवल सेनाकी संख्या देखकरही फूलजाना योग्य नही है। उसका कर्तव्य है कि सेनाको प्रसन्न और संतुष्ट रक्खे क्योंकि असंतुष्ट सेनासे सेना न रखना अच्छा है। इस कार्यके लिये मुख्य दो उपाय हैं। एक उसे वेतन समयपर दियाजाय और दूसरे सेना बलपूर्वक भर्ती न कीजाय। अमीर शेरअली इन्हीं दो बातोंके अभावसे बड़ा धोखा खाचुके हैं और इसी कारण पुराने अमीरोंकी एकही युद्धमें हार होगई है। ऐसे सिपाही लड़ाईके समय भागजाते है। सेनाको वेतन प्रतिमास खज़ानेसे मिलना चाहिये। पुराने समयकी तरह उसे लगान वसूलकर उसमेंसे अपना वेतन लेनेकी झंझटमें डालना योग्य नहीं है क्योंकि समयपर वेतन न मिलैगा तो उसका चित्त काममें न लगैगा।

सेनाके अध्यक्ष चुननेमें बड़ी सावधानी करना चाहिये। समस्त अफ़सर बहादुरहों, विश्वास पात्रहों, राजाके भक्तहों और अच्छे घरानेके हों। मैं उन्हें दर्जे २ ऊपर चढ़ाना अच्छा नहीं समझता। मेरी समझमें उनकी सैनिक योग्यता, सेवा, वीरता, नेकचलनी, स्वामिभक्ति, सैनिकोंका प्रेम और युद्ध पटुताकी जाँचकर उन्हें कसौटीपर कसलेना चाहिये। मैंने युद्धविद्याके विषयमें जिन पुस्तकोंका फ़ारसीमें अनुवाद कराया है वे अवश्यही अफ़सरोंको सीखना होगा। मेरे पुत्रोंको सेनाका चार्ज ऐसे व्यक्तिको न देना चाहिये जो पड़ौसी राज्योंका भेजा हुआ हो क्योंकि जो मनुष्य पड़ौसी राज्यका भेजा हुआ काबुलमे आकर अफ़सरी करैगा वह अवश्य [illegible] ओरसे फेरकर जहांका वह है उस राज्यकी ओर झुका [illegible] कि" राजाके [illegible] दिनमें प्रजा जान जायगी कि राज्यका

जो लाभ है वह हमाराही लाभ है । उस समय अन्यजातियोंकी तरह वे भी पक्की देशभक्त हो जायगी । उस समय उसे आवश्यक गुण सीखनेके लिये परदेश भेजना अच्छा होगा । जब वह यह समझने लगेगी कि राज्यका शत्रु हमारा निजका शत्रु है तब युवा अफसरोंको यूरोप भेजकर युद्धसम्बन्धी शिक्षा दिलाना उचित होगा । वे लोग विलायतसे लौटकर यहांवालोंको सिखलावेंगे परन्तु अभी इतनाही बहुत है । जबतक काबुली लोग सामयिक युद्धविद्या नहीं जानते थे वे अंगरेजी सैनिकोंकी वीरता देखकर चकित हुआ करते थे । मैंने उन्हें युद्धशिक्षा देकर सैदाबादमें अपनी ८ हजार शिक्षित सेनासे शेरअलीकी ७० हजार सेनाको भगादिया था ।"

प्रकरण—९

प्रजाको शिक्षा और न्याय ।

अमीरने अपनी पुस्तकमें इस विषयका विवेचन करते समय शेख सादीका एक वाक्य लिखा है । उसका आशय यह है कि "प्रजा जड़ और राजा पेड़ है । पेड़ जड़ पुष्ट हुए बिना खड़े नहीं रह सकते हैं ।" वह लिखते हैं कि "राज्यकी स्थिरता प्रजाके हाथ है । मेरे उत्तराधिकारियोंको इसलिये दिनरात शांति, और प्रजाके सुखका यत्न करते रहना चाहिये । यदि प्रजा धनाढ्य होगी तो राज्य भी धनवान् होगा । यदि प्रजामें शांति रहेगी तो राज्य भी शांत होगा । यदि प्रजा शिक्षित होगी तो राज्यकी नौकाके लिये उसमेंसे अच्छे २ मल्लाह मिल सकेंगे । इस कारण प्रजाको शिक्षा देना परम आवश्यक है । जैसे पुरुषोंको शिक्षाकी आवश्यकता है उसी तरह स्त्रियोंको शिक्षा दिये बिना राज्यकी कदापि उन्नति न होगी । हजरतमुहम्मद साहबकी आज्ञा है कि स्त्रिया जो घरके बाहर नहीं निकल सकती हैं उन्हें भी पढ़नेके लिये भेजनेकी पतियोंको आज्ञा देना चाहिये । यदि राज्यभरके स्त्री पुरुष पढ़े होंगे तो प्रजा अच्छे २ राजनीति कुशल मनुष्योंको राज्यके कामोंके लिये चुन सकेगी । वेही

योग्यमनुष्य राज्यको सभ्य बनानेमें समर्थ होंगे।" अमीरने अपने पुत्रोंको इस विषयमें शिक्षा तो ठीक दी है परंतु यह नहीं लिखा है कि काबुली प्रजाको शिक्षा किस ढंग और किस भाषाकी दी जाना चाहिये और न यह उल्लेख किया है कि उन्होंने अपने शासनमें इसका क्या २ प्रबन्ध किया था।

साधारण शिक्षाके सिवाय न्यायके प्रबंधपरभी उन्होंने अपनी सम्मति दी है। वह लिखतेहैं कि 'प्रजाकी सुख, शांति और उन्नतिका आधार न्याय और आईन पर है। न्यायकी दृष्टिमें राजा और रंक दोनोंही समान हैं। मेरे पुत्रोंको पुराने अमीरोंकी तरह नहीं चलना चाहिये जिनके समयमें प्रत्येक सरदार अपना२ आईन जुदा बनाकर ढाईचाँवलकी खिचड़ी अलगही पकाया करता था और कहींपर न्यायालयोंका नाम तक न था। मैं स्वीकार करता हूं कि अपनी इच्छाके अनुसार मैं अभीतक ठीक २ न्यायालय नियत नहीं करसकाहूं और न मेरे यहां अभी आईनही ठीक हुआ है। मेरे शासनके आरंभमें जब प्रजा उपद्रवी, ढीठ और असभ्य थी उसे दंडभी बड़ा कठोर दिया जाता था किन्तु जैसे २ प्रजा सभ्य और शिक्षित होती जाती है मैं दंडभी कोमल करता जाताहूं। मेरे उत्तराधिकारियोंकोभी इसी तरह धीरे २ आईनका सुधार करना उचित है। अन्यदेशोंकी पार्लियामेंट इसी लिये है कि प्रजाकी जैसे २ उन्नति होती जाय आईनका संशोधन करती रहैं। मुझे आशा है कि धीरे २ मेरी प्रजाभी ईश्वरीय आईनके सिवाय मानुषी आईन बनानेमें स्वयं समर्थ होगी।

मैने पहले अमीरोंकी अपेक्षा अधिक न्यायालय स्थापित किये हैं परंतु फिर भी इनकी न्यूनता है। जब प्रत्येक प्रान्तमें अदालतें होजायँगी। तब लोगोंको न्याय करानेके लिये बहुत दूर नहीं जाना पड़ैगा यह कार्य राज्यमें जैसे २ रुपया बढ़ता जाय वैसे २ ही आरंभ करने योग्य है। राज्यमें रुपयेकी कमी होनेसे अभीतक अदालतें कम हैं इसलिये बहुधेरे अभियोगोंका फैसला जबानी होजाता है किन्तु जो अभियोग विरासत, जायदाद और व्यापार संबंधी हैं उनकी लिखापढ़ी अब

रय होती है । इन कामोके लिये न्यायालयोंमें क्लर्क रखनेकी आवश्य कता है ताकि कागजोंकी रक्षा तथा लिखापढी आदिकामोंमें किसी तरह की गड़बड़ न होने पावे और अपीलके समय फैसलेकी नकलें मिल सकें । आइनका सुधार और न्यायका प्रबंध धीरे २ करना चाहिये क्योंकि जबतक प्रजा कोमलबर्तावके योग्य नहो कोमलता करनेसे प्रजा की बुद्धि बिगड कर उपद्रवियोंकी वृद्धि होगी, क्योंकि सादीने लिखा है कि सेंध लगाने वालोंको दंड न देना सेंध लगानेकी उत्ते जना देना है ।"

प्रकरण—१०

समाचार विभाग और मस्जिदें ।

उन्नतिकी आशा ।

अमीरका कथन है कि मैंने प्रजाकी स्थिति, कर्मचारियोंके विचार और विदेशियोंका प्रयत्न जाननेके लिये जासूस नियतकर समाचार विभाग (इंटेलिजेंस डिपार्टमेंट) नियत किया है । इससे घूस लेनेवाले कर्मचारी और लुटेरे सरदार प्रसन्न नहीं है क्योंकि उनके कामोंकी मुझे जासूसों द्वारा खबर मिलजाती है । ये लोग इसविभागकी निंदाकर मेरेपुत्रोंको बहँ काया करते हे परंतु मेरी अपने पुत्रोंसे यही सम्मति है कि यह विभाग बड़ा आवश्यक है । ऐसा विभाग समस्त सभ्यदेशोंमें होताहै । इससे भी- तरी प्रबंध और बाहरी आक्रमण तथा शत्रुकी चाल मालूम होती रहती है । पडौसी राज्योंके ढंग और विचार जानकर मित्र शत्रुकी जांच करने का इससे बढकर मार्ग नहीं है । इसीके द्वारा मैं सबकुछ जानलेता हू । मेरे पुत्रोंको "अन्वार सुहेली" पढकर उसपर विचार करना चाहिये । उक्त पुस्तकके पढ़ने और इस विभागकी रिपोर्ट सुननेसे उनका मन पक्काहो जायगा ।

राज्यकी रक्षा और प्रजाकी उन्नति तथा शक्ति बढ़ानेके लिये धर्म सबसे बढ़कर है। धर्मबिना प्रजाका आचरण भ्रष्ट होकर लोगोंका नाश होजाताहै। मुसल्मानजाति इसीलिये वीरहै कि वह धर्म विश्वासमें बड़ी कट्टर है। मैंने इसविषयमें और जेहादके विषयमें स्वतंत्र पुस्तकें बनाई हैं। उनमें तकवीनेदीन (धर्मका दृढमूल) और "पंदनामा (मेरी सम्मति) बहुत आवश्यक है। पाठकोंको ये पुस्तकें अवश्य पढ़ना चाहिये। मैंने अफ़गानिस्तानमें जिस ढांचेपर मुसल्मानी धर्मको ढाला है उसे मेरे पुत्रों को तोड़ना न चाहिये। इसीसे जो रुपया मुल्लाओंके पास जाता था राजकोषमें आने लगाहै। अब केवल काजी, मुफ्ती, इमाम, मुअज़िन और मुहतसिब लोगोंको राज्यसे वेतन दिया जाताहै। इस योजनासे मुसल्मानोंके धार्मिक आईनका प्रचार राजाके नियत किये हुये कर्मचारियोंके हाथमें आगया है और वे सबतरह राज्यके आधीन हैं। इसकारण उन्हें अवश्यही राज्यकी आज्ञा माननी पड़ती है।"

इन दोनों कामोंसे अफगानिस्तानको बड़ालाभ पहुँचा है। बाहरी शत्रुओंके विषयकोतो जाने दीजिये किन्तु यदि अमीर अफगानिस्तानकी क-
प्रजा, अत्याचारी कर्मचारी और स्वतंत्र सरदारोंकी चाल ढाल न जानते और इसीतरह राष्ट्र विप्लवकी जड़-वहांके धर्मोपदेशकों को अपने अधीन न करलेते तो कब संभव था कि काबुल राज्यमें इतनी उन्नति होनेपाती।

अमीरने लिखा है कि "यदि मैं कुछ वर्ष और जीतारहा अथवा ईश्वरने काबुलको घरेलूझगड़ों और बाहरी आक्रमणोंसे बचाकर मेरे पुत्रोंको मेरी सम्मतिके अनुसार चलनेकी सुबुद्धिदी तो मुझे आशा है कि किसीदिन काबुल संसारमें एक बड़ाराज्य होजायगा क्योंकि यहां धरतीकी न्यूनता नहीं है, ऋतु अनुकूलहैं, धनवृद्धिके अनेक मार्ग हैं, प्रजा बहुतहै और बहादुर तथा शरीरसे दृढ है। इस कारण यह किसी विषयमें दुनियांके और राज्योंसे कम नहीं है। सीमानिर्द्धारित होनेसे बाहरी आक्रमण का भय जातारहा है। भीतरी उपद्रव अब बिलकुल नहीं है। सेना तैयारहै और राजकोषमें रुपया तथायुद्धसामग्री आवश्यकताके अनुसारहै।

इन सब बातोंपर विचार करनेसे मानना पडता है कि अब देशमें शिल्प व्यापार, कृषि, खाने, नहरें, आबपाशी, आदिकी उन्नति करनेका समय आपहुँचा है। यात्रियोंके सुख, विदेशी धनाढ्योंको उत्तेजना, और बर्फके पानी सग्रह करनेका अबही समय है। जिन दिनोंमें बर्फ पडता है उसका सग्रह किया जाय तो सूखेके दिनोंमें बजर धरती उपजाऊ हो सकती है। मैने कई एक नहरें बनवाइ है और शेष तैयार करनेका अब अवसर है। अस्त्राखाके चमडे, ऊन, घोडे और भेडीका व्यापार बढ गया है। मैने व्यापारकी उन्नतिके लिये राज्यसे बिना व्याज रुपया व्यापारियोंको उधार दियाहै। विदेशी बैंकों और साहूकारोंसे व्यवहारकर यहापर नोट चलानेकी आवश्यकता है। ऐसा करनेसे व्यापार बढेगा। मैने हुडी और चेककी प्रणाली प्रचलितकरदी है। मैं स्वतत्र वाणिज्यके लाभोंको जानताहू परन्तु इस समय यदि विदेशी मालका काबुलमें आना न रोकाजायगा तो यहाका धन नष्ट होजायगा। मै इसीलिये परदेशी मालका आगमन बदकर यहापर बनानेका प्रयत्न कररहाहू। काबुलराज्यसे अन्न और खनिज पदार्थ बाहर अधिक जाते है यहा फलभी बहुत पैदा होता है परन्तु जब तक रेल न बनजाय इनसे अधिक लाभ नहीं है। मैने अपने पुत्रोंको रेल न बनवानेकी सम्मतिदी है और अबभी कहताहू कि भूलकरभी खानो और रेलका अधिकार किसी विदेशीको न दें और जबतक अफगानसेना पूरी और दृढ न होजाय रेल न बनावे। अफगानिस्तान पूर्व देशका स्विट्जरलैंड है। यहाका पहाडी दृश्य उसे भी मात करता है। यदि यात्रियोंके लिये सुविधा कीजाय तो उनके पैसेसे लोगोका खूब रोजगार चल सकता है।"

प्रकरण—११

सामुद्रिक किनारा।

अमीरने अपने पुत्रोंको सम्मति दी है कि यदि तुम्हें किसी कामके लिये विदेशियोंको ठेका देना पडे अथवा विदेशी इजिनियर नौकरही रखनेकी आवश्यकताहो तो रूस इग्लैंडको छोडकर जर्मनी, इटाली, एमे-

रिका आदिके निवासियोंको नौकर रखना क्योंकि इन राज्योंका किसी तरह काबुलसे संबंध नहीं है। दूसरी सम्मति यह है कि किसी राज्य वा किसी साधारण मनुष्यसे जब कभी जैसा कुछ प्रण वा ठहराव किया गया हो उसका अवश्य पालन करना।इससे यदि किसी तरहकी हानिभी पहुँचे तो भी प्रण भंगकर अपनी कीर्त्तिमें बट्टा मत लगाना प्रण भंगसे बढ़ कर दूसरा कोई पाप नही है।"

इसमें किसी प्रकारका संदेह नही है कि दीर्घदर्शी अमीर काबुल राज्य को सब तरह से उत्तम बनाना चाहते थे। अनेक अंशोंमें उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई है। जिन जिन बातोंमें उन्होंने सफलता पाई उनका वर्णन पहले किया जा चुका है। पहले यह भी लिखा जा चुका है कि वह काबुल राज्यमें क्या २ करना चाहते थे। उनका पुत्रोंसे उपदेश गत प्रकरणोंमें लिखा गया है और शेष आगे चलकर लिखा जायगा परंतु इस प्रकरणमें जो बात लिखनी है उसे सुनकर पाठकोंको विश्वास होजायगा कि अमीर अवश्यही दीर्घदर्शी थे और अच्छी तरह जानते थे कि वर्त्तमान समयमें जंगली जातिको सभ्य बनाने, देशका धन बढ़ाने और राज्यको यूरोपियन राज्योंके समान बनानेमें किन २ बातोंकी आवश्यता है वह सब बातोंका विचार करनेके साथ सामुद्रिक किनारेकी बात भूले नहीं हैं। वह जानते थे कि यूरोपियन राज्योंने सामुद्रिक व्यापारसे कितनी उन्नति की है और राज्यकी शक्ति बढ़ानेका जल कैसा बढ़कर मार्ग है। उन्हों ने अपने चरित्रमे लिखा है कि "अफ़गानिस्तानको समुद्रकिनारे बंदर बनाने और उसीके द्वारा माल भेजने मँगानेका अवश्य प्रयत्न करना चाहिये। अफ़गानिस्तानकी दक्षिण पश्चिमी सीमा ईरानकी खाड़ी और भारत समुद्रके बहुत पास है। इन दोनोंके बीचमें कंदहार, बलूचिस्तान,ईरान और करांचीका मध्यवर्त्ती बहुत थोड़ा-सा भूभाग है। यदि यह रेगिस्तान काबुल राज्यमें मिलालिया जाय तो समुद्रका किनारा अनायासही काबुलको मिलसकता है परंतु इसका अभी समय नही आया है।यदि इंग्लैंडसे काबुलकी मित्रता दिन २ दृढ

होकर उसका काबुलपर भरोसा होजाय तो वह काबुलसे कुछ सेवाक-राके अथवा इसके बदले दूसरी भूमि लेकर यह धरती काबुलको देसकता है। यदि ऐसा नहो तो इस धरतीपर अपना सदाके लिये आधिपत्य रखकर कुछ वार्षिक द्रव्य लेकर देसकता है। यदि काबुल को समुद्र मिलजाय तो फिर इसकी उन्नतिमें कुछ संदेह नहीं है। यदि मैं इसमें सफल होने पूर्वही मरजाऊं तो मेरे पुत्रोंको यह बात कभी भूलना योग्य नहीं है। केवल यही नहीं वरन आक्सस नदीमें छोटी नौकायें चलाकर पश्चिमोत्तर सीमाकी रक्षा करनाभी उचित है। मैंने जो २ बातें अपने पुत्रोंसे कही हैं यदि वे उनपर ध्यान देकर चलेंगे, सदा उन्हें अपना मूलमंत्र बनाये रक्खेंगे तो अवश्यही उनका लाभ होगा।"

प्रकरण—१२

पुत्रोंको उपदेश।

अमीरने लिखा है कि "विदेशी राज्योंमें पार्लियामेंट या कौंसिलोंके खुलनेके समय यह चाल है कि राजाकी ओरसे एक व्याख्यान दिया जाता है। इसमें कहा जाता है कि मेरा संबंध अन्य राज्योंसे अच्छा है। यह एक साधारण बात है किन्तु उस समयभी उन राज्योंके मनमें मन आपुसमें दुश्चिन्ता करते हैं। एक दूसरेको घृणाकी दृष्टिसे देखता है और दूसरा तीसरेको कट्टर शत्रु समझता है। यही आजकलकी नीति है। यदि इसबातका काबुलमें अनुकरण किया जायगा तो अवश्यही यहांकी प्रजा इन बातोंपर विश्वास न करेगी और उसके विश्वास न करनेका परिणाम बुरा होगा। ईश्वरका धन्यवाद है। यदि वह चाहे तो शत्रुओंको मेरे मित्र बना सकता है। इंग्लैंड, रूस, ईरान और चीनसे मेरे राज्यकी मित्रता है। अब किसीसे शत्रुता होने और युद्ध होनेका कोई कारण नहीं है और न इस समय पड़ोसी राज्यके लिये ऐसा अवसर है जिससे वे काबुलपर किसी तरहका दावा करके उससे युद्ध ठानें। राज्यका न अपने हाथमें लेनेसे अबतक न तो मैंने किसीसे झगड़ा और न किसीने कभी कायरता दिखलाई है और ऐसी तरह न मैंने कभी अपना प्रजाको किसी पड़ोसी राज्यकी खुशामद करनेपर बाध्य किया है और न मैंने कभी बिनाकारण किसी पड़ोसी राज्यसे शत्रुता होनेका कारण उत्पन्न किया है। मैंने अपने

पूर्वाधिकारियोंकी तरह किसी राज्यको किसीतरहका वचनभी नहीं दिया है। हज़रत मुहम्मद साहबकी आज्ञाके अनुसार मैं सदा चलतारहाहूं। उनकी आज्ञा यही है कि न कभी ऊंचे बनो और न नीचे किन्तु मध्यमार्गको ग्रहणकरो। यही उन्नतिका उत्तम मार्ग है। जिसने मेरे साथ अच्छा वर्त्ताव किया है मैंभी उससे अच्छी तरह पेश आयाहूं किन्तु जिसने मुझसे रुखाईकी उसके साथ रूखा वर्त्ताव करना मैंनेभी अपना कर्तव्य समझा है। मैं इस समय किसी राज्यका नाम लेना नहीं चाहता परंतु उनमेंसे कोई२ तो ऐसेहैं जो जोंककी तरह है। इनके चिपटनेसे मनुष्यको कष्ट मालूम नहीं होता है परंतु रक्त चूसकर अंतमें मारडालते हैं और कोई २ कांटेके समानहैं। ये कष्ट तो बहुत देते हैं किन्तु इनसे मरनेका भय नहीं है। कई राज्योंने सेनाके बलसे राज्य बढ़ाया है और कई एकने पर्देकी ओट रहकर चालाकी. जाल और रईसोंमें कलह उत्पन्नकर औरोंकी हानिसे अपना लाभ करके राज्य लिये हैं। खुलाखुली युद्ध करनेवाले राज्योंकी अपेक्षा ये राज्य अधिक भयानक हैं। इन्हींसे अधिक सावधान रहना चाहिये। यदि मेरी प्रजा एकता रखकर इन्हें चाल करनेका अवसर न देगी तो ये कभी काबुलकी हानि न करसकेंगे। जो मनुष्य मुझे नहीं पहँचानते हैं वे कहते हैं कि अमीर क्रूर है, लालची है और विश्वासयोग्य नहीं है परंतु सर लिपिलग्रिफिन और सर् वेस्ट रिजवी जैसे अनुभवी कर्मचारियोंने कहा है कि अमीर प्रजाके साथ वर्त्ताव बड़ा कठोर करते हैं परंतु प्रजा भी इस कठोरताके योग्य है। सर एल्फ्रेड लायलने मेरे विषयमें पद्य बनाया है उसमें लिखा है कि "तेरे समस्त मार्ग शिक्षाप्रद है। तू परमेश्वर और मैं तेरा बंदा हूं। तेरी सहायता बिना एक दिन भी इस देशका शासन होना कठिन है। मैं काबुलके अधटूटे किलेमें हूं जहां पहाड़ोंपर तोपें रक्खी है और बर्फ गिरता है किन्तु तू स्वर्ग जैसे सुहावने स्थानमें है। तू स्वर्गका राज्य करता है और मैं नरकका।" यदि मैं अपनी कठोरता छोड़कर दुर्बल बनजाऊं तो काबुलराज्यकी वही दुर्दशा होगी जो कोमलता करनेसे साठवर्षके शासनमें अंगरेजी राज्य खैबर घाटीमें भोगरहा है। वहां दृढ़शरीर रक्षकों विना अबतक यात्री नहीं जासकते हैं और काफिलोंको लूट मारका हरदम भय बना रहता है किन्तु मेरे राज्यमें एक बुढ़िया भी दिन रात सोना उछालती हुई फिरसकती है। जब मैं राज्यका लगान वसूल करता हूं तो लोग मुझे लालची बतलाते हैं परंतु

यदि मैं राज्यकी आयको कर्मचारियों और डाकुओंके हाथमें छोड दूं तो क्या लोग राज्यके खर्चके लिये मुझे अपने पाससे देदेंगे। लोग मुझे सादिग्धचित्त बतलाते हैं परन्तु मैं अफगानिस्तानके पुराने इतिहासोंसे जानगया हूं कि अनेक राजाओंको उनके भीतरी और बाहरी मित्रोंने खून किया है, उन्हें बिना अपराध गद्दीसे उतार दिया है और कैद कर लिया है। जैसे डाकुओंके डरसे घरवालेको सदा सादिग्ध रहना पडता है उसी तरह वह मनुष्य सदा सशयका सशयमेंही बना रहताहै जिसका राज्य लूटने और छीननेके लिये चारों ओरसे स्वार्थी लोग घेरे रहते हैं। वे लोग लूटने या छीननेका अवसर ताकते रहते हैं और समयपाते ही उसके घरमें घुसजाते हैं। यदि गृहस्वामी जाग उठा तो तुरत उससे कहने लगते हैं कि हम तो तेरे मित्र हैं किन्तु उसके आख फेरतेही माल लेकर चपत होते हैं। मेरा जीवन बहुत भयमें है। जिनकी मेरी जैसी स्थिति नहीं है वे नहीं जानसकतेहैं कि कौन मित्र और कौन शत्रुहै क्योंकि जो एक दिन मित्रहै वेही समयपर शत्रु बन बैठतेहैं।" अमीरने इस प्रकरणमें यह दिखलाया है कि लोग जो मुझपर लालची और क्रूर होनेका कलंक लगाते हैं मिथ्या है। उन्होंने दो तीन अगरेजोंके मत बतलाकर सिद्धभी करदियाहै कि काबुलकी प्रजाका कठोरता बिना शासन नहीं होसकताहै। उन्होंने अपनी कथा कहकर पुत्रोंको कठोर वर्ताव करनेका उपदेश कियाहै।

प्रकरण–१२

विदेशीराज्योंमें काबुलीदूत।

अमीर अबदुर्रहमानने काबुलराज्यकी ओरसे अन्य राज्योंमें और अन्य राज्योंके काबुलमें राजदूत रखनेके विषयपरभी अपने पुत्रोंको सम्मति दी है। उन्होंने लिखा है कि "अफगानिस्तान जैसे स्वतन्त्र राज्यके लिये जिसे भविष्यतमें बहुत काम करनाहै, अपने दूत परराज्योंमें और परराज्योंके दूत काबुलमें रखनेकाभी विचार अवश्य कर्त्तव्यहै किन्तु अभी इस काममें विलंब है। मेरे पुत्रोंको इस बातपर खूब ध्यान देना चाहिये। जिस दिन अफगान जाति इस विषयमें कृतकार्य होगी मेरे हृदयको पूरा सन्तोष होगा। संसारके समस्त इस्लामी राज्योंमें काबुल अधिक स्वतन्त्र है। यह किसी यूरोपियनका दबैल नहीं है इसके पास शस्त्र अधिक हैं और जितने चाहे यह खरीद सकता है। इंग्लैंड इसके स्वातन्त्र्यकी रक्षाके लिये नियम बद्ध होनेपर

भी इसकी भीतरी बातोंमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। इंग्लैंडकी ओरसे काबुलमें जो मुसलमान दूत रहता है वह अमीरके स्वीकार करनेसे रहसकता है। जिस तरह काबुलमें अंगरेजोंका दूत रहता है उस तरह अन्य मुसलमानीराज्योंके पास नहीं रहता है। संसारमें ऐसा कोई राज्य नहीं है जो काबुलके भीतरी प्रबंधमें हस्तक्षेप करसके। अफगानिस्तानका केवल इतनाही कर्त्तव्य है कि वह इंग्लैंडकी सम्मति विना विदेशी राज्योंसे किसी तरहका संबंध न करे। ऐसी दशामें जिस समय अन्यान्य इस्लामी राज्योंके दूत यूरोपियन राज्योंमें रहते हैं फिर काबुलका क्यों न रहना चाहिये परंतु मैं अभी विदेशी राज्योंके काबुलमें एलची रहनेको अच्छा नहीं समझताहूं। जबतक काबुल राज्य पूरा दृढ न हो जाय विदेशी प्रतिनिधियोंको बुलाना भारी भूल है। यही विचार काबुलमें रेल और तारका प्रचार करनेके विषयमें है।

काबुलमें विदेशी दूतोंके न रखनेका दूसरा कारण यह है कि अभीतक यहांकी प्रजा पढ़ी लिखी नहीं है। हाल वह नहीं जानती है कि, मेरालाभ हानि किसमें है। ऐसी दशामें यदि दूत नियत होंगे तो वह राज्यके विरुद्ध विदेशी राज्योंसे शिकायत करने लगेगी और उनके झगड़ेमें पड़नेसे राज्य बँटजायगा। तीसरा भय यह है कि यदि यहां विदेशी दूत रहेंगे तो वे यहांकी अनेक जातियोंमें परस्परका झगड़ा उत्पन्नकर उपद्रव खड़ा कर देंगे और ऐसी दशामें विदेशी राज्योंको हस्तक्षेप करनेका अवसर मिलेगा किन्तु जिस समय काबुलराज्य पर्ण उन्नत होजाय, उसके पास पूरी २ सेना हो, वह शत्रुसे टक्कर झेलनेमें समर्थहो, उसके कर्मचारी राजनीतिको जाननेलगें, विदेशी दूतोंकी बातोंसे प्रजा बहँकनेके योग्य न रहै काबुलमें अन्यराज्योंके दूत रहनेकी आवश्यकता है। जिस समय विदेशी दूत काबुलमें रहने लगेंगे किसी राज्यका काबुलकी ओर पैर बढ़ानेका साहस न होगा और न उस समय काबुलसे कोई युद्ध कर सकैगा।

जैसे विदेशी दूत काबुलमें रखनेकी आवश्यकता है उसी तरह काबुलके दूतभी परदेशी राज्योंमें रहना उचित है। दूतोंके रहनेसे काबुलको परराज्योंके दरबारोंका अनुभव होगा इससे अफगानजातिकी बहुत कुछ उन्नति होगी और अन्यराज्योंसे मेल बढ़ैगा और इससे व्यापार बढैगा, यात्री अधिक आने लगैंगे, धनाढ्य लोग आकर व्यापार करैंगे, देशमें जित-

जैसेही धनवान् अधिक बढ़ेंगे उतनीही शांति बढ़ेगी और शांति बढ़नेसे उपद्रव कम हो जायगा। सबसे बढ़कर लाभ यह है कि इधरके उधर और उधरके इधर दूत रहनेसे परस्परका मेल रहेगा, काबुलकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, प्रशंसा होगी और दर्जा बढ़जायगा। पूर्वदेशके राजा अन्यराज्योंमें अपनी प्रतिष्ठा बढ़नेसे कोई काम बढ़कर नहीं समझते है।

संसार एकही दिनमें नहीं बनाहै सब काम संतोष और परिश्रमसे धीरे२ होजाते है। काबुल राज्यमें अंगरेजोंकी ओरसे जैसे मुसलमान प्रतिनिधि रहता है इसीतरह काबुलका दूत भारतवर्षमें हो यह पहला काम था अब दूसरा प्रयत्न काबुली दूत लंडनमें रखनेका है। मैं कईबार और सन् ९५ ई० में अपने पुत्र नसरुल्लाको इंग्लैंड भेजकर इसका प्रयत्न करभीचुका हूं। यद्यपि इसप्रयत्नमें इसबार सफल न होनेसे मेरा हृदय दुःखित हुआ है परन्तु मैं पुत्रोंको दुःख न करना चाहिये क्योंकि महारानी विक्टोरिया उनके कुटुंब और गवर्नमेंटने जितनी कृपा मुझपरकी है उसे देखते हुए यह अपमान किसी गिनतीमें नहीं है। लंडनके दरबारमें काबुली एलची न रखनेसे केवल अफगानिस्तानहीकी हानि नहीं है किन्तु इंग्लंडके लिये यहबात बड़ी भयानक है। जिस भारतवर्षको इंग्लैंडका राज्यसेसाम्राज्य बनाया है, उसकी सीमाकी रक्षा करने पर इंग्लैंडका इतनी उदासीनता ग्रहण करना लज्जाकी बात है। भारतवर्षसेही इंग्लैंडकी इतनी प्रतिष्ठा बढ़ी है परन्तु खेद है कि भारतवर्षके विषयपर इंग्लैंडमें विचार बहुतही कम होता है। लोग कहते है कि इंग्लैंडको भारतकी परवाह क्या है यदि इसका बिगाड़ होजायगा तो इंग्लैंड भारतको छोड़देगा परन्तु बात यह नहीं है। यदि वह ऐसा करेगा तो संसारमें बड़ा गोलमाल होजायगा।

समाचार पत्रोंमें काबुलके विषयमें जो लेख प्रकाशित होते है अथवा विद्वान्लोग जो व्याख्यान देते है उनसे विदित होता है कि लोग काबुल के विषयमें बहुतही कम जानते हैं और न उन्हें काबुल इंग्लैंडकी मित्रता का स्वरूप विदित है। जिससमय लोग कहते है कि काबुल राज्यको नष्ट कर भारतकी सीमा रूसमें मिलादेना चाहिये और काबुलका आधा राज्य बांटलेना योग्य है तो मुझे हंसी आती है। वे नहीं जानते [illegible] उनकी इस बातसे रूसका लाभ करके इंग्लैंडको हानिमें डाल[illegible] है। ऐसे लोग काबुल इंग्लैंडकी मित्रतामें भिन्न डालकर [illegible] रूसमें नहीं रखना चाहते। जबतक दूत न रहेगा काब[illegible]

इंग्लैंडको कदापि विदित न होसकेगी और जबतक सच्ची स्थिति विदित न होगी दोनोंकी मित्रता दृढ होनाभीकठिन है। दूत नियत होनेसे सब संदेह दूर होंगे, काबुलमें शिक्षा कारीगरी और नवीन २ आविष्कारों का प्रसार होगा अफगानोंको विद्योपार्जनके लिये विदेशोंमें जानेका साहस होगा और इसके साथही पूर्वदेशकी रीति भांति इंग्लैंडको विदित होजायगी। जब २ मुझे अपने पत्र विलायती गवर्नमेंटके पास भेजनेका काम पड़ा है मुझे उत्तर यही मिला है कि जोकुछ लिखनाहो भारतगवर्नमेंटको लिखो।कैसे आश्चर्यकी बात है कि जिस मनुष्यकी शिकायत करना हो वही जज बनायाजाय।"

"जब कभी मैंने अपना प्रतिनिधि लण्डनमें रखनेका अनुरोध किया है उत्तर यही मिला है कि यदि आप काबुलमें महारानीका दूत रखना स्वीकार करलें और वह दूत यूरोपियन हो तो आपका दूत लण्डनमें रहसकता है। मैं 'महारानीके दूत' इस वाक्यका कुछ मतलब नहीं समझता। जब मेरे यहाँ अंगरेजोंका मुसल्मान दूत रहकर 'ब्रिटिश एजेंट' कहलाता है फिर स्पष्ट है कि यह बात वृथा है। अंगरेज दूत काबुलमें रखनेका समय अभी नहीं आया है। इसके कईएक कारण हैं प्रथम यह कि जिन रजवाड़ोंमें अंगरेज रेजिडेंट रहते हैं वहांके राजाओंपर उनका बहुत दबाव पड़जाता है और वेही उन राज्योंके वास्तविक राजा बन बैठते हैं। काबुलियोंको यह बात सहन नहीं है। अंगरेजोंके सिवाय और जातिके दूतको "महारानीका दूत" न कहना लोगोंके चित्तपर अविश्वास उत्पन्न करता है किन्तु विचारपूर्वक देखा जाय तो वे अंगरेजोंसे राजभक्तिमें कदापि कम नहीं हैं। काबुलमें जो अंगरेज व्यापार वा नौकरीके लिये रहते हैं उनका राज्यप्रबन्धसे सम्बन्ध न होनेपर भी वे अपनेको इंग्लैंडमें मेरे मन्त्री होना प्रसिद्ध करते हैं। इतनाही नहीं किन्तु ये अंगरेज लोग मानने लगे हैं कि मैं इनके हाथका खिलौना हूँ। जब साधारण दूकानदारोंको इतना घमण्ड है फिर यदि महारानीकी ओरका अंगरेजदूत रहैगा तो उसकी कैसी दशा होगी।

मेरा दूत लण्डनमें रखनेकी बात स्वीकार न करनेके लिये दूसरा कारण यह बतलाया जाता है कि मुझे भारतगवर्नमेंट प्रतिवर्ष १८ लाख रुपया देती है परन्तु इस विषयमें जो सन्धि हुई है उसमें ऐसी कोई शर्त्त नहीं है जिसके अनुसार मैं लण्डनमें अपना एलची न रखसकूं।

रुपया लेनेसे मेरी प्रतिष्ठा घटी नहीं किन्तु बढ़ी है क्योंकि इंग्लैंड किसी-को व्यर्थ रुपया देनेवाला नहीं है। लोग तीसरा कारण यह बतलाते हैं कि यदि काबुलका लण्डनमें दूत स्वीकार किया जायगा तो वह राज्य स्वतंत्र होजायगा किन्तु काबुल राज्य पहलेहीसे स्वतंत्र है। गवर्नमेंटने कईबार सरकारी तौरपर मुझे स्वतंत्र राजा स्वीकार किया है और मेरी प्रजाने "राजा और अपनी जाति तथा धर्मका प्रकाश" की उपाधि दी है। कितनेही कहते हैं कि लण्डनमें काबुलका दूत रहनेसे काबुल राज्य का भारतगवर्नमेंटसे झगड़ा होजायगा परन्तु मैं इस बातको नहीं मानता हूँ। मेरा कईबार वाइसरायसे विवाद हुआ है परन्तु कभी मैंने भारतसे दूत नहीं बुलाया। दूत रखनेसे लाभ यही होगा कि जिस तरह भारतवर्षके वाइसराय अपनी बात सेक्रेटरी आफस्टेट या मन्त्रिमंडलसे कह सकेंगे वैसेही मेरा दूतभी कहनेको तैयार होगा।'

प्रकरण—१४

इंग्लैंडसे मित्रता।

अमीरने अनेक जगहों पर अपने पुत्रोंको इंग्लैंडसे मित्रता रखनेकी सम्मति दी है। उस सम्मतिका इस पुस्तकमें कई जगह उल्लेख होचुका है। यहां अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है तथापि दो चार बातें जो मुझे अधिक आश्चर्य विदित हुई उन्हें लिखकर मैं इस पुस्तकको समाप्त करूंगा। अमीरने लिखा है कि' अंगरेजोंकी नीतिका काबुलके विषयमें समय २ पर परिवर्तन होता रहा है इससे मालूम होता है कि इंग्लैंड अभीतक काबुलकी मित्रताका स्वरूप नहीं जानता है। उसकी पहली नीति मेरे नाना दोस्तमुहम्मदके समयमें थी जब उसने भीतरी झगड़ोंमें पड़कर दोस्तमुहम्मदको गद्दीसे उतार शाहशुजाको सिंहासनमें भुठाया। इसका यह फल हुआ कि अंगरेजी सेना काट डालीगई और तबसे अंगरेजोंको भीतरी झगड़ोंमें पड़नेका साहस जातारहा। दूसरी नीतिने अमीर शेरअलीका स्वतंत्रकर उसका बल बढ़ाया। इसके परिणाममें अफगानिस्तानका दूसरा युद्ध हुआ। इस युद्धसे अंगरेजोंको फिर शिक्षामिली तब छोड़ ट्रिटनकी नीतिका जन्म हुआ। यह काबुलके खंड २ कर कन्दहार आदि प्रदेशोंको अपने राज्यमें मिलाना चाहते थे। इस बातको लिटनकी गवर्नमेंटने स्वीकार न किया किन्तु उसकी

पालिसी (राज्य बढ़ानेकी प्रणाली) का इसीसे जन्म हुआ। गवर्नमेंटकी नीतिका अनेकबार परिवर्तन होनेके पश्चात् अब अफगानिस्तानको स्वतंत्रकर उसे रूस भारतके बीचमें दृढ दीवार बनानेकी नीति स्थिर हुई। यह नीति बहुत अच्छी है। गवर्नमेंटने इसे स्वीकार करनेमें बड़ी बुद्धिमानी की है और जहां इसका पूरा २ वर्त्ताव नहीं होता है वहीं निराशा उत्पन्न होती है।

कितनेही जनरल और अंगरेज राजनीतिक कहनेलगे हैं कि जितनेही हम काबुलियोंसे अलग रहेंगे हमारा लाभ है परंतु मेरा वचन यह है कि जितनेही हम दोनों अधिक मिलेंगे दोनोंका लाभ है। यदि उन लेखकोंका मत यह हो कि काबुलियोंपर जितनी कम चढाई कीजायगी अच्छा है तो मैं उनसे सहमत होता हूं। काबुली बर्रे नहीं हैं जो विना सताये काट खायँगी। मेरी सम्मति अपने पुत्रों और उत्तराधिकारियोंसे यहीहै कि जितनाही तुम अंगरेजोंसे मिलोगे, जितना तुम्हारी प्रजाका ब्रिटिश जातिसे मेलबढ़ेगा उतनाही वह तुम्हें निकट आने देंगे और जितना वह तुम्हें निकट बुलावें उतनेही तुम उनके पास जाओ। यदि तुम उसे अप्रसन्न करोगे तो तुम्हें हानि उठानी पड़ेगी।"

इस प्रकरणमें अमीरने अपने उत्तराधिकारियोंको अंगरेजोंसे मित्रता करनेका उपदेश दिया है। अंगरेज लोगभी अपनी ओरसे मित्रतामें त्रुटि नहीं होने देते हैं। अमीर अपने पुत्रको जिसतरहका उपदेश करगये हैं वैसाही वर्त्ताव काबुलके नवीन अमीर हबीबुल्ला कर रहे हैं। पिताकी आज्ञाके अनुसार अमीर हबीबुल्ला राज्य और प्रजाकी उन्नतिमें लगे हैं। भारतगवर्नमेंट इनकी सहायता करनेको तैयार है। रूसभी इस समय किसी नये ढंगका प्रपंच नहीं करता है। काबुलमें इस समय शांति है। मैंभी इस पुस्तकको समाप्तकरनेसे पूर्व यही ईश्वरसे प्रार्थना करताहूं कि वहां शांति रहै। काबुलकी शांतिसे काबुलराज्य और वहांकी प्रजाका जैसे लाभ है वैसेही भारतगवर्नमेंट और भारतवर्षकी प्रजाका लाभ है।

इति।

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—बम्बई.